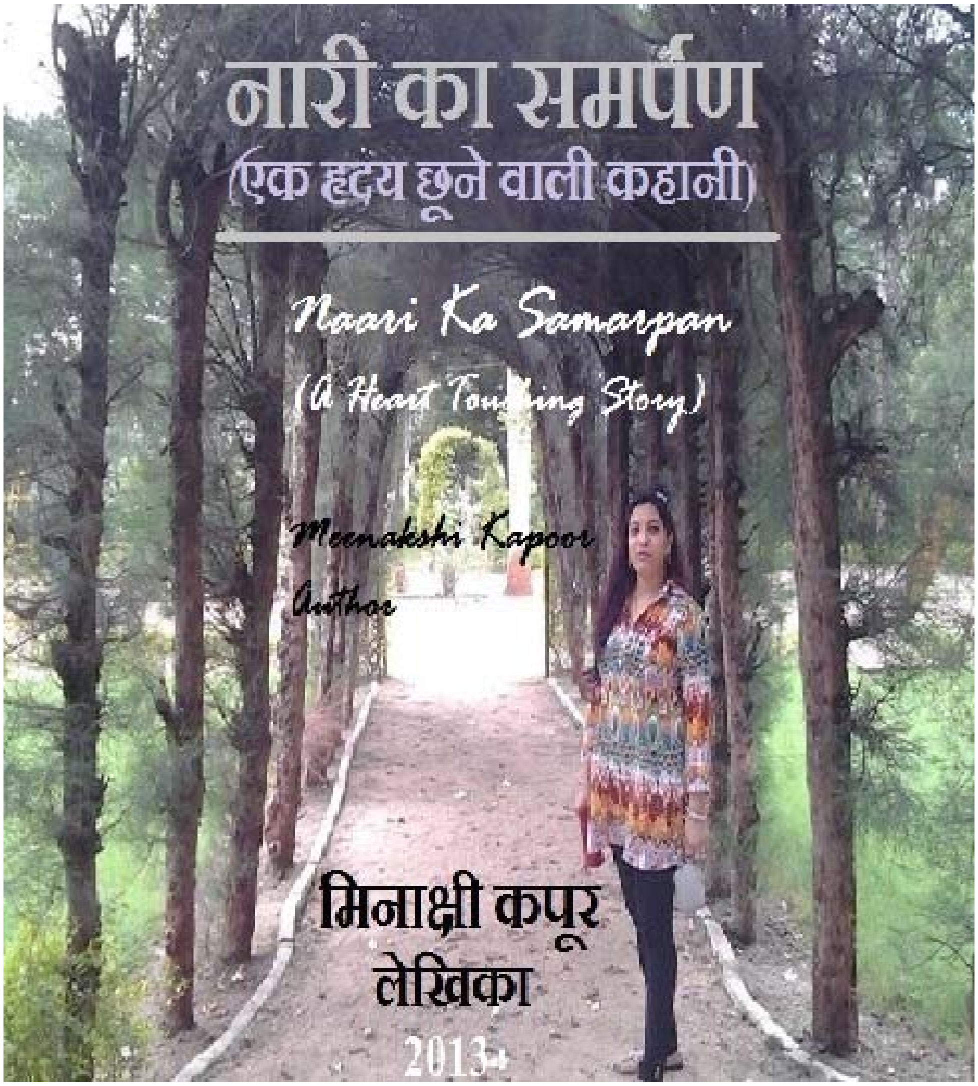
नारी का समर्पण
(एक हृदय छूने वाली कहानी)
Naari Ka Samarpan
(A Heart Touching Story)
Meenakshi Kapoor
Author
मिनाक्षी कपूर
लेखिका
2013

नारी का समर्पण

मिनाक्षी कपूर

मैं अपने पति , माता–पिता, भाई–बहन, सगे–सम्बन्धि और सभी मित्रों को तह दिल से धन्यवाद अदा करना चाहती हूं जिन्होने मुझे यह उपन्यास लिखने में प्रोत्साहन दिया है।

लेखिका

मिनाक्षी कपूर

यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जिसके पिछे इंसान के रूप में भेड़िये पड़े हुये थे। हर मोड़ पर, हर रास्ते पर उसका इंतजार कर रहे थे। कब वो हमारे पास आये और हम उसे अपना शिकार बना लें। लेकिन उस लड़की ने ड़ट कर उन भेड़ियों का सामना किया और वहां से वह सुरक्षित बाहर निकल आई। परंतु उन भेड़ियों का सामना करते समय वह घायल भी हुई और उसका नुकशान भी हुआ। उसकी हिम्मत टुटी नहीं और उसने हार नहीं मानी। ऐसे भेड़िये तो हमें घर – घर में मिल जायेंगे, जैसे इस कन्या को भी मिले। बस उन्हें पहचानने की जरूरत होती है हमें।

मार्च का महीना सन् 1977 में होली का पर्व मनाया जा रहा था और एक साधारण से परिवार में एक कन्या का जन्म हुआ। रात के 11:00 बजे थे उस समय जैसे ही कन्या का जन्म हुआ उसकी दादी ने जाकर सबको खबर दी की हमारे घर कन्या के रूप में मानों जैसे देवी ने जन्म लिया है। उस दिन से उस कन्या की दादी उसके रोज पैर छूती थी और बोलती थी हे देवी मईया अगली बार एक बेटा भी दे देना मेरी बहू को। उस कन्या के चेहरे पर बहुत तेज नजर आता था। प्रत्येक व्यक्ति उसकी आँखों में ही खो जाता जो भी उसे देखता था। उसका नाम गंगा रखा गया। गंगा अपने नाम की ही तरह पवित्र भी थी परंतु लोगों ने उसे गंदा करने की भरपूर कोशिश भी की। वही छोटी सी लड़की गंगा बहुत ही सुंदर और नटखट थी। वो सिर्फ अपनी ही दुनिया में खोई रहती थी। उसे यह सारा संसार और यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति बहुत ही सुंदर और सच्चा लगता था। गंगा प्रत्येक इंसान को अपनी तरफ आकर्षित करती थी। लेकिन लोग उसकी खूबसूरती से जलते थे। वह बचपन से ही लोगों की आँखें पढ़ लेती थी, वह अपनी आँखों में पहले ही वह सब कुछ देख लेती थी जो कुछ होने वाला है और उसे पहले ही चीजों का आभास हो जाता था। वह अपने सपनों में सब कुछ देख लेती थी। लेकिन जब भी उसने अपनी बातें, अपने सपने अपने घर वालों या दोस्तों को बताया तो उन्होनें सिर्फ उसका मज़ाक ही बनाया और वह दुःखी हो जाती थी। जब वह स्कूल जाने लगी तो वहाँ पर उसके दोस्तों ने सिर्फ उसका फायदा उठाया कभी–कभी तो वह समझ ही नहीं पाती थी कि, उसके दोस्त सिर्फ उससे मतलब से ही बातें करते हैं। वह दिल की बहुत ही साफ थी। धीरे–धीरे गंगा बड़ी होने लगी। जब वह 5 साल की थी तभी उसने अपने पति और खुद को सपने में देख लिया था। लेकिन उस समय वह समझ नहीं पाई थी कि, यह दोनों कौन हैं जिन्हें वह बार–बार अपने सपनों में देख रही है। उसे नृत्य करना और गीत गाना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन उसके परिवार ने कभी उसे समझा ही नहीं। वह उसे एक छोटा बच्चा समझते रहे। लेकिन वह कला क्षेत्र में कुछ करना चाहती थी, परन्तु उसे कभी भी किसी ने समझा ही नहीं। उसकी उम्र बढ़ती चली गई लेकिन उसकी

आखों में हर पल एक सपना रहता था। उसके दोस्तों ने हमेशा उसे धोखा दिया जिस वज़ह से वह दुखी रहती थी वह दोस्त बनाने से भी डरती थी। उसे ऐसा लगता था कि वह जिस चीज को भी अपना मानकर प्यार करती है वह उसको या तो धोखा दे देता है या फिर दूर हो जाता है। वह जिंदगी को जितना खूबसूरत समझती थी, जिन्दगी उतनी खूबसूरत नहीं थी। व्यवहार से जितनी वह चुलबुली थी उतनी ही वह दिल से मायूस रहती थी। वह लोगों से डरती थी लेकिन किसी को भी वह दिखाती नहीं थी। इसलिए लोग उसे मूर्ख ही समझते थे। धीरे–धीरे समय निकलता गया वह बढ़ी होने लगी और इसके साथ–साथ उसकी इच्छाएँ भी बढ़ने लगी थी। कुछ इच्छाएँ तो उसकी पूरी हो जाती थीं लेकिन कुछ मन में ही रह जाती थीं। उसके माता पिता और भाई–बहन भी उसे बहुत प्यार करते थे। लेकिन जब एक दिन उसने अपनी माँ से कहा, माँ मुझे नृत्य सीखना है तो उसकी माँ ने उसे मना कर दिया। सबको ऐसा लगता था कि वह दूसरों की नकल करती है। उसके पिता ने तो यहाँ तक बोल दिया पढ़ाई लिखाई तो होती नहीं है, नृत्य करोगी। हमारे खानदान की लड़कियाँ नाच–गानें नहीं करती हैं। यह सुनकर उसका दिल टूट गया और अकेले में जाकर वह बहुत रोई जो किसी को भी नहीं पता चला। लेकिन उसके बाद उसने नृत्य करना छोड़ दिया। जब भी कभी कहीं पर भी गाना बजता था या फिर कभी टी.वी. में या कभी कोई बारात की आवाज आती थी तो वह देखती ज़रूर थी। उसका मन करता था लेकिन कभी उसने नृत्य नहीं किया। उसका मन करता था लेकिन वह नृत्य कर नहीं पाती थी। उसे ऐसा महसूस होता था मानों उसे नृत्य करना ही नहीं आता है। उसके मन में एक इच्छा पैदा हो गयी थी, जो उसके मन में बढ़ती ही जा रहा था। वह अब कुछ भी करने से पहले डरती थी। उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता था। उसे कुछ भी करना पंसद नहीं था। लेकिन फिर भी वह लोगों के सामने हंसी–मजाक भी करती थी, खेलती भी थी। वह सारे सामान्य कार्य भी करती थी। किसी को आभास तक नहीं था कि, उसके मन में क्या चल रहा है। उससे अगर कभी कोई नृत्य करने को कहता था तो वह हँसकर बोल देती कि, मैं नृत्य करना नहीं जानती हूँ। वह कला के क्षेत्र में कुछ करना चाहती थी। उसके परिवार को ऐसा ही लगता था कि, कला तो बेकार की चीज है सिर्फ पढ़ाई लिखाई करने से ही हम कुछ बन सकते हैं। लेकिन वह ऐसा नहीं सोचती थी। उसे हमेशा ऐसा लगता था कि उसके जीवन में भी कभी न कभी कोई चमत्कार जरूर होगा। उसकी एक बड़ी बहन भी थी। वह बड़ी ही साधारण तरीके से रहती थी इसलिए सभी उसे बहुत ही समझदार और संस्कारी कहते थे। लेकिन उसे कभी बुरा नहीं लगता था कि, सब लोग उसकी बहन की तारीफ करते हैं और उसे नासमझ कहते हैं। वह हर पल सपने देखा करती थी। लेकिन यह सपने सिर्फ सपने ही थे क्योंकि वह जानती थी कि उसे कोइे सकार नहीं

करेगा। जब वह किशोर अवस्था में आई तो बहुत सारे लोगों ने उसकी सुन्दरता का फायदा उठाने की कोशिश करी लेकिन देवी माँ के आर्शिवाद से कोई कुछ नहीं कर पाया। अब वह बहुत ही सुंदर हो गई थी, उसकी सुंदरता से उसकी सहेलियाँ जलती थी। वह मर्दों से बचपन से ही नफरत करती थी शायद कुछ पिछले जन्म का असर था जब वह 5 वर्ष की थी उस समय उसके एक दूर के रिश्तेदार ने उसका शोषण करने की कोशिश भी की थी वो भी दो बार, वह डर गई थी और उसने किसी को भी वह बात नहीं बतायी थी। उस समय वह व्यक्ति 18 वर्ष का था। पूरे जीवन जब कभी भी वह इसके सामने आता था तो गंगा का खून खौल जाता था उसे देख कर। लेकिन उस इंसान की हमेशा ही बुरी नज़र रहती थी गंगा के ऊपर। जब वह 10वीं कक्षा में थी तब उसने अपने पापा से कहा, पापा मेरे लिए एक बुटिक खुलवा दो। उसकी माँ तो तैयार थी उसके साथ काम करने के लिए लेकिन उसके पापा ने उनका साथ नहीं दिया। वह चित्रकारी भी बहुत अच्छी करती थी लेकिन उसका हुनर किसी को नहीं दिखाई दिया। सबको सिर्फ ऐसा ही लगता था कि यह इसका सिर्फ शौक है। गंगा मंहदी और साड़ीयों इत्यादि कि डिजाईन भी बहुत अच्छी बनाती थी। वह कागज पेंसिल चलाती जाती थी और रचना तैयार हो जाती थी। उसके अंदर अनेकों हुनर थे, लेकिन उसे किसी ने भी नहीं पहचाना। कला के क्षेत्र में वह निपुर्ण थी। सभी ने उसके अंदर सिर्फ बचपना ही देखा और उसे नासमझ ही समझते रहे।

एक दिन घर पर पापा के मित्र आए। उस वक्त गंगा Textile Design बना रही थी जब पापा के मित्र ने जब उसका उसका हुनर देखा तो उन्होंने पापा से बोला गंगा तो बिना सीखे ही इतना अच्छा काम करती है तो आप इसे कोई कोर्स क्यों नहीं करा देते। उसके पापा को अपने दोस्त की बात समझ आ गई और तब उन्होंने उसे एक छोटी अवधि का Textile Design कोर्स करवा दिया। वह अपनी कक्षा में प्रथम आई। उसने 12वीं भी पास कर ली थी। तभी उसके पापा का तबादला अहमदाबाद हो गया और वह अपने माँ–पिता के साथ वहाँ पर चली गई। जब वह वहाँ जा रही थी तो पूरे रास्ते उसे एक अजीब सा अहसास हो रहा था मानों उसका जीवन बदलने वाला हो जैसे। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उस शहर में कोई उसका इंतजार कर रहा है। उन्हीं दिनों उसकी बढ़ी बहन मुम्बई से वापस आई थी अपने कला के प्रशिक्षण को खत्म कर के और उस का छोटा भाई भी वापी से घर आया था। वह बहुत खुश थी क्योंकि सभी एक साथ थे। उसे सभी के साथ रहना बहुत पसंद था। लेकिन ऐसा नहीं था, उसकी बडी बहन बरौड़ा में रहती थी और छोटा भाई वापी में रहता था। वह अपने माँ–पिताजी के साथ अकेली रहती थी। वह अपने भाई के साथ कई प्रकार की

Indoor Game खेलना पसंद करती थी। कुछ दिनों बाद भाई–बहन वापस अपने – अपने शहर चले गए और गंगा का भी विश्वविद्यालय में दाखिला हो गया था। उसके लिए यह एक नया तर्जुबा था। पहले दिन उसके पापा उसे कॉलेज छोड़ने गए थे। वह उस दिन थोड़ी सी ड़री हुई थी। पहले ही दिन उसकी दोस्ती एक लड़के से हुई। उसने गंगा की मदद की थी, उसकी कक्षा तक पहुँचाने के लिए। धीरे–धीरे गंगा के बहुत सारे दोस्त बन गए थे। वह अपने सभी दोस्तों को बहुत प्यार करती थी सच्चे दिल से। उसके एक प्रोफेसर थे जो उसे बहुत पसंद करते थे क्योंकि गंगा बहुत ही सुदंर और संस्कारी लड़की थी। वह कभी झूठ नहीं बोलती थी। फिर एक दिन उसके प्रोफेसर ने उसे विश्वविधालय के समारोह के लिए चुन लिया। उस समय उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। जो वह बचपन से करना चाहती थी, उसे अब जाकर वह मौका मिल गया था। उसने अपने माँ–पिता को भी यह सब बताया तो उन्होने भी उसे अनुमति रदे दि थी। वहाँ पर उसके और नए दोस्त बन गऐ थे। उसे सब कुछ अच्छा लग रहा था। उसका ज्यादा से ज्यादा वक्त नाटक अभ्यास के लिए बीतने लगा। उसे यहाँ का माहौल आकर्षित भी करता था। वहीं पर उसकी दोस्ती राम नाम के लड़के से हुई । धीरे–धीरे उन दोनों की दोस्ती गहरी होने लगी। एक दिन राम ने गंगा को अपने का प्यार का इज़हार कर दिया था। वह गंगा से प्यार करने लगा था लेकिन गंगा ने तो उसे इस नजर से कभी देखा तक नहीं था। वह उसे सिर्फ अपना एक अच्छा दोस्त ही समझती थी। गंगा ने मना कर दिया और बोला, मैं वहीं शादी करूंगी जहाँ मेरा परिवार चाहेगा। अब गंगा 20 साल की हो चुकी थी। उसके मन में एक उल्लास सा हमेशा रहता था लेकिन वह समझ नहीं पाती थी कि, यह खुशी, यह एक ताजगी किस चीज की है। लेकिन उसे हर पल ऐसा एहसास होता था जैसे उसकी जिंदगी बदलने वाली है। जो लड़का उसे विश्वविद्यालय के पहले दिन मिला था उसका नाम राहुल था। वह गंगा की ही कक्षा में पड़ता था और नाटक मंडली में भी था। राहुल भी गंगा को प्यार करने लगा था, अपने मन ही मन में। राम और राहुल भी अच्छे दोस्त बन गए थे। राम का एक बड़ा भाई भी था, जो इस कॉलेज में ही पढ़ता था। वह भी इन लोगों के साथ नाटक में था। गंगा को ऐसा लगता था जैसे राम का बड़ा भाई उसे अपनी तरफ आकर्षित करता है। वह गंगा की हर आदत का ध्यान रखता था जैसे उसके मन में कुछ चल रहा है। गंगा को कभी–कभी दोनों भाईयों पर शक भी होता था कंही वह दोनों गंगा का फायदा तो नहीं उठाना चाहते हैं। फिर एक ही पल में वह खुद से सवाल करती थी तू यह सब क्या सोच रही है सभी लोग एक जैसे नहीं होते हैं। कुछ समय पश्चात् गंगा के पापा फिर गांधीनगर परिवर्तित हो गए। गंगा गांधीनगर पहली बार अकेली ही गई थी विश्वविद्यालय खत्म होने के बाद। पहले ही दिन उसकी बस राम के घर के सामने खराब हो गई।

गंगा को तब यह पता नहीं था कि, वह दूर जो घर दिखाई दे रहा है वह राम का है। फिर वह जैसे तैसे दूसरी बस पकड कर अपने घर चली गई। उसने यह सब अपनी माँ को बताया। एक दिन राम को यह पता चला कि, गंगा भी गांधीनगर में ही आ गई है। राम गंगा को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए नए–नए तरीके अपनाने लगा। जिनसे गंगा बेखबर थी। जिस बस में गंगा आया जाया करती थी राम भी उसी बस में आने लगा था। गंगा के करीब आने के लिए। गंगा आसमान में उड़ रहे पंक्षी की तरह रहती थी अपनी दुनिया में खुश। गंगा के विश्वविधालय के समारोह का समय करीब आ रहा था। इसलिए उसे अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त नाटक अभ्यास के लिए ही निकालना पड़ता था। कई बार रात को वह 12:00 बजे के बाद घर आती थी। इसलिए उसके प्रोफेसर ने उसकी जिम्मेदारी राम के बड़े भाई रमेश को सौंप दी। जब रमेश गंगा को घर छोड़ने जाता तो राम को अपने ही भाई से जलन होने लगती थी। लेकिन गंगा तो उन दोनों को सिर्फ अपना अच्छा दोस्त ही मानती थी। उसे तब यह कहाँ पता था कि दोनों भाई गंगा की तरफ आकर्षित हैं। राम अपने परिवार और खानदान वालों को किसी न किसी बहाने से कॉलेज बुलाता रहता था और गंगा से मिलवाता रहता था। जब गंगा चली जाती थी तब वह उन लोगों को यह बोलता था कि, एक दिन मैं उसे अपने जाल में फांस ही लुंगा। उस परिवार में क्या खिचड़ी पक रही थी वह उस सब से अंजान थी।

एक दिन राम ने अपने सभी दोस्तों को अपने घर बुलाया अपने जन्मदिन वाले दिन, गंगा को भी बुलाया। उस दिन गंगा बहुत सुंदर लग रही थी। उस दिन सभी लोग गंगा को देखते ही रह गए थे। उसके घरवालों ने उस दिन ठान लिया था कि अब तो इसको हम अपने ही घर लेकर आएंगे क्योंकि वह लोग अपने समाज में वाह–वाह लूटना चाहते थे कि, उनके बेटे ने पुलिस वाले की बेटी को फांसा है। उसके इस खेल मे मास्टर माइंड उसकी माँ का और उसके जीजा का था। एक दिन उनकी तैयारी विश्वविद्यालय में होने वाली थी इसलिए सभी को वहां पर वक्त से पहले पहुँचना था। सभी उस दिन सीधा अपने–अपने घरों से ही आए थे। गंगा भी वहां पर आई थी। जब वह वहाँ पहुँची तो उसके सारे दोस्त विश्वविद्यालय के बाहर ही खड़े हुए थे। गंगा ने सब को हाय हैलो बोला और उसे वहाँ पर रमेश दिखाई नहीं दिया तो उसने राम से पूछा अरे तेरा भाई कहाँ है ? तो राम अपने भाई का नाम सुन कर चिड़ गया। उसने गंगा को झूठ बोल दिया जा अंदर जा हॉल में वह तेरा इंतजार कर रहा है। गंगा उसकी बात सुनकर अंदर चली गई । वहाँ जाकर देखा तो वहाँ पर ताला लगा हुआ था। उसने वापस आकर राम से पूछा तूने झूठ क्यों बोला वहाँ तो कोई नहीं था।

तभी उसक भाई वहाँ आ गया और राम अपने भाई को वहाँ देख कर बिना कुछ बोले वहाँ से चला गया। गंगा के मन में कुछ उथल–पुथल होने होने लगी थी आखिर यह चल क्या रहा है। उसे ऐसा लग रहा था कहिं दोनो भाई मिल कर मेरे साथ कोई खेल तो नहीं खेल रहे हैं। लेकिन गंगा ने अपने दिल की बात नहीं मानी और सौचा मेरे मन में अजीब–अजीब से ख्याल क्यों आते रहते है। उनका विश्वविद्यालय के महोत्सव का दिन आ गया था। उस दिन गंगा का परिवार और राम का परिवार पहली बार मिले थे । राहुल का परिवार भी वहाँ पर आया था। गंगा ने अपने परिवार को अपने सारे दोस्तों से मिलवाया। उस दिन गंगा किसी अपसरा से कम नहीं लग रही थी। उस दिन सभी लोग गंगा को देखते ही रह गए थे। लेकिन राम की बहन ने अपने भाई राम से यह बोला कि गंगा के अंदर कोई भी खूबसूरती नहीं है। तुझे गंगा से भी कई ज्यादा सुंदर लड़कियां मिल सकती हैं। राम की बहन पूजा पहले ही दिन से गंगा से जलती थी। महोत्सव के बाद सभी अपने अपने घर वापस लौट गए। दो दिन की छुट्टी के बाद वापस गंगा कॉलेज आना शुरू हो गई। राम किसी न किसी बहाने से गंगा के घर चला जाता था। जो उसके पापा को बिल्कुल भी पसंद नहीं था। वह गंगा को हमेशा डांटते रहते थे राम की वजह से। वह उसे अपने घर भी बुलाता रहता था लेकिन गंगा कभी उसकी बातों में नहीं आती थी। राम उसकी ही बस में आता जाता था। वह हमेशा यह कोशिश करता था कि वह गंगा के ही साथ रहे। लेकिन गंगा का कभी इन सब बातों पर ध्यान ही नहीं जाता था। वह उसको और अपने सभी दोस्तों को बहुत ही सीधा और सच्चा मानती थी लेकिन ऐसा नहीं था। राम नई–नई योजनाएँ बनाता रहता था गंगा के करीब जाने के लिए और गंगा के मन में अपनी जगह बनाने के लिए। गंगा इन सब बातों से अनजान थी। राम अपनी माँ की किसी न किसी बहाने से कॉलेज बुलाता रहता था और गंगा से मिलवाता रहता था। कभी–कभी तो वह (राम की माँ) गंगा को अपने ही साथ लेकर जाती थी बस में। अब गंगा के दिमाग में धीरे–धीरे राम के परिवार की एक छवी अच्छी बनने लगी थी। राम की माँ गंगा के लिए कुछ न कुछ खाने के लिए भेजा करती थी। गंगा इस बात से बेखबर थी कि, वह लोग अब उसके ऊपर काला जादू करवा रहे हैं। क्योंकि उनके बेटे का दिल आ गया था गंगा के ऊपर। उसे यह नहीं पता था कि, वह किन लोगों के जाल में फँसने वाली है। गंगा की एक नई सहेली बनी थी जिसका नाम काजल था। यह सभी मित्र एक साथ खाते–पीते थे। एक साथ हँसी मजाक भी करते थे। राम काजल की तरफ भी आकर्षित था। काजल भी राम की तरफ आकर्षित थी। लेकिन वह दोनों शादी नहीं करना चाहते थे सिर्फ समय व्यतीत कर रहे थे एक दूसरे के साथ। एक दिन राम काजल को अपने घर लेकर गया और अपनी माँ से मिलवाया उसकी माँ को वह भी अच्छी लगी। राम की माँ जानती थी कि आज

उसका बेटा उसे घर क्यों लाया है। क्योंकि राम की माँ का चरित्र भी बिगड़ा हुआ था। फिर राम काजल को अपने कमरे में ले गया। उस दिन उन दोनों के बीच शारिरिक सम्बन्ध भी बन गए थे, जिसका उन दोनों में से किसी को भी कोई दुखः नही था। उसके बाद वह दोनों गंगा के घर गए। गंगा उन दोनों को एक साथ देख कर कुछ अचंभे में पड़ गई लेकिन फिर उसने सोचा दोस्त ही तो है। लेकिन फिर भी उसका दिल यह बोल रहा था कि यह सब कुछ दिखावा है। शायद इन दोनों के बीच कुछ और ही है। राम का चरित्र बहुत अजीब सा था। वह गंगा को आकर्षित करने के लिए काजल का इस्तेमाल भी कर रहा था और उसके साथ नाजायज सम्बन्ध भी बना भी बना रहा था। उस दिन भी राम की माँ ने गंगा के लिए सफेद रंग की मिठाई भेजी थी उस मिठाई में राम की माँ ने कुछ मिलाया हुआ था। गंगा बहुत ही भोली थी। लेकिन धीरे–धीरे गंगा के भी मन में राम के बार–बार ख्याल आना शुरू हो गए थे। गंगा समझ नहीं पा रही थी कि यह क्या हो रहा है। कल तक जो लड़की किसी भी मर्द को पसंद नहीं करती थी अब अचानक से वह राम के बारे में कैसे सोचने लगी थी। वह खुद को राम से दूर रखने की कोशिश करती थी लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाती थी और दूसरी तरफ राम गंगा के दोस्तों के साथ मौजा मस्ती भी करता था और उनकी मदद भी मांगता था गंगा तक पहुंचने के लिए। ऐसा लगता था जैसे राम के शरीर में कोई शैतान रहता है। एक दिन राम के पापा बीमार हो गए तो उसके सभी दोस्त उसके पापा को देखने अस्पताल गए। वहां गंगा भी आई उन सब के साथ। उस दिन भी राम ने काजल के साथ मिलकर एक योजना बनाई थी, गंगा के प्रति। उस दिन वह (राम) काजल के ही साथ हाथ में हाथ डाल कर घूम रहा था। गंगा को नजर अंदाज कर रहा था। सिर्फ काजल को ही मूल्य दे रहा था। जो गंगा को पसंद नही आ रहा था और उस दिन गंगा गुस्से में अपने घर वापस चली गई। वह फिर दो दिन तक विश्वविद्यालय नही गई। जब वह विश्वविद्यालय गई तो राम ने उससे कहा कि, मेरी माँ को काजल पसंद है और हम दोनों शादी करने वाले हैं तू क्या बोलती है। यह सुनकर गंगा की आखें नम हो गई शायद अब गंगा, राम को प्यार करने लगी थी। वह गंगा की सबसे बडी गलती थी। गंगा को यह आभास नहीं था किस अब उसकी जिंदगी बदलने वाली है। राम के बहुत सारी स्त्रियों के साथ नाजायज सम्बन्ध थे।जिसके बारे में राम ने गंगा को कभी भी पता नहीं चलने दिया था। वह गंगा से प्यार ही नहीं करता था गंगा को पाना ही उसका जुनून था। वह गंगा को भी काजल जैसी ही समझता था। वह गंगा की तरफ सिर्फ आकर्षित था। उसे गंगा के दिल या मन से कोई मतलब नहीं था। लेकिन गंगा को ऐसा लगता था कि वह उससे प्यार करता है। क्योंकि अब गंगा का ज्यादा से ज्यादा समय राम के साथ ही बीतने लगा था। अब गंगा भी राम को प्यार करने लगी थी। एक दिन

गंगा अपने कॉलेज में परीक्षा की पढ़ाई छत की सीढ़ियों पर बैठ कर रही थी और छुट्टी हो चुकी थी। वहाँ केवल कुछ अध्यापक और नाटक के विद्धयार्थी ही थे और वहाँ के कर्मचारी थे। गंगा जहाँ पर बैठी थी, वहाँ न जाने कहाँ से कोई बाहर का लड़का आ गया और गंगा के सामने अपने कपडे उतारने लगा। जब गंगा का उसकी तरफ ध्यान गया तो वह बहुत डर गई और उसकी आवाज डर से बंद हो गई जैसे ही गंगा वहाँ से नीचे उतरने लगी उस लड़के ने गंगा का हाथ पकड़ लिया। गंगा को ऐसा लग रहा था मानों आज उसके जीवन का आखिरी दिन है। लेकिन उसने तुरंत ही खुद को संभाला और अपना बैग ज़ोर से उस लड़के के मुँह पर दे मारा। जिससे लड़का सिड़ियों पर जा कर गिर गया । उस दिन ऐसा लगा था जैसे गंगा के रूप में देवी माँ वहाँ आ गई हों। फिर गंगा वहां से जोर से भागी चली गई एक ही साँस में। जहाँ सभी बच्चे बैठे थे गंगा वहाँ गई। श्याम ने और राहुल ने उसे पूछा क्या हुआ तू इतनी डरी हुई क्यों है। गंगा जोर–जोर से रोने लगी थी। राहुल ने उससे फिर बोला रोना बंद कर और बात बता क्या हुई। उसने फिर थोड़ा शांत होकर राहुल को सारी बात बताई। यह सुनकर राहुल गुस्से में आ गया और वह गंगा के साथ वहाँ गया लेकिन वहाँ कोई भी नहीं था। वह लोग वापस नीचे उतर आए। लेकिन उस समय राम और काजल का कोई अता–पता नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे उस दिन जो कुछ भी हुआ वहा एक सोची समझी चाल थी जब राम वापस आया तो राहूल ने उससे पूछा तू कहाँ गया था। उसने कहा मैं तो यहां पर था तुम लोगों ने ही मुझे नहीं देखा। जब राम को यह सब पता चला तो जैसे उसे कोई फरक नहीं पड़ा। यह सब देख कर गंगा को बुरा भी लगा और अजीब भी। गंगा ने उसके बारे में फिर से सोचा। यह लड़का मुझसे प्यार करता है लेकिन इसको बिल्कुल भी बुरा नही लगा मेरे लिए। गंगा ने भगवान से पूछा क्या मेरा फैसला सही है, मैं कोई गलती तो नहीं कर रही हूँ। लेकिन उस दिन उसने उसका बचपना समझ कर छोड दिया। गंगा उस दिन राम से नाराज थी, क्योंकि उस दिन गंगा को राम की बहुत जरूरत थी और वह उसके साथ नहीं था। जब गंगा अपने घर गई, उस दिन वह बहुत दुःखी थी। घर जाकर उसने अपनी माँ से ज्यादा बात नहीं की और वह चुप–चाप थी उसको (गंगा) को परेशान देख कर गंगा की माँ ने उससे पूछा क्या हुआ आज तू इतना परेशान क्यों है। उसने अपनी माँ को सारी बात बता दी। यह सुनकर उसकी माँ घबरा गई और गंगा से बोली अपना ध्यान रखा कर अकेले कहीं भी मत जाया कर। कुछ दिन बीतने के बाद एक दिन वह कॉलेज से घर आ रही थी। उस दिन उसकी बस छूट गई तो फिर उसने दूसरे रूट की बस पकड़ ली थी। अगले वाले स्टॉप से एक लड़की बस में चढ़ गई और वह गंगा के पास जाकर बैठ गई । जब वह लड़की बस स्टॉप पर खड़ी थी तब गंगा उसे देख रही थी। वह लड़की बहुत अजीब सी लग रही

थी। ऐसा लग रहा था उसे देखने के बाद जैसे कि उसे लकवा मारा हुआ है। जब वह गंगा के पास आकर बैठ गई तो वह ठीक से बोल भी नहीं पा रही थी। गंगा को बहुत अजीब सा लग रहा था। गंगा ने उस लडकी से पूछा आपको क्या हुआ है, आपको कोई तकलीफ है क्या? वह लडकी रोने लगी और हकलाते हुए बोली मरे पेट में दर्द हो रहा है। उस लडकी का मुँह टेड़ा हो रहा था, वह हकला कर बोल रह थी, उसके हाथों की अंगुलियाँ टेड़ी हो रही थी, वह ठीक से न तो बैठ पा रही थी और न ही बोल पा रही थी। वह मेरी (गंगा) की गोद में आ कर गिर गई। गंगा एक दम से डर गई गंगा ने उस लड़की को पानी दिया और बोला तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हुई है। तुम्हें कोई बीमारी है क्या? उस लड़की ने हकलाते हुए कहा मेरे पेट में बहुत तेज दर्द था तभी मेरे सामने से एक भिखारी निकला जिसको लकवा मारा हुआ था। उसे देख कर मैनें अपनी सहेली से बोला मेरे पेट में इतना दर्द हो रहा है, सहन ही नहीं हो रहा है। लगता है मैं मर ही जाऊँगी । ऐसे दर्द होने से तो यह अच्छा है कि इस आदमी जैसा होना कोई दर्द तो सहन नही करना पड़ेगा। बस उस आदमी के गुजरने के बाद से एक दम मेरी यह हालत हो गई। वह कराहते हुए बार–बार भगवान को याद कर रही थी और बोल रही थी हे भगवान मुझे मौत दे दे। गंगा उसकी बातें सुन रही थी और साथ ही साथ उसके हाथों को अपने हाथों से मालिश कर ही थी, कभी उसकी पीठ पर अपने हाथों से मालिश कर रही थी। गंगा ने उसकी सारी बातें सुनने के बाद उसे यह बोला तुम्हारी यह हालत इसलिए हुई है क्योंकि तुमने उस बूढ़े बीमार आदमी का मजाक उडाया था। तुमसे अपना दर्द सहन नहीं हो रहा था लेकिन तुम्हे उस आदमी की पीड़ा नज़र नहीं आई। वह तो अपनी तकलीफों के साथ जी रहा है। जरा सोचो तुम्हारी तकलीफ बड़ी थी या उस आदमी की! जिसकी तो कोई मदद तक नहीं करना चाहता है। वह लड़की यह सब सुन रही थी और दर्द से कराह रही थी। गंगा ने उस लड़की से यह बोला अच्छा अब सारी बातें छोड़ो और जो मैं बोलती हूँ मरे पीछे–पीछे बोलो देखो फिर मैं विश्वास दिलाती हूँ जब तक तुम्हारा घर आएगा तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी। गंगा ने बोला है भगवान मुझे मॉफ करना मैने उस बीमार आदमी का मजाक उडाया। मैं अपने सच्चे दिल से आप से माफी मांगती हूँ आज के बाद ऐसा कभी नहीं करूंगी अपने पूरे जीवन में। लेकिन मुझे माफ कर दो। मैं आपसे वादा करती हूँ। गंगा ने उस लड़की से कहा, अब तुम चिंता मत करो अब तुम ठिक हो जाओगी। गंगा उसको समझाती जा रही था और उसके हाथों को अपने हाथों से मालिश भी करती जा रही थी, वह कभी उकस सिर दबाती थी और उससे बातें कर रही थी। धीरे–धीरे वह लड़की ठीक होने लगी। बस में बैठे सभी यात्री यह सब देख रहे थे लेकिन कोई भी उसकी मदद करने नहीं आया। बस मैं बैठे–बैठे घंटा हो गया था और उस लड़की का घर आने

वाला भी था। उस लड़की ने गंगा को पूछा दीदी आप मूझे मेरे घर तक पहुँचा देंगी क्या ? गंगा ने बोला ठीक है कोई बात नहीं । गंगा ने उस लड़की का नाम पूछा। उसने अपना नाम भूभी बताया। भूभी ने गंगा से बोला दीदी आपको देर तो नहीं हो जाएगी घर पहुँचने के लिए। गंगा ने कहा नहीं होगी तुम चिंता मत करो। भूभी का स्टॉप आ गया था। गंगा भी उसके ही साथ उतर गई। गंगा ने भूभी का भी बेग पकड़ लिया । गंगा उस जगह पर पहली बार आई थी। गंगा को थोड़ा डर भी लग रहा था कहीं किसी की कोई चाल तो नही है मेरे प्रति। लेकिन फिर भी वह चलती चली जा रही थी भूभी के साथ गंगा मन ही मन भगवान को बोल रही थी हे भगवान मदद करना हमारी। भूभी बहुत खुश थी और वह गंगा को बार–बार धन्यवाद भी कर रही थी और बोल रही थी आज आप नहीं होती तो आज मेरा क्या होता। गंगा ने हंसते हुए बोला किसी न किसी को तो मदद करनी ही होती है। चलते–चलते भूती का घर भी आ गया था। भूभी गंगा को अपने घर के अंदर लेकर गई। भूभी का घर बहुत ही बड़ा था। उकसे घर में उसकी बड़ी बहन और माँ थे। भूभी ने सारी बातें अपनी माँ को बताई। लेकिन उसकी माँ को यह सब एक कहानी लग रही थी। भूभी की माँ गंगा को अजीब सी नजरों से देख रही थी। उसकी माँ ने गंगा से उसके परिवार के बारे में पूछा और बोला तुम भूभी को कब से जानती हो। गंगा ने बोला आज ही तो हम मिले हैं पहली बार! भूभी गंगा के लिए कुछ खाने के लिए लेकर आई, परन्तु गंगा को उसके घर वालों का व्यवहार बहुत अजीब सा लग रहा था। काफी देर तक गंगा उसके घर बेठी बातें करती रही फिर उसने भूभी को बोला मुझे देर हो रही है। अब मुझे चलना चाहिए। बातों–बातों में गंगा ने भूभी को बताया कि, वह एक लड़के को प्यार करती है और उसका घर भी यहीं पर थोडी दूरी पर है। भूभी ने एक दम से गंगा को कहा दीदी आप उस लड़के से शादी मत करना। गंगा को बहुत अटपटा लगा यह सुनकर लेकिन उसने भूभी की बात को मन पर नहीं लगाया। गंगा ने भूभी को पूछा क्या तुम उन लोगों को जानती हो। भूभी ने कहा नहीं लेकिन उस परिवार के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना है। गंगा को कुछ शंका हुई इस रिश्ते को लेकर। गंगा ने भूभी से फिर पूछा आप उन लोगों के बारे में क्या जानती हो लेकिन भूभी थोड़ा सा सहम गई और कहा दीदी अगर आप उससे शादी करना चाहती हो तो आपकी इच्छा लेकिन आपका यह फैसला दर्दनाक हो सकता है। और भूभी ने कुछ भी नहीं कहा। गंगा को थोड़ा शक हुआ लेकिन सब कुछ भगवान पर छोड़ दिया गंगा ने। फिर वह अपने घर चली गई। घर पहुँच कर गंगा ने अपनी माँ को सारी बाते बताई। उसकी माँ उसकी सरी बातें ध्यान से सुन रही थीं। उसकी माँ ने उसे शाबासी दी और कहा अच्छा हुआ आज तू उसके साथ थी। अगर आज तू वहाँ नहीं होती तो आज उस लड़की का क्या होता। गंगा ने अपनी माँ को कहा, आज तक मैंने भगवान के बारे में

सिर्फ सुना था लेकिन आज उसकी शक्ति को मैनें देख भी लिया। उस दिन गंगा बहुत खुश थी। उसे एक अजीब सी खुशी हो रही थी उस दिन। कुछ दिनों तक भूभी का फोन गंगा को आता रहा और वह उससे काफी देर तक बातें करती थी। भूभी को गंगा से बात करना बहुत अच्छा लगता था। धीरे–धीरे भूभी के फोन आना बंद हो गए। गंगा ने उसे बहुत ढूंढने की कोशिश की लेकिन वह नहीं मिली। गंगा ने फिर उसकी आस छोड़ दी। समय निकलता गया अब गंगा राम को बहुत प्यार करने लगी थी। उसे राम के ऊपर पूरा विश्वास हो चुका था। उसे ऐसा लगता था कि राम ही वह लड़का है जो उसका जीवन साथी बनने के लायक है। राम गंगा के सामने बहुत ही शरीफ बनने का नाटक करता था। जिस पर गंगा अंधा विश्वास करती थी। लेकिन राम और राम का परिवार उसके विश्वास के लायक नहीं था। राम गंगा का ध्यान रखता था। उसके सामने अपने परिवार को बहुत ही संस्कारी बताता था। बहुत ही आदर्शवादी बातें करता था और वह गंगा से यह बोलता था कि, वह औरतों की बहुत इज्जत करता है। वह यह कहता था कि, वह उन लोगों से नफरत करता है जो लोग औरतों पर जुर्म करते हैं और उन्हें धोखा देते हैं। गंगा उसकी बातों को सुन कर उसकी तरफ और भी ज्यादा प्रभावित होती चली जा रही थी। गंगा मन ही मन भगवान् को धन्यवाद करती थी कि, उसे एक सच्चा और संस्कारी लड़का मिला है। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि, यह सब बातें एक दिखावा था उसे अपने जाल में फंसाने के लिए। राम गंगा को किसी न किसी बहाने से अपन घर बुलाता था क्योंकि, एक काला जादू करने वाले तांत्रिक ने ऐसा बोला था राम की माँ को तांत्रिक ने यह बोला था कि, जितना हो सके उसे अपने घर बुला कर अपने वश में रखो तो जो भी तुम चाहते हो वह सब कुछ तुम्हें मिल जाएगा। गंगा किस दल–दल में फंसती चली जा रही थी उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था। वह तो अब इस परिवार को अपना ही परिवार मानने लगी थी। गंगा बहुत ही भोली थी। उसे तो बुराई में भी अच्छाई नजर आती थी। गंगा के घरवालों को राम और गंगा का रिश्ता पसंद नहीं था। उनका कहना था कि राम का परिवार हमारे घर के लायक नहीं है। दोस्ती के लायक यह लोग ठीक हैं लेकिन रिश्ते के लिए नहीं। लेकिन गंगा के आँखों पर तो राम और उसके परिवार के नाम की पट्टी बंधी हुई थी। इसलिए उसे अपने घरवालों की बातें समझ ही नहीं आती थीं। राम गंगा के घर किसी न किसी बहाने से आ ही जाता था। गंगा को अच्छा भी लगता था और डर भी लगता था अपने परिवार वालों से। अब गंगा का परिवार उस पर नज़र रखने लगा था लेकिन फिर भी उन्हें गंगा पर भरोसा था कि, वह कभी कोई गलत काम नही गरेगी और अपनी मर्यादा में ही रहेगी। जब यह बात गंगा के भाई–बहन को पता चली तो वह लोग बहुत नाराज हुए लेकिन किसी ने भी उससे बात करना जरूरी नहीं समझा। वह दोनों अचानक से ही

अपने घर आ गए थे। उस समय गंगा कॉलेज में ही थी। उस दिन गंगा का कॉलेज में एक प्रदर्शन था इसलिए वह उस दिन रात को 12:30 बजे घर पहुँची। जब वह घर आई तो उसने देखा मुख्य हाल में उसके भाई–बहन और माँ–पिताजी बैठे उसके आने का इंतजार कर रहे थे। जैसे ही उसने उन्हें देखा वह खुशी के मारे पागल हो गई थी और जाकर अपने भाई – बहन से लिपट गई। परन्तु उसके भाई–बहन के चहरे पर वह खुशी नहीं थी। उसे उनकी नजरों में अपने लिए नाराज़गी नजर आई। परंतु तब तक उसे यह नहीं पता था कि, उसकी माँ ने उन्हें यह सब पहले ही फोन कर बता दिया था। उसकी माँ ने ही उन्हें कहा था कि तुम दोनों यहाँ पर आकर उसे समझाना। गंगा इन सब बातों से अंजान थी। तभी उसके पिताजी ने गुस्से से पूछा इतना देर से क्यों आई है। यह वक्त है तेरा घर आने का। समाज क्या सोचेगा। उसके पिता उसे डांट ही रहे थे तभी राम घर के अंदर आया। उसे देख कर सभी को बहुत बुरा लगा और वह एक–दूसरे की ओर देखने लगे। तभी गंगा ने राम को अपने भाई–बहन से मिलवाया यह बोलकर कि, यह मेरा दोस्त है। उसकी यह बात सुनकर उसके भाई–बहन वहाँ से चले गए। यह देखकर गंगा को बहुत बुरा लगा। गंगा ने राम से मॉफी मांगी अपने परिवार के इस व्यवहार के लिए। राम को बहुत बुरा लगा और उसी पल उसने उन लोगों से बदला लेने का ठान लिया। उसने मन ही मन यह सोचा अब मैं जब तक इन लोगों को अपने पैरों में गिरा नहीं लुंगा मुझे चैन नहीं आएगा। परंतु उसने गंगा को कुछ भी महसूस नहीं होने दिया अपने बारे में। उस दिन उसने यह निश्चय कर लिया था कि, अब मैं इन लोगों का जीवन नर्क बना दूँगा लेकिन अपने तरीके से धीरे–धीरे। राम ने गंगा को बड़ी ही मासूमियत के साथ बोला अच्छा मैं चलता हूँ आप अपना ध्यान रखना, हम कल मिलेंगें। गंगा उदासी के साथ अंदर आई और देखा वहाँ कोई भी नहीं था। सभी लोग अपने–अपने कमरों में जाकर सो चुके थे। गंगा फिर भी अपने भाई–बहन के कमरों में उनसे बात करने आई लेकिन किसी ने भी उससे बात नहीं की और कहा अभी हमें सोना है कल बात करेगें हम। अगले दिन गंगा का भाई राजीव उठकर आया और अपनी माँ को पूछा गंगा कहाँ है। उसकी माँ ने कहा वह तो सुबह ही कॉलेज चली गई थी। राजीव ने गुस्से से बोला आपने उसे जाने क्यों दिया। आपको क्या मालूम नहीं है वह क्या कर रही है। माँ ने कहा मुझे पता है लेकिन मुझे उस पर भरोसा है वह कभी भी कोई गलत काम नहीं करेगी और हमें उसके साथ कोई सख्ती नहीं बरतनी चाहिए। धीरे–धीरे हम उसे उस लड़के से दूर कर देंगे राजीव चिल्लाता हुआ वहाँ से निकल गया आज आने दो उसे मैं अच्छे से खबर लूंगा उसकी। तभी गंगा की बहन बाहर आई और उसने भी यही सवाल किया अपनी माँ से। लेकिन उसने कुछ भी नहीं बोला अपनी माँ से । उस दिन जब गंगा वापस घर आई तो सभी अपने–अपने काम कर रहे थे।

थोड़ा समय बीतने के बाद राजीव ने गंगा को अपने कमरे में बुलाया तो गंगा वहाँ चली गयी और उसने अपने छोटे भाई राजीव से पूछा कैसा है तू भाई। राजीव ने फीका सा जवाब दिया हम तो ठीक हैं लेकिन लगता है तू ठीक नहीं है। गंगा को उसका व्यवहार अटपटा लगा। हमेशा की तरह गंगा ने उसको छोटा समझ कर मॉफ कर दिया। तभी वहाँ उसकी माँ और बहन भी आ गई। गंगा को कुछ–कुछ समझ में आ रहा था उनके व्यवहार से लेकिन फिर भी उसे यह यकीन नहीं था कि, उसके भाई–बहन ऐसा भी कर सकते हैं। राजीव ने गंगा से राम के बारे में पूछना शुरू किया ही था कि, अचानक फोन की घंटी बजी और गंगा भागती हुई बाहर गई और उसने फोन को उठाया। फोन पर राम था गंगा राम के साथ बात कर ही रही थी कि अचानक राजीव वहाँ आ गया। गंगा ने राजीव की तरफ हँसते हुए देखा और उसने इशारे में बोला मैं अभी पाँच मिनट में आती हूँ। लेकिन राजीव वहीं खड़ा रहा। गंगा ने उसे फिर से देखा लेकिन राजीव वहाँ से नहीं गया और बोला फोन बंद कर अभी के अभी। गंगा को उसका व्यवहार अच्छा नहीं लगा। गंगा ने फोन पर हाथ रखा और थोड़ा तेजी से बोला तू अंदर जा मैं अभी आती हूँ । राजीव ने गुस्से से गंगा के हाथ से फोन छीन लिया और फोन को काट दिया। क्योंकि गंगा राजीव की बड़ी बहन थी इसलिए राजीव का यह व्यवहार उसे अपनी बेइजति महसूस हुई। गंगा ने डॉटते हुए राजीव को बोला यह क्या बदमिजी है। गंगा ने फिर से फोन उठाया और फोन डायल करने ही लगी थी कि अचानक राजीव ने फोन को छीन कर जमीन पर दे मारा और गंगा को दो थप्पड़ लगा दिये फिर वह उसको घसीटते हुए उसके कमरे तक ले गया। यह सब गंगा की माँ और बहन देख रही थी। फिर भी किसी ने राजीव को नहीं रोका। राजीव उसके साथ ऐसा व्यवहार कर रहा था मानो वह गंगा से 20–25 साल बड़ा भाई है। लेकिन वह तो गंगा से दो साल छोटा था। तभी उसकी माँ वहाँ आकर राजीव को अपने साथ ले गई। गंगा अपने कमरे में राती रही लेकिन उसके पास कोई नहीं आया। इन सब बातों से गां बहुत दुःखी थी। ऐसा व्यवहार तो उसके माँ–पिता जी ने भी नहीं किया था जैसा व्यवहार उसका छोटा भाई कर रहा था और उसकी माँ खडे–खड़े यह सब देख रह थी। उसे तो अपने बेटे को बड़े और छोटे का फर्क सिखाना चाहिए था। बचपन से ही गंगा के साथ ऐसा व्यवहार होता चला आया था। हमेशा गंगा को ही परीक्षाएँ देनी पड़ती थीं। जब भी वह कोई नादानी या गलती करती थी तो उसकी माँ बड़ी बेटी से उसके हाथ–पैर बंधवा देती थी और छोटे बेटे से थप्पड़ लगवाती थी। आज गंगा के मन में वह सारी यादें ताजी हो रही थीं। गंगा अपने परिवार को बहुत प्यार करती थी इसी लिए वह हर बात को बहुत मामूली समझती थी। लेकिन ऐसा नहीं था कि उसे यह सब बुरा नहीं लगता था। गंगा बचपन से ही चुलबुली थी इसलिए हर गलती का जिम्मेदार उसी को ठहरा दिया

जाता था। बचपन से ही गंगा अपने भाई की रक्षा करती आई थी लोगों से। कितनी बार वह अपने भाई के लिए अपने से भी बहुत बड़े इंसान से उलझ जाती थी। वह यह सोचती तक नहीं थी कि, इसका अंजाम क्या होगा। राजीव को जितना प्यार गंगा करती थी इतना प्यार उसकी बड़ी बहन पूनम भी नहीं करती थी। लेकिन आज राजीव सब कुछ भूल चुका है। आज उसे सिर्फ अपन गुस्सा और जवानी का जोश ही याद रह गया है। गंगा के मन में यह सब चल रहा था और वह रो रही थी। उसने उस दिन खाना तक नहीं खाया था। लेकिन राजीव को इन बातों का कोई अफसोस नहीं था। रात को उसकी माँ गंगा के कमरे में आई गंगा को बुलाने तब गंगा ने अपनी माँ से ठीक तरह से बात नहीं की और बोला आपको अब समय मिला है मेरे पास आने के लिए। गंगा ने अपनी माँ से सवाल किया आज जो भी कुछ राजीव ने किया क्या वह ठीक था। आपने उसे बहुत छूट दे रखी है। उसकी माँ ने भी पलट कर उसे जवाब दिया तो क्या तू ठीक कर रही है। गंगा ने अपनी माँ को कहा क्र्या प्यार करना गुनाह है? अभी तो ठीक से आप लोग राम और उसके परिवार को जानते तक नहीं हो। क्या राजीव मेरे से पहले बात नहीं कर सकता था। वह क्या दिखाना चाहता था उसकी माँ राजीव की गलतियों पर पर्दा डालना चाहती थी। गंगा ने माँ को बोला आज तो मैंने उसे छोटा समझ कर छोड़ दिया लेकिन यदि आगे से ऐसा हुआ तो शायद मैं उसे मॉफ नहीं कर पाऊँगी। गंगा की माँ ने एकदम से बोला लेकिन उसने तेरे से मॉफी कब मांगी है जो तू उसे माफ करते और न करते की बातें कर रही है। इनता बोलकर गंगा की माँ वहाँ से चली गई। आज उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो आज वह संसार में अकेले खड़ी है। उसका आज कोई सहारा नहीं है। परंतु उसे इस बबात का भी दुःख था कि जब पूनम दीदी की किसी से प्रेम हुआ था या राजीव को किसी से प्रेम हुआ था। उस समय मैंने उन दोनों पर भरोसा किया था और उन्हें सहारा भी किया था। मैंने उन दोनों की बातों को माँ या पिताजी के सामने कभी भी उजागर नहीं होने दिया था। यह सब कुछ गंगा के मन में चल रहा था। जब तक राजीव घर पर रहा उसने गंगा से कोई बात नहीं की। पूनम अभी भी वहाँ पर ही थी। पूनम ने भी गंगा से राम के बारे में सब कुछ पूछा। गंगा ने सब कुछ राम के बारे में पूनम को बता भी दिया। गंगा ने कहा दीदी राम का परिवार बहुत खुले विचारों वाले हैं और राम औरतों की बहुत इज्जत करता है। वह मुझे भी बहुत प्यार करता है। पूनम ने गंगा को कहा तू इतना यकीन के साथ कैसे बोल सकती है उस लड़के के बारे में । तू क्या जानती है उसके बारे में। गंगा ने पूनम से कहा मैं उस पर बहुत भरोसा करती हूँ। यदि हम किसी पर भरोसा नहीं करेंगे तो हम अपना रिश्ता मजबूत कैसे करेंगे। अगर हम किसी को मौका ही नहीं देंगे खुद को साबित करने का तो कोई भी इंसान खुद को सच्चा और सही साबित कैसे करेगा। और वैसे भी

दीदी प्रेम के बदले हमें प्रेम ही मिलता है, धोखा नहीं । पूनम ने गंगा से कहा राम के चेहरे से शराफत नहीं झलकती है उसे देखने के बाद मुझे उसके चेहरे के पीछे कोई शैतानी दिमाग दिखाई दे रहा था। तू इतनी सुंदर है और वह लड़का तेरे पास खड़े रहने के लायक भी नहीं है। तू दूध की तरह सफेद है और वह काला है। वह हमारे परिवार में बिल्कुल भी नहीं मिलता है। गंगा ने पूनम से कहा क्या काले लोग प्यार नहीं करते या उनके पास दिल और दिमाग नहीं होता है। इस बात की क्या गेरंटी है कि जो रिश्ता हमारे मम्मी–पापा हमारे लिए लांएगे वह सही होगा यह वह लड़का बहुत ही साफ दिल और मन का होगा। पूनम गंगा को बहुत देर समझाती रही लेकिन गंगा ने एक ही बात अपनी बहन को बोली कि, मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है वह मेरे साथ कुछ भी गलत नहीं होने देंगे। पूनम का दिमाग खराब हो चुका था। आखिर में वह वहाँ से उठकर चली गई। अब गंगा के मन में उथल–पुथल होने लगी थी। अगर दीदी की बोली हुई बातें सच हो गईं तो मैं क्या करूंगी। अब गंगा को राम की सी बातें याद आ रही थीं कि वह मेरे साथ कैसे बातें करता है या उकस परिवार मुझे किस नजर से देखता है या राम ने मुझे पने के लिए काजल का सहारा लिया था या फिर उसका बड़ा भाई भी मुझपर अपनी निगाहें रखता था। यह सारी बातें गंगा को परेशान कर रही थी। गंगा को भूभी की बातें भी याद आ रही थी कहिं राम का भूभी से कोई रिश्ता तो नहीं है। इन्हीं सारी बातों को सोचते हुऐ गंगा की आंखे कब लग गई उसे पता भी नहीं चला। फिर सुबह हो गई और वह रोज की तरह ही कॉलेज चली गई लेकिन उस दिन वह बहुत ही शांत थी। सभी ने उससे पूछा क्या हुआ तुझे। गंगा ने किसी को कुछ भी नहीं बताया। लेकिन उसे राम का व्यवहार जरूर परेशान कर रहा था। अभी तक राम उससे मिलने नहीं आया था। नहीं आया था। जब गंगा ऊपर ग्रन्थालय में पड़ने गई तो उसने देखा राम काजल के साथ एक कोने में बेठा हुआ था उकसा हाथ पकड़ कर। गंगा को यह सब देख कर बहुत आशचर्य हो रहा था कि कल रात को इतनी बड़ी बात हो गई है और यह तो आराम से यहाँ पर बैठा हुआ है। वह भी मेरी सहेली के साथ। गंगा के दिमाग में उसकी बहन की बातें घूमने लगीं और वह थोड़ी डर गई यदि मेरा फैसला गलत हुआ तो क्या होगा मेरा और मेरी इज्जत का। गंगा के मन में सवाल जवाब चलना शुरू हो गए थे। गंगा बहुत ही आदर्शवादी लड़की थी यदि वह किसी को कोई वचन देती थी तो वह उसे पूरा करती थी। चाहें फिर उस वचन को निभाने के लिए उसे अपने प्राण ही क्यों न देने पढ़े। गंगा कमरे के दरवाजे पर ही खडी–खड़ी यह सरी बातें सोच रही थी। तभी पीछे से किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला क्या हुआ गंगा तुम ऐसे क्यों खड़ी हो। उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसक अध्यापिका थी जो गंगा को बहुत पसंद करती थी लेकिन उन्हें राम बिल्कुल भी पसंद नहीं था। गंगा ने हँसते हुए अपनी

अध्यापिका जी को बोला कुछ नहीं मेडम बस परीक्षाओं के बरे में सोच रही थी। लेकिन उसकी अध्यापिका ने उसका चहरा पढ़ लिया था। उन्होंने उसे अच्छा बेटा बोला और अंदर की ओर चली गई। गंगा ने भी अंदर की और प्रवेश किया। गंगा को अंदर आते देख राम और काजल सहम गए थे। उन दोनों को यह नहीं मालूम था कि गंगा ने उन्हें पहले ही देख लिया था लेकिन उसने उन दोनों को अनदेखा कर दिया था। वह वहाँ से उलटे पैर वापस चली गई। पीछे से राम ने गंगा को आवाज लगाई तो गंगा रूक गई। राम भागता हुआ गंगा के पास आ गया और भोले पन से पूछा आज तू सुबह से कहाँ थी। मैं तुझे कब से तेरा इंतजार कर रहा था। गंगा ने पुछा कहाँ पर इंतजार कर रहे थे। राम थोड़ा सा सहम गया। राम गंगा से नजरे चुरा कर बोला आज तो मेरा एक भी लेच्चर फ्रि नहीं था। गंगा ने राम की बातें काटते हुए पूछा, आज तुम काजल से मिले थे क्या? राम ने गंगा से झूठ बोल दिया, आज तो वो सुबह से सही नही मिली। गंगा की आँखे नम थीं उसने एक नज़र राम को देखा और वहाँ से तेज़ी से चली गई। गंगा के मन में बार–बार यह ख्याल आ रहा था कि मैं अब राम के साथ आगे बढ़ चुकी हूँ, उसे मैं वादा दे चुकी हूँ। अब मैं अपना वादा कैसे तोड़ूगीं। अब मैं पीछे नहीं हट सकती हूँ लेकिन मुझे ऐसा क्यों लग रहा है जैसे कि, राम मुझे धोखा दे रहा है। जैसा वह दिखाई देता है वैसा वह है नहीं। दूसरे ही पल उसने खुद को समझाया ऐसा कुछ नहीं होगा। वह सिर्फ मुझे प्यार करता है। काजल तो उसकी सिर्फ एक दोस्त ही तो है। जिस वक्त गंगा कॉलेज में थी उस समय घर पर गंगा की माँ पूनम को बोल रही थी कि, पता नहीं यह लड़की उन लोगों के चक्कर में कैसे आ गई। इसको तो ऐसे लोग और ऐसा रहन–सहन कभी भी पसंद नहीं था। वह तो हमेशा से सपनों के राजकुमार का इंतजार किया करती थी। वह अपने सपनों में हमेशा बड़े–बड़े महलों को देखा करती थी। उसका रहन सहन भी राजकुमारीयों जैसा ही रहा है। हर समय उसे सबसे सुंदर और सबसे अलग दिखाई देने वाली वस्तुएँ ही पसंद आती थी। गंगा तो कभी भी लड़को या प्यार की बातें नहीं किया करती थी लेकिन अब इसको क्या हो गया है। अब तो यह लड़की उस लड़के और उसके परिवार के खिलाफ कुछ भी सुनने की तैयारी नहीं है। पूनम ने अपनी माँ को बोला अभी आप सारी बातें छोडो और एक काम करो अब इसकी जल्दी से जल्दी इसकी शादी कर दो। उसकी माँ ने दुःखी आवाज के साथ कहा हम ऐसा भी तो नहीं कर सकते हैं। जब तक तेरी शादी नहीं होगी हम उसके बारे में कैसे सोच सकते हैं। हम समाज को क्या जवाब देगें। लोग तो तरह–तरह की बातें ही करते हैं। पूनम ने अपनी माँ को कहा लेकिन उसके कदम भी तो बहक रहे हैं। हमें उसके बारे में भी तो सोचना है। आप मेरी चिंता मत करो, मेरे ऊपर कोई भी अंगूली नहीं उठाएगा। आपको इसके ऊपर नज़र रखने की जरूरत है। उसकी माँ पूनम से कहा मग

रवह तो शादी के लिए नहीं मानेगी। आप रिश्ते तो ढँढना शुरू करो। जब कोई रिश्ता आपके सामने होगा तो उसको हम मना ही लेगें। गंगा की माँ ने पूनम को कहा हम भी चाहते है कि, वह उस लड़के का ख्याल अपने मन से निकाल दे। परंतु हम उसकी शादी किसी जोर जबरदस्ती से नहीं करना चाहते हैं। हमें उस पर भरोसा है। वह अपनी सीमाएँ नहीं लांगेगी। पूनम एक दम से बोली मम्मी इतनी भी भरोसा मत करो उस पर। वह तो हर किसी पर भरोसा करती है। उसे तो कोई भी बेवकूफ बना सकता है। उसे कभी कही–गलत का फर्क पता चला है क्या? हम उसे बचपन से जानते हैं वह तो हर इंसान को प्यार करती है। उसे सही गतल की परख नहीं है। उसकी माँ पूनम से बोली मुझे गंगा पर भरोसा है शायद हमें उसे वक्त देना चाहिए। फिर भी इस बारे में मैं उससे बात करूंगी। उसकी माँ ने कहा राजीव की वजह से वैसे भी वह दुःखी है। उससे मैं खुद बात करूंगी तुम लोग बीच में मत आना। पूनम ने अपनी माँ से कहा मेरे तो रिश्ते की बात चल ही रही है। आप कहो तो मेरी नजर में एक लड़का है। उसके बारे में मैं आपको बता देती हूँ। आगे का काम आप देख लेना मैं एक हफते बाद वैसे भी वापस जाने वाली हूँ। आप कहो तो मैं उस लड़के से बात चलाऊँगी गंगा की। उसकी माँ ने उस लड़के के बारे में पूछा वह क्या करता है। उसके परिवार के बारे में, उसक क्या नाम है और तुम्हे उसके बारे में कैसे पता चला है। पूनम ने अपने होने वाले पति का नाम लेते हुए कहा कि, वह उनका दोस्त है और परिवार भी अच्छा है। उसका नाम रमन है। वह ओटोमोबाइल कंपनी में नौकरी करता है। और उसके पापा भी रिटायर्ड आई.ए.एस. ऑफीसर हैं। इतना सुनकर उसकी माँ को सब ठीक लगा। लेकिन अभी गंगा को इन सब बातों का पता नहीं चलना चाहिए। मैं अच्छा सा समय देख कर उससे बात कर लूंगी। पहले तो हमें तेरे ससुराल वालों से बात आगे बढ़ानी है। गंगा अपने कार्यक्रम की तैयारी कर रही थी। वह कॉलेज में अपने डायलोक याद कर रही थी। हॉल में बैठ कर। लेकिन आज उसका मन नहीं लग रहा था। फिर भी आज राम का कुछ पता नहीं था। तभी वहाँ पर राहुल आया। गंगा ने उससे भी पूछा राम कहाँ है। राहुल ने जवाब दिया तुझे नहीं पता आज उसकी मम्मी आई थी और वह उनके साथ घर चला गया। काजल भी उसके साथ गई है। इतना कह कर राहुल वहाँ से चला गया। यह सुनकर गंगा स्तबध हो गई और वही बाहर की सिड़ियों पर बैठ गई अपना सिर पकड़ कर । उसकी आँखें बंद थी और अचानक से उसके आंसू बहने लगे। जैसे उसका दिमाग बंद ही हो गया हो। उसका राम पर से भरोसा कम होने लगा था राम के व्यवाहार से। वह सोच रही थी कि, कहीं यह लोग मेरे साथ कोई खेल तो नहीं खेल रह हैं। वह खुद को मनाने की कोशिश कर रही थी। अचानक से गंगा को अपनी बंद आँखों में कुछ दिखाई देने लगा था। गंगा ने अपनी माँ और बहन को देखा। उसे वह सारी बातें सुनाई और

दिखाई देने लगीं थी जो आज उन दोनों ने की थीं। गंगा ने एकदम से अपनी आंखे खोल दीं। उसका दिल जोर से धड़क रहा था। उसे वह सरी बातें मालूम चल गई थीं जो उसकी माँ या बहनउससे छुपाना चाहते थे। वह फिर से आँखे बंद कर के बैठ गई इस बार उसे राम का घर दिखई देने लगा था। उसने देखा कि राम उसकी माँ और काजल घर के अंदर प्रवेश करते हैं। जाकर वह लोग सोफे पर बैठते हैं। काजल और राम एक ही सोफे पर बैठते हैं। दोनों एक दूसरे की आँखों में देख रहे थे और तभी राम की माँ उन दोनो के लिए चाय नाशता लेकर आती है। थोड़ी देर के बाद राम और काजल ऊपर वाले कमरे में चले जाते है। ''गंगा ने देखा'' वह तो राम का कमरा था। फिर उन दोनों के बीच वह सब कुछ होता है जो शादी के बाद पति–पत्नि के बीच होता है। राम काजल को बोल रहा था आज तो हम बाल–बाल बच गए। एक दम से गंगा पसीना–पसीना हो गई थी। उसने आँखे खोली और सोचा यह क्या देखा आज मैंने। उसने बोला नहीं–नहीं ऐसा कुछ नहीं होगा मैं परेशान हूँ इसलिए यह सब मुझे दिखाई दे रहा है। गंगा को इस बात का आभास नहीं था कि उसके ऊपर एक दैविय शक्ति काम करती है। उसके अंदर देवी माँ वास करती है इसलिए उसे अपनी आखों में सब कुछ दिखाई देता है। उसे समय से पहले जो घटने वाला है वह सब कुछ अपने सपनों में या फिर जागते हुए अपनी बंद आँखों में दिखाई दे जाता है। गंगा की यह बात उसके परिवार को मालूम है कि गंगा के सपने सच हो जाते हैं और वह सब कुछ अपनी आँखों में पहले ही देख लेती है। लेकिन गंगा सब कुछ देखने के बाद भी उन बातों पर विश्वास नहीं कर पाती थी। उसके बाद गंगा वहाँ से उठ कर चली गई और अपने घर की बस पकड़ ली। रास्ते में राम का घर पड़ता था। वह उसे निहारती हुई निकल गई। जब वह घर पहुँची तो सभी का व्यवहार काफी सीधा था। सभी ने उससे अच्छी तरह से बात की थी उस दिन। उसकी माँ उसका चेहरा पढ़ने की कोशिश कर रही थी। कुछ दिनों में उसकी बहन भी वापस चली गई। गंगा ने अगले दिन राम को पूछा उस दिन तुम घर क्यों चले गए थे। राम ने उसे हँसके टाल दिया अरे मेरे रिश्तेदार आ गए थे और मम्मी भी अकेली थी घर पर। उसने (गंगा ने) पूछा कल काजल तुम्हारे घर आई थी क्या? राम ने उसे झूठ बोल दिया नहीं तो। लेकिन तुम क्यों पूछ रही हो ऐसा राम ने बोला गंगा से। गंगा ने राम को सारी बातें बता दीं। राम ने उसे बोला तुम पागल हो क्या। ऐसा कभी होता है क्या जो तुम बोल रही हो। इस बात पर दोनों में बहुत झगड़ा हुआ। उस दिन पहली बार गंगा ने उसका यह रूप देखा था। गंगा वहाँ से जाने ही लगी थी तभी राम ने रोने धोने का नाटक कर दिया। उसने गंगा के पैर पकड़ लिए और मॉफी माँगने लगा। गंगा ने उसे बोला अगर तुम ऐसे ही लड़ाईयाँ करते हो तो शायद हमें अलग हो जाना चाहिए। गंगा ने राम को कहा मुझे तुम्हारे बारे में फिर से

सोचना पड़ेगा। ऐसा बोलकर गंगा वहाँ से चली गई। घर पहुँची तो उसकी माँ ने बताया कि आज पूनम का फोन आया था वह तुझे बरौड़ा बुला रही है। उसकी कला प्रदर्शनी है वहाँ पर। गंगा वहाँ पर जाने को तैयार हो गई थी। लेकिन अब गंगा बहुत बदल चुकी थी। अ बवह पहले की तरह खुश नहीं रहती थी। गंगा ने कभी भी अपने दर्द को चेहरे पर नहीं आने दिया था। वह अपना दर्द सिर्फ अपने दिल तक ही रखती थी। गंगा बरौड़ा तक निकल गई थी।उस दिन उसने हरे रंग का सूट पहना था। गंगा उन कपडों में बहुत ही सुंदर लग रही थी। गंगा उस वक्त बीस वर्ष की थी। वह किसी मोडल से कम नहीं लगती थी। उसके इसी रूप को देखकर राम और उसके परिवार वाले उसके पिछे पड़े हुये थे। अब बरौड़ा आने वाला था लेकिन गंगा को यह मालूम नहीं था। कि उसे बरौड़ा बुलाने की असली वजह क्या थी। पूनम ने अपनी माँ को जिस लड़के के बारे में बताया था। पूनम गंगा को उस लड़के से मिलवाने वाली थी। गंगा स्टेशन पर उतरी वहाँ पूनम सामने खड़ी हुई थी। दोनो बहनों ने गले मिलकर नमस्ते बोला और दूर से एक लड़का उन्हें देख रहा था। अपने हाथों में एक गुलदस्ता लेकर मुस्कुराता हुआ वह उनके पास आया और गुलदस्ते को गंगा की तरफ बढ़ाते हुए उसने गंगा को हेलो बोला। वह गंगा की खूबसूरती को देखता ही रह गया। गंगा थोड़ी अचम्भित हो गई उसे देख कर। गंगा उसे कुछ कहती उससे पहले पूनम ने गंगा को बोला यह मेरा दोस्त रमन है। यह सुनकर गंगा ने भी रमन को हेलो बोल दिया और गुलदस्ता लेते हुए उसने रमन का धन्यवाद किया। रमन को गंगा पसन्द आ गई थी। फिर वह तीनों वहाँ से सीधा होटल में खाना खाने गए। रमन गंगा के लिए किमती बटुआ लेकर आया था गुलाबी रंग का। उसने वह तोहफा गंगा को दे दिया। गंगा को लेकिन काफी अजीब सा लग रहा था। गंगा ने पूनम को पूछा दीदी, यह लड़का मुझे इतनी हमत्व क्यों दे रहा है। उसने अपनी बहन को बोला यह तो ऐसे बातें कर रहा है जैसे वह मुझसे शादी के सिलसिले में मिलने आया है। पूनम ने कहा, हम इस बारे में होस्टल जाकर बात करेंगे। गंगा भी पूनम से सहमत हो गई। तभी रमन वहाँ आकर बैठ गया। उन्होंने खाना औडर कर दिया था। रमन देखने में तो ठिक–ठाक ही था। वह गंगा को अपनी तरफ प्रभावित करने की कोशिश कर रहा था। रमन के अंदर यह उसकी खाशियत थी कि, पहली बार में ही वह लोगों पर अपनी अच्छी छाप छोड़ देता था। रमन ने गंगा से उसकी पसंद नापसंद पुछना शुरू कर दिया था। गंगा ने भी उसकी पंसद नापंसद पूछी। यह सुनकर रमन ने गंगा से कहा पहले तो मैनें सवाल किया है। गंगा ने बोला क्या फर्क पड़ता है तो आप ही मुझे बता तो अपने बारे में। रमन ने गंगा को जवाब दिया मैं पहल कभी नहीं करता हूँ। गंगा ने कहा तो फिर आज से कोशिश करो। रमन गंगा की बात सुनकर चिड़ गया था। तभी पूनम ने गंगा का हाथ दबाया और नजरों से चुप रहने को कहा। गंगा

अपनी बहन का इशारा समझ गई थी। गंगा मन ही मन यह सोच रही थी कि, इस इंसान में कितना घमन्ड भरा हुआ है। इसे तो लड़कीयों से बात करनी नहीं आती है। वह सोच रही थी की दीदी का कैसा दोस्त है। अगले दिन वह सभी कला प्रदर्शनी में गए और जब खाली होकर सभी होटल में बैठे थे तब गंगा से रमन ने सवाल किया कि आप कॉलेज के बाद क्या करना चाहती हो। गंगा ने जवाब दिया मैं मोडल बनना चाहती हूँ और बोलिबुड में काम करना चाहती हूँ। गंगा का जवाब सुनकर रमन ने एक दम से बोला तुम्हे मालूम भी है यह कितनी गलत जगह है। मोडल के नाम पर वह लोग धंधा करते हैं। वहाँ तक पहूँचना बहुत मुश्किल है। और तुम कहाँ पहुँच जाओगी तुम्हे पता भी नहीं चलेगा। गंगा को यह सब सुनना पसंद नहीं आ रहा था। गंगा ने थोड़ा चिड़ते हुए रमन से बोला आपने सिर्फ मुझसे यह पुछा था कि मैं क्या करना चाहती हूँ मैंने आपको सिर्फ अपने विचार बताये थे। आपको मैनें कला की बेइजती करने के लिए नहीं बोला कहा है। गंदगी इंसान की सोच में है न की किसी काम में। बोलीबुड में कोई गंदगी नहीं है। वहाँ सिर्फ कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी वजह से आप जैसे लोग यह सब बातें करते है। मैं इसको अपना पैशा बनाना चाहती हूँ और एक न एक दिन मैं यह सबको कर दिखाऊँगी। कृप्या आपको मेरे बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। अगर आपको उस जगह से परेशानी है तो आप टी.वी. या फिल्में क्यों देखते हो। गंगा की यह बात सुनकर रमन वहाँ से जाने लगा। माहौल थोड़ा सा गर्म हो गया था उस समय। पूनम रमन के पास गई और उसे समझा कर ले आई। गंगा को रमन के बारे में पता नहीं था कि यह यहाँ आकर मुझसे ऐसे सवाल क्यों कर रहा है लेकिन उसे उसके व्यवहार से यह तो पता चल ही गया था कि मेरी माँ और बहन इस लड़के को मेरे लिये पंसद कर चुके है। थोड़ी देर तक गंगा ने रमन से कोई बात नहीं की। पूनम ने रमन को कुछ इशारा किया जो गंगा ने देख लिया था अपना खाना खाते वक्त। फिर भी वह शांत थी। उसने (रमन ने) फिर से गंगा से बोला आपको तो बुरा लग गया गंगा जी ! गंगा ने कहा नही ंतो ऐसा कुछ भी नहीं है। रमन ने गंगा से पुछा तुम्हे कैसा लड़का पसंद है शादी के लिए। गंगा ने कहा सबसे पहले तो वह समझदार होना चाहिए। पत्नि को हर बात में प्रोत्साहन दें और पत्नि को सिर का ताज समझे न की पैर की जूती। पत्नि को अपने पति से सिर्फ यही चाहिये होता है । रमन बोला, मान लो अगर तुम्हारा पति आतंकवादी हुआ तो क्या तब भी तुम उसके साथ रहोगी। गंगा ने बोला हाँ क्योंकि मेरे लिए शादी का आनन्द केवल सुख में रहना ही नहीं है मैं उसके बुरे समय में उसकी सच्चाई के साथ रहूँगी। मेरे लिए शादी में लिए हुए सात फेरों की बहुत इज्जत है और मैं कभी बिना सोचे समझे कोई काम नहीं करती हूँ और अगर गलती हो भी जाती है तो मैं उस इंसान का साथ नहीं छोड़ती । वह इंसान मेरा साथ छोड़ सकता है मैं नहीं। अब रमन के पास

कुछ बोलने को नहीं था। लेकिन मन ही मन वह गंगा को एक सपनों में रहने वाली लड़की समझ रहा था। रमन बहुत ही घमण्डी और खुद को शैर समझने वाला लड़का था। वह गंगा को बिल्कुल भी पसंद नहीं आया था। लेकिन गंगा के लिए जिन्दगी की सच्चाई ही सब कुछ थी। वह लडकी बहुत ही समर्पित रहती थी अपने कार्य को लेकर और अपने रिश्तों को लेकर। जब सभी का खाना खत्म हो गया तो वह सब बाहर खड़े थे। तभी गंगा ने रमन से बोला मेरे कॉलेज में मेरा एक दोस्त है वह बिल्कुल आपके जैसा ही दिखाई देता है। वह भी आपकी तरह ही मोटा है। बस फिर क्या था रमन को गुस्सा आया और गंगा को एक दम से बोल दिया “Just shutup and get lost you stupid girl” मुझे किसी के साथ तुलना करते तुम्हे शर्म नहीं आती । गंगा की आँखें नम हो गई उसकी यह बात सुनकर गंगा ने अपनी दीदी से बोला दीदी मुझे अब वापस जाना है। पूनम ने पुछा क्या हुआ लेकिन गंगा ने कोई जवाब नहीं दिया पूनम को। वह दोनों अपने होस्टल वापस आ गए। गंगा को रमन के ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा था। गंगा ने पूनम से कहा आपका दोस्त तो बड़ा ही बदतमीज है उसे तो लड़कियों से बात तक करनी नहीं आती है। पूनम ने पूछा क्या हुआ तू ऐसा क्यों बोल रही है गंगा ने अपनी बहन को सब बता दिया। सारी बातें सुनने के बाद पूनम ने गंगा से कहा तुझे भी तो उससे यह सब बातें नहीं बोलना चाहिए था। गंगा ने कहा क्या पहली बार में ही कोई भी लड़का ऐसा व्यवहार करता है। पूनम रमन का साथ देती हुई बोली रमन दिल का बुरा नहीं है। गंगा ने पुनम को कहा आप उसका इतना पक्ष क्यों ले रही हो। पूनम गंगा से बाली इसका जवाब मैं तुझे कल दूँगी। तभी गंगा की माँ का फोन बजा। उन्होनें बताया की हमें अगले महिने दिल्ली जाना है पूनम के ससुराल वालों से शादी की कुछ बात करनी है। गंगा खुश हो गई। पूनम ने भी अपनी माँ से बातें की। गंगा को दूर से सुनाई दे रहा था। पूनम बार–बार रमन का नाम ले रही थी। गंगा जैसे ही पास आई पूनम ने बात बदल दी और फोन रख दिया। गंगा बरौड़ा में थी लेकिन फिर भी वह राम के बारे में सोच रही थी। उसने वहाँ से राम को फोन करने की भी कोशिश की मगर कर नहीं पाई। अगले दिन उन सब का बाहर जाने का प्रोग्राम था। सभी लोग फिल्म देखने गये थे। लेकिन उस दिन रमन का व्यवहार बदला सा लग रहा था। गंगा ने भी उससे खास बात नहीं की। घुमते फिरते रात हो गई थी और गंगा पूनम के साथ होस्टल वापस आ गई। गंगा थोड़ी उदास बैठी थी। पूनम ने कहा राम के बारे में सोच रही है क्या? गंगा ने जवाब दिया – हाँ। पूनम से गंगा से पूछा तुझे रमन कैसा लगा? गंगा ने झट से बोला मतलब? पूनम ने बोला यदि तेरी शादी रमन से हो जाए तो कैसा रहेगा। गंगा ने कहा अभी मुझे समझ आया, मुझे यहाँ क्यों बुलाया था। गंगा ने कहा दीदी आप जानती हो मैं राम से प्यार करती हूँ और मैं उसी से शादी करूंगी। मैंने उसे

वादा दिया है कि, मैं तुझे कभी भी धोखा नहीं दुंगी। एक बार पहले भी वह प्यार में धोखा खा चुका है। पूनम ने कहा तुझे क्या पता वह तुझे धोखा दे रहा है। उसकी आँखों से दिखाई देता है वह तुझे प्यार नहीं करता है। वह तो सिर्फ तेरी दौलत हड़पना चाहता है। तेरे द्वारा आगे बढ़ना चाहता है। पूनम ने एक गहरी सांस लेते हुए बोला खेर सब कुछ छोडो अभी। मैं जो भी कुछ बोलूं ध्यान से सुनना। उसने (पूनम) कहा हमें रमन तेरे लिए पसंद है। तुझे रमन कैसा लगा। गंगा ने कहा मैं रमन से शादी नहीं करूंगी। मुझे यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आया। जो लड़का पहली मुलाकात में ही इतनी बदतमिजी कर सकता है आगे चलकर वह क्या नही कर सकता। पूनम ने कहा, अभी तू रमन के लायक समझदार नहीं हुई है। अभी तू बच्ची है तुझे रमन से शादी करने के लिए समझ–दार लाना जरूरी है। गंगा ने बोला मुझे समझदारी की जरूरत नहीं है बल्कि रमन को है। एक बात ओर वह जिस भी लड़की से शादी करेगा उस लड़की का जीवन बर्बाद हो जाएगा। मैं उसे नामंजूर करती हूँ उसे बोल देना। पूनम ने बोला मेरी उससे बात हुई थी वह बोल रहा था कि तेरी बहन हवा में घूमती है। उसे जिंदगी की सच्चाईयाँ पता ही नहीं है फिर भी मैं उससे शादी करने को तैयार हूँ क्योंकि वह तेरी बहन है। पूनम ने गंगा से उसे तेरे से कोई परेशानी नहीं है। गंगा ने बोला लेकिन मुझे है। पूनम उसे समझाने की बहुत कोशिश कर रही थी। पूनम ने गंगा से कहा तू यह सब इसलिए कर रही है क्योंकि इस वक्त तुझे सिर्फ वही लड़का दिखाई दे रहा है और कोई भी नहीं। गंगा बोली दीदी आप कैसी बातें कर रही हो। राम ने कभी भी मुझसे इस तरह बात नहीं की है जिस तरह रमन ने पहली बार में ही कर दी है। वैसे भी मुझे यह आभास हो रहा है कि रमन की वजह से हमारे रिश्तों में दरार पड़ने वाली है। पूनम ने कहा यह तू किस तरह की बातें कर रही है। जब तू रमन से शादी ही नहीं करेगी तो यह सब कैसे हो सकता है। थोडी देर बाद पूनम ने गंगा को कहा अच्छा आज तू यहीं पर रह कर आराम कर। मुझे स्कूल जाना है आज से बच्चों के परिक्षा शुरू हो रहे हैं। आज मेरी डयूटी 8वीं कक्षा में लगी है। पूनम इतनी बोल कर चली गई और बाहर रमन खड़ा हुआ था। पूनम रमन की कार में बैठ गई। रमन उसके जवाब का इंतजार कर रहा था। पूनम कुछ बोलती उससे पहले रमन ने बोलना शुरू कर दिया। मैं गंगा से शादी करने को तैयार हूँ क्योंकि वह तेरी बहन है। वह नासमझ जरूर है लेकिन कोई बात नहीं। रमन पूनम से बोला अगर तेरी शादी की बात कहीं और न चल रही होती तो मैं तुझसे शादी करता न कि गंगा से। पूनम का स्कूल आ गया था। पूनम ने रमन को बताया कि वह तुमसे शादी नहीं करना चाहती है। यह सुनकर रमन का अहम सातवें आसमान पर चड़ गया था। उस समय उसने कोई किसी भ तरह की बात पूनम से नहीं बोली और वह वहाँ से चला गया। पूनम जब होस्टल वापस आई तो उसने गंगा से

फिर वही बात करनी चाही लेकिन गंगा ने अपनी बहन को साफ–साफ मना कर दिया और बोला मैं ऐसे लड़कों को ठुकराती हूँ जो लोग औरतों की इज्जत नहीं करते है। पूनम ने गंगा से कहा जिन्दगी चलाने के लिए पैसों की जरूरत होती है। घर प्यार की बातों से नहीं चलता है। जब पैसे नही होते तो प्यार भी नहीं रहता है। गंगा ने हँसते हुये पूनम से कहा दीदी लेकिन पैसा ही तो सब कुछ नहीं होता है। अगर प्यार ही नहीं होगा तो पैसा और रूतबा किस काम का। रमन को देखकर मुझे लगता नहीं है कि वह इंसान अहम् को छोड़ भी सकता है। मुझे मॉफ करना दीदी यह मेरे सपनों का राजकुमार नहीं है। पूनम चिड़ते हुए बोली तो क्या राम है? गंगा ने कहा शायद हाँ। उसने मेरी आँखों के सामने कभी भी कोई ऐसा काम नहीं किया है जिस वजह से मैं उस पर शक करूँ। लेकिन मन ही मन गंगा खुद से झुझ रही थी। काश मेरी बात सच साबित हो। राम बिलकुल खरा उतरे। मेरा शक गलत साबित हो राम को लेकर। गंगा एक बात से बहुत परेशान थी कि, तो उसे अपनी आँखों में रमन और पूनम की शादी होती दिखाई दे रही थी। उसने यह बात किसी को भी नहीं बताया। अब गंगा का वापस जाने का समय हो गया था। गंगा वापस अपने घर आ चुकी थी अगले दिन कॉलेज गई तो वहाँ उसके सरे दोस्त उसे मिले। सभी ने पूछा तू कहाँ चली गई थी। उसने कहा मैं अपनी दीदी के पास गई थी। उस दिन राम कॉलेज नहीं आया था। घर जाकर उसने राम को फोन किया। दूसरे दिन जब वह दोनों मिले तो गंगा ने राम को सारी बातें बताई। राम सारी बातें चुपचाप से सुन रहा था। राम की आँखें थोड़ी सी नम थीं। गंगा ने जब उसे देखा तो उसे बहुत दुःख हुआ। राम ने कहा तू मुझे छोड़कर तो नहीं जाएगी। अगर तूने मुझे छोड़ दिया तो मैं मर जाऊँगा। गंगा ने राम की पिछली सारी गलतियों को माफ कर दिया था। राम ने गंगा को विश्वास दिला दिया था कि वह सब एक संयोग था। उसने जानबूझ कर कुछ भी नहीं किया था। गंगा ने राम का हाथ पकड़ा और वादा दिया कि वह उसे कभी भी नहीं छोडेगी। उसने कहा की अब अगर भगवान भी मुझसे आकर बोलेंगे की तू राम से शादी मत करना तो मैं उनसे भी लड़ जाऊँगी लेकिन तुम्हें मैं धोखा नहीं दूंगी। गंगा का वादा पत्थर की लकीर होती थी। वह अपना वचन समाज के विरूद्ध भी जाकर करती थी। राम ने उससे यह सवाल किया कि, अगर कल तेरे माँ–पिताजी हमारे रिश्ते को स्वीकार करने से मना करते हैं तो क्या तू मेरे साथ भागने को तैयार है। गंगा ने कहा नहीं? मैं इस तरह से कभी भी नहीं भागूंगी। मैं अपने घरवालों की रजामंदी से ही शादी करूंगी और तुमसे ही करूंगी। उसने कहा ऐसा कैसे होगा। तुम्हारे घरवाले तो मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं करते हैं। वहतो तुमहारे लिए लड़के देख रहे हैं। गंगा ने कहा वह मेरी बात जरूर मानेगें मैं उन्हें मनाऊंगी। अगर मेरी जिन्दगी के दस साल भी निकल जाते हैं उन्हें मनाने में तब भी मैं कोशिश नहीं

छोड़ूँगी। मैनें तुम्हे दिल से अपना पति मान लिया है अब मैं किसी और के बारे में सोच भी नहीं सकती हूँ। राम ने पूछा अगर तुम्हारे पिताजी ने मुझे जैल में डाल दिया तो ? गंगा ने उसे विश्वास दिलाया ऐसा कुछ नहीं होगा। मेरे घरवाले तुम्हे पसंद नहीं करते हैं लेकिन वह जल्लाद नहीं है। वह मुझे बहुत प्यार करते हैं। गंगा ने उसे बोला अच्छा अभी ज्यादा मत सोचो हमारा रिश्ता अब उसी दिन खत्म होगा जिस दिन हमारी मौत होगी। भरोसा रखो इतना कहकर गंगा उसे बाय बोल कर अपनी कक्षा में चली गई। राम उसकी बातों को सुनकर संतुष्ट हो गया था। उसे अब विश्वास हो चुका था कि, अब सारा संसार भी यहाँ का वहाँ हो जाए लेकिन गंगा मुझसे अलग नहीं हो पाएगी। दोनें अपने–अपने घर चले गए। राम अपने घर जाकर अपनी माँ से लिपट गया और बोला बिल्कुल वैसा ही हो रहा है जैसा कि हमने सोचा था। उसकी माँ ने उसे बोला। अब मेरी बात ध्यान से सुन कल उसे किसी भी बहाने से घर लेकर आना है और तुऐ कल ही इस कहानी को अंजाम देना होगा। हमारे तांत्रिक बाबा ने बोला है अगर कल दौपहर 4–5 बजे के बीच तू उसके साथ शारीरिक संबंध बनाएगा तो पूरी उम्र वह हमारे काबू में रहेगी और हम जो उससे करवाना चाहते हैं वह जल्द हो जाएगा। गंगा इन सब बातों से अनजान थी। उसने तो उस परिवार को अपना मान लिया था। गंगा जब अपने घर पहुँची उसकी माँ सोफे पर बैठी रो रही थी। उसने पूछा क्या हुआ मम्मी। आप रो क्यों रही हो ? किसी ने कुछ बोल दिया क्या ? उसने अपनी माँ को शांत किया और फिर पूछा उसकी माँ ने यह बताया कि जिस जगह हम पूनम की बातें कर रहे थे अब वहाँ पर शादी नहीं होगी पूनम की। उसने पूछा क्यों ? माँ ने बताया कि, परिवार तो अच्छा है लेकिन लड़का गलत आदतों में हैं । वह ड्रगस लेता है। तुम्हारे पापा ने उसकी तहकीकात करवाई थी। और अभी–अभी पूनम का फोन आया था उसने बताया की वह आज सुबह ही दिल्ली से आया है मुझसे मिलने। दोपहर को वह मुझसे मिलते मरे स्कूल भी आया था और बोलने लगा तुझे अपनी पवित्रता का सबूत देना होगा। पापा ने मुझे यह बताई कि यह लड़का ड्रगस लेता है। हम तेरी शादी उससे नहीं करेंगे। अब माँ को चिंता होने लगी थी कि पूनम 28 वर्ष की हो चुकी है। हम उसके लिए इतना जल्द लड़का कहाँ से लाएँगें। गंगा ने कहा मम्मी आप चिंता मत करो । भगवान जो करते हैं ठीक ही करते हैं। दीदी के लिए जल्द ही रिश्ता मिल जाएगा। लेकिन गंगा को बार–बार खुद को बोल रही थी। यह क्या हो रहा है। यह मुझे क्यों दिखाई दे रहा है। उसकी माँ ने गंगा से पूछा तुझे रमन कैसा लगा। गंगा ने एक ही जवाब दिया। जिस भी लड़की से वह शादी करेगा उस लड़की और उसका परिवार बर्बाद हो जाएगा। यह लड़का उनके रिश्ते खत्म करवा देगा। माँ ने फिर पूछा तू ऐसा क्यों बोल रही है। गंगा ने सारी बातें अपनी माँ को बात दी। उसकी बातें सुन कर उसकी माँ ने कहा लेकिन तुझे भी तो

उसे मोटा नही बोलना चाहिए था। गंगा ने तर्क करते हुए कहा मम्मी मैंने उसे मोटा नहीं कहा था। मैं तो सिर्फ बात कर रही थी। उस इंसान को यह बुरा लगा कि मैंने उसे किसी और के साथ तुलना कर लिया। माँ ने उसे समझाते हुए कहा मर्दों में तो घमण्ड होता ही है। हम औरतें ही क्यों झेले यह सब। क्या हमारे अंदर दिल नहीं होता है या फिर हम सांसे नहीं लेती हैं मर्दों को यह अधिकार किसने दिया है कि, वह हमारा शोषण करें। माँ ने कहा गंगा तू इस तरह की बातें मत किया कर। हमारे समाज में ऐसा ही होता आया है। गंगा को गुस्सा आ रहा था। उसने अपनी माँ को बोला अगर यही है समाज की सोच तो मैं बदलूंगी इस समाज की सोच उसकी माँ ने कहा तु बचपन से ही मर्दों को लेकर ऐसी बातें करती आई है। पहले वह तेरा बचपन था लेकिन अब तू बडी हो गई है। तुझे भी वही करना होगा जो सभी ने किया है। गंगा ने बोला मैं वही करूँगी जो सही होगा। मैं गलत का साथ कभी नहीं दूंगी। माँ बोली तो क्या तू समाज और उनके नियमों से लड़ाई करेगी। गंगा का जवाब हाँ था। गंगा ने अपनी माँ को कहा कुछ भी हो जाये मैं रमन जैसे लोगों के साथ व्यवहार नहीं रख सकती शादी तो बहुत दूर की बात है। अगले दिन जब गंगा कॉलेज गई तो उसके प्रोफेसर ने गंगा को अपने पास बुलाया और कहा हम एक गुजराती फिल्म बना रहें है। हमें तुम्हारा चेहरा पसंद आया है क्या तुम करोगी। गंगा ने झट से हाँ बोल दी। उसमें कुछ उसके दोस्त भी थे। इसमें राम और राहुल भी थे। उन्हें फिल्म की शूटिंग के लिए समय बताने का वादा करते हुए उनके प्रोफेसर वहाँ से चले गए। गंगा को ऐसा लग रहा था मानों अब उसके सपने पूरे हो जाएंगे ज बवह सभी घर जाने लगे तो राम ने गंगा को कहा आज मेरे दादाजी तुझसे मिलना चाहते हैं। तू मरे साथ आज घर चलना । गंगा ने पहले कुछ सोचा फिर उसने राम से माफी मांगते हुये कहा ‘‘आज तो हमारे घर महमान आ रहे हैं आज आना मुश्किल होगा’’ । वैसे भी मुझे अपनी माँ से पूछना पड़ेगा तुम्हारे घर आने के लिए। मन ही मन राम को गुस्सा आ रहा था। वह सोच रहा था इसके सामने अब मैं क्या बहाना बनाऊँ। उसने गंगा को ब्लेकमेल करना शुरू कर दिया कल ही तो तुमने मेरे साथ जीवन भर साथ निभाने का वादा दिया था तुम तो मेरे घर तक नहीं चल पा रही हो। जीवन भी कैसे चलोगी राम की बातें सुन कर गंगा ने कहा इस वक्त तो तुम्हे मेरा साथ देना है। मैं अपनी मम्मी को जवाब दुँगी। राम ने कहा कोई बहाना बना देना। गंगा ने राम को डाँटते हुये बोला तुम मुझे झुठ बोलना सिखा रहे हो, मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी। राम गँगा को मनाता जा रहा था अपना मकसद पुरा करने के लिए। राम ने गँगा से बोला प्यार में झुठ तो चलता ही है। लेकिन मैं झूठ नहीं बोलती हूँ राम गंगा ने ऊँची आवाज में बोला। राम ने बोला यह झूठ नहीं है। यह तो तालमेल होता है। गंगा ने राम को बोला अब कृप्या मुझे सिखाना बंद करो जब भी मैं तुम्हारे घर

आऊँगी मम्मी को बता कर ही आऊँगी, झूठ बोलकर नहीं। मैं कभी भी गलत का साथ नहीं देती हूँ। उस दिन राम और उसकी माँ को पता चल गया था कि, यह लड़की इतनी आसानी से हमारे वस में नहीं आने वाली है। उस दिन गंगा बच गई और अपने घर चली गई। घर जाकर गंगा ने अपनी माँ को अपने प्रोफेसर वाली बात बताई। गंगा ने अपनी माँ को पूछा मम्मी मैं सर को हाँ बोलदूँ क्या ? उसकी माँ ने उसे इजाजत दे दी। वह खुश हो गई। उसने अपनी माँ से बोला आज राम के दादाजी मुझसे मिलना चाहते हैं। माँ ने तुरंत सवाल किया क्यों? गंगा ने बोला बस ऐसे ही। माँ ने फिर से गंगा को समझा दिया हम तेरी शादी उस लड़के के साथ नहीं करेंगे। तुझे दोस्ती रखनी है तो रख ले इसके आगे कुछ नहीं होगा गंगा की माँ ने उसके कहा, तुझे अगर उसके घर जाना है तो चली जा लेकिन पापा के आने से पहले आ जाना उसने अपनी माँ को धन्यवाद किया और राम के घर अचानक से पहुँच गई। गंगा को अचानक अपने सामने खड़े देख राम थोड़ा सा चकित हो गया। गंगा घर के अंदर गई तो देखा वहाँ तो कोई भी नहीं था। उसने राम से पुछा तुम्हारे दादाजी कहाँ है ? वह थोड़ा सा सहम गया और बोला हाँ आज उनका आना टल गया है। गंगा ने राम को बोला तुम तो आज इतना मना रहे थे आज मुझे अपने घर बुलाने के लिए। तुम्हें पता है आज मुझे मम्मी से कितनी डाँट पड़ी है। तभी राम की मम्मी भी आ गई। जब गंगा वापस घर पहुँची तो उसकी मम्मी ने पूछा कैसे हैं उसके दादाजी। ''गंगा अपने मन में सोच रही थी अगर मैनें मम्मी को सब कुछ सच बता दिया तो मम्मी उसके बारे में गलत ही सोचेंगी। तभी उसकी माँ ने पूछा क्या सोच रही है। उसने अपनी माँ को सब कुछ सच–सच बता दिया। उसकी यह बात सुनकर उसकी माँ ने उसे बोला तू मेरे से अब झूठ भी बोलने लगी है। गंगा अपनी माँ को सफाई देती रह गई और उसकी माँ ने उसके चरित्र पर ही अंगुली उठा दी। यह सुनकर गंगा बहुत दुःखी हुई। उसने सोचा मैने अपनी सच्चाई अपनी मम्मी को बताई मम्मी ने मुझपर यकीन तक नहीं किया। तो क्या मुझे राम की बात मान लेनी चाहिए। अब तो गंगा को कदम–कदम पर अपनी सच्चाई के सबूत देने पड़ते थे और हर बार की तरह उसे चुप कर दिया जाता था। एक दिन उसने अपनी माँ को पूछा जब दीदी को किसी से प्यार हुआ था और जब राजीव को किसी से प्यार हुआ था, उस समय तो आपने यह व्यवहार नहीं किया था उन दोनों के साथ और आज जब मुझे प्यार हुआ है तो आप मुझ पर बंदिशे लगा रही हो ऐसा क्यों। उसकी माँ ने एक ही जवाब दिया वह दोनों समझदार हैं। गंगा तुरंत बोली आपके बोलने का मतलब है मैं समझदार नहीं हूँ। जबकी मैं आप लोगों के सामने ही रहती हूँ। मैं चाहूँ तो कुछ भी गलत कर सकती हूँ लेकिन मुझे हमेशा आप लोगों की इज्जत प्यारी होती है। लेकिन वह दोनों तो दूर रहते हैं फिर भी वह लोग आपके लिए महत्वपूर्ण हैं और मैं नहीं। जब उस दिन शाम को पापा

घर वापस आए तो वह परेशान था। पापा–मम्मी से कुछ बातें करते रहे अपने कमरे में। जब वह बाहर आए तो गंगा ने अपनी माँ को पूछा क्या हुआ पापा को। उसकी माँ ने गंगा को घूर कर देखा और खाना बनाने चली गई। गंगा अपनी पढ़ाई करने अपने कमरे में चली गइ। रात को खाने के बाद गंगा अपनी माँ के साथ बगीचे में घूम रही थी तब उसकी माँ ने गंगा से कहा राम की माँ क्या करती है तुझे पता है। गंगा ने पूछा क्या करती है मतलब? उसकी माँ ने बोला पापा के पास सेक्स रेकिड का केस आया था बहुत लंबी लिस्ट थी। उस लिस्ट में सभी के फोन नम्बर घर का पता और फोटो भी थी। गंगा ने बीच में ही बोला लेकिन यह सब आप मुझे क्यों बात रही हो। उसकी माँ बोली क्योंकि उस लिस्ट में राम की माँ का भी नाम था। यह सुनकर गंगा हक्की–बक्की रह गई। उसने कहा नहीं–नहीं ऐसा नहीं हो सकता है। उसकी माँ ने बोला पापा झूठ नहीं बोलेंगे। वह औरत सारे शहर में यह बात फैला रही है कि गंगा मेरी बहू है। वह ऐसा क्यों कर रही है। गंगा के पास माँ की बात का कोई जवाब नहीं था। उस लडके के साथ घूमना फिरना बंद कर दे हमारी समाज में बहुत इज्जत है। उन लोगों की तो कोई इज्जत ही नहीं है। कल को वह और तुझे से भी धंधा करवाएगी । गंगा के पास कोई जवाब नहीं था अपनी माँ की बातों का। अब गंगा मजबूर हो गई थी अपनी माँ की बातों को सोचने के लिए। पूरी रात गंगा करवटें बदलती रही और राम के बारे में वह सोचती रही। अगर माँ की बात सच हुई तो मेरा क्या फैसला होना चाहिए। गंगा सोचने लगी काजल बार–बार उनके घर क्यों आती है, राम ने मुझसे झूठ क्यों बोला था उस दिन, उस राम और काजल एक साथ लाइब्रेरी में क्यों बैठे थे हाथ में हाथ डाल कर, उसकी माँ बार–बार कॉलेज क्यों आती है, वह मेरे लिए कुछ न कुछ खाने को क्यों देती है यह सब बातें गंगा को पागल कीए जा रहीं थीं। दूसरे दिन जब गंगा राम को मिली तो उसने राम से पूछा तुम्हारी माँ कंही पर नौकरी करती हैं क्या राम ने पूछा तू क्यों पूछ रही है यह सब । गंगा ने बोला बस ऐसे ही क्योंकि तुम्हारी मम्मी बार–बार कॉलेज आती है और उस दिन भी जब मैं तुम्हारे घर आई थी वह कहीं बाहर से ही आई थी। राम ने उसकी बात को टाल दिया और वहां से जाने ही लगा था कि काजल सामने से आ रही थी। अब गंगा काजल से जलने लगी थी। गंगा को यकीन हो गया था कि, इन दोनों के बीच कुछ न कुछ तो चल रहा है। उसने उन दोनों पर नजर रखना शुरू कर दिया था। जब हद बढ़ गई थी तो उसने राम को खुल कर बोल ही दिया तुम दोनों के बीच क्या चल रहा है। अगर तुम्हें मेरे से कोई रिस्ता नहीं रखना है तो कोई बात नही ंहम अलग हो जाएँगें वैसे भी मेरा परिवार तुम लोगों के साथ कोई रिश्ता नहीं रखना चाहता है। तुम्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं है कि मैं इस वक्त किन तकलीफों के साथ गुजर रहीं हूँ। तुम्हारी वजह से मेरे छोटे भाई से और मेरी माँ से मुझे मार पड़

चुकी है। अभी हमारी सगाई तक नहीं हुई है फिर भी मुझे अपने घर पर तुम्हारे अधिकार के लिए लड़ना पड़ता है। और तुम यहाँ काजल के साथ गुलछररे उड़ा रहे हो। तभी वहाँ काजल भी आ गई दोनों नजरों में बातें कर रहे थे। तभी काजल ने बोला अरे गंगा यह तो सिर्फ मेरा एक अच्छा दोस्त है। हम दोनों तो भाई–बहन हैं। गंगा ने जैसे ही उसकी बात सुनी वह पानी–पानी हो गई। उसे अपनी सोच पर घिन आ रही थी। गंगा ने दोनों से माफी मांगी और बोला आज कल मैं बहुत परेशान हूँ इसलिए मुझे तुम दोनों पर शक हो गया। मुझे मॉफ कर देना मैंने इतने पवित्र रिश्ते पर अंगुलि उठाई। गंगा अपने लेक्चर में चली गई उसके जाने के बाद राम और काजल ने तालियाँ मार–मार कर गंगा की बहुत खिलियाँ उड़ाई। राम बोला अच्छा मूर्ख बनाया उसे अभी उसे मालूम नहीं है उसके साथ क्या होने वाला है। उनके प्रोफेसर ने उन्हें शूटिंग की जगह बता बता दी और बोला सुबह सात बजे आप लोगों को वहाँ पहुँचना है। गंगा उस दिन घर जल्दी पहुँच गई और अपनी माँ को बताया कल हमें सुबह सात बजे पहुँचना है। उसकी माँने पूछा राम भी जाएगा गंगा ने कहा हाँ। उसकी माँ बिना कुछ कहे वहाँ से अंदर चली गई। सुबह जाते समय गंगा रोज की ही तरह अपनी माँ को उठा कर गई और बोलकर गई आज रात को देर हो जाएगी मुझे आने में। उसकी माँ ने उसे शुभकामनाएँ दी और दरवाजा बंद कर लिया। गंगा ने उस दिन बहुत आनंद किया। ज बवह वापस आ रही थी तो पूरे रास्ते वह बस वहीं के बारें में सोचती हुई आ रही थी। रास्ते भर उसे अपने सपने याद आ रहे थे जो वह बचपन से देखा करती थी। कभी सोते हुए कभी जागते हुए आँखें बंद करके जो भी उसे दिखाई देता था गंगा का सोचने की शक्ति बहुत अधिक था। बचपन से गंगा जिन लोगों को सपनों में देखा करती थी। कुछ दिनों में वह लोग उसके सामने आ जाया करते थे। जिन जगहों को वह सपनों में देखा करती थी कभी न कभी वह उस जगह पहुँच ही जाती थी। वह फिर खुद से सवाल करती थी यह तो मैनें पहले भी देखा है या यह लोग पहले भी मुझसे मिले हैं, लेकिन कहाँ। उसे एक दम से किसी ने जोर से धक्का दिया तो उसने देखा उसका बस स्टाप आ चुका था। वह अपने घर चली गई। गंगा रात को जाकर सो गई उसने सपने में देखा की गंगा और राम की शादी हो चुकी है। वह माँ बनने वाली है और सिढ़ियों से वह नीचे आ रही है। तभी जैसे ही वह सबसे नीचे वाली सीढ़ी से उतरत है तो वहाँ पर राम और उसकी माँ आकर उसे वहाँ से घसीटते हुए मुख्य हॉल में ले जाते हैं। राम की माँ ने उसके बाल पकडे हुए हैं और राम ने गंगा को धक्का देकर जमीन पर गिरा लिया है और अपने पैरों से उसके पेट पर वार कर रहा है। उसकी माँ उसे बोल रही है राम इसका बच्चा और यह बचनी नहीं चाहिए। राम जैसे कोई राक्षस ही बन गया हो उसकी आँखे लाल हो गई हैं। गंगा भगवान को पुकार रही है और एक दम से गंगा के अंदर से देवी माँ

प्रकट होती है और उन दोनों का वध कर देती है। गंगा घबरा कर उठ बैठी वह पसीना–पसीना हो गई थी। उसने समय देखा तो सुबह के चार बजे थे। उसने सोचा यह क्या था मुझे ऐसा सपना क्यों आया । कंहि यह सब सच तो नही होने वाला है। तभी उसका मन बोला यह तू क्या सोच रही है यह तो सिर्फ एक सपना था । कुछ दिनों बाद उसके पास गंगा के प्रोफेसर के दोस्त का फोन आया वह सीरियलस और फिल्म बनाते थे। उन्होनें गंगा को एक सीरियल के लिए बुलाया था। उन्होंने एक पता भी दिया था। गंगा को वहाँ के बारे में ठीक से पता नहीं था। उसके माँ–पिताजी भी दिल्ली आए हुए थे। वह किससे पूछती, उसने राम को अपने साथ चलने को कहा उसने गंगा को ले जाने का वादा दे दिया। राम ने अपने पापा से उनका स्कूटर मांगा लेकिन उसके पापा ने साफ इनकार कर दिया और कहा तू इतना दूर जाएगा वो भी गां के लिए। हम अपना खर्चा क्यों बढ़ाएं जाकर उसी से गाड़ी माँग वैसे भी उसके पास रूपये पैसे की क्या कमी है। राम की माँ ने भी उसे यहि बोला उसको बोल जाकर। राम ने गंगा को फोन किया और कहा आज पापा को बाहर जाना है तो उनका स्कूटर हमें नहीं मिलेगा। क्या तेरे पापा की गाड़ी ले लें हम। गंगा न राम को गाड़ी के लिए मना कर दिया। उसने कहा पापा से बिना पुछे मैं नहीं दे सकती हूँ। हाँ, हम उनका स्कूटर ले लेते हैं। राम इतना मतलबी था कि, उसने गंगा से ही पेट्रोल के पैसे ले लिए राम का पूरा परिवार गंगा के दिल के साथ खेल रहे थे। बहुत घूमने के बाद वह वहाँ पर पहुँच गए। गंगा को वहाँ एक लड़की मिली जब उसने गंगा को देखा तो उसने कहा क्या बात है दीदी आपका फिगर तो बहुत अच्छा है। आप Modeling क्यों नहीं करती है। गंगा हँसने लगी और बोली मेरा फिगर इतना भी अच्छा नहीं है। तभी उसका shot आ गया और वह वहाँ से चली गई। जब गंगा का काम खत्म हो गया और वह वहाँ से जाने लगी तो वहाँ कुछ निर्माता और निर्देशक भी मौजूद थे। उन लोगों ने गंगा का फोन नम्बर भी ले लिया था और उन्होनें पूछा फिल्मों में काम करोगी क्या ? उसने जवाब दिया मेरे मम्मी–पापा से मुझे बात करनी पड़ेगी फिर मैं अपने sir को बता दुंगी। लेकिन वह लोग गंगा को ऊपर से नीचे घूर–घूर कर देख रहे थे। गंगा को उनकी नज़रें अच्छी नहीं लग रही थीं। राम बाहर गंगा का इंतजार कर रहा था। वह दोनों वहाँ से वापस आ गए। राम गंगा के घर उसे छोड़ने गया। घर पहुँचकर गंगा ने राम के लिए चाय बनाई। चाय पीने के बाद राम गंगा की तरफ बढ़ने लगा। गंगा ने राम को पीछे कर दिया अपने हाथों से और कहा अपनी हदें पार मत करो कृप्या मैं तुम्हारे दिल से प्रेम करती हूँ शरीर से नहीं। लेकिन शायद तुम्हें मेरे अंदर वासना दिखाई दे रही है। गंगा ने उसे पूछा तुम मुझे प्रेम करते भी हो या नहीं। कुछ चीजें शादी के बाद ही अच्छी लगती हैं। रम का दिमाग खराब हो रहा था लेकिन उसने गंगा को जाहिर नहीं होने दिया। वह मन ही मन सोच रहा

था इस बार तो तू बच गई । तू मेरे हथ्थे कभी तो आएगी तब बताऊंगा तुझे वासना और प्यार क्या होता है। राम अपने विचारों में खोया हुआ था गंगा ने उसे हिलाया और बोला क्या हुआ। लेकिन गंगा उस दिन डर गई थी राम से । लेकिन उसने उसकी इस गलती को भी मॉफ कर दिया। गंगा ने राम को बोला आज के बाद यह सब नहीं होना चाहिए। गंगा को यह बस अच्छा नही लगता था। उसके बाद राम ने उसके साथ ऐसी हरकत नहीं की लेकिन उसकी आँखे कुछ और ही बोला करती थीं। गंगा के माता–पिता अभी वापस नहीं आये थे उन्हे आने में अभी बीस दिन और थे। उसके परिक्षा भी आने वाली थे और एक दिन रविवार वाले दिन फोन की घंटी बजी जैसे ही उसने हैलो बोला सामने से आवाज आई हम गंगा से बात कर सकते हैं क्या उसने बोला हाँजी हम बोल रहे हैं। फोन पर कोई लड़का था उसने कहा लो आप हमारे सर से बात करो। फोन पर उसके प्रोफेसार थे वह बहुत चकित हो गई अरे सर आप? गंगा ने बोला। कुछ काम था क्या उन्होंने बोला हाँ, क्या तुम फिल्मों में काम करोगी उसने कहा जो सर लेकिन रोल क्या है और मुझे एक बार अपने मम्मी पापा से पुछना पड़ेगा । सर ने बोला हिरोईन की बहन का रोल करना है काफी अच्छे पैसे मिलेंगे तुम्हें। गंगा ने अपने सर से सवाल किया लेकिन सर इस रोल के लिए आपने मुझे ही क्यों चुना है। सर बोले पहली बात की तुम्हारा व्यक्तिव बहुत अच्छा है और दूसरी बात तुम उस दिन एक सीरियल के लिए आई थी तब उन लोगों ने वहाँ तुम्हें देखा था उन्हें तुम पसंद आई थी। उसने बोला सर मैं काम तो करना चाहती हूँ फिर भी मुझे अपने परिवार से पूछना पडेगा। बिना उनकी रजामंदी के मैं नहीं आ पाऊंगी। उन लोगों ने गंगा को दो दिनों का समय दिया था और कहा था अगर तीसरा दिन हुआ तो वह लोग किसी और को ले लेंगे और मैं यह चाहता हूँ कि यह रोल तुम ही करो। ठीक है सर बोल कर उसने फोन रख दिया। वह अपने माता–पिता के फोन का इंतजार करती रही लेकिन उनका कोई फोन नहीं आया। वह परेशान थी अब मैं किससे बात करूँ समय निकलता गया। फिर से उसके प्रोफेसर ने गंगा से पूछा तुमने क्या फैसला किया गंगा। उसने कहा सर अभी तक मेरे परिवार वाले आए नहीं है और न ही उनसे मेरी बता हो पाई है। उसके प्रोफेसर ने कहा गंगा यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। माँ–बाप से पूछने की क्या जरूरत है। फैसला तो तुम्हें लेना है। उसने अपन सर को इंकार बोल दिया। गंगा लेकिन बहुत दुःखी हुई वह यह सब करन चाहती थी लेकिन माँ–पिता की सहमती से। अब गां का पढ़ाई में या और किसी चीज मंन ही मन लगता था। कुछ दिनों में उसके मम्मी–पापा भी आ गए। उसने अपने मम्मी–पापा को सब कुछ बता दिया। उसकी माँ ने उसे बोला तो फिर मना क्यों कर दिया। हम मना नही करते तुझे। माँ की बात सुनकर गंगा मन

ही मन टुट गई थी। और खुद को दोषी मान रही थी। उसे अपने बचपन की बातें याद आने लगी थी। उसकी जिंदगी में कब –कब क्या –क्या हुआ था।

गंगा जब 3–4 साल की थी तो उसे बगीचे में ही रहना पसंद था लेकिन वहाँ पर भी वह अपनी मर्जी से नहीं रह सकती थी। वहाँ पर वह जब आती थी जिस वक्त उसके माता–पिता चाहते थे। सिर्फ थोडे समय के लिए। इतने समय में तो वह खुश भी नहीं हो पाती थी। जब भी वह किसी को नृत्य करते हुए देखती थी तो उसे ऐसा लगता था काश यह मैं होती। उसे इच्छा होती थी नृत्य करने की लेकिन उसके माता–पिता उसे करने नही देते थे। जब भी वह अपनी आंखे बंद करती थी तो उस एक बहुत बड़ा महल दिखाई देता था और उस महल के अंदर एक 18–19 साल की लड़की जिसने राजस्थानी कपड़े और गहने पहने हुए हैं नृत्य करती हुई दिखाई देती थी। वह लड़की बहुत सुंदर है, उसके लंबे–लंबे बाल हैं, वह इस तरह नृत्य कर रही है जैसे वह प्रेम में डूबी हुई है और वह अपने प्रेमी का इंतजार कर रही है। गंगा की जब आँखे खुलती थी तो वह सोचने लगती थी वह कौन है। जिसे मैं बार–बार देखती हूँ। उसे अपनी जिंदगी में घटी बातें याद आ रह थी। उसे याद आ रहा था ज बवह सिर्फ चार साल की थी। वह अपने छोटे भाई और मम्मी – पापा केस साथ कश्मीर से जम्मू आ रही थी और रास्ते में ड्राईवर ने शराब पी रखी थी और बस में फौजी जवान बैठे हुए थे। बस खाडी की और बढ़ने लगी थी। गंगा बस में पीछे एक जवान सेबात करते – करते सो गई थी। तभी सारे जवान नीचे उतरे और बस को रोका। ड्राइवर को जवानों ने बहुत मारा और सारी बस खाली करवाई थी। बस खाडी की तरफ बढ़ती ही जा रही थी। तभी गंगा की माँ जोर–जोर से चिल्लाने लगी मेरी बेटी को कोई बचाओ। इतना बोलते हुए वह बेहोश हो गई। तभी गंगा के पापा खिड़की से बस में घुस गए और अपनी बेटी को बचा लिया। उसके पापा को चोटें भी आई थीं और जैसे ही वह दोनों बाहर आए तुरंत ही बस खाड़ी में गिर गई। गंगा की आवाज सुन कर माँ की सांस आई। गंगा की आंखें यह सोचते–सोचते नम हो गई थीं। यह सब सोचते – सोचते उसे ऐसा लगा कि मेरा यह जीवन मेरे माता पिता का ही दिया हुआ है। जब मेरे पापा मेरी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल सकते हैं तो क्या मैं उनकी खुशी के लिए अपना प्यार नहीं छोड़ सकतीी हूँ। लेकिन दूसरे ही पल उसे अपना वादा याद आ गया । उस वचन का क्या होगा जो मैंने राम को दिया है। ''

गंगा 3–4 दिन बाद कॉलेज गई और जैसे ही अंदर जाने लगी तो उसके सारे दोस्त बाहर खड़े हुए थे और गंगा को घूर–घूर कर देख रहे थे। उनके साथ राम और राहुल भी बाही खड़े गंगा का

इंतजार कर रहे थे। हेमा भी वहीं पर खड़ी थी। हेमा गंगा की नई दोस्त थी। वह गंगा की सीनियर थी। गंगा को कुछ अजीब सा लग रहा था उन सब का व्यवहार उसने राहुल से पुछा क्या हुआ तुम लोग बाहर क्या कर रहे हो ऐसे। आज अंदर नहीं जाना है क्या? राहुल ने बताया आज काजल घर से भाग गई है शाहिल के लिए। अब उसके भाईयों ने काजल को पकड़ लिया है रास्ते में ही। उसने रिक्शे वाले को अपनी घड़ी दे दी थी क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे। गंगा ने बोला वो लड़की पागल है क्या ? राहुल बोला तू पहले मेरी पूरी बात तो सुन ले। गंगा का ध्यान बार–बार राम पर जा रहा था। वह अलग बैठा हुआ था। तभी वहाँ उसके नजदीक रमेश और हेमा भी आ गए और बोले काजल के भाईयों ने काजल को बहुत मारा है और उससे उन लोगों ने पूछा कि तूने यह सब क्यों किया है। काजल ने तेरा नाम बताया है और यह बात सारे कॉलेज में फैल गई है। उसने कहा कि, मुझे गंगा ही भड़काया करती थी उसी ने मुझे सलाह दी थी कि तू घर से भाग कर शहिल से शादी करले। तेरे भाई कुछ भी नहीं कर पाएंगें। अब उसके भाई तुझे ढूंढ रहे हैं। राहुल बोला गंगा तू यहाँ से भाग जा नही ंतो वह लोग तुझे मार देंगे। वह तेरे से नाराज हैं। गंगा गुस्से से बोली पहली बात तो मैं काजल से पिछले 10–15 दिनों से न तो मिली हूँ और न ही उससे बता की है। दूसरी बात आने दो उसके भाईयों को मैंने जब कुछ किया ही नहीं है तो मैं क्यों डरूं। इसके बाद भी अगर उनको मेर से परेशानीहै तो कोई बात नहीं उन लोगों के खिलाफ अब मैं पुलिस में रिपोर्ट करूंगी। गंगा की बात सुनकर राम उसके पास आ गया। उसने कहा अब क्यों मरे पास आ गया तू। राम चुप हो गया। उसने (गंगा) राहुल को बोला वैसे भी मैंने उसे बहुत समझाया था यह सब ठीक नहीं है लेकिन वह नहीं मानी। उसके शहिल के साथ नाजायज सम्बन्ध हैं मुझे पता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि तुम दूसरों को बदनाम करोगे। काजल जैसी लड़कीयों की वजह से ही प्यार बदनाम है। हेमा उसके ही साथ थी उसने हेमा से रोते हुए बोला लोगों को मुझे से क्या परेशानी है। सब लोग मुझे ही अपना मौहरा क्यों बनाते हैं। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि, यह लड़की मुझे धोखा देगी और मेरा नाम लगा देगी। पता नहीं क्या संस्कार दिए है इसके माता–पिता ने उसे गंगा का दिमाग खराब हो चुका था। पहले से ही इतनी परेशान थी मैं। एक और नई कहानी शुरू हो गई मेरे साथ। गंगा को बहुत बुरा लग रहा था अपने लिए वह सोच रही थी। आज तक मैंने कभी किसी सी एक छोटा सा भी झूठ नहीं बोला और आज मेरे नाम को बदनाम किया जा रहा है। और क्या–क्या झेलना पड़ेगा मुझे। हे भगवान् मेरी मदद करो। गंगा की परीक्षाएँ शुरू होने वाली थीं उस दिन गंगा अपने घर जल्दी ही चली गई थी। गंगा ने यह सब किसी को नहीं बताया लेकिन मन ही मन गंगा यह सोच रही थी। क्या लोग सच्चाई के साथ नहीं रह सकते। क्या सीधे साधे लोगों को

बेवकूफ बनाना जरूरी है। तभी उसकी माँ ने वहाँ आकर उसे बताया कि पूनम के लिए एक रिश्ता आया है। उसने अपनी परेशानीयों को छोड़ कर माँ की बातें सुनने लगी। उसने अपनी माँ को पूछा कहाँ से है। किसने बताया है और लड़का क्या करता है। मम्मी ने बताया पापा के ऑफिस में एक अंकल हैं उन्होने बताया है। लड़का बरौड़ा से ही है। गंगा चौंककर बोली फिर से बरौड़ा ?

गंगा ने पुछा आप जानते हो उन लोगों को माँ ने कहा अभी नहीं। आज ही पापा के पास उन लोगों का फोन आया था। लड़के के पापा आई ए एस ऑफिसर हैं। सबसे छोटा लड़का है उनका। गंगा को शक हो रहा था कुछ तो है जो मैं समझ नहीं पा रही हूँ। लड़के का क्या नाम है गंगा ने पूछा। उसकी माँ कहा अभी तो मुझे भी नहीं पता है उसका नाम । पापा आएँगे तब सारी बातें बताएंगे। शाम को जब पापा आए तो उन्होने, बताया कल वह लोग हमारे घर आ रहे हैं। अभी सिर्फ वह लड़का और उसके पापा ही आ रहे हैं। गंगा ने अपनी माँ को पूछा दीदी मिली हैं क्या उन लोगों से। माँ ने कहा हाँ, तो फिर दीदी ने आपको नाम नहीं बताया। गंगा की माँ ने कहा ''पूनम बोल रही थी कि सब कुछ हम वहीं आकर बात करेंगे। गंगा को यह सब अजीब सा लग रहा था। गंगा ने माँ से पूछा पापा को रमन के बारे में मालूम है क्या? माँ बोली नहीं जब तू ही उस लड़के से शादी नहीं करना चाहती है तो क्या फायदा बता कर। गंगा ने अपनी माँ को कहा, मम्मी यह लड़का अगर रमन हुआ तो आप क्या करोगी माँ थोड़ा सा सोच में पड़ गई । गंगा ने कहा मम्मी यह लड़का रम नही है उसकी माँ थोड़ा नाराज होकर बोली तुझे कैसे पता। गंगा ने बताया कि उसने दीदी और रमन को शादी के जोड़े में देखा था अपनी आँखों में । मेरी अंतर आत्मा बोल रही है। उसने फिर कहा दीदी ने कुछ तो बताया होगा माँ फिर से कहने लगी पूनम ने बोला है हम वहीं आकर बता करेंगे। दूसरा दिन हो गया था। गंगा कॉलेज से आई और पूछा वह लोग कब तक आएंगे। माँ बोली बस अभी आने ही वाले होंगे। गंगा अपने कमरे में चली गई वह थोड़ा सा आराम करना चाहती थी। इस घर में सभी को पूनम का ख्याल था लेकिन गंगा किन तकलीफों को झेल रही है उसका किसी को कोई अंदाजा ही नहीं था। गंगा दुनिया भर की चिंता करती थी अब उसकी बहन की भी चिंता उसे सताने लगी थी। अब वह सोच रही थी पता नहीं अब क्या होने वाला है इस घर में। तभी उसकी माँ कमरे में आई और बोलों वह लोग आ गए है पूनम भी उन लोगों के साथ ही आई है। यह सोने का वक्त नहीं है बाहर आकर उनके साथ बैठ। गंगा के कदम बाहर नहीं पढ़ रहे थे। उसे ऐसा लग रहा था मानो आगे कोई बहुत बड़ा पहाड़ खड़ा है। जैसे ह ीवह बाहर आई वह स्तबंध हो गई जैसे उसके पैरों की जमीन सरक गई हो। सामने रमन बैठा था दीदी के साथ और अपने पापा के साथ । उसे

देख कर गंगा को बहुत गुस्सा आया और एक ही पल में खुद को संभाला और उसे हैलो बोला और वहीं से वापस चली गइ जाकर अपनी माँ को उसने बोला मम्मी क्या यह सब आप पहले से नहीं जानती थीं। उसकी माँ ने कहा यह सब हम बाद में बात करते हैं पहले उन्हें देखते हैं जाकर। यह बोलकर उसकी माँ ने चाय की ट्रे उठाई और बाहर आ गई। बेचारी गंगा क्या करती वह भी अपनी माँ की मदद करने बाहर आ गई। तभी उसके पाप ाभी वहाँ आ गए। किंतु रमन ने गंगा से बात तक नहीं की ओर न ही उसके हाथ से कुछ भी लिया। अब गंगा को यह समझ आ चुका था कि मैं जो कुछ भी अपनी आँखों में देख रही थी वह क्यों देख रही थी। अब गंगा को अपने रिश्ते बिखरते हुए दिखाई दे रहे थे। गंगा को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। गंगा उस रिश्ते के लिए हाँ क्यों बोल दिया। यह लड़का बहुत ही घमंडी है इसे तो किसी को भी इज्जत करनी नहीं आती है। पूनम इतराते हुए बोली तुझे तो राम के आगे सभी मूर्ख नज़र आएंगे। वैसे भी रमन की एक समझदार और सुलझी हुई लड़की चाहिए थी अपने जीवन साथी के रूप में। उसे वह सारी खुबियाँ मेरे अंदर दिखाई दीं है। तू सिर्फ देखने में ही खूबसूरत है बाकी इसके अलावा तेरे अंदर कोई काबलियत नहीं है। गंगा ने अपनी बहन को समझाने की बहुत कोशिश की रमन आपके सामने दिखावा कर रहा है। आपको सब कुछ शादी के बाद पता चल जायेगा लेकिन तब तक देर हो चुकी होगी। अब पूनम से गंगा की बातें सहन नहीं हो रही थी उसने गंगा को डांटते हुए बोला तुझे तो हर इंसान राम जैसा ही लगता है। पूनम ने गंगा को डांटते हुये बोला तुझे यह रिश्ता पसंद हो या न हो हमें उससे कोई मतलब नहीं है। यह मेरी जिन्दगी है यह बात याद रखना। गंगा ने भी हँसते हुऐ अपनी बहन को यही बोला आप भी याद रखिएगा। एक बार फिर से गंगा को यह जता दिया गया था कि, तू तो बेकार की चीज है और तेरी क्या इज्जत। छोटी है छोटी बनकर ही रहेगी तो अच्छा रहेगा। गंगा के अलावा सभी को यह रिश्ता मंजूर था। पूनम भी वापस चली गई थी रमन और उसके पिता के साथ । उसके माता–पिता अब पूनम की तरफ से संतुष्ट थे। फिर से सब का ध्यान गंगा की तरफ हो गया था। गंगा के पिता ने गंगा और राम के रिस्ते के बारे में अपने खानदान को बता दी थी। इस वजह से सभी जगह गंगा के चरित्र पर सवाल उठाए जा रहे थे। कुछ दिनों में गंगा के कॉलेज में अवकाश पड़ने वाले थी। गंगा की माँ ने उसकी (गंगा) नानी के पास जाने का योजना बना लिया था। अब गंगा के जाने का समय नजदीक आ गया था। वह राम को मिलने उसके घर गई। उसने राम को बताया कल शाम पाँच बजे की ट्रेन से मैं अपनी नानी जी के घर मथुरा जा रही हूँ आप अपना ध्यान रखना अब मैं आपको आकर मिलूँगी। गंगा उसकी माँ के भी पैर छू कर निकल आई। जब वह सभी मथुरा पहुँचे तो पहले सभी ने उसके साथ प्यार से बातें की। वह पूरा दिन उनका

मिलने–मिलाने में ही निकल गया। दूसरे दिन जब सभी ने दोपहर का खाना खा लिया उसके बाद गंगा के मामा ने उसे अपने कमरे में बुलाया और कहा मुझे कुछ बात करनी है। गंगा अपने मामा के कमरे में चली गई। उन्होनें उसे बोलना शुरू किया यह मैं क्या सुन रहा हूँ तेरे बारे में। उसने भोलेपन से पूछा क्या मामा जी ? मामा ने गुस्से से बोला वही जो तेरे और उस लड़के के बीच चल रहा है। गंगा को समझ आ गया कि उन्हें यह सब पापा ने ही बताया होगा। मामा ने फिर से पूछा मैं क्या पूछ रहा हूँ तेरे से। तेरी वजह से सभी कितना परेशान हैं तुझे अंदाजा तक नहीं है। तभी गंगा बोली आप सभी को क्या परेशानी है मुझसे। प्यार करना गुनाह है क्या ? हर इंसान मेरे पीछे पड़ा हुआ है। दोनो के बीच गर्मा – गर्मी होने लगी थी। उनकी तेज आवाज सुनकर उसकी माँ और नानी भी कमरे में आ गई थी। मामा चिल्लाते ही जा रहे थे तभी गंगा बोली मामाजी आप मुझे से ऐसे बात नहीं कर सकते हैं। मामा गुस्से से गंगा को थप्पड़ मारने आए तो गंगा ने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा अब मैं वह पहले वाली छोटी सी गंगा नहीं हूँ। जिसको आप छोटी सी गलती पर मारा पीटा करते थे जानवरों की तरह। मामजी अगर मैंने अपना मुह खोल दिया तो आपकी सारी शराफत सबके सामने आ जाएगी। गंगा की बात सुनकर उसके मामा पीछे हट गए। वहाँ घर के दूसरे सदस्य भी आ गए थे। गंगा को ऐसा लग रहा था मानो यहाँ पर पंचायत बैठी हुई है और वह कोई मुजरिम है। नानी बार–बार मामा को रोक रही थी लेकिन वह उनकी बात तक नहीं मान रहे थे। मामा ने गुस्से से बोला मैं तुझे यकीन दिलाता हूँ कि वह लड़का तुझे दो वक्त की रोटी तक नहीं खिला पाऐगा। अगर ऐसा नहीं हुआ तो मेरा नाम बदल देना। गंगा को यह सब सुनना पसंद नहीं आ रहा था। गंगा ने मामा से बोला आप मुझे बददुआ दे रहे हैं तो कोई बात नहीं । मैं भी आपका दिखा दुंगी। मेरा फैसला कितना सही है और आपको मेरी चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है मुझे अपने प्यार और नसीब पर पूरा भरोसा है। हाँ एक बात और जब आपके बच्चे बड़े होगें मैं तब देखूंगी कि उस समय आपका फैसला क्या होगा। मामा ने मम्मी को बोला दीदी हम लोग कोई भी इसकी शादी में नहीं आएंगे। गंगा को गुस्सा आया उसने मामा को बोला हम यहाँ इसलिए नहीं आए हैं कि आप मेरी माँ की बेइज्जती करेंगे। बस फिर क्या था उन्होने गंगा के चरित्र पर ही वार कर दिया और सबके सामने बोले अगर ऐसी औलाद मेरी होती तो में उसे गोली मार देता। गंगा बिना कुछ कहे अपनी माँ का हाथ पकड़ कर कमरे से बाहर आ गई। जब तक वह अपनी नानी के घर रही हर रोज उसे राम के लिए लड़ाई करनी पड़ती थी किसी न किसी से। कई बार उसकी माँ को जवाब देना पड़ता था उनके सवालों का। यह देख कर उसे दुख जरूर होता था उनके सवालों का। यह देख

कर उसे दुःख जरूर होता था लेकिन वह दिल के हाथों मजबूर भी थी वह राम को भी धोखा नहीं देना चाहती थी।

वहाँ दूसरी तरफ राम अपनी माँ के साथ मिलकर गंगा के खिलाफ षडियंत्र रच रहा था। वह लोग गंगा के आने का इंतजार कर रहे थे। गंगा गांधी नगर वापस आ चुकी थी। उसकी छुट्टीयाँ भी खत्म हो गईं थी। गंगा ने राम को फोन किया वापस आकर । राम खुश हो गया था गंगा से बात करके। राम ने गंगा को कल घर पर मिलने के लिए कहा तो गां ने हँसते हुए बोला हम मिल रहे हैं कॉलेज में, आप आ जाओ। उसने कहा कॉलेज में नहीं। हम कहीं बाहर मिलेंगे। गंगा ने बाहर मिलने के लिए मना कर दिया। उसने पूछा हम बाहर क्यों नहीं मिल सकते हैं। गंगा ने जवाब दिया क्योंकि हमारा कॉलेज है। रमा बोला कल हम कॉलेज नहीं जाएंगे कंहि बाहर घूमने जाएंगे। गंगा ने उसे समझाते हुए कहा प्यार का मतलब झूठ बोलना नहीं होता है। प्यारतो एक एहसास है वह हम एक दूसरे के लिए महसूस करते हैं। घूमना फिरना जरूरी नहीं है इसके लिए तापे सारी उम्र पड़ी है। राम ने गंगा को कहा हम सरी उम्र साथ रहेंगे क्या ? गंगा अंदर तक हिल गई। तुम्हारा क्या मतलब है राम ? गंगा बोली । राम ने हँसते हुए गंगा को जवाब दिया मैं तो मजाक कर रहा था गंगा भड़क कर बोली मैं यहाँ पर तुम्हारे लिए लोगों से लड़ाईयां कर रह हूँ और तुम्हे मजाक सूझ रहा है। तुम्हें पता भी है वहाँ मेरी नानी के घर क्या हुआ है मेरे साथ लेकिन तुम्हें क्या मतलब तुम्हें तो सिर्फ मजाक करना आता है। राम ने गंगा को बाला जो भी है कल मैं तुम्हारा बस स्टॉप पर इंतजार करूंगा और तुम वहाँ उतर जाना फिर हम दोनों कहिं बाहर जाएंगे इतना बोल कर राम ने फोन रख दिया। उसने गंगा को समझना भी जरूरी नही समझा। कभी–कभी गंगा को राम का व्यवहार परेशान करता था। उसे अपने फैसले पर शक होता था और अंत में वह सब कुछ भगवान पर छोड़ देती थी। दूसरे दिन राम अपने घर से निकल कर बस स्टॉप पर खड़ा हो गया गंगा के इंतजार में। राम उकस इंतजार करता रहा लेकिन गंगा नही आई। गंगा उसका इंतजार कॉलेज में कर रही थी लेकिन वह वहाँ पर नहीं था। राहुल ने बताया आज वह कॉलेज नहीं आया है। गंगा को जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह ऐसा पागल पन करेगा। उस दिन काफी तेज बारिश भी हो रही थी। राम वहीं पर खड़ा रहा और शाम तक बारिश में ही भीगता रहा। उसके भाई ने उसे वहाँ देखा तो वह उसे घर ले आया। उसकी माँ ने उसे पूछा यह सब क्या है। वह बिना कुछ कहे ऊपर छत पर चला गया और चारपाई पर जाकर लेट गया अपनी आँखे खोल कर । रात को नीचे आया फिर वह।

उसके पुरे परिवार को पता था उसके बारे में लेकिन गंगा अनजान थी इन सब से और आने वाली मुसिबत से।

जब राम गंगा को कॉलेज में मिला तो उसने उसे पूछा दिन तूने अपना वादा क्यों तोड़ दिया। गंगा ने राम को बड़े आराम से बोल दिया मैने कोई भी वादा नहीं किया था और न ही ऐसा कोई वादा मैं करूंगी। यह सुन कर राम चुप हो गया और गंगा से मॉफी भी माँगी। उसने कहा मम्मी तुम्हे बहुत याद कर रही थी कभी समय निकालकर घर आजाना मेरे दादा जी भी तुम्हें याद कर रहे थे उसने कहा ठीक है कल देखती हूँ। दूसरे दिन गंगा राम के घर गई। वहाँ उसके दादा जी भी थे उसने राम के दादा जी के पैर छूकर नमस्ते बोला। उन्हें गंगा बहुत पसंद आई। उसके घर पर राम की दीदी और जीजा जी भी आये हुये थे। राम की माँ ने गंगा को उन लोगों के लिए चाए बनाने के लिए बोला। गंगा को थोड़ा अजीब सा लगा लेकिन फिर उसने सभी के लिए चाय बना दी। राम की माँ ने गंगा को कहा मैं तो सिर्फ यह देखना चाहती थी कि तुम्हें चाय बनानी आती है या नहीं । यह सब कुछ उसके दादा जी देख रहे थे और फिर उन्होंने अपनी बहू को बोला यह सब क्या चल रहा है। मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग एक सीधी साधी लड़की को कैसे अपने जाल में फंसा रहे हो। उकसी माँ ने अपनी भाषा में उन्हें बोल दिया आपको कोई मतलब नहीं होना चाहिए हमारे से। दादाजी चुप हो गए लेकिन मन ही मन वह गंगा के लिए दुआएँ मांग रहे थे भगवान् से। और बोल रहे थे इस लड़की की मदद करना । गंगा का भाई राजीव भी घर आया था। राजीव ने गंगा से बात तक नहीं की। गंगा सब कुछ भुला कर उससे बात करने फिर भी आई। पहले तो उसने गंगा को कुछ नहीं बोला लेकिन बाद मे उसने गंगा को चिल्लाते हुए बोला, तूने अभी तक उस लड़के का साथ नहीं छोड़ा है। जो भी कुछ तूने नानी के घर किया है वह सब मुझे पता चल चुका है। गंगा बोली पहली बात मैनें कुछ भी गलत नही किया है और तू कौन होता है मुझसे इस तरह से बात करने वाल। राजीव फिर भी बोलता रहा तूने सभी का जीना हराम कर रखा है इस घर में। राजीव अपनी बड़ी बहन की तरफदारी करते हुए बोला तेरा यह कैसा व्यवहार था जब दीदी के लिए रिश्ता आया था। गंगा भड़क गई अच्छा तो यह बात सभी जगह फैल गई है। वैसे भी वह लड़का बड़ा ही बत्तमीज और घमण्डी है वह दीदी को खुश नहीं रखेगा। राजीव तुरंत बोला पहले खुद को देख ले बाद में किसी और के बारे में बात करना। मैं भी रमन से मिला हुआ हूँ मुझे तो वह इंसान बहुत ही खुले विचारों वाला लगा है। गंगा बोली समय बताएगा मैं सही थी या फिर तुम लोग।

गंगा कॉलेज चली गई। अब उसकी कक्षा में कुछ नए विद्धयार्थी भी आए थे। उनमें से एक लड़का दिल्ली से आया था और एक लड़की रानी नाम की पंजाब से थी। वह पढ़ने में काफी हौशियार थी। रानी और गंगा की अच्छी दोस्ती हो गई थी । गंगा ने रानी को राम के बारे में सब कुछ बताया तो रानी को राम इतना पसंद नहीं आया । उसने कहा गंगा तू किसके चक्कर में फंस गई है। उसने कहा उसे देखने के बाद ऐस लगता नहीं है कि वह तेरे लायक है। तुम दोनों के परिवारों में काफी फर्क नज़र आता है। राम बहुत ही छोटे घराने से लगता है। गंगा बोली लेकिन वह मुझे बहुत प्यार करता है और उसका परिवार भी । रानी ने गंगा को समझाया जब किसी को भी शादी करनी होती है उस समय सभी लड़के शरीफ बन जाते है। जब उन्हें पति बनकर पत्नि का साथ देना पड़ता है उस समय सभी पीछे हट जाते हैं। गंगा ने रानी से कहा लेकिन राम ऐसा नहीं है। तभीा वहाँ पर वह नया लड़का रमेश के साथ आ गया। उसका नाम राघव था। राघव अब राम का भी अच्छा दोस्त बन चुका था। लेकिन इसकी एक बात बहुत अजीब सी थी। उसने कॉलेज में दाखिला तो लिया था परंतु वह कॉलेज में कभी–कभी दिखाई देता था। एक दिन गंगा ने उससे पूछा तुम कहाँ रहते हो लेक्चर में भी नहीं आते हो तुम्हारे मम्मी–पापा कुछ बोलते नहीं है क्या ? उसने बताया मैं अपने मम्मी–पापा के साथ नहीं बल्कि अपने चाचा–चाची के साथ रहता हूँ। कहाँ पर ? गंगा ने सवाल किया। अहमदाबाद और गांधीनगर के बीच में तुम्हारे घर के काफी पास है उनका घर । गंगा ने फिर उसके परिवार के बारे में पुछा वह कहाँ हैं और क्या करते है। राघव ने बोला मेरे पापा एअस फोर्स में नौकरी करते हैं और दिल्ली केंट में वह रहते हैं। एक दो दिन के बाद वापस राघव उसे अपने बस स्टॉप पर बैठा मिला उसने पूछा अरे राघव तुम कंहा गए थे दिखाई नहीं दिए। राघव ने कहा मैं अपने घर दिल्ली गया था । लेकिन इतनी जल्दी कैसे आ गए। राघव ने बात बदल दी। तभी उसने अपना पर्स निकाला। उसमें बीस हजार रू. रखे हुए थे। राघव ने वह पैसे निकाले और गंगा की तरफ बढ़ाते हुउ बोला इन्हें गिन कर बताना कितने हैं। गंगा ने राघव को बोला यह तुम क्या कर रहे हो। तुम्हे पता है कि, पब्लिक में इतने सारे पैसे नहीं निकालने चाहिए। और तुम्हारे पास इतने सारे रूपये कहाँ से आए गंगा ने सवाल किया। उसने कहा यह तो मेरे पापा ने दिए हैं जेब खर्च के लिए गंगा चौंक कर बोली इतने सारे ? यह सब तुम कॉलेज लेकर क्यों घूम रहे हो तुम इन्हें अपने बैंक में भी तो डाल सकते हो। गंगा ने सोचा यह लड़का कोई गलत काम करता है क्या? तभी उसकी बस भी आ गई और वह चली गई। घर पहुँच कर उसने यह सब अपनी माँ को बताया तो उसके भाई ने फिर से उसे टोका और कहने लगा लड़कों के ही साथ घूमती रहा कर। वह अपने

भाई को चुप कराते हुए बोली हम शहर में रहते हैं गाँव में नहीं जा कि, मैं लड़को से दोस्ती नही कर सकती।

उसने अपने भाई को बोला तुम्हें मेरे से कोई परेशानी है। जब देखो तुम्हें मेरी हर चीज से तकलीफ रहती है। तभी घर के फोन की घंटी बजी गंगा की माँ ने फोन उठाया फोन पर राम की माँ थी। गगा की माँ ने उन्हें बेमन से नमस्ते बोला और कहा कोई काम था क्या ? हमारे से। राम की माँ ने बताया कि आज वह लोग शाम को घर आएँगे राम और गंगा के बारे में बता करने। यह सुन कर गंगा की माँ को अच्छा नही लगा और गंगा से सवाल किया तूने कहा है उन्हें घर पर आने के लिए गंगा अपनी माँ को विश्वास दिलाते हुए बोली नही माँ। रात को राम के माता पिता घर आए जो गंगा के माता – पिता को अच्छी नही लगी लेकिन वह उस वक्त उनके महमान थे इसलिए उन्होंने उसी तरह उनका सतकार भी किया। उस दिन भी उसकी माँ सफेद और पीले रंग की मिठाई लेकर आई थी। राम के पिता ने अपने बेटे के लिए गंगा का हाथ माँगा। इस बात को सुनकर राजीव वहाँ से उठकर अंदर चला गया। गंगा की माँ ने उसके (राम) के पिता को बोला कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन लोगों से रिश्तेदारी निभाई जाती है, कुछ लोग के साथ मित्रता और कुछों को दरवाजें तक रखा जाता है। सभी के साथ एक जैसे रिश्ते नहीं होते हैं भाईसाहब। शायद आप मेरा ईशारा समझ गए होगे अब तक। मित्रता के लिए हमें आपसे कोइग परेशानी नहीं है लेकिन रिश्तेदारी के लिए आप हमें मॉफ कर दीजिए। हम आपके साथ रिश्ता नही कर सकते हैं। थोड़ी देर वह लोग बैठे उसके बाद चले गए। गंगा भी अब परेशान थी कि आगे क्या होगा।

अगले दिन जब राम और गंगा मिले तो दोनों बातें कर रहे थे कि हमारी शादी कैसे होगी । गंगा ने राम को बताया कि पूनम की सगाई है हमें अगले हफ्ते बरौड़ा जाना है। राम ने गंगा को बोला तुम मुझे यहाँ पर अकेले छोड़ कर जाओगी गंगा ने राम को कहा तुम चिंता मत करो हम अपने माता–पिता को भी मना लेंगे। मुझ पर भरोसा करा। राम गंगा से बार–बार वादे लेता रहता था कि, कहीं गंगा उसे धोखा तो नहीं दे देगी अपने परिवार के दवाब में आकर। राजीव अपनी बहन की सगाई के लिए रूका हुआ था अपने घर । जिस वक्त गंगा कॉलेज में थी उस समय किसी का घर पर फोन आया और कहने लगा गंगा तुम्हें धोखा दे रही है। वह कॉलेज के नाम पर अपने आशिक के साथ घूमने जाती है फिर क्या था राजीव का पारा चढ़ गया और जैसे ही उस दिन गंगा घर आई उसे अपनी माँ और भाई के गुस्से का सामना करना पड़ा। उसकी माँ उसे अपने घर में बने मंदिर में ले गई और शिवजी की मूर्ती के आगे अपने सिर पर हाथ रखवा कर पूछा तू कॉलेज के बहाने कहाँ

जाती है। गंगा समझ ही नही पा रही थी कि, माँ यह सब क्यों पूछ रहीं है। उसकी माँ ने फिर से उसे पूछा तू राम के साथ कहाँ तक बढ़ी है। उसकी माँ ने गंगा को जोर से झटका और बोला तूने राम के साथ कोई ऐसा काम तो नहीं किया है जिस वजह से हमारी इज्ज्त मिट्टी में मिल जाए। गंगा बार–बार माँ को विश्वास दिल रही थी और साथ ही रोते भी जा रही थी। परंतु उसकी माँ तो कुछ भी समझने को ही तैयार नहीं थी। उसकी माँ बार –बार उसके चरित्र पर अंगुली उठा रही थी। गंगा ने गुस्से में आकर अपनी माँ को बोल दिया ''मैं जाकर मर जाती हूँ तब शायद आपको विश्वास होगा मुझ पर''। उसकी माँ उससे बहस कर रह थी लेकिन अपनी बेटी को समझने के लिए तैयार नहीं थी। उसने कहा तो फिर आप ही मुझे बता दो मैंने क्या किया है। मेरा भगवान यह जानता है कि मैंने कोई गलती नहीं की है और मैं अपनी मर्यादा जानती हूँ मुझे आप लोगों से यह जानने की जरूरत नहीं है। गंगा ने फिर से पूछा लेकिन आज आप यह सब क्यूं पूछ रही हो। उसकी माँ ने उसे बताया की आज किसी का फोन आया था और उसने यह सब बातें की हैं तेरे बारे में। गंगा ने अपनी माँ को बोला आपको दूसरों पर ज्यादा भरोसा है। अपनी बेटी पर बिल्कुल भी नहीं है। इतना कहकर गगां वहाँ से बाहर निकल गई गुस्से से। राजीव यह सब देख रहा था और जैसे ही गंगा अपने कमरे के अंदर गई उसका भाई उसके पीछे–पीछे वहाँ आ कर गंगा से सवाल जवाब करने लगा। गंगा ने उसे बोल दिया अभी मुझे अकेले छोड़ दे मैं परेशान हूँ और वह अपने कमरे से बाहर निकलने लगी तभी राजीव दरवाजे पर खड़ा हो गया उसने उसे हटने के लिए कहा लेकिन वह नहीं हटा। उसने उसे फिर से हटने को बोला। जैसे ही गंगा ने अपना कदम कमरे के बाहर निकाला राजीव ने तेजी से गंगा की बाजू को खींचकर उसे तीन–चार थप्पड़ लगा दिए। अब गंगा को यह सब सहन नहीं हुआ और उसने भी राजीव को तेजी से धक्का दिया। जिस वजह से राजीव सामने वाली दीवार पर जा कर गिरा। अब गां का दिमाग खराब हो चुका था। उसने चिल्लाते हुए राजीव को बोला तेरी हिम्मत कैसे हुई मेरे साथ मार–पीट करने की। शोर – शराबा सुन कर उसकी माँ भी वहाँ पर आ गई और गंगा को बोलने ही लगी थी कि, गंगा ने अपनी माँ को अपना हाथ दिखाकर चुप रहने को कहा। अब यह सब उसके सहन के बाहर था। वह चिल्लाती जा रही थी औश्र बोले जा रही थी । बचपन से लेकर आज तक मुझे सिर्फ आप लोगों को जवाब ही देना पड़ता है। आज तक हर गलती का जिम्मेदार सिर्फ मुझे ही ठहराया गया है। बड़ी बहन को बड़ा और समझदार का दर्जा दिया जाता रहा है और छोटे भाई को लड़का होने का अधिकार दिया है लेकिन मेरी जगह कहाँ है। मेरी क्र्या हेसियत है आप लोगों की नजरों में। आपने दोनों बच्चों ने भी बड़ी–बड़ी गलतियाँ की हैं उन्हें भी प्यार हुआ है लेकिन उन दोनों से तो आपने कभी जवाब नहीं मांगा तो मुझसे क्यों माँ

? गंगा की माँ को यह सब सहन नहीं हुआ और उन्होंने गंगा के बाल पकड़ कर दो थप्पड़ लगा दिये। फिर अपनी बेटी को ताने मारना शूरू कर दिये। डायन मेरे बेटे को खाने आयी है यहाँ पर हमारे घर, पैदा होते के साथ मर क्यों नहीं गई तू, आज यह दिन तो नहीं देखने को पड़ते हमें। गंगा ने भी माँ को बोल दिया तो फिर आज मार दो मुझे आपको शांती मिल जाएगी। आपके बेटे ने मुझ पर दो–दो बार हाथ उठा दिया फिर भी आपको तकलीफ नहीं हुई लेकिन अगर मैंने आपके बेटे को पीछे धक्का दे दिया तो आपने मुझे बददुआएँ ही दे डालीं। ऐसी होती है माँ ? गुस्से में गंगा ने अपना बैग उठाा और अपनी माँ को बोला समझ लेना आपके सिर्फ दो ही बच्चे हैं। और वह तेजी से घर के बाहर निकल कर घर के पास एक मंदिर था वहाँ बैठ गई और रोती रही। उसे अभी तक की सारी बातें याद आ रही थी। मैंने हमेशा से अपने परिवार को अपने ज्यादा भरोसा किया है। गंगा मंदिर में बैठी हुई थी और सोच रही थी ऐसी जिंदगी से तो मर जाना अच्छा है। एक बार को उसके दिमाग में आया कि राम के साथ भाग जाती हूँ और वापस कभी नहीं आऊँगी फिर। दूसरे ही पल यह सोचने लगी मरना या भागना कोई हल नहीं होता है। अगर मैंने ऐसा किया तो मेरे परिवारर की क्या इज्जत रह जाएगी। लोग मेरे परिवार का जीना हराम कर देंगे। तरह–तरह की बातें करेंगे। लोग मेर नाम को बदनाम करेंगे। मेरे माता–पिता ने कितनी सारी तकलीफें उठाई होंगी मेरे लिए। मैं अपन परिवर के साथ पिछले बीस सालों से हूँ और राम को तो में सिर्फ एक साल से जानती हूँ उसके लिए मैं अपने परिवार को धोखा कैसे दे सकती हूँ। गंगा ने अपने को थोडा शांत किया और सोचा मैंने गुस्से में माँ को बहुत कुछ बोल दिया यह सभी मुझ प्यार करते हैं इसलिए मुझसे नाराज़ हैं। प्यार तो मै राम को भी करती हूँ, मैं उसे छोड़ तो नहीं सकती हूँ। उसने सोचा जैसा भी हैं यह सब मेर अपने हैं। राजीव अभी नादान है उसे धीरे–धीरे सब कुछ समझ आ जाएगा। शाम को गंगा वापस घर आ गई । गंगा ने तो खुद को तो मना लिया था लेकिन घर पर कुछ नहीं बदला था। उसने राम को सारी बातें बताई राम ने गंगा को समझाया सब ठीक हो जाएगा तुम्हें कितना कुछ झेलना पड़ रहा है मेरी वजह से। राम उस दिन गंगा को अपने घर ले गया। राम के घर में सबको यह बात पता चल गई थी। अब राम का परिवार गंगा को भड़काने लगे थे। वह उसके दिमाग में भर रहे थे कि तुम दोनों भाग कर शादी कर लो तो तुम्हारे माता – पिता को तो यह शादी माननी ही पड़ेगी । उसकी माँ गंगा को बार–बार बोल रही थी कि वह लोग तुझे प्यार नहीं करते हैं। राम और उसकी माँ एक दूसरे को देख रहे थे। अब राम को यह यकीन हो गया था कि हम इसके साथ जो कुछ भी करना चाहते है उसे करने से हमे कोई भी रोक नहीं पाएगा। इसके घर वाले इस का साथ नहीं देंगे। अब इसको बेवकूफ बनाना बहुत आसान है। वहाँ गंगा के पापा घर आ चुके थे उन्होंने

उसकी माँ को पूछा गंगा कहाँ है। माँ ने बता दिया कि वह राम के घर गई है। गंगा के पापा गुस्सा होते हुए बोले बार–बार वह उन लोगों के घर क्यों जाती है। गंगा की माँ ने उसके पिता को समझाते हुए बोला वह दुःखी थी इसलिए गई है। आप चिंता मत करो आ जाएगी। राजीव ने भी तो उसके साथ अच्छा नहीं किया था कल। वह कोई गलत कदम नहीं उठाएगी भरोसा करो अपनी बेटी के ऊपर। उसके पिता बोले बेट पर तो भरोसा है लेकिन उन लोगों पर कोई भरोसा नहीं है मुझे। वह लोग इसे बेवकूफ बना रहे हैं मिलकर। हमारी बेटी बहुत सीधी है उसे तो सभी पर विश्वास हो जाता है। गुस्सा जरूार करती है लेकिन मत की बहुत भोली है। उसके समझा देना अगले हफ्ते पूनम की सगाई में जाना है। वहाँ कोई कलेश न करे। गंगा के रिश्ते दार आना शूरू हो गए थे। लोगों को कुछ पता न चले इसलिए गंगा बहुत शांत थी। उन दिनों उसने राम से भी बात करना बंद कर दिया था। वह खुद जा–जा कर पूनम की सगाई के लिए खरीदारी करती थी। उसने सारी बातें पीछे छोड़ दी थी। वह घर पर अपनी माँ की मदद भी करती थी सगाई की तैयारियाँ करने के लिए। पूनम की सगाई के लिए सभी बरौड़ा पहुँच गए थे रास्ते भर गंगा राम के बार में ही सोचती रही। वह सपने ले रही थी कि मानों उसकी सगाई हो रही है। सोचते सोचते उसकी आँख लग गई थी और उसे जोर से झटका लगा। एक दम से उसकी आँखे खुली और उसने देखा कि वह होटल पहुँच चुके थे। वह भी सभी के साथ ऊपर कमरे में चली गई थी, गंगा वहाँ आई जरूर थी और सभी के साथ वह हँस बोल रही थी परंतु वह इस रिश्ते से खुश नहीं थी। उसे बार–बार एक ही डर सता रहा था कि कहिं यह रिश्ता हमारे संबंधो में कड़वाहट ना ला दे। गंगा ने उस दिन नीले रंग का सूट पहना हुआ था। पूनम को उस दिन उसी ने तैयार किया था। जब गंगा अपनी बहन पूनम को तैयार कर रही थी उस समय पूनम ने गंगा को कहा कि अगर तूने हमारी बात मानी होती तो आज मेरी जगह पर तू बैठी होती। आज मेरी नहीं तेरी सगाई हो रही होती । गंगा हँसते हुए बोली परंतु सच्चाई तो यह है कि, सगाई तुम्हारी है रमन के साथ। ज बवह होटल पहुँचे वहाँ उन लोगों का सभी ने प्यार और सत्कार के साथ स्वागत किया। गंगा ने रमन से भी हेला बोला लेकिन उसने गंगा से कोई बात नहीं की और उकसे ही सामने राजीव को गले लगाया। रमन ने उस समय गंगा को तीखी नजरों से देखा। उस समय उसकी नजरें यह बोल रही थीं कि, अब तू देख मैं तेरे साथ क्या करता हूँ। जब वहाँ फोटो और वीडियों लीए जा रहे थे तब रमन ने गगां को एक तरफ कर दिया और बोला यहाँ पर सिर्फ मेरा परिवरा ही आएगा। गंगा फिर से अपनी बहन के साथ खड़ी हो गई फोटो करवाने के लिए रमन ने फोटोग्राफर को रूकने को बोला और उसने गंगा को फिर वहाँ से एक तरफ कर दिया और बोला यहाँ सिर्फ मेरे दोस्त ही आएंगे लेकिन उसने राजीव को अपने साथ

खड़ा कर लिया। एक बार फिर से रमन ने गंगा की तरफ तीखी नजरों से देखा और अपना सिर झटक दिया। पूनम ने रमन को कुछ भी नही बोला। यह सब पूनम देख रही थी फिर भी वह चुप रही। उस समय गंगा किन परेशानियों के साथ जी रही थी इन सब किसी को कोई अंदाजा तक नहीं था। सभी बहुत खुश थे इस रिश्ते को लेकर। ऐसा लग रहा था मानो गंगा के माता–पिता की बहुत बड़ी जिम्मेदारी खत्म हो गई हो। जब सभी रिश्तेदार वापस चले गए तो गंगा ने भी अपना कॉलेज शुरू कर दिया। उसने सब कुछ राम को बताया लेकिन उसने खास कुछ बोला नहीं । कभी–कभी गंगा को ऐसा महसूस होता था कि कहीं मैं किसी गलत इस के चक्कर में तो नहीं पड़ गई हूँ। उसे लगता था जैसे उसने राम के साथ रिश्ता जोड़ कर कोई गलती कर रही है। उसने राम की वजह से अपने सारे रिश्ते खो दिये है। वह फिर अपने दिल को बोलती थी कि मैंने उसे वचन दिया है। कभी धोखा न देने का तो फिर मैं यह क्या और क्यों सोच रही हूँ। वचन तो सुखः और दुखः दोनों समय के लिए होता है। गंगा आज राघव से फिर मिली थी कॉलेज में। राघव ने उसे एक नौकरी दिलाने का वादा दिया दिल्ली में। गंगा ने राघव को बोला लेकिन अभी तो मेरी पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई है। राघव ने कहा कोई बात नहीं मैं सारी बातें कर लूंगा वहाँ पर। गंगा ने मना कर दिया और बोला बातें कर लूंगा वहाँ पर। गंगा ने मना कर दिया और बोला मेरे मम्मी–पापा मुझे वहाँ नहीं जाने देंगे वो भी अकेले। ऐसा कभी नहीं हो सकता । राघव ने गंगा को पैसे का भी लालच दिया और बोला एक बार तू घर से भाग कर दिल्ली चल और फिर देखना वहाँ पर कितना पैसा है। गंगा ने राघव को कठोर शब्दों में बोल दिया मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती हूँ। मुझे नौकरी नही करनी है आज के बाद मुझ से ऐसी बातें मत करना। दोस्त हो दोस्त बनकर ही रहो। तभी गंगा की बस आ गई और वह चली गई। घर जाकर गंगा ने अपनी माँ को राघव की बात बताई तो उसकी माँ ने उसे समझाते हुए बोला कहीं भी जाने की जरूरत नहीं है उसे मना कर देना और उस लड़के से दूर रहना। गंगा ने अपनी माँ को कहा ''आप चिंता मत करो मैंने उसे मना कर दिया है।''

अगले दिन जब राम उसे कॉलेज में मिला तो, वह अपने साथ एक पोलीथिन के अंदर एक रूप्ये का सिक्का, लाया था और उसमें संतरी रंग का सिंदूर पड़ा हुआ था। राम ने वह पेकेट गंगा को दिया और बताया कि, यह मेरी मम्मी हनुमान के मंदिर से लाई है। वह कह रही थी कि, वहाँ जाने से सभी की मनोकामना पूर्ण हो जाती है। गंगा ने राम को पूछा लेकिन यह तुम मुझे क्यों दे रहे हो। राम बोला इस पैकेट को तुम अपने मम्मी पापा के सिरहाने गददे के नीचे रख देना। गंगा को यह सुनकर थोड़ा अटपटा सा लगा। राम से गंगा ने पूछा इससे क्या होगा और मैं ऐसा क्यों करूं। राम ने गंगा

को बताया मेरी मम्मी ने बोला है ऐसा करने से तेरे मम्मी पापा का ह्रदय परिवर्तन हो जाएगा और वह हमारी शादी करवा देंगे। हम जो भी कुछ बोलेंगे वह लोग वही करेंगे। गंगा उसकी बातें सुनती रही और बाद में बोली इसे वापस ले जाना। मैं अपने माता–पिता के साथ कोई धोखा नहीं करूँगी और आज के बाद ऐसी कोई भी वस्तु मेरे पास लेकर मत आना। गंगा ने ऐसी बातें कभी सुनी नहीं थी इसलिए उसे यह सब बहुत बुरा लगा। उसने राम से कहा हम अपने परिवार को सच्चाई से मनाएंगे न कि ऐसे धोखे से। गंगा नाराज होकर चली गई राम भी उसे मनाता रहा लेकिन गंगा नहीं मानी। गंगा अपने घर पहुँची ही थी कि, थोड़ी देर बाद घर की घंटी बजी । गंगा अपने कमरे में आराम कर रही थी। दरवाजा उसकी माँ ने खोला सामने एक लड़का खड़ा था। उसने कहा आंटी मैं गंगा का दोस्त हूँ। गंगा की माँ ने उसे अंदर सोफे पर बैठने को कहा और गंगा को आवाज लगाकर बोली तुम्हारा दोस्त है बाहर आ जाओ उसकी माँ ने उस लड़के से उसका नाम पूछा। उसने अपना नाम राघव बताया। गंगा की माँ उसे चहचान गई थीं लेकिन उन्होंने उसे कुछ नहीं कहा। तभी अंदर से गंगा भी आ गई। उसकी माँ उठकर जाने लगी तो गंगा ने अपनी माँ को रोककर बोला ''मम्मी आप भी बैठो यहाँ''। गंगा की माँ भी वहीं बैठ गई । गंगा ने राघव से पुछा यहाँ कैसे आना हुआ कोई काम था क्या? राघव ने कहा नहीं काम नहीं था। थोड़ी देर बैठ कर वह बोला हाँ! याद आया मुझे एक लिफाफा चाहिए था। क्या एक मिलेगा गंगा ने पुछा कुछ काम है क्या ? राघव बोला मुझे किसी की शादी में जाना है। तुम चलोगी क्या मेरे साथ। गंगा ने मना कर दिया जाने के लिए। थोड़ी देर वह वहाँ बैठा और फिर चला गया। उसने जाने के बाद गंगा बोली बड़ा अजीब सा लड़का है। गंगा ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया उस पर ! दूसरी तरफ राम की माँ गंगा को किसी न किसी बहाने से अपने घर बुलाती रहती थी। कभी – कभी तो गंगा चली जाती थी। लेकिन जब भी गंगा वहाँ जाती थी तो उसकी माँ उससे घर का काम करवाती थी वह भी बड़े ही आराम से मदद के रूप में और यह बोलती थी कि, आज नही ंतो कल तू इसी घर में आने ही वाली है बहू बनकर तो फिर अभी से हमारे घर के चाल चलन सीख लो। गंगा उसकी माँ के सामने कुछ भी नहीं बोल पाती थी। लेकिन मन ही मन यह सोच रहती थी कि, कहीं मेरा परिवार इन लोगों के बारे में जो भी कुछ बोलता है सच तो नहीं है। गंगा ने अपने घर पर कभी भी इतना काम नहीं किया था। गंगा के घर पर तो बचपन से ही नौकर चाकर काम किया करते थे। राम की माँ अपने घर पर ब्यूटी पार्लर चलाती थी तो उसने कहा तू भी यह सब सीख ले । शादी के बाद यह बस तुझे ही संभाल ना है। गंगा बोली लेकिन मैं कहाँ से सीखूंगी हमारे घर के पास तो कोई पार्लर क्लास नहीं चलाता है। उसकी माँ बोली मैं सिखा दुंगी। गंगा सोच में पड़ गई अब मैं क्या करूं। मैं आंटी को मना भी नहीं

कर सकती हूँ और घर पर मैं कैसे बात करूं। गंगा ने फिर भी अपनी माँ से हिम्मत करके पूछा उसकी माँ ने साफ–साफ मना कर दिया और बोला आज के बाद इस बात पर कोई बहस नहीं होगी। गंगा ने उसकी माँ को मना कर दिया उसकी बात सुनकर राम और उसकी माँ ने यह सोचा अब हम क्या करें जो कि वह यहाँ पर आ सके। अब गंगा के घर पर इन्हीं बातों को लेकर आए दिन लडाइयाँ होने लगी थीं। गां को अपने घर पर यह तनाव अच्छा नहीं लगता था लेकिन उसके माता–पिता यह सब समझने को तैयार नहीं थे। फिर भी वह कोशिश करती रही सभी को मनाने की।

एक दिन जब गंगा कॉलेज गई तो देखा कि उसके कॉलेज में पुलिस आई हुई थी। उसके सभी दोस्त वहाँ खड़े हुए थे और गंगा का इंतजार कर रहे थे। उसके प्रोफेसर भी वहाँ पर खडे थे पुलिस के हाथ में एक फोटो भी थी। जिसके बारे में वह पूछताछ कर रहे थे। उसकी दोस्त हेमा ने अपने पास बुलाया और कहा यह लोग तेरे से भी कुछ पुछताछ करना चाहते हैं। पहले तो वह इंस्पेक्टर गंगा से काफी अकड़ कर बात करने लगा था लेकिन जैसे ही गंगा ने उस इंस्पेक्टर को अपने पापा का परिचय दिया सुनते के साथ वह इंस्पेक्टर मेडम कहकर बात करने लगा। गंगा ने बोला आप पहले भी तो मुझसे ऐसे बात कर सकते थे। आप लोगों के लिए इंसान की कोई कद्र नहीं है सिर्फ कुर्सी की है। गंगा ने फिर कहा पुछिए आप मुझसे क्या पुछना चाहते हैं। पुलिसने वह तस्वीर दिखाते हुए पुछा इसे आप जानती हैं। गां ने बाला हाँ, यह तो राघव है लेकिन आप क्यों पुछ रहे हैं इसके बारे में। तभी प्रींसिपल सर बोले इसके मम्मी पापा का दिल्ली से फोन आया था कि उनका बेटा जब से यहाँ से गया है वह घर नहीं आया है और न ही कोई फोन आया है। गंगा के साथ राम भी वहाँ खड़ा था वह भी यह सब सुन रहा था। तभी गंगा ने बताया कि, लेकिन यह तो मुझसे बोल रहा था कि वह अभी पन्द्राह दिन पहले दिल्ली गया था अपने मम्मी–पापा के पास । पुलिस ने गंगा को कहा आप जो भी कुछ इसके बारे में जानती हैं आप हमें सब कुछ बता दीजिए । गंगा ने उन्हें वह सारी बातें बता दीं जो वह उसके साथ करता था। उसने बताया कि उसके पर्स में बीस हजार रूपये भी थे उस दिन। लेकिन अजीब उस दिन लगा जिस दिन वह मेरे घर आया था और बोलने लगा मुझे अपने दोस्त की शादी में जाना है। वह तो मुझे भी अपने साथ ले जाने के लिए ज़िद कर रहा था लेकिन मैंने मना कर दिया था उसे। उस दिन के बाद उसे मैंने नहीं देखा कॉलेज में। उसने मुझे और रानी को दिल्ली भागकर चलने के लिए कहा था। वह कह रहा था कि वहाँ पर मैं तुम्हारे लिए नौकरी का इंतजाम करके आया हूँ। उसने मुझे अपने पापा का पता और फोन नम्बर भी दिया था। उसने मुझे यह भी बोला था कि वह यहाँ पर अपने चाचा चाची के घर रहता है। और हर हफ्ते वह

दिल्ली जाता है अपने परिवार के पास। पुलिस ने वह पता और नम्बर गंगा से ले लिया था। और उसे यह बताया कि जिनको वह अपने चाचा–चाची बता रहा है। वह लोग तो उसके पापा के दोस्त हैं। जिन्होंने उसे वहाँ आने के एक महिने बाद ही वहाँ से निकाल दिया था। गंगा ने चौंक कर बोला लेकिन जब वह मुझे पन्द्रहा दिन पहले मिला था तो उसने मुझे वहीं बुलाने की बता बोली थी और यह भी कहा था कि वहाँ पर मैंने एक पार्टी रखी है। तुझे जरूर आना है हमारे सभी दोस्त भी आ रह हैं और मेरे कुछ दोस्त दिल्ली से भी आ रहे हैं। पुलिस ने गंगा को बताया कि उन लोगों ने राघव को इसलिए निकाल दिया था क्योंकि वह रात को देर–देर से घर आता था। कभी–कभी तो रात के दो बजे, कभी चार बजे, कभी –कभी तो कुछ भंयकर से आदमियों को भी वह साथ में लेकर आता था। गंगा यह सब सुन कर स्तबध हो गई थी। उसे राघव के ऊपर शक हो रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी कीचड़ में गिरने से बच गई हो। इतनी ही देर में पुलिस ने यह पता और फोन नम्बर पता करा लिया था। उन्होंने बताया कि यह पता और फोन नं0 किसी ओफिस का है उसके पापा का नहीं है। गंगा म नही मन यह सोच रही थी कि मुझे हमेशा ऐसे ही लोग क्यों मिलते हैं। सब मुझे ही मूर्ख क्यों बनाते हैं। गंगा को बचपन तक की सारी बातें याद आने लगीं थी जो कुछ भी कभी उसके साथ गलत हुआ था। फिर गंगा ने गहरी सांस भरी और वहाँ से सभी को बाय बोलकर चली गई।

जिस वक्त गंगा कॉलेज में थी उस समय राम की माँ ने गंगा के घर फोन किया और न जाने क्या बोल कर उसकी माँ को आज गंगा को घर भेजने के लिए मना लिया था। जब गंगा घर आई तो सबसे पहले उसकी माँ ने उससे राम को लेकर सवाल जवाब किए और बोला तूने ही फोन करवाया था ना उसकी माँ से। गंगा ने बोला नहीं माँ आज तो वैसे भी कॉलेज में पुलिस आई थी पापा के ही ऑफिस के थे वह लोग। फिर गंगा ने सारी बातें अपनी माँ को बता दी। यह सब सुनकर उसकी माँ डर गई और बोली उस लड़के को देखने के बाद ऐसा ही लगता था जैसे वह किसी गिरोह के लिए काम करता है। गंगा की माँ ने उसे कहा अच्छा यह सब छोड़। गंगा की माँ थोड़ा अकड़ कर उसे बोला कि आज राम की माँ का फोन आया था और वह बोल रही थी कि आज उसके घर पर तीन चार औरतें और लड़कियाँ आने वाली हैं। उनके घर शादी है और उन्हें तैयार करना है। उसकी माँ को तेरी मदद चाहिए सिर्फ आज के लिए ही मैं तुझे वहाँ भेज रही हूँ वो भी सिर्फ मदद करने के लिए। लेकिन इसका मतलब यह नही है कि हम तेरी शादी के लिए मान गए हैं। गंगा ने डरते – डरते अपनी माँ भी पूछा आप भी आओगी क्या मेरे साथ। उसकी माँ ने मना कर दिया और कहा

जल्दी आ जाना। गंगा राम के घर जाने के लिए खुश तो थी लेकिन उसका अंदर का मन यह बोल रहा था कि आज कुछ गलत होने वाला है। गंगा को लेकिन समझ नही आ रहा था क्या होने वाला है आज उसके साथ। वह सारे रास्ते यह सोचती रही कि, काश मेरे माता–पिता इस रिश्ते के लिए हाँ बोल दें। जब गंगा राम के घर पहुँची तो उसकी माँ नीचे बैठी उसका इंतजार कर रही थी। गंगा ने आकर सबसे पहले उसके पैर छूए और बोला आंटी यहाँ तो कोई भी नहीं है। गंगा ने सवाल किया आप कहीं जा रही हैं क्या ? राम की माँ ने जवाब दिया कि बस यहीं पास में जा रही हूँ कुछ सामान लेना था तू बैठ मैं अभी दस मिनट में वापस आती हूँ। उसकी माँ ने कहा अगर तुझे चाय पीनी हो तो बना लेना। गंगा को अजीब सा लगा और सोचने लगी यह लोग तो घर आए महमान को पानी को भी नहीं पूछते हैं। ऊपर से काम भी करवाते हैं दूसरे ही पल उसने सोचा कोई बात नहीं यह लोग अब मुझे अपने घर का ही सदस्य मानते हैं इसलिए इतना अधिकार समझते हैं मुझ पर। राम की माँ ने गंगा को कहा मैं चती हूँ बैठ यहाँ। फिर वह बोली दोपहर का वक्त है मैं दरवाजा बाहर से ही बंद कर जाती हूँ अभी आ जाऊंगी। गंगा ने सिर हिलाते हुए हाँ बोल दिया। राम की माँ ने दरवाजा बाहर से बंदर कर दिया और वह वहाँ से चली गई। गंगा सोफे पर बैठ गई और सोच रही थी। यह लोग मुझे कितना प्यार करते हैं लेकिन मम्मी पापा को तो समझ ही नहीं आता है वह अपने ख्यालों में खोई हुई थी कि, अचानक से ऊपर वाले कमरे से राम की जोर जोर से चिल्लाने की आवाजें आने लगी गंगा डर गई थी। उसे तो पता तक नही था कि राम भी घर पर ही है। डर की वजह से वह ऊपर जाते जाते सोच रही थी अगर राम घर पर ही था तो वह नीचे क्यों नहीं आया। उसकी माँ ने भी मुझे नहीं बताया और फिर दरवाजा बाहर से क्यों बंद कर दिया यह सोचते – सोचते वह राम के कमरे तक पहुँच चुकी थी। उसने धीरे से दरवाजा खोला तो उसने देखा कि राम अपने बैड पर लेटा हुआ था और अपना सिर पकड़ा हुआ था उसकी आँखे बंद थी और जोर –जोर से चिल्ला रहा था कि, ऐसा मत करो, वापस आ जाओ मुझे छोड़ कर मत जाओ। गंगा घबराती हुई उसके पास आकर बैठ गई और उसे पूछा क्या हुआ राम। राम बस चिल्लाता ही जा रहा था गंगा ने उसे फिर हिलाया और राम इस बार उठकर बैठ गया और गंगा को जोरसे अपनी और खींखा और उसके गले से लिपट गया। गंगा ने उसे इस रूप में पहली बार देखा था। गंगा को फिर भी कुछ समझ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। गंगा को इस तरह किसी लड़के ने पहली बार छूआ था तो उसे यह सब अजीब सा लगा उसने राम को हटाने की कोशिश भी की। लेकिन उसने गंगा को इतनी जोर से जकड़ा हुआ था कि वह खुद को छुड़ा ही नही पा रही थी। वह बार–बार बोलती चली जा रही थी कि राम मुझे छोड़ दो लेकिन उस लड़के ने गंगा का

हाथ जोर से खींचा और बिसतर पर गिरा लिया इस जोर जबरदस्ती के चक्कर में गंगा का सूट थोड़ा सा फट गया। उस दिन राम को देखकर ऐसा लग रहा था मानो उस दिन वहाँ राम के रूप में कोई शैतान है। गंगा रोती चली जा रही थी । उसकी आवाज कमरे बाहर तक नहीं जा रही थी और उस घर में भी कोई नहीं था। गंगा चिल्लाती जा रही थी ओर उसे धक्का देती जा रही थी। जो भी कुछ उसके हाथ में आ रहा था उसे वह फेंकती जा रही थी। वह इतनी लाचार हो गई थी और बार–बार वह अपनी मम्मी को पुकार रही थी। बार–बार वह अपने भगवान् को पुकार रह थी लेकिन उस दिन कोई नहीं आया उसकी मदद करने। राम ने उस दिन गंगा का शोषण कर दिया था। उसे अपने माँ–बाप की सारी बातें याद आ रही थीं और वह खुद को कोस रही थी आज मैं यहाँ क्यों आई। अब जाकर राम ने उसे छोड़ा और फिर गंगा के पैर पकड़ कर रोने लगा। रोते – रोते वह गंगा से मॉफी माँग रहा था। गंगा एक कोने में सिमटी हुई बैठी थी और जोर–जोर से रो रही थी। राम बार–बार गंगा से मॉफी माँग रहा था। बस वह एक ही बात बोले जा रहा था मुझे मॉफ कर दे गंगा। मेरे से बहुत बड़ी गलती हो गई है। मुझे छोड़ना मत तुने मुझे वादा दिया है। तूने मेरे साथ शादी का वादा दिया है। अगर तूने मुझे मॉफ नहीं किया तो मैं मर जाऊँगा । गंगा रोती ही चली जा रही थी। जब गंगा ने रोना बंद नहीं किया तो उसने (राम) ने अपने मुँह पर थप्पड़ मारना शुरू कर दिए और हर थप्पड़ के साथ गंगा से मॉफी रहा था। गंगा इस दुविधा में थी अब मैं क्या करूँ। क्या मैं अपना जीवन समाप्त कर दूँ या अपने माता पिता को यह सब बता दूँ। गंगा ने फिर सोचा मेरा परिवार मुझ पर भरोसा नहीं करता है। वह तो यही सोचेंगे कि यह सब एक सोची समझी कहानी है। हमारे सामने आकर ड्रामा ही कर रही है। खुद जान बूझ कर उसने उस लड़के के साथ मुँह काला किया होगा और अब हमारे सामने शराफत का नाटक कर रही है। भगवान् मैं अब क्या करूँ। कुछ दिनों पहले ही माँ ने भगवान के सामने मुझसे कई तरिह के सवाल किए थे। गंगा ऊठी और सोचा यही ठीक होग मैं जीवन खत्म कर लेती हूँ और भागती हुई उसकी छत पर चली गई। रम भी वहाँ पर उसके पिछे–पिछे भागता हुआ आ गया। गंगा वहाँ से कुदने का सोच रही थी राम ने उसे वहाँ से खींचा और दो थप्पड़ लगा दिये । वह उसे वहाँ से घसीटता हुआ नीचे कमरे में ले आया । तभी उसकी माँ भी वहाँ पर आ गई और भोल पन से बोली क्या हुआ गंगा। गंगा उस औरत के ऊपर चिल्ला पड़ी अपने बेटे से पूछो क्या हुआ। उसने मेरा शारीरिक शोषण किया है अब मैं इसको छोडूंगी नहीं। तुम्हारे बेटे ने मेरी आत्मा का भी बलात्कार कर डाला है। फिर राम उसके पास अपने लगा गंगा खड़ी हो गई और उसकी और अपनी ऊँगली दिखाते हुए और अपनी आँखो में खून भरते हुए बोली अब तेरा विनाश करीब आ गया है। उन दोनों को ऐसा लग रहा था कि यह गंगा नहीं है जैसे

काली माँ इसके अंदर आ गई है। गंगा जैसे पागल ही हो गई थी उस दिन । वह कह रही थी तुम जैसे ही लोग होते हैं जो एक सीधी साधी लड़की को अपवित्र कर देते हैं। तुम लोगों ने मानवता का चीर हरण कर डाला है। तुम लोग तो इंसान कहलाने के लायक ही नहीं हो। गंगा जोर–जोर से चीख रही थी। तभी राम ने गां के मुँह पर हाथ रखते हुए बोला थोड़ा धीरे बोल लोग सुन लेंगे गंगा फिर से चीखी और बोली वाह! वह! अपनी इज्जत की बहुत फिक्र है कहीं लोग सुन ही न लें तेरी करतूतें। और मेरी इज्जत का क्या कोई मोल नहीं है। अब तो ये सारी दुनिया देखेगी तुम लोग कितने शरीफ हो। राम तू बहुत बड़ी–बड़ी बातें किया करता था कि तू औरतों की बहुत इज्जत करता है कहाँ गई वह सारी बड़ी–बड़ी बातें। ऐसे इज्जत की जाती है औरतों की। यही संस्कार है तेरे घर के। राम की माँ यह सब खडे–खड़े सुन रही थी और राम उसे मनाने में लगा हुआ था। गंगा ने उसकी माँ को कहा शायद मेरे पापा ने तुम्हारे बारे में जो भी कुछ बताया था वह सब कुछ सही था। आज जो भी कुछ इसने किया है वह आपके ही संस्कार हैं आंटी हे ना, मैं सही कह रही हूँ ना। उसकी माँ एक दम से ऊँची आवाज में पूछा क्या ? गंगा ने फिर से बोला अपनी आवाज नीची करके बात करो मेरे साथ। उसकी माँ एकदम चुप हो गई। गंगा अपना सिर पकड़ कर रोती जा रही थी। राम की माँ गंगा के पास आई और बोली ''बेटी'' मेरे बेटे को मॉफ कर दे वह तुझसे बहुत प्यार करता है। इससे गलती हो गई है। अगर तूने इसे मॉफ नहीं किया तो यह मर जाएगा। गंगा बोली यह है इसका प्यार। उसने राम की माँ को बोला शायद यह सब तुम लोगों की चाल थी मेरे खिलाफ। आपने तो मुझे यहाँ पर अपनी मदद के लिए बुलाया था है ना! तो फिर आप कहाँ चली गई थीं बाहर से कुंडी लगा कर और आपने तो ऐसा बोला था कि, घर पर कोई नहीं है तो फिर राम कहाँ से आ गया। वह औरतें और लड़कियाँ कहाँ चली गई अब। सभी मर गए क्या ? तो एक काम करो तुम भी जाकर मर जाओ।

गंगा अपने घर जाने के लिए जैसे ही खड़ी हुई उसने देखा कि उसका सूट एक तरफ से फट गया था। हिम्मत करके वह नीचे गई और सूई धागे से उसे सिल सिल लिया और उसने राम की माँ को बोला अब तुम देखो कल तुम्हारा क्या होता है। वह जाने ही लगी थी कि उसकी माँ ने उसे रोका और बोला गंगा ऐसा मत करना कुछ भी। तुम्हारे घर वाले तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे और यही कहेंगे तू झूठ बोल रही है शादी करने के लिए । अभी कुछ दिन पहले क्या हुआ था तेरे घर पर मालूम हे ना तुझे। राम से गलती हुई है मैं मानती हूँ लेकिन क्या तू उसे प्यार नही करती है। क्या उसने आज से पहले कुछ ऐसा किया था तेरे साथ हमारा क्या होगा अगर हमारा बेटा मर गया तो।

इसकी जिम्मेदार सिर्फ तू ही होगी। गंगा ने फिर से उसकी माँ की तरफ देखते हुए बोला और अगर मैं मर गई तो इसके जिम्मेदार तुम दोनों ही होंगे। मेरी बात का जवाब नहीं दिया आपने जो लोग घर पर आने वाले थे वह क्यों नहीं आए या फिर कोई आने वाला ही नहीं था। राम की माँ ने कहा मेरी बात पर ध्यान जरूर देना। गंगा वहाँ से बिना कुछ कहे वहाँ से चली गई। लेकिन उसका मन बहुत ही बेचेन था। वह चलती ही चले जा रही थी और वह खुद से सवाल जवाब कर रही थी। अगर यह बात मैंने किसी को बता दी तो क्या होगा। क्या मेरा कोई विश्वास करेगा अगर मेरी बात मम्मी को कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगी। पापा ने मुझे घर से निकाल दिया तो मैं कहां जाऊंगी । क्या होग मेरा भविष्य। यह सोचते सोचते उसके कदम रूकने लगे थे और वह वहीं एक बस स्टॉप पर ही बैठ गई। उसने फिर सोचा क्या मेरा फैसल सभी के हित में होगा। गंगा को फिर से अपना वचन याद आया कि उसने राम को वादा दिया था। गंगा की आत्मा राम को मॉफ करने के लिए तैयार नहीं थी लेकिन उसका दिल अभी भी उसे प्यार करता था। गंगा ने सोचा राम ने पाप किया है लेकिन अगर मैं उसे सुधरने का मौका नहीं दूंगी तो वह कैसे सुधर पाएगा। अगर हमारी शादी हो गई होती और तब उसने कोई और बढ़ी गलती कर दी होती तो क्या मैं उससे तलाख ले लेती। तब मैं उसे एक और मौका नहीं देती क्या ? तो फिर मैं उसे अब एक और मौका क्यों नहीं दे सकती। गलतियाँ तो इंसानों से ही होती हैं। राम भी तो इसांन है। हर पत्नि या प्रेमिका का यही फर्ज होता है कि वह अपने साथी का साथ दे। उसकी गलतियों को भुला कर जिंदगी में आगे बढ़े। अगर मैं उसकी गलतियों को ही याद करती रहूँगी तो मैं जीवन में आगे कैसे बढ़ूँगी । गंगा ने राम को एक और मौका देने का फैसला किया। गंगा के साथ जो कुछ भी घटा या उस दिन। उस दिन से गंगा की जिंदगी के मायने ही बदल गए थ। उसने किसी को कुछ भी नहीं बताया था। उससने राम को मॉफ करने का फैसला भी कर लिया था। लेकिन वह खुद से नजरें नहीं मिला पा रही थी। कंही न कंही वह खुद को ही इस बात का जिम्मेदार मानने लगी थी। उसे ऐसा लगता था काश मैंने अपने दिल की बात मानी होती । उसकी मासूमियत जैसे कहीं खो सी गई थी। उसे ऐसा महसूस होता था जैसा वह अपने शरीर में वास कर रही आत्मा को दुख पहुँचा रही है। मन ही मन उसने ऐसा फैसला कर लिया था जिसका भुगतान उसकी आने वाली जिंदगी को भरना पड़ा। परंतु उस समय उसे जो कुछ भी सही लगा उसने वही किया। वह अब बिलकुल अकेली हो चुकी थी। वह अपने दिल का दर्द या व्यथा किसके साथ बांटती। न तो कोई ऐसा दोस्त था न परिवार में कोई ऐसा था जिस पर वह आँख बंद कर के भरोसा करती और यह सोच पाती कि वह उसका अपना है। हर व्यक्ति उसके परिवर का उस पर सिर्फ शक ही करता था। वह अकेली ही अपनी तकलीफों से जूझ रही थी। अब

उसने खुद से यह वादा किया था कि, अब वह शादी राम से ही करेगी क्योंकि राम ने उसे किसी के लायक छोड़ा ही नहीं है। उसे ऐसा लगता था अगर उसने किसी और के साथ शादी कर भी ली तो वह उस लड़के को धोखा देगी। अगर वह किसी और के साथ शादी करती भी है तो वह उसे सब कुछ साफ–साफ बता देगी अपने और राम के रिश्ते के बारे में। अगर वह यह बात किसी को भी बताती है तो उसके परिवर की बहुत बदनामी होगी। गंगा ने आखिर में यही सोच कर चुप रहने में भी की भलाई है और अब यह मेरा नसीब भी है। भगवान् जो करते हैं अच्छा ही करते हैं। शायद इसमें भी भगवान की ही कोई मर्जी होगी। अब गंगा राम से बातें नही करती थी। कॉलेज में और नहीं ही उसके घर जाती थी। अब गंगा उदास रहने लगी थी। उसकी यह उदासी उसकी माँ भी महसूस कर रही थी। उसकी माँ ने उसे पुछा कोई बात है क्या जो तुझे परेशान कर रही है। गंगा ने मना कर दिया ऐसा कुछ नहीं है मम्मी। गंगा फिर बोली आप परेशान मत होईये मैं ठीक हूँ। उसकी माँ ने फिर पुछा राम से लड़ाई हुई है क्या ? उससे सम्बन्धित कुछ है तो तु मुझे बता सकती है। अपनी माँ की यह बात सुनकर गंगा फुट–फुट कर रोने लगी। उसका इस तरह रोना देखकर उसकी माँ भी रो पड़ी। एक बार तो गंगा ने सोचा मम्मी को सब कुछ बता देती हूँ लेकिन उसके मन ने बोला गंगा ऐसा मत करना। तेरी माँ तेरे लिए कुछ भी नहीं कर पाएगी। तेरी सारी बातें तेरे भाई–बहन तक पहुँच जाएँगी रमन तक भी चली जाएँगी और वह तेरा सबसे बड़ा दुश्मन है। गंगा यह सब बातें सोच रही थी। उसकी माँ माँ ने फिर से बोला मैं तेरी माँ हूँ तेरा चहरा पढ़ पा रही हूँ । जैसे काँच के ग्लास में पानी भरा होता है और उसमें से सब कुछ साफ–साफ दिखाई दे रहा होता है वैसे ही मुझे सब कुछ दिखाई दे रहा है। माँ ने बताया कि, पूनम की शादी तारीख निकल आई है। दो महिने बाद उसकी शादी है। पापा बोल रहे थे कि, अगर शादी में हमें कोई परिवार पसंद आया तो हम उनके साथ तेरे लिए बात कर लेंगे। गंगा ने कुछ नहीं बोला । उसकी माँ को इतना तो समझ आ गया था कि, कुछ न कुछ तो है। वह भी राम की तरफ से। गंगा की माँ को भी राम पसंद नहीं था। लेकिन अपनी बेटी की खुशी के खातिर उन्होंने राम के आरे में अपने परिवार के साथ बात भी की थी। परंतु पूनम, राजीव और उसके पापा ने साफ–साफ मना कर दिया।

गंगा मन ही मन यह सोचती रहती थी कि, हमेशा नारियों को ही क्यों सब कुछ झेलना पड़ता है। सवाल हमेशा नारी ही क्यों माँगे जाने हैं। गलतियाँ मर्द करते है लेकिन उसकी सजा औरतों को ही मिलती है। सजा के हकदार तो दोनों ही होते हैं। हर इंसान मेरा फायदा क्यों उठाता है। मेरे नसीब में क्या सिर्फ लोगों का शिकार होना ही है। क्या कभी मेरे जीवन में भी खुशियाँ आएँगी। मेरे जीवन

का क्या उद्देश्य है। राम पर भी मैंने भरोसा किया था लेकिन उसने भी मेरा भरोसा तोड़ दिया। गंगा की बहन पूनम लेकिन उसने भी मेरा भरोसा तोड़ दिया। गंगा की बहन पूनम अपनी छुट्टीयाँ लेकर घर आने वाली थी कुछ ही दिनों में। अब घर पर शादी की तैयारियाँ शुरू हो गई थीं। गंगा सब कुद भुला कर अपने साफ मन और दिल से अपनी माँ के साथ जा–जा कर तैयारियाँ करवाती थी। कभी–कभी तो वह अकेली ही चली जाती थी अपनी बहन के लिए खरीदारी करने के लिए। कई–कई बार तो उसने अपनी छुट्टियाँ तक कर लीं थी क्योंकि अब दिनों में रिश्तेदार भी आने वाले थे। घर शादी है मन में खुशी तो थी लेकिन रमन के व्यवहार को लेकर मन दुखी था। गंगा यह सोचती थी कि इस शादी का हमारे रिश्तों पर क्या असर होगा। आखिर में वह सब कुछ भगवान के ऊपर छोड़ देती थी और अपने जीवन पर ध्यान देती थी।

शादी की तैयारियों के साथ–साथ उसे अपने कॉलेज और ड्रामा प्रेक्टिस पर भी ध्यान देना पड़ता था। धीरे–धीरे समय निकलता गया और एक दिन पूनम भी आ गई घर पर । गंगा खुश थी लेकिन पूनम गंगा पर नजर रखती थी और जब गंगा कभी राम को घर ले आती तो वह अपनी माँ से उसके बारे में बातें करती रहती थी। वहां अपने परिवार को सलाह देती रहती थी कि आप लोग इसके लिए कोई लड़का क्यों नहीं देख रहे हो। उसकी माँ ने बताया कि, उसने शादी के लिए मना कर दिया है। उसका कहना है कि मुझे किसी से भी शादी नहीं करनी है। माँ की बात सुनकर पूनम बोली तो भी इस लड़केके साथ घूमती क्यों रहती है। कई बार गंगा राम के साथ घर वापस आती थी और जाकर अपने कमरे में सो जाती थी। जब उससे सवाल किया जाता था क्या हुआ तू ऐसे क्यों लेटी है। वह कहती कि मैं थक गई हूँ थोड़ा आराम करना चाहती हूँ। तब फट से पूनम का सवाल होता था जब उसके साथ घूमती है तब नही थकती है क्या? बस जैसे ही घर पर आती है थक जाती है। गंगा ने भी जवाब दे दिया मैं तुम्हारे लिए ही बाजार गई थी। इसलिए राम को साथ ले लिया था। मैं उसके साथ अकेली नही गई थी मेरे साथ मेरी दोस्त हेमा और राहुल भी थे। पूनम को गंगा का जवाब अच्छा नहीं लगा आर एक दम से बोल दिया तो मत जा। अगर तू नहीं करेगी तो क्या मेरी शादी नहीं होगी। मुझे तेरी मदद की कोई जरूरत नहीं है। तू अगर इतनी होती तो अब तक इस लड़के को छोड़ दिया होता। वैसे भी रमन को यह लड़का पसंद नहीं है और न ही तेरी आदतें। गंगा ने अपनी बहन को बोला तो फिर मैं क्या करूं और रही रमन की बात वो कितना समझदार है वह मैं देख चुकी हूँ आप मुझे न ही बताएँ तो अच्छा होगा। उन दिनों पूनम सॉंतवें आसमान पर थी क्योंकि उसे रमन का असली रूप पता नहीं था। गंगा म नही मन यह सोचती थी कि, जब तुम्हें रमन का

असली रूप पता चलेगा तो तुम्हें बहुत दुख होगा। गंगा को दो दिन बाद एक शो में जाना था। उसने अपनी माँ को बोला परसों मुझे जल्दी जाना है और शो रात को देर तक चलेगा तो शायद मैं हेमा के ही घर रूक जाऊँगी। गंगा की माँ ने जाने के लिए मना कर दिया। उसकी माँ ने उसे ड्रामा छोड़ देने को कहा और बोला यह सब करने से क्या होगा। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। गंगा ने सारी बातें सुनने के बाद बोला मैं इसमें से बीचों बीच नही निकल सकती हूँ। मेरी वजह से सारा का सारा ड्रामा खराब हो जाएगा। मैं अपनी पूरी टीम को धोखा नहीं दे सकती हूँ। पूनम भी बोली तेरा रोल तो बहुत छोटा सा है तो फिर सरा समय वहाँ रहने की क्या जरूरत है। तू जल्दी भी आ सकती है वहाँ से। गंगा ने कहा मैंने उन्हें भरोसा दिलाया है जिसे में तोड़ नहीं सकती हूँ और अगर तुम लोगों को जाकर देखना है तो मेरे साथ आप भी चलो। पूनम ने कहा हमें फालतू में घूमने का कोई शोक नहीं है तू ही आवारागर्दी कर । गगा ने अपनी माँ को बोला दीदी को समझा लेना मेरी चीजों में टाँग न अड़ाएँ वह अपने काम से काम रखें । लेकिन उसकी माँ ने भी उसे बोल दिया तू कहीं नहीं जाएगी। सिर्फ कॉलेज जाओ और कहीं नहीं गंगा अब चुप हो गई लेकिन वह दुविधा में थी वह क्या करे। वह अपना भरोसा भी पूरा करना चाहती थी। दो दिन बाद वह चली गई लेकिन उससे सभी लोग नाराज थे घर पर।

गंगा बहुत परेशान थी। अभी तक वह राम वाली हरकत से बाहर नहीं निकल पायी थी। पूनम की शादी की वजह से भी वह बहुत थकी हुई थी कि गंगा के परिवार ने यह सब छोड़ने के लिए भी बोल दिया। वह अपनी तकलीफों के साथ जूझ रही थी लेकिन फिर भी इन सब का उसके ड्रामा प्रेक्टिस पर कोई फर्क नहीं पड़ा। गंगा अपनी तकलीफें और अपना कार्य दोनों को अलग रखती थी। वह किसी भी चीज को मिलाती नही थी। इन्हीं सब परेशानियों के चलते गंगा का बी.पी. लो हो गया था। एक तो उसने दो दिन से कुछ भी नहीं खाया था और उसने शो में भी हिम्मत रखी लेकिन जैसे ही शो खत्म हुआ वह बेहोश हो गई। जल्दी से उसे अस्पताल लेकर गए वहाँ डाक्टर ने उसे गुलुकोज चढ़ाया और कुछ दवाईयाँ खाने को दीं। घर तक छोड़ने राम हेमा और राहुल आए थे (गंगा के दोस्त) ! उस दिन हेमा और राम के ही घर पर रूके थे। पूनम उस दिन गंगा को शक की नजरों से देख रही थी। गंगा को कमजोरी थी लेकिन किसी ने भी उसकी तबियत के बारे में नहीं पूछा । गंगा की माँ ने गुस्से से बोला तुझे मैंने मना कर दिया था फिर भी तू वहाँ गई मेरी बात नहीं मानी । उसकी माँ ने उसके हाथ पर लगी पट्टी देखी तो पूछा यह क्या हुआ है। उसने बताया कि आज शो के बाद मैं बेहोश हो गई थी फिर वहाँ जो भी हुआ वह सब कुछ गंगा ने माँ को बता दिया पूनम

गंगा को घूर–घूर कर देख रही थी। और वहाँ पर तेजी से आकर उसने गंगा का बैग उठाया फिर उसे खोल कर गंगा की एक–एक चीज को देखने लगी। वह कुछ ढूँढ रही थी। उकी किताबें तक अलट–पलट कर उसने देखीं। बैग में रखा पर्स और पर्स का सरा सामान एक–एक कागज तक उसने देखा। उसके बैग में जो ताकत की दवाईयाँ रखी थी वह तक उसने देखी और शक करते हुए पूछा यह तेरे पास क्यों हैं। क्या हुआ है तुझे । तेरे कपडों में से दवाइयों की बदबू क्यों आ रही है। पूनम ने सवाल किया डाक्टर ने कोई पर्चा नहीं दिया हमें दिखा कहाँ है। पूनम ने तो जैसे सवालों की बारिश ही कर दी हो उस पर। पूनम ने सरा सामान और उसका बैग जमीन पर फैंक दियां। गंगा हिम्मत करके उठी और सारा सामान उसने उठाकर अपने बैग में वापस रख दिया। वहाँ से वह जाने लगी तो पूनम ने उसका हाथ खींच कर सोफे पर बिठा दिया और गुस्से से बोली हमें सच जानना है यह सब तो तू झूठ बोल रही है। तू कहाँ गई थी उस लड़के के साथ। हमने तुझे आज प्रसूती ग्रह में देखा था उस लड़के के साथ। गंगा ने चिल्लाते हुए बोला तो फिर आप लोग आए क्यों नहीं। तभी आपको सच पता चल जाता मुझसे पूछना भी नहीं पड़ता। आप लोगों को तो मुझ पर भरोसा ही नहीं है। आप लोग दूसरों पर ज्यादा भरोसा करते हो तो यह लो मेरे प्रोफेसर का फोन नम्बर खुद ही पता कर लो। गंगा ने अपने बस पास में लगा हुआ निशान भी दिखा दिया, उसने अपने कॉलेज की कापी भी दिखा दी जिसमें उस दिन की तारीख पड़ी हुई थी। पूनम ने बोला यह सब झूठ भी तो हो सकता है। तूने इसमें गलत तारीख डाल दी है हमें पागल बनाने के लिए। गंगा ने पूनम को कहा तो फिर आप उसी प्रसूती ग्रह में फोन करके पता कर लो मेरे बारे में। गंगा की माँ तो अपने सिर की कसम बार–बार खिलवा रही थी। पूनम उससे बहस किए जा रही थी। पूनम ने कहा हमें तुझ पर भरोसा नहीं है। गंगा ने बोला तुम तो इस तरह मुझ से बात कर रही हो जैसे तुम्हारे पास कोई सबूत है। अगर मेरी हर एक बात झूठ और प्लानिंग है तो फिर रमन के साथ तुम्हारा रिश्ता जुड़ना भी एक प्लान ही है। पूनम गुस्से में आकर बोली मैं तेरी जैसी नहीं हूँ तूने बाहर जाकर मुँह काला किया है और सबूत भी मिटा दिया है। गगा ने भी बोला तो फिर रमन के साथ भी तुम्हारा कोइ्र न कोई रिश्ता पहले से ही होगा। यह तुम्हारा ड्रामा होगा पहले रमन के साथ मेरी शादी की बात करना और बाद में उसी से खुद शादी कर लेना क्योंकि तुम अच्छी तरह से जानती थी मैं राम के अलावा किसी और के बारे में सोच भी नही सकती हूँ। उसकी माँ ने दोनों को चुप करवाया और गंगा अपने कमरे में चली गई। लेकिन कोई भ उसके पास नहीं आया उसको खाने के लिए बुलाने । गंगा भी बाहर नहीं गई और अपने कमरे की बत्ती बंद करके अपनी आँखे खोल कर पड़ी रही ओर सोचती रही हमेशा शक के दायरे में मेरा परिवार मुझे ही क्यों रखता है। हमेशा

सवालों के जवाब मैं ही क्यों दूँ। आज मुझे आराम की जरूरत थी और अपने परिवार की। लेकिन मुझ पर तो शक किया जा रहा है। मेरे चरित्र पर अंगुली उठाई जा रही है। यह तो मेरी छोटी सी बात का भरोसा नहीं कर पा रहे हैं अगर मैंने इन लोगों को राम की हरकत के बारे में बताया होता तो यह लोग तो मुझे मार ही डालते। शायद राम की माँ ने सही बोला था। उस दिन राम ने जो भी कुछ गतल किया था मेरे साथ लेकिन फिर भी आज वह और मेरे दोस्त मेरे साथ थे। जिन लोगों पर मैं जान छिड़कती हूँ उन्हें तो मेरे ऊपर शक हो रहा है। यह कैसे रिश्ते हैं। क्या कभी पूनम नहीं गई थी अस्पताल बरौड़ा में। तब तो किसी ने सवाल नहीं किया था। पूनम और राजीव दोनों ही 12वीं के बाद होस्टल में रहे हैं वह भी किसी दूसरे शहर में फिर भी उन पर पूरा भरोसा है कि वह लोग कभी गलत नहीं हो सकते हैं। मैं तो मम्मी–पापा के ही साथ रही हूँ हमेशा से फिर भी मुझ पर शक किया जाता है ऐसा क्यों भगवान। अगर पूनम को स्कूल के दिनों में एन.सी.सी. कैंप जाना था तो मम्मी पाप ने खुशी –खुशी बिना सवाल करे उसे भेज दिया था वो भी पन्द्रहा दिनों के लिए। लेकिन जब मैंने मम्मी पापा को बोला था कि एक कैंप जा रहा है 'डांग फोरेस्ट' में तो मम्मी पापा ने मना कर दिया था और बहुत जिद करने पर वह तैयार हुए थे शायद इसी वजह से उस कैंप में शेर आ गया था और हमें वापस आना पड़ा था। ऐसा ही होता है जब किसी बात को या चीज़ को ज़िद करके पाते हैं तो वह खराब ही होती है। फलती फूलती नहीं है। लेटे–लेटे गंगा को उस कैंप की बाते याद आने लगी थी। गंगा गहरे खयालों में खो चुकी थी। जब सारी टीम और बच्चे उस जंगल में पहुँचे तो गंगा ने अपने उलटे हाथ पर एक पुराना सा टूटा हुआ किला देखा। उस किले को देख कर गंगा चौंक गई और वह उसे मुड–मुड कर देख रही थी। उसके सर ने पूछा तुम क्या देख रही हो इतने ध्यान से उसने कहा वह किला। उसके सर बोले क्या है इस किले में ऐसा । पता नही सर लेकिन मैं इस किले में पहले भी गई हूँ। सर ने खिल्ली उड़ाते हुए पूछा कब गई हो सपने में। गंगा ने जवाब दिया हाँ सर, मैंने यह जगह सपने में ही देखी थी कुछ दिनों पहले। सर ने पूछा और क्या देखा था गंगा फिर से बोलने लगी थी। उस किले से पहले एक बहुत बड़ा बगीचा है। उस बगीचे में एक सुंदर सी लड़की है उसके राजस्थानी कपड़े पहने हुए हैं गहनों से वह लदी हुई थी लेकिन वह बगीचे से होती हुई इस किले में चली जाती है। वह जोर–जोर से भागती चली जा रही है। वह लड़की बहुत डरी हुई है कोई उसका पीछा कर रहा है पता नहीं कौन। किले में कोई और नहीं हैं। भागते–भागते वह किले के पीछे पहुँच जाती है और वहाँ से कूंद जाती है नीचे बहुत गहरी खाई थी। सर ने पूछा फिर क्या हुआ उसने कहा सर मैं डर गई थी और मेरी आँखे खुल गई थी। उसके सर ने उसकी बातों को ज्यादा ध्यान से नहीं सुना था। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे गंगा कहानी बना

रही है। थोड़ी ही देर में वह जगह आ गई जहाँ पर सभी को रहना था। वहाँ पर टेंट लगे हुए थे। गंगा सबसे पहले वाले टेंट में चली गई और अपनी बेडिंग खोल कर बिछा दी। तभी सभी को बाहर बुलाया गया। जंगल में जाना था और अगले दिन रौक क्लाइमिंग करनी थी। लेकिन जैसे ही सभी का खाना खत्म हुआ और जाने लगे तो गंगा को शेर की आवाज सुनाई दी लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया। गंगा को फिर से शेर की आवाज आई तो वह डर गई। उसने अपने सर को जाकर बताया लेकिन सर ने उसकी बात पर भरोसा नहीं किया और बोला ऐसा नहीं हो सकता तुम्हारा भ्रम होगा। कहीं तुम किले वाली कहानी जैसी कहानी तो नहीं बता रही हो। गंगा बोली नहीं सर! ऐसा नहीं है। मुझे सच में आवाज सुनाई दी है। सर ने बताया कि पिछले दस सालों से यहाँ पर रोज कैंप लगते हैं ऐसा कभी नहीं हुआ। अभी चलो हमारे साथ। आगे गए तो वहाँ पर खाना बदोश लोग मिले गंगा का भ्रम दूर करने के लिए सर ने उन लोगों से किले आर शेर के बारे में पूछा तो उन लोगों ने यह बताया कि यहाँ शेर तो आज तक नहीं आया है और यह किला तो बहुत सदियों से ऐसा ही है हाँ लेकिन इसकी एक कहानी है जो हमारे पूर्वजों ने हमें बताई थी। वह कहानी वही थी जो गंगा ने अपने सर को बताई थी। उनकी बात सुनकर सर चकित हो गए। सर यह सोचने पर मजबूर हो गए कहीं इस किले का संबन्ध गंगा से तो नहीं है। सभी अपने–अपने टेंट में चले गए। लेकिन गंगा डरी हुई थी। गंगा जब अपने घर से निकली थी तो वह अपने साथ सांई बाबा की तस्वीर लेकर आई थी। उसने वह तस्वीर अपने हाथ में ली और प्रार्थना की । भगवान सबकी मदद करना। इतना कहकर वह लेट गई। मगर उसे नींद नही आ रही थी। उसने टेंट का एक कोना हटाकर देखा तो सामने शेर खड़ा था उसे देख कर गंगा की आँखे खुली की खुली रह गई जैसे उसकी आवाज बंद ही हो गई हो। उसे ऐसा लगा जैसे आज उसका जीवन समाप्त हो गया हो। गंगा पहले नम्बर के टेंट में सबसे आगे सो रही थी। वह शेर को देखती जो रही थी और भगवान को याद कर रही थी शेर ने अगले टेंट में घुस कर एक लड़के को खींच कर ले गया वहाँ पर हल्ला हो गया और तभी के तभी सभी वोलेंटियर्स बंदूक लेकर चले गए। सुबह सभी को वापस ले आए और उस शेर को भी पकड़ लिया था। घायल बच्चे को अस्पताल ले जाया गया। बाद में यह पता चला कि वह बच्चा उन्हीं सर का था जिन्हें गंगा ने बताया था। उन सर को गंगा से डर लगता था। उन्हें ऐसा लगता था जैसे यह लड़की किसी शक्ति के साथ रहती हैं। यह सब सोचते हुए गंगा को झटका लगा और उसने अपने आस पास देखा तो वहा अपने बैड पर लेटी हुई थी। ''

उस दिन गगां पूनम के व्यवहार से दुखी थी। वह उसके बाद एक हफ्ते तक कॉलेज नहीं गई। गंगा अपने अनुभवों से कॉफी कुछ सीख रही थी। हर पल उसे एक खालीपन का एहसास होता था। वह सभी के बीच होते हुए भी अकेली थी। गंगा किसी ऐसे व्यक्ति का इंतजार कर रही थी जो उसे समझ सके। जो उसके दिल की गहराई को समझ सके लेकिन फिर वह सोचती थी ऐसे लोग तो सिर्फ किस्से कहानियों में ही होते हैं। असल जिंदगी में तो सिर्फ कमजोर इंसान को दबा दिया जाता है। जो प्यार करता है उसे हर मोड़ पर सिर्फ इंमतिहान ही देने पड़ते है और जो लोग हर समय सभी को नीचा दिखाते हैं उनसे सभी डरते हैं और उसी की इज्जत करता है समाज। मुझे नफरत है ऐसे समाज से जो सच्चाई का साथ नहीं दे पाता है।

अगले दिन राजीव भी आ गया था। लेकिन उसने गंगा से कोई बात नहीं की थी। गंगा उसकी बातों को भुला कर घर का माहौल ठीक करने की कोशिश करती रहती थी लेकिन शायद उसका परिवार आगे नहीं बढ़ना चाहता था। वह पुरानी बातों को ताजा रखना चाहता था। जिंदगी में बढ़ना ही जिंदगी होती है लेकिन शायद यह लोग चलना नहीं चाहते है वहीं खड़े रहना चाहते हैं। छुट्टी वाला दिन था गगा की माँ ने डाईनिंग टेबल पर नाश्ता करते समय सभी से यह बोला कि, हमें गंगा के बारे में सोचना चाहिए। जैसे ही यह सब बातें शुरू हुई गंगा वहाँ से उठ कर चली गई अपने कमरे में । गंगा के पिता ने पूछा क्या सोचना है हमें। फिर उसकी माँ बोली उसके और राम के रिश्ते के बारे में । माँ की बात सुनकर सभी बोल पड़े उसने आपका भी दिमाग खराब कर डाला है। उके पिता ने कहा जो हमें रिश्ता पसंद आएगा वहीं पर हम इसकी शादी करेंगे । उसकी माँ ने फिर बोला इस बात को चलते–चलते एक साल हो गया है। घर पर तनाव भी होता है और अब तो पूनम की शादी के लिए हमारे सारे रिश्तेदार भी आने वाले हैं। मैं नहीं चाहती कि उनके सामने कोई तमाशा हो। अगर किसी ने इस बात के बारे में पूछ लिया तो हम क्या करेंगे। जब भी यह तीनों इक्टठे होते है माहौल बिगड़ जाता है। इसने तो उस लडके को अपना पति मान ही लिया है तो हम इसका रिश्ता उसके ही साथ कर देते हैं। पूनम बोली मम्मी उसकी बातों में मत आओ यह कोई प्यार नहीं है यह दोनों केवल एक दूसरे के प्रति आकर्षित हैं। जब घर चलाना पड़ेगा तो आटे–दाल का भाव पता चल जाएगा इन दोनों को अभी उसका गरम खून बोल रहा है। राजीव से भी उसकी माँ ने पूछा। राजीव ने ता एक दम से बोल दिया । इस बारे में मेरे से आप मत पुछो। अगर उसके साथ आपने शादी करने का सोचा भी तो मैं यहाँ नहीं आऊँगा और न ही में भाई के आपको इससे रिश्ते रखने हैं तो आप रखिए फर्ज निभाऊँगा। मुझे नहीं रखने हैं। आपको जो करना है आप करो लेकिन

मुझे से कोई उम्मीद मत रखना। मैं समझूंगा मेरी एक ही बहन है। गंगा की माँ ने कहा लेकिन फिर हम समाज को क्या जवाब देंगे और अपने रिश्तेदारों से हम क्या बोलेंगे । राजीव ने बोला तो इसमें मैं क्या करूं। गंगा की माँ ने सभी को ठंडे दिमाग से सोचने के लिए कहा। जिस दिन छुट्टी वाला दिन होता था गंगा के लिए बहुत सारी मुश्किलें खड़ी हो जाती थी। गंगा की माँ ने उसके पिता और बहन को मना लिया था। अब सभी ने यह फैसला लिया था कि गंगा को ''रोका'' कर देते हैं राम के साथ। बाद में क्या होता है वह बाद की बात है। शायद गंगा का भी मन और फैसला बदल जाए। घर पर रोज़ माहौल तनावपूर्ण रहता है। हर इंसान अपना नसीब खुद लेकर आता है, अगर गंगा इसमें ही खुश है तो हमें उसकी खुशियों का ख्याल रखना चाहिए। इस सब बातों में राजीव उनके साथ नहीं बैठा हुआ था। गंगा की माँ ने उसके पिता को समझाया कि आज तक कभी भी उसने किसी भी लड़के की बात हमारे सामने नहीं रखी थी। उसने पहली बार किसी को इस नजर से देखा है। वह चाहे तो मंदिर में जाकर उस लड़के से शादी कर सकती है। या फिर वह भाग भी सकती है लेकिन उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया है। वह तो हमारी रजामंदी चाहती है। आप ऐसा ही समझ लो कि, वह हमारे से किसी खिलौने की जिद कर रही है। उसकी इच्छा पूरी करना हमारा फर्ज है। वैसे भी हम उसकी शादी अभी नहीं कर रहे है। माँ की बात उसके पिता और बहन के दिमाग में आ गई थी। उसकी माँ ने इस रिश्ते के लिए उन्हें मना लिया था। अगले दिन जब गंगा कॉलेज गई थी तब गंगा की माँ ने राम के परिवार से बात कर ली थी और इन दोनों का ''रोका'' करने का समय निर्धारित कर लिया था। जब गंगा कॉलेज से वापस आई तो उसकी माँ ने उसे बताया आज शाम को तैयार हो जाना हम सभी राम के घर जा रहे हैं। गंगा अचमभित थी यह लोग वहाँ जाने की बात क्यों कर रहे हैं। उसने माँ से पूछा तो उन्होंने कहा वहाँ चल कर पता चल जाएगा सब कुछ । सभी लोग राम के घर गए लेकिन बेमन। राजीव नहीं आया था इन सब के साथ। उसे वहाँ जाकर पता चला कि आज उसके रिश्ते को नाम मिलने वाला है। राम और गंगा का उस दिन विधी के अनुसार रिश्ता जोड़ दिया गया लेकिन जितना खर्च गंगा के परिवार ने किया था उन लोागें के ऊपर। इतना ही ज्यादा कंजूसी राम के परिवार ने दिखा दी थी। जब गंगा के घर वाले वापस आने लगे तो राम की माँ ने गंगा की माँ को बोला गंगा को शाम तक के लिए हमारे घर पर ही रहने दो इसे राम छोड़ देगा शाम को। यह बात गंगा के परिवार को पसंद नहीं आई फिर भी उन्होनें गंगा को वहीं छोड़ दिया। गंगा को उस दिन खुश होना चाहिए था लेकिन वह खुश हो नहीं पा रही थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कि मेरी मंजिल यह नहीं है। वह खुद से सवाल कर रही थी मैं यह सब क्यों सोच रही हूँ। मैं यही तो चाहती थी। रात होने वाली थी। राम को उसकी माँ ऊपर कमरे में लेकर गई और

बोली आगे हमें जो भी कुछ करना है बहुत सोच समझ कर करना है। गंगा को हमारे ऊपर शक नहीं होना चाहिए। अब तो राम का परिवार ऐसा सोचने लगा था कि गंगा नाम की चिड़िया हमारे पिंजरे में फंस चुकी है। हम इसको जैसे चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं। राम की माँ ने अलमारी से एक पुड़िया उसे दी और बोली जब तू गंगा को इसके घर छोड़ने जाए तो यह पुड़िया गंगा के कमरे में गद्दे के नीचे चुपचाप से रख देना बाकी मेरे ऊपर छोड़ देना। राम जब गंगा को घर छोड़ने गया तो उसने वही किया जो उसकी माँ ने करने के लिए कहा था। फिर भी राम और गंगा के साथ किसी का व्यवहार बदला नहीं था। उस दिन भी उससे सवाल किए गए थे तू हमारे साथ क्यों नहीं आई गंगा ने कहा मैं कैसे आ सकती थी आपको भी पता है। लेकिन अभी भी उसका परिवार दिल से खुश नहीं था। राजीव ने तो उससे बात तक नहीं की। गंगा के घर में एक चीज जरूर बदली थी राम के साथ आने जाने पर पहले की तरह रोक टोक नही थी। जब भी गंगा राम के घर जाती थी तो उसकी माँ किसी न किसी बहाने से गंगा से सारा खाना बनवा लेती थी। राम का परिवार उससे छोटा मोटा काम करवाता रहता था जिस वजह से वह थक जाती थी। गंगा उन लोगों का सरा काम हँसते हँसते कर देती थी। गंगा भी अपने लिए पूनम की शादी में पहनने के लिए एक साड़ी और गहने खरीद कर लाई थी। उसने वह साड़ी राम की माँ को भी दिखाई थी। उस समय गंगा की माँ बोली तुम तो बहुत ज्यादा खर्च करती हो गंगा। यह बात उसने राम को भी बताई। उसने कहा (राम ने) मेरी माँ को गलत मत समझना उन्होंने ऐसे ही बोल दिया होगा। लेकिन गंगा ने यह सोचा कि, अभी तो हमारी सगाई भी नही हुई है यह लोग तो अभी से मुझे खर्च करने पर टोकने लगे। जब शादी हो जाएगी तो उस वक्त क्या करेंगे यह लोग । लेकिन उसने इस बात को जाने दिया उस दिन गंगा थक हार कर जल्दी सो गई थी और उसने अपने सपने में राम को और खुद को देखा। उसने देखा वह राम के साथ पहले एक बस मे चढ़ती है उस वक्त उसने एक साधारण सा सूट पहना हुआ था। लेकिन जब वह उस बस से उतरी है तो उसने दुल्हन का पूरा जोड़ा पहना हुआ था लाल रंग का, उसकी पूरी माँग भरी हुई है सिंदुर से, हाथों और पैरों में महंदी लगी हुई थी, हाथों में चूढ़ा पहना हुआ था। वह बस से उतर कर एक सफेद रंग की कार में बैठ जाती है राम के साथ। वह बहुत ही खुश नजर आ रही है। गंगा राम के साथ कॉलेज के अंदर गई है। वहाँ उसे अपने बहुत सारे दोस्त और प्रोफेसर मिले हैं उन्होने गंगा को शादी की बधाईयाँ दी हैं और कहा कि गंगा तू तो बहुत सुंदर लग रही है। गंगा ने हँते हुए सभी को धन्यवाद दिया है। फिर थोड़ी देर बाद वही दरवाजा खुला जिससे गंगा राम का हाथ पकड़ कर अंदर गई थी। उसी दरवाजे से गंगा बाहर आती है लेकिन इस बार वह अकेली थी और वह बहुत दुखी है। उसने सफेद रंग की साड़ी पहनी हुई है।

शरीर पर कोई गहना भी नहीं है। उसकी मांग भी सूनी है और उसके पीछे एक छोटा सा लड़का चल रहा है जो बहुत सुंदर है। गंगा उस लड़के के साथ एक बस में चढ़ गई है और जैसे ही उस बच्चे ने गंगा को माँ कहकर पुकारा गंगा घबरा कर उठ कर बैठ गई।

उसने घड़ी की तरफ देखा तो सुबह के चार बजे थे। लेकिन वह बहुत डर गई थी। वह सोचने लगी मुझे उसे ऐसा सपना क्यों आया। यह बच्चा कौन है। लेकिन फिर उसने सोचा सपना ही तो है सच्चाई नहीं है। वह फिर से सो गई। लकिन उसका वह रूप बार–बार उसकी आँखों में आ रहा था। उसने अपने सपने के बारे में किसी को नहीं बताया। गंगा की माँ ने एक दिन राम के परिवार को रात के खाने पर बुलाया सभी लोग खाने पर आ गए थे। गंगा अपनी माँ की मदद कर रही थी। तभी वहाँ पर राम की माँ भी वहाँ आ गई और गंगा को देख कर बोली गंगा को सजने सँवरने का बहुत शौक है शायद । गंगा की माँ ने बोला हाँ, उसे बचपन से ही सजने सँवरने का बहुत शौक रहा है। यह अपने कपड़े भी ड़िजाईन ही पहनती है। आप इसकी अलमारी खोल कर देखो उसमें कहीं भी कोई जगह खाली नहीं मिलेगी आपको यह इतना मेकप खरीदती है कि, इतना तो किसी शादी शुदा औरत के भी पास नहीं होता है। राम की माँ बोली कोई बात नही धीरे–धीरे यह शौक भी भूल जाएगी। शादी के बाद मेकप करना और खरीदना भूल जाएगी। गंगा को उनकी बात सुनकर अच्छा नहीं लगा। गंगा की माँ ने कहा आप ऐसा क्यों बोल रही हैं शादी के बाद सभी लड़कियाँ ज्यादा से ज्यादा सामान खरीदती हैं। और आप ऐसी बातें बोल रही है राम की माँ ने एक दम से बात को घुमा दिया और बोली मेरा बोलने का यह मतलब नहीं था। शादी के बाद तो इतना समय ही नंही होता है। कि जाकर कुछ भी खरीदें। उसने एक दम से अपनी बेटी पूजा का उदाहरण देते हुए बोला वह भी तो नही करती है। गंगा और उसकी माँ एक दूसरे को देखती ही रह गई। ज बवह लोग चले गए तब गंगा की माँ ने गंगा से बोला देखा तूने वह क्या बोल रही थी। आज तो हम तुझे पाल रहे हैं तब यह लोग ऐसी बातकें कर रहे हैं लेकिन जब तू पूरी तरह से उस घर की बहू बन जाएगी तब तो यह लोग तुझे हर छोटी बात के लिए परेशान करेंगे। अभी भी तेरे पसा वक्त है तेरे लिए रिश्तों की कमी नही है। बस तेरे हाँ करने की देरी है। यह लोग मुझे तो लालची लगते हैं और जो लोग लालची होते हैं वह अपनी बहुओं को परेशान ही करते हैं। गंगा ने कहा यह लोग ऐसे नही हैं। गंगा की सबसे बड़ी गलती थी कि, वह सभी को बहुत ज्यादा प्यार और विश्वास करती थी जिसका सभी फायदा उठाया करते थे। गंगा को अगले दिन अहमदाबाद स्टेशन जाना था उसके ‘मामा–मामी और नानी माँ को लेने। अब धीरे–धीरे सारे रिश्तेदार आना शुरू हो गए थे। गंगा सभी

को खुद ही लेकर आती थी। और सभी का ध्यान भी रखती थी। लेकिन राजीव (गंगा का भाई) के तेवर सांतवे आसमान पर अभी तक चढ़े हुए थे। उसे यह सब काम करने में आलस आता था। गंगा के साथ उसके भाई–बहन ने क्या व्यवहार किया था यह सब किसी को पता न चले इसलिए गंगा अपने भाई – बहन के साथ पहले की तरह व्यवहार करने की कोशिश करती रहती थी। पूनम तो अपनी शादी की खुशियों में सब कुछ भूल गई थी। राम भी गंगा के घर आकर उनकी मदद करता था। राम ने गंगा के पिता का हाथ बटाया था उस समय। राम भाग–भाग काम करता था जो भी उसके (गंगा) पिता बोलते थे। यह सब राजीव को अच्छा नही लगता था। उस समय राम गंगा के पिता के करीब आ गया था। लेकिन फिर भी राजीव को यह सब मदद नहीं लग रही थी उसे ऐसा लगता था कि वह यहाँ आकर दिखावा कर रहा है सभी के दिल में अपनी जगह बनाने के लिए। लेकिन सच्चाई तो यह थी कि राजीव बहुत ही आलसी था। गंगा के माता पिता के दिल में राम की छवी अच्छी होने लगी थी। एक दिन शादी के माहौल में काफी रात हो गई थी और राम ने खाना भी नहीं खाया था। जब यह बात उसके (गंगा) के माता पिता को पता चली तो उन्हें काफी तरस आया राम के ऊपरं तब स्वंय गंगा के पिता ने उसकी माँ को उसे खाना खिलाने के लिए बोला। उस दिन गंगा ने भी खाना नहीं खाया था क्योंकि उस दिन गंगा ने पूनम को हाथ मैर में महंदी लगाई थी। गंगा की माँ ने उन दोनों को एक साथ बैठाकर खाना खिलाया। दूसरे दिन घर पर गणेश स्थापना थी। घर पर बहुत सारे लोग आए हुए थे। उस दिन पूनम का संगीत भी था। राजीव ने उस दिन से गंगा की बातों का जवाब देना शुरू किया था। लेकिन वह उससे सिर्फ हाँ या नहीं में जवाब देता था। गंगा को यह सब अच्छा नहीं लगता था लेकिन वह यही सोचती थी राजीव उससे छोटा है और मैं तो बड़ी हूँ बड़ों का बड़प्पन मॉफ करने में ही होता है। गंगा जानती थी अगर वह हाथ्ड्ढ नहीं बड़ाएगी तो राजीव उससे जिंदगी भर भी बात नही करेगा। अगले दिन पूनम की बारात भी आ गई। माँ ने सभी का स्वागत किया। जब दरवाजे पर रमन आया तो गंगा ने ंभी उसे हैलो बोला लेकिन उसने गंगा को अपनी अंगुली दिखा कर एक तरफ हट जाने को कहा। गंगा की आँखे भर आईं और वह बिना कुछ किसी को बोले पीछे हट गई यह सोच कर कि अगर किसी ने यह देख लिया होता तो तरह–तरह की बातें बनना शुरू हो जाती ं मेरे माता पिता फिर क्या जवाब देते लोगों को। यह सब गंगा की सहेली हेमा देख रही थी। उसे भी रमन का व्यवहार बहुत अजीब लगा। हेमा ने गंगा से पूछा तेरे जीजा जी ने ऐसा क्यों किया तेरे साथ। गगां ने बात बदल दी और बोला छोड़ सब। चलो अंदर चलते हैं। स्टेज पर दोनों बैठे हुए थे ओर सभी लोग उन्हें टीका लगा कर आर्शिवाद दे रहे थे। गंगा अपनी माँ की मदद कर रही थी सभी कार्यों में। जब सभी ने वह विधि पूरी कर दी तो

गंगा की माँ ने गंगा को आरती की थाली पकड़ाते हुए बोला जा तू भी जाकर दीदी जीजा को टीका कर दे। जैसे ही वहाँ पहुँची रमन ने पूनम को बोल दिया मैं तेरी बहन से टीका नहीं लगवाऊंगा उसे यहाँ से वापस भेज दे। फिर उसने गंगा की तरफ देखा और एक तरफ अपना सिर झटक दिया। गंगा ने यह सब सुन लिया था और वह वहाँ से अलग हो गई बिना टीका और आरती किये। गां की चाची ने उसे कहा तूनें क्यों आरती नहीं की अपने दीदी और जीजा की क्या तुझे पता नहीं हे यह हमारा रिवाज होता है। पूनम गंगा की तरफ देख रही थी पता नहीं अब गंगा क्या बोल देगी सबके सामने। वहाँ पर उसकी बूआ, मौसी और दूसरी चाचियाँ भ आ गई थीं। उसकी चाची ने सीाी को यह बात बता दी। अब पूनम को दिल ही दिल में डर लग रहा था गंगा अपनी बहन के चहरे को पढ़ चुकी थी। गंगा की चाची ने फिर से गंगा से जवाब मांगा। गंगा ने कहा अरे चाची जी आप तो छोटी सी बात का बतंगड़ बना रही हैं। उसने कहा आर्शिवाद तो बड़े देते हैं छोटों को और मैं तो छोटी हूँ उनसे। उसने कहा छोटी छोटी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं अभी चलो माँ बुला रही हैं। यह सब बोल कर गंगा ने सभी को चुप तो कर दिया लेकिन मन ही मन वह बहुत दुखी थी रमन के व्यवहार से। वह मन ही मन यह सोच रही थी कि, मेरी एक ही तो बहन है और हमारे घर पर यह पहली शादी है। इस इंसान का कैसा व्यवहार है मेरे प्रति अब गंगा को रमन के द्वारा किया गया व्यवहार भी याद आ गया था जब पूनम शादी से पहले घर आई थी और रमन का फोन आया तो गंगा ने ही फोन उठाया जैसे ही उसने हैलो बोला तो रमन ने सीधा बोला ''पूनम प्लीज़'' गंगा ने बोला मैं गंगा बोल रह हूँ आप कैसे हैं। रमन ने फोन रख दिया और थोड़ी देर बाद फिर से फोन बजा। फोन पर रम नही था उसने फिर से पूनम को बुलाने को कहा। गंगा ने कहा आपने पहले फोन क्यों पटक दिया था। आप हमें हैलो तो बोल ही सकते हैं। उसने कहा मैं तुम्हारे जैसी बत्तमीज लड़कियों से बात नहीं करता हूँ। गंगा ने फिर पूनम को बुला दिया लेकिन रमन ने पूनम से फोन पर ही लड़ाई कर डाली थी मेरी वजह से क्योंकि मैंने फोन उठा लिया थां गंगा को रमन का यह व्यवहार जब पसंद नहीं आया तो उसने अपनी माँ को जाकर बता दी। रमन का यह व्यवहार उसकी माँ को भी बहुत अटपटा लगा। जब पूनम फोन पर बात करके वापस आई तो वह गंगा पर ही बरस पड़ी तू रमन से बहस क्यों कर रही थी उसे कितना बुरा लगा है तुझे पता भी नहीं है। गंगा ने भी पूनम से पूछ लिया मैंने क्या किया था सिर्फ तुम्हारे होने वाले पति का हाल पूछ लिया था। हमें भी बुरा लगता है जिस तरह रमन मेरे साथ पेश आता है। गंगा यह सब सोच ही रही थी कि हेमा ने आकर फिर से गंगा को बोला तेरे जीजा जी ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं तेरे साथ गंगा ने जवाब दिया क्योंकि मे राम को प्यार करती हूँ और रमन को राम बिल्कुल भी पसंद नहीं है। हेमा ने गंगा को बोला मैं तुझे बुलाने

आई थी आंटी तुझे बुला रही हैं अंदर। गंगा और हेमा दोनों वहाँ से चली गई। घर पर शादी का माहौल था फिर भी गंगा को किसी न किसी वजह से रोना ही पड़ता था और सभी गंगा के ऊपर रौब भी जमाते रहते हैं क्योंकि वह घर की छोटी बेटी है। राजीव तो लड़का है इसलिए वह तो कभी गलत हो ही नही सकता है। रही पूनम की बात वह घर और खानीदान की सबसे बड़ी बेटी है वह तो बहुत ही संस्कारी है। गंगा सोचती जा रही थी यह है हमारा समाज जो कि बिल्कुल खोखला है। इस खोखले पन की शुरूआत घर से ही होती है। गंगा अपनी माँ के पास जा चुकी थी। माँ ने उस दिन की जिम्मेदारियाँ गंगा को समझा दीं थी और बोला था अपनी बहन को अकेला मत छोड़ना तू उसी के पास बैठना। गंगा ने अपनी माँ को बोला आप चिंता मत करो मैं से संभाल लुंगी। गंगा की माँ को बोला आप चिंता मत करो मैं सब संभाल लुंगी । गंगा की माँ जानती थी कि, गगां को अगर कोई कार्य सौंपा जाता है तो वह उसे वक्त से पहले करती है और सुनाने का मौका भी नहीं देती हैं।

गंगा अपनी बहन के पास जाने लगी तो उसने देखा उसकी बहन कमरे में बैठकर रो रही थी जैसे ही वह अंदर जाने लगी उसने रमन को भी बैठे देखा। गंगा थोड़ा सा रूकी और फिर अंदर चली गई। उसने पूछा क्या हुआ दीदी आप रो क्यों रही हो। उसने अपनी बहन को पानी दिया और चुप कराने लगी। तभी रमने ने उसे बाहर जाने को कहा बाहर जाकर मेरी सहेली गीता को अंदर भेज दे। गंगा को पूनम का यह व्यवहार बहुत परेशान कर रहा था। उसने गीता को अंदर भेज दिया जैसे ही गीता कमरे में गई रमन ने दरवाजा बंद कर लिया। गंगा सामने ही खड़ी थी और रमन ने उसके मुंह पर ही दरवाजा दे मारा। यह देख कर उसके आँसू बहने लगे। गंगा की सहेली हेमा ने गंगा को फिर बोला तू यह सब सहन क्यों कर रह है। आंटी को बता क्यों नहीं देती सब कुछ हेमा को समझाते हुए गंगा ने कहा इस वक्त चुप रहने में ही सबकी भलाई है। हमारा सारा समाज यहाँ पर है अगर किसी को कुछ भी पता चला तो यहाँ तमाशा हो सकता है। जब काफी देर हो गई गीत भी बाहर आ गई तो गंगा ने पूनम से पूछा क्या हुआ क्या बात है और ऐसी क्या बात थी जो तुम मेरे साथ नही कर सकती थीं लेकिन अपनी सहेली के साथ कर पा रही थीं। पुनम ने गंगा को जवाब दिया यह सब समझ पाना तेरे दिमाग के परे है। बडों की बातें तू नहीं समझ सकती । हेमा ने पूनम और गंगा की बातें भी सुनी लेकिन उसने गंगा से कुछ नहीं पूछा इस बार लेकिन वह कुछ तो समझ गई थीं काफी रात हो चुकी थी। गगा की माँ ने जब गंगा को सीढ़ीयों पर अपने दोस्तों के साथ बैठा देखा तो उसकी माँ ने उससे सवाल किया तू यहाँ क्या कर रही है मैंने तो तुझे पूनम के पास बैठने

के लिए कहा था। हेमा ने गंगा की माँ को सब कुछ बता दिया। यह सुनकर उसकी माँ चिंता में आ गई थोड़ा परेशान भी हो गई। गंगा ने अपनी माँ के कंधे पर हाथ रखते हुए बोला मम्मी आप चिंता मत करो कुछ गलत नही होगा सब ठीक ही होगा। गंगा का चहरा देख कर उसकी माँ को थोड़ा चैन आया। माँ के जाने के बाद हेमा ने गंगा को पूछा तू ऐसी क्यों है। इतना सब कैसे सम्भाल लेती है तू। गंगा ने ऊपर की तरफ इशारा किया और बोली मेरे साथ मेरा भगवान है तो सब कुछ हो जाता है। हेमा ने एक ही बात बोली गंगा तू महान है। जब काफी रात हो गई तो गंगा की माँ ने गंगा को कहा कि, पूनम बता रही है कि रमन को काफी तेज बुखार चढ़ आया है। गंगा ने कहा उसे नजर लग गई होगी मैं जाकर उसकी नजर उतार आती हूँ। फिर गंगा ने उसकी नजर उतार आती दी जाकर और सुबह तक वह बिल्कुल ठीक हो गया। दिन में उसकी बहन पूनम की शादी थी। उस दिन भी रमन जब भी गंगा को अपने या पूनम के आस–पास देखता था तो वह पूनम को कहने लगता था कि अपनी बहन को बोल यहाँ से दूर हो जाए। गंगा का हर पल उसकी नजरों से खुद के लिए नफरत ही दिखाई देती थीं गां के लिए यह सब सहन करना मुश्किल होता जा रहा था। गगा को अपने ऊपर तरस भी आ रहा था। उस समय राजीव भी रमन के ही साथ था। गंगा या तो वहाँ पर आए हुए महमानों का ध्यान रख रही थी या फिर अपने दोस्तों के ही साथ थी। उसका भाई उसके साथ नहीं था। शादी सम्पन्न होने के जब वह दोनों स्टेज पर खडे थे उसी समय गंगा ने राम को रमन से मिलवाया। राम ने रमन के पैर छूकर हैलो बोला तो रमन ने अपने पैर पीछे कर लिए और बोला ठीक है यह देखकर राम और गंगा दोनों को ही बहुत बुरा लगा लेकिन फिर भी वह दोनों चुप रहे। जब जूता चुराई की रसम हो रही थी और जब दुल्हा दुल्हन घर की चौखट पर आते हैं तो उस समय साली दरवाजा रोख कर खड़ी हो जाती है। और अंदर आने के और जूते वापस देने के लिए अपना नेग माँगती है अपने जीजा से । गंगा भी खड़ी हो गई दरवाजे पर और उसने भी रमन से बोला पहले मुझे पैसे दो फिर ही मैं तुम्हें अंदर आने दुंगी। पहले तो रमन ने पूनम की तरफ देखा वह भी गुस्से से और बोला मेरा पर्स कार में ही रह गया है। गंगा ने बोला तो फिर किसी से मंगला लो मैं कुछ नहीं जानती हूँ पैसे तो आपको देने ही पडेंगे। जिस वक्त गंगा यह सब बहस रमन के साथ कर रही थी उस समय गंगा के खानदान की सारी औरतें और बच्चे भी वहीं पर मौजूद थे। गंगा की सारी सहेलियाँ भी वहाँ खडी थी ओर सभी उस समय मजाक कर रही थी रमन के साथ। पीछे से सभी चिल्लाने लगी पैसे तो आपको देने पडेंगे गां की । रमन चिल्लाते हुए बोला तुझे जूते भी नही चाहिए और अंदर भी नहीं आना है पीछे से गांग की चाची ने बोला हम अपनी बेटी आपको ऐसे नहीं दे सकते। गंगा ने फिर रमन को बोला जीजा जी आपके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है

अगर दीदी को ले जाना है तो हमारी बात मान लो। गंगा ने अपना हाथ आगे कर दिया। रमन ने गंगा के हाथ को जोर से झटका और उसके कंधे को पीछे की तरफ धक्का देते हुए बोला – ''चल हट जा यहाँ से मेरा समय खराब कर रही है।'' तभी वहाँ गंगा की माँ भी आ गई चिल्लाने की आवाज सुन कर सभी औरतें भी चुप हो गई थीं। गंगा की माँ ने गंगा का पीछे से हाथ पकड़ का इशारे से चुप हो जाने को कहा और बोला अभी के लिए सब छोड़ दे हम आराम से बाद में बात करेंगे। फिर रमन गंगा को धक्का देते हुए ओर उसे घूरते हुए अंदर आ गया। पूनम भी कुछ नहीं बोल पाई लेकिन उसे अपनी बहन के लिए बुरा लग रहा था। सभी अंदर चले गए और गां वहीं खड़ी रह गई उसके साथ हेमा भी वहीं पर थी। इस बार तो हद ही हो गई थी। इस बार तो उसने वहाँ का सारा माहौल ही खराब कर दिया था। गंगा के आँसू बहने लगे थे और वह जाकर सौफे पर ही बैठ गई तभी उसकी सहेली हेमा ने उसे कहा तेरा जीजा तेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है। उसने हेमा को चुप रहने को कहा और बोली अगर किसी ने भी यह सुन लिया तो हंगामा हो जाएगा । जो हो गया सो हो गया जाने दे। शायद मैं अपनी नसीब में यही लिखवा कर लाई हूँ या फिर मैं इस लायक ही नहीं हूँ कि कोई भी व्यक्ति मेरी इज्जत करे। लेकिन इस बार गंगा यह सोच रही थी कि, मेरी इज्जत करे। लेकिन इस बार गंगा यह सोच रही थी कि, मेरी इतनी बड़ी बेइजति हुई फिर भी किसी ने पूनम से जवाब नहीं मांगा। अब तो पूनम ने अपने पति की जेब को छू कर नही देखा कहिं वह झूठ तो नहीं बोल रहा है। यह सब होने के बाद गंगा उन लोगों से दूर ही थी बस जब विदाई होने वाली थी तब गंगा की माँ ने पूनम की सास को कहा कि, हमारे यहाँ रिवाज है कि विदाई के साथ दुल्हन की छोटी बहन भी साथ जाती है। तो मैं गंगा को भी साथ जाने को बोल देती हूँ उसने भी अपना सामान तैयार कर लिया है। तब तो रमन ने कुछ नहीं बोला। जैसे ही गंगा अपना बैग लेकर आई वैसे ही रमन ने उसे बोल दिया कार में जगह नहीं है यह हमारे साथ नहीं आएगी। रमन की माँ ने उसे बोला यह रिवाज होता है तू ऐसा मत कर लेकिन उसने अपनी माँ को चुप करा दिया। गंगा की माँ ने जैसे ही फिर से कहा रमन भड़क कर बोला अगर इसको आप लोगों ने भेजा तो मैं पूनम को भी यहीं छोड़ जाऊंगा। यह सुन कर गंगा ने अपना बैग वापस उठाया अपनी बहन को गले लगाया और अंदर चली गई। सभी रिश्तेदारों ने रमन के नाम पे थू–थू करना शुरू कर दिया था। सभी को इतना तो समझ आ गया था कि इनका दामाद बहुत ही नकचढ़ा है। गंगा म नही मन खुद को कोस रही थी और सवाल जवाब खुद से ही कर रही थी यह कैसा रिश्ता है। इस इंसान ने तो भरे समाज में मेरी इज्जत निकाल दी फिर भी उसे चुप कराने वाला कोई नहीं था। ऐसे लोगों को बढ़ावा घर से ही मिलता है। उससे यह तक सवाल नहीं किया गया ''तुम्हारा क्या

अधिकार है गंगा की बेइजीत करने का''। दामाद हो दामाद बनकर रहो। क्या यह बात गंगा के पिता या भाई को नहीं बोलनी चाहिए थी। खैर कोई बात नहीं सदबुद्धि दे भगवान उसे। और मेरी बहन को सुखी रहे वहाँ। जब पूनम 3–4 दिन बाद उलटे फेरे के लिए घर आई तब भी रमन अपनी ही अकड़ में था। अ बवह पूरी तरह से अपना असली रूप दिखाने लगा था घर वालों को। हर बात में वह गंगा और राम को बीच में ले आता था। गंगा ने फिर परेशान होकर रमन को बोल डाला आपको क्या परेशानी है मुझ से। जब से आपका रिश्ता पूनम से जुड़ा है तुम सिर्फ मरे ही पीछे पड़े हो। रमन ने कहा मैं लफड़े बाज लड़कीयों से रिश्ते नही रखता हूँ। गंगा ने उसे बालो मैं राम को प्यार करती हूँ लफड़े नहीं करती हूँ। लेकिन तुम क्या जानो प्यार क्या होता है। प्यार की महसूस किया जाता है और महसूस करने के लिए दिल का होना जरूरी होता है जो आपके पास नहीं है। भगवान तुम्हें दिल देना भूल गए थे शायद इसलिए तुम्हें प्यार और लफड़े में फर्क पता नहीं है। रमन गंगा से ऐसी भाषा का प्रयोग करता था मानों वह कोई मवाली हो या फिर गंगा कोई धंधे वाली हो । गंगा ने कहा तुम्हारा रिश्ता सिर्फ पूनम के ही साथ नहीं जुड़ा है हमारे पूरे परिवार के साथ भी जुड़ा है। आपको रिश्तों की इज्जत करनी चाहिए। रमन ने गंगा की बात को बीच में काटते हुए कहा, मेरा रिश्ता सिर्फ पूनम के ही साथ है और किसी के साथ नही है। उसने कहा ऐसा नही होता है। शादी का अर्थ जो लोगों का जुड़ना नहीं होता है बल्कि दो परिवारों का का, अलग–अलग संस्कारों का जुड़ना होता है। लेकिन मैं यह सब तुम्हें क्यों बता रही हूँ तुम्हें तो किसी की इज्जत तक करनी नही आती है। तो फिर दिल की गहराई समझना तुम्हारे बस की बात नहीं है। रमन ने उसके बाद गंगा को कई बार लोगों के सामने बेइजत किया था लेकिन उस वक्त उसके परिवार ने या पूनम ने उसे नहीं टोका। उसका परिवार उसके (रमन) मुंह पर कुछ नहीं बोलते थे लेकिन उसके पीछे बातें करते थे। पूनम के घर गए। तब तक गंगा और राजीव के रिश्ते काफी हद तक सुधर चुके थे। अब पूनम और राजीव भी राम को पसंद करने लगे थे। सभी ने यह सोच लिया था कि हर इंसान अपन नसीब अपने साथ लेकर आता है। अगर इसके नसीब में दुख हैं तो इसे झेलने ही पडेंगे। हमारी बहन महनती है वह उसे भी संभाल लेगी। अब घर में इतना तनाव नही था जितना कि पहले था। लेकिन अब पूनम की शादी शुदा जिंदगी को लेकर सभी दुखी रहते थे। रमन पूनम को बहुत परेशान करने लगा था। अब पूनम को भी समझ आ चुका था कि गंगा ने उसे मना क्यों किया था, लेकिन अब यही उसका नसीब था। रमन ने पूनम को शादी के बाद उसके माईके नहीं आने दिया था। इसलिए ही गंगा राजीव को लेकर पूनम के पास बरौड़ा गई थी। लेकिन जब वह वहाँ पहुँची ता उसने देखा रमन उसकी बहन को नौकरों की तरह रखता है। उससे नौकरी भी करवाता है लेकिन एक दिन की

भी छुट्टी नहीं करने देता चाहें वह कितनी भी बीमार हो। हर छोटी–बड़ी बात पर वह टोकता रहता था उसे। वह क्या करेगी, कहाँ जाएगी, कितना खर्च करेगी, खाने में क्या बनाएगी ऐसी सारी बातें वह अपनी मर्जी से करवाता था। पूनम साँसे भी रमन के ही हिसाब से लेती थी। गंगा ने अपने आने की खबर पूनम को निकलने से पहले ही दी थी। जब रमन ने उन दोनों को अपने घर पर देखा तो राजीव ने उसके (रमन) पैर छूए और गंगा ने उसे हैलो बोला बल्कि वह जानती थी अब क्या होगा आगे। रमन ने राजीव को गले लगाया लेकिन गंगा की बात को सुनकर अनसुना कर दिया। रमन ने अंदर जाकर पूनम को कहा तूने बुलाया है अपने भाई बहन को यहाँ पर । पूनम ने जवाब दिया वह लोग खुद आए है यहाँ पर। रमन ने फिर से पूछा कितने दिन रूकने वाले हैं यहाँ पर। यह बात दोनों ने सुन ली थी लेकिन किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया जब दिन गुजर गया और रात को खाना खाने बैठे तो गंगा ने कुर्सी पीछे खिसकाई तो कुर्सी का कोना उसकी अलमारी में लग गया और वहाँ का थोड़ा सा पेंट हट गया। बस फिर क्या थ। जैसे रमन पागल ही हो गया हो। खाना छोड़ कर अलमारी को देखने आ गया और जोर–जोर से चिल्लाने लगा मेरी अलमारी खराब कर दी। अब मेरा एक और खर्चा बढ़ गया। पागल लड़की बिलकुल भी अंकल नहीं है। गंगा ने बोला इतना क्या हो गया हलका सा पेंट ही तो हटा है। अब मुझे यह सब ठीक कराना पड़ेगा। गंगा ने उससे मॉफी ली और बोला अब खाना खा लो । रमन भड़कता ही जा रहा था। तुझे खाना है तो खा। उसने फिर गंगा को अंग्रेजी में गाली देना शुरू कर दिया। साली आ गई यहाँ पर Stupid, Nonsense, वगेरा वगेराह। पूनम ने उसे चुप कराने की बहुत कोशिश की लेकिन वह चुप नहीं हुआ। इसके पैसे क्या तेरा बाप देगा। साली यहाँ पर हमारा नुकसान कराने आ गई। फिर क्या था गंगा भी खड़ी हो गई और बोलने लगी । मेरे पापा तक मत जाना तमीज मे ंरहकर बात करना। जब तक तुमने मेरी बेईजती की तब तक मैंने कुछ नही कहा लेकिन अब तुम मेरे पापा की बेईजति कर रहे हो। कुछ नहीं कहा लेकिन अब तुम मेरे पापा की बेईजति कर रहे हो। वह सब मैं सहन नहीं करूंगी। अब गंगा गुस्से में पागल होती चली जा रही थी। उसने रमन को बोला अब चुप हो जाना नहीं तो तुम्हारे घर का सारा सामान तोड़ दूँगी और तुम्हारे खिलाफ पुलिस कम्पलेंड भी कर दूंगी। तब जाकर रमन चुप हुआ । उस दिन किसी ने भी खाना नही खाया था। गंगा घर से बाहर निकल कर नीचे बैठ गई थी और सोच रही थी कैसा इंसान है यह इसके लिए रिश्ते नाते कोई माईने नहीं रखते हैं। पूनम कैसे रहती होगी इस इसांन के साथ। वहाँ बैठ–बैठे उसे पुरानी बातें भी याद आ रही थीं। जब गंगा पूनम की सगाई से पहले अपने माता पिता के साथ बरौडा आई थी रमन के माता–पिता से मिलने उस समय भी इसने ऐसा ही किया था। तभी वहाँ पर पूनम आ गई और रमन

की तरफ से माफी माँगने लगी। गंगा ने पूनम को कहा दीदी आप क्यों मॉफी माँग रही हो परंतु आप कैसे रहती हो इस इंसान के साथ तुम्हारी शादी को अभी 6 महने ही हुए हैं लेकिन ऐसा लग रहा है जैसे छह–सात साल हो गए हों। पूनम रोने लगी उसकी बातें करते–करते और बोलने लगी मुझे नहीं पता था कि, रमन ऐसा होगा अगर मुझे पता होता तो मैं इससे कभी शादी नहीं करती। पूनम रोती चली जा रही थी। गंगा अपना अपमान भूल कर पूनम को चुप कराने में लगी हुई थी। पूनम बोली रमन से शादी करना मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी भूल थी। मुझे फैसला सोच समझ कर लेना चाहिए था। गंगा ने पूनम को समझाया जब तक आप इसका जुल्म सहन करोगी वह उतना ही तुम्हें सताएगा। तुम क्यों सहन करती हो, हमेशा रोती क्यों रहती हो। उसको जवाब दो खडे होकर । आप इसको छोड़ क्यों नहीं देती हो। पूनम बोली मैं ऐसा नहीं कर सकती हूँ। मम्मी पापा की इज्जत का क्या होगा लेकिन क्या तुम इस इंसान का अत्याचार ऐसे ही झेलती रहोगी। अपनी आवाज उठाओ उसके सामने । उसे झुका दो अपने पैरों में। गलत तो गलत ही होता है और सही हमेशा सही होता है। कौन कहता है आप लोागें पर अत्याचार करो लेकिन गलत के खिलाफ तो आवाज उठानी ही चाहिए। तभी पूनम की नजर ऊपर अपने घर पर पड़ी तो वहाँ रमन खडे होकर हमें ही देख रहा था। थोड़ी देर बाद पूनम गंगा को लेकर ऊपर अपने घर चली गई।

दूसरे दिन रमन अपने औफिस जाने को तैयार हो रहा था और तभी पूनम ने रमन को बोला हमें मौल तक छोड़ देना गंगा को कुछ खरीदना है। बस फिर से रमन बरस पड़ा पूनम के ऊपर मैं कोई तेरी बहन का नौकर नहीं हूँ जो महारानी को अपनी कार में लेकर जाऊं। गंगा ने बीच में ही बोल दिया जीजू मैं अकेली नहीं जा रही हूँ मेरे साथ राजीव और दीदी भी जा रहे हैं। रमन जोर से चिल्ला कर बोला चुप कर तू तेरे से मैंने पूछा नहीं है जो इतना बकवास कर रही है। रमन ने गाली देते हुए बोला साली आ गई है। मेरे घर में लड़ाईयाँ करवाने। गंगा ने फिर बोला थोड़ा इज्जत से बात करिए। मैंने आपसे कोई बत्तमिजी नहीं की है तो कृप्या ठंग से बात करो। कल रात भी आपने बहुत तमाशा किया था। आपने इसलिए शादी की है मेरी दीदी से। रमन ने फिर बोला तो फिर ले जा अपनी बहन को वापस अपने घर यह मेरा घर है। यहाँ कौन आएगा कौन जाएगा वो मैं तय करूंगा तू नहीं। बिल्कुल सही बोला मेरी दीदी के साथ जो आप अत्याचार कर रहे हो तो इसके लिए तुम्हें घर पर सजा दी जाए या पुलिस स्टेशन में यह मैं तय करूंगी। बता दो आपको क्या चुनना है। मेंरी बहन को परेशान करना बंद करो और अपनी जिम्मेदारीयों को समझो। पूनम गंगा को चुप रहने के लिए बोलती जा रही थी और रमन को भी बोल रही थी। गंगा ने पूनम को बोला आपने देख

लिया न इसका असली रूप काश आपने भी इकसे रिजेक्ट कर दिया होता तो तुम्हारी यह हालत नहीं होती। रमन अपनी सीमाएँ पार करता चला जा रहा था और बोला तू यहाँ क्यों आई है, तुझे यहाँ किसने बुलाया था। यहाँ मैं अपनी मर्जी से आई हूँ और अपनी ही मर्जी से जाऊंगी तुम कौन होते हो मुझे रोकने टोकने वाले। मैं इस घर का मालिक हूँ। और मेरी बहन कौन है इस घर की नौकरानी ? रमन चुटकियां मार–मार कर बोलना शुरू हो गया था । चल निकल मेरे घर से अभी के अभी। गंगा ने भी बोल दिया देखती हूँ तुम मुझे बाहर कैसे निकालते हो। साली सब जगह घूमती रहती है लफडे करती हुई! हजारों के साथ सोती है और हजारों लफडे करती है शरम नही आती और अब मुझ पर डोरे डालने आ गई। वहाँ उस लडके के साथ घूमती है । पता नहीं कितने यार पाल रखे हैं।

गंगा यह सब अब सुन नही पा रही थी और गंगा जोर से चिल्लाई अब अपना मुँह बंद कर लेना। गंगा की आँखे लाल हो गई थी गुस्से से। रमन को थोड़ा झटका लगा उसे देख कर जैसे उसने गंगा की आँखों में कुछ देख लिया हो। वह एकदम से घर के बाहर निकल गया बिना कुद कहे। पूनम ने भी अपनी बहन गंगा के लिए रमन से बहुत लड़ाई की लेकिन राजीव सब कुछ सुन रहा था अंदर वाले कमरे में बैठकर। उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं हुई की वह उठकर बाहर भी आया होता। उसने गंगा पर तो अपनी हिम्मत दिखा दी थी लेकिन जब उसका जीजा उसकी बहनों की बेइज्जति कर रहा था तो वह कुछ नहीं कर पाया। लेकिन फिर भी गंगा ने अपने भाई को कुछ नहीं बोला। वह टूट गई थी अपने ही जीजा की तरफ से परंतु उससे भी ज्यादा दुख उसे अपनी बहन पूनम के लिए हो रहा था वह परेशान थी क्या होगा मेरी बहन का। यह इंसान तो जानवर है। वह मन ही मन सोच रही थी क्या कभी औरतों को भी आजादी मिलेगी हमारा देश तो आजाद हो गया लेकिन औरतें तो आज भी आजाद नहीं है। क्या कभी हमारे समाज के दिमाग आजाद होंगे ? दिमागों में तो अभी भी बेढ़ियाँ ही पड़ी हुई हैं। औरत चाहें गाँव में रहने वाली हो या शहर में वह अनपढ़ हो या पड़ीलिखी उसका रिश्ता कोई भी हो वह माँ को, बहन हो, या बेटी हो उन्हें हर मोड़ पर परीक्षाएँदेनी पड़ती हैं। उन्हें इतना कुछ झेलना पड़ता है कि, उनकी आत्मा और शरीर जवाब दे जाता है। कब तक इस समाज के मर्द औरतों को अपनी जागीर समझ कर शोषण करते रहेंगे अपने अपने तरीके से । लेकिन इन मर्दों को और समाज को यह नहीं पता कि जब नारी सब कुछ सहन करते करते थक जाती है तो वह दुर्गा बन जाती है और फिर उसके सामने जो भी कुछ गलत होता है वह उन सब चीजों का नाश कर देती है। चाहें फिर वह उसका परिवार ही क्यों न हो। नारी अपनी आखिरी सांस

तक सब कुछ ठीक करने की कोशिश करती ही रहती है। यह बात रमन जैसे लोगों को समझ क्यों नहीं आती है। वह अपने ख्यालों में डूबी हुई थी और तभी पूनम ने उसके सिर पर हाथ रखा और उसके चाय का प्याला पकड़ा दिया। गंगा सभी को बहुत प्यार करती थी लेकिन अगर किसी ने उसके चरित्र या परिवारा पर अंगूली उठाने की कोशिश भी की तो वह सहन नहीं करती थी। वह अपने ऊपर हो रहे जुलम तो सहन कर सकती थी लेकिन अपने परिवार के ऊपर नहीं। उस दिन उनका सारा काम रमन ने चौपट कर दिया था।

दोपहर को रमन का फोन आया पूनम के पास और बोला आज मेरे कुछ दोस्त खाने पर आ रहें हैं रात को खाना बना लेना। इतना कह कर उसने फोन रख दिया। शाम का रमन के दोस्त घर पर आए और रमन ने सभी को गंगा से मिलवाया, यह बोलकर की यह मेरी प्यारी साली है और यह मेरा प्यारा साला है। रमन के दोस्त गंगा से अंग्रेजी में बात करने लगे। गंगा अंग्रेजी ठीक से बोल नहीं पाती थी वह अटक–अटक कर बात कर रही थी। रमन ने आकर बोला इसको अंग्रेजी बोलनी नहीं आती है आप इससे हिंदी में ही बात करो। गंगा को सब कुछ समझ आ रहा था। आज रमन ने उसके मित्रों को घर पर अचानक क्यों बुला लिया है। जो इंसान किसी के ऊपर एक रूपया भी खर्च करना नहीं चाहता वह अचानक से अपने दोस्तों को ऐसे बुला सकता है। रमन का एक मित्र फिर से आकर गंगा अगेजी में बातें करने लगा तो रमन ने फिर बोला अरे अभी मैंने आपको बताया था बेचारी अंगेजी बोल नहीं पाती है। उसके दोस्त ने बोला देखने में तो बड़ी मोडरन लगती है लेकिन अंग्रजी भी नहीं आती है। रमन दूर खड़ा मन ही मन खुश हो रहा था और सोच रहा था अब मजा आएगा तुझे।

गंगा ने उसे हँसते हुए बोला अच्छा तो फिर आपको आती है क्या ? उसने कहा हाँ ? गंगा ने फिर बोला वो तो दिखाई दे रहा है। आपको लगता है कि जो लोग अंग्रेजी नहीं बोल पाते हैं वह बेकार होते हैं हैना ? तो फिर हमें यह बताइए हमारी मात्र भाषा कौन सी है ? उसने कहा हिन्दी ! गंगा जोर से बोली हिंदी ! क्यों ? अंगेजी होनी चाहिए थी ''हैना'' मैं ठीक बोल रही हूँ ना। आपको क्या लगता है जो लोग अंग्रेजी बोलते है वही आज सफल हैं। शायद आपको ऐसा नहीं लगता है। अंग्रजी की जगह वहाँ है जहाँ पर सिर्फ अंग्रेजी की ही जरूरत है और इसके बिना हमारा काम नहीं चल पाएगा। क्या आपको मालूम है कि हमारे देश की बहतु ही मशहूर गायिका हैं उन्हें भी अंगेजी नहीं आती है फिर भी वह सभी के दिलों पर राज करती हैं। क्योंकि वह अंग्रेजी से गाने नहीं गाती हैं वह तो हिन्दी में और अपनी आत्मा से दिल की गहराईयों में खो कर ही गाती हैं। हमारी सभ्यता है

कोई इज्जत नहीं है आपकी नजरों में संस्कृति ''संस्कृत और हिंदी से ही उत्पन्न हुई हे लेकिन आप जैसे लोग क्या जाने दिल क्या होता है और प्यार क्या होता है। अंग्रजों ने देश तो छोड़ दिया लेकिन अभी भी आपके दिमाग अंग्रेजों के ही वश में हैं। हम तो विदेशों में अंग्रेजी बोल लेते हैं लेकिन क्या विदेशी हमारे हिन्दुस्तान में आकर हिंदी बोल पाते हैं। सिर्फ कुछ ही होते है जो हिंदी बोलने का प्रयत्न करते हैं तो क्या हम उनका मजाक उडाते हैं। तो फिर आप लोग क्यों उडातें हैं अगर कोई अंग्रेजी नहीं बोल पाता तो। आपको शरम आनी चाहिए आपको जवान लड़की से बात करने की तमीज ही नहीं है। इसमें आपके संस्कारों की ही कमी है। वह चुप हो गया और गंगा वहां से अंदर चली गई। वह लड़का पूनम का भी मित्र था। उसकी पत्नि भी वहां पर आई थी। वह भी गंगा को पहले से जानती थी और वह रमन के व्यवहार को भी भली भांती जानते थे। कुछ दिनों में गंगा वापस गांधीनगर चली गई अपने माता–पिता के पास। गंगा ने यह सारी बातें अपनी मां को बता दी। यह सारी बातें सुनकर उसके माता–पिता को बहुत बुरा लगा। गंगा के पिता ने एक ही बात बोली रमन ने इतनी बडी बात बोल दी थी लेकिन फिर राजीव ने एक शब्द भी नहीं बोला उसे। वैसे तो वह बहुत बोलता है तब क्या हो गया था उसे । मां ने कहा उसे बोलना चाहिए था लेकिन शायद इसलिए नहीं बोला होगा कहीं बात और बढ़ जाए। वह फिर पूनम से लडाईयां करेगा और उसका जीना हराम कर देगा। लेकिन क्या मेरी कोई इज्जत नहीं हैं आपकी नजरों में। उसकी मां ने एक ही बात बोली वहां पर आना जाना बंद करो, अगर तू अपनी बहन के घर में शांति चाहती है तो। गंगा चुप तो हो गई लेकिन सोचने लगी, हमारे समाज में लड़कों की गलतियों को भी शराफत का नाम दे दिया जाता है और बहादुर और समझदार लड़कियां को बतमिज था चालाक का नाम दे दिया जाता है।

गंगा के माता पिता ने रमन से उसकी इस गलती का जवाब कभी भी नहीं माँगा। गंगा वापस आकर कॉलेज भी गई वहाँ उसे राम भी मिला उसने राम को सारी बातें बताईं तो राम को भी बुरा लगा और उसने कहा मुझे तो भरोसा है तुझ पर। तेरे जैसी लड़की पाकर हम लोग तो धन्य हो गए। तू बड़ी से बड़ी गलतियाँ भी मॉफ कर देती है। गंगा राम की तरफ से संतुष्ट थी। उसे ऐसा लगता था कि उसने कोई अच्छा काम किया होगा पिछले जन्म में जो उसे ऐसा पति मिल रहा है। लेकिन गंगा सभी चीजों से अनजान थी जैसे कोई काल उसका पीछा कर रहा हो। गंगा कॉलेज की लाइब्रेरी में बैठी हुई थी वह अपनी किताब पढ़ रही थी और अचानक से उसे किताब के अक्षर दिखाई देना बंद हो गए और उसे एक घर दिखाई देने लगा और उस घर में आग लग गई है। घर का ज्यादातर

सामान जल चुका है। उस घर में रखा हुआ टी.वी. मियुजिक सिसटम लोग उस आग को बुझाने की कोशिश कर रहे हैं। जैसे ही आग रसोईघर में घुसने ही वाली थ्झी उस पर काबू कर लिया ओर आग बुझ गई। तभी वहाँ पर राहुल आया उसने देखा गंगा पसीन–पसीने हो गई है। राहुल ने गंगा को हिलाते हुए पूछा क्या हुआ गंगा। गंगा ने उसे सारी बाते बता दी। बातें सुनने के बाद राहुल हँसने लगा ओर बोला तू किताबें ज्यादा पढ़ती है इसलिए तेरे दिमाग में और बोला तू किताबें ज्यादा पढ़ती है इसलिए तेरे दिमाग में हमेशा ऐसा तूफान चलता रहता है। गंगा ने राहुल को विश्वास दिलाते हुए बोला तुझे मेरी बात पर भरोसा नहीं है लेकिन यह सच है। यह सब जिसके भी घर हे रहा है वह मेरा बहुत ही करीबी है लेकिन मैं उसे देख नहीं पा रही हूँ । जब भी मुझे ऐसा आभास होता है मैं पसीना पसीन हो जाती हूँ और मेरी धड़कने तेज हो जाती हैं। राहुल ने बोला अभी तू पानी पी ले और अपने घर जा। गंगा ने कहा हाँ शायद तू सही बोल रहा है। गंगा अपने आपे में नहीं थी और वह घर चली गई। उस दिन वह अकेली ही चली गई। वह राम को भी नहीं मिली। घर जाकर उसने अपनी माँ को बताया। उसकी माँ ने बोला अभी ज्यादा परेशान मत हो जा भी होगा ज्लद पता चल जाएगा। उसकी माँ उसकी इस बात पर भरोसा करती थी। अगर गंगा ने कुछ देखा है तो वह जरूर होगा। गंगा ने जो भी कुछ जब कभी भी देखा होता था वह सच हो ही जाता था आगे या पीछे।

गंगा ने समस्त बच्चन परिवार को उस समय देख लिया था अपने सपने में जब गंगा दस साल की थी। वह अपने माता पिता से बोलती थी एक दिन मैं अमिताभ अंकल के घर जाऊंगी। लेकिन जब उसने यह बात अपने परिवार को बताई तो सभी ने उसका मजाक उड़ाया और बोला यह लड़की सपनों की दुनिया में खोई रहती है जब देखो। उसने फिर अपने सपने किसी को भी बताना बंद कर दिये।

गंगा जब अगले दिन राहुल को मिली तो वह उसके पास भागता हुआ आया और बोला, कल जो कुछ तुझे दिखाई दे रहा था अपनी आँखों में वह सब कुछ सच था। गंगा ने पूछा मतलब ? राहुल ने बताया कल उसके घर आग लग गई थी सुनकर गंगा स्तब्ध रह गई और बोली मैंने बोला था ना कल लेकिन तुझे भरोसा नहीं हुआ। तभी वहाँ हेमा भी आ गई और कहने लगी क्या हुआ था कल तुझे मैं उसे बताती उससे पहले तो राहुल ने ही उसे बता दिया।

कुछ दिनों बाद राम की माँ का फोन गंगा की माँ के पास आया। उन्होंने कहा कि अब इन दोनों की शादी के बारे में हमें सोचना चाहिए। गंगा की माँ ने कहा आज उसके पिता से मैं बात कर लेती हूं

। जब उसके पिता से गंगा की माँ ने यह बात की तो वह बोले मेरा मन अभी भी इस रिश्ते को मानने के लिए तैयार नहीं है। गंगा की माँ ने उसके पिता को कहा, लेकिन हम इसमें क्या कर सकते हैं। जब हमारी बेटी खुश है तो हमें भी खुश रहना चाहिए। वह लोग गंगा की कुंडली मांग रहे हैं गंगा की मी माँ ने बताया। उसके पिता ने गंगा की माँ को बोला हम इसकी शादी तो कर देते हैं परंतु अगर यह रिश्ता निभा नहीं सकी तो हमारे घर में उसके लिए कोई जगह नहीं होगी। अगले दिन राम घर आया और कुण्डली ले गया। दो तीन दिन बाद शादी की कुछ तारीखें उन लोगों ने गंगा के माता पिता को बता दीं। गंगा ने राम की माँ को सवाल किया हमारी सगाई नहीं होगी क्या। राम की माँ बोली सगाई की क्या जरूरत है। उसमें इतना पैसा खर्च करने की क्या जरूरत है। गंगा थोडी मायूस हो गई और बोली मेरी बहन की सगाई तो बहुत धूम–धाम से हुई थी। मैंने भी बचपन से बहुत सारे सपने ले रखें हैं मेरी शादी को लेकर । राम की माँ गंगा से बहस करती चली जा रही थी। इन सब बातों को लेकर गंगा ने राम से झगड़ा भी किया। गंगा ने राम को बोला सगाई तो होनी चाहिए। मैंने बहुत सारे सपने देखे थे अपनी सगाई को लेकर। राम ने भी उसे मनाने की बहुत कोशिश की और बोला वैसे मम्मी सही ही तो बोल रही हैं। सगाई में खर्च करने की क्या जरूरत है। जितना सगाई में खर्च होगा वो सारा पैसा मम्मी–पापा हमें भी तो दे सकते हैं । गंगा उसकी बात से सहमत नहीं थी फिर वह चुप हो गई। और अपने घर चली गई। जाकर उसने अपनी मम्मी से सब बातें बात दीं। गंगा की माँ ने गंगा को कहा – तू ही देख ले यह लोग कितने लालची है जहां इन लोगों को खर्च करना पड़ जाता है वहाँ पर यह लोग ऐसी ही बातें करते हैं। यह लोग तुझे कैसे खुश रखेंगे सारी जिंदगी। राम की माँ ने गंगा की माँ को फोन करके कहा कि, हम कल गंगा की शादी के लिए गहने खरीदने जा रहे हैं आप उसे भी भेज देना हमारे साथ। गंगा की माँ मना नहीं कर पाई। वह साथ चली गई अगले दिन। गंगा की पसंद बहुत ही अतिसुंदर थी। उसने सगाई की भी अंगूठी बहुत ही सुंदर खरीदी थी। और महँगी भी थी उन लोगों के हिसाब से। वह लो गंगा के परिवार के सामन काफी गरीब थे। गंगा उन लोगों के हिसाब से ही खर्चा कर रही थी। गंगा तो इस बात का इंतजार कर रही थी कि, उसकी सगाई कब होगी। उसने राम से भी बोला लेकिन वह तो अपनी माँ का चमचा था। जो उसकी माँ उसे करने के लिए कहती थी वह ऐसा ही करता था। एक दिन उसने गंगा को बोला आज मेरे मम्मी–पापा तेरे घर आने वाले हैं शादी की बात करने। उसे लगा (गंगा को) शायद इन लोगों ने सगाई की तारीख निकाल ली होगी वह उस दिन बहुत खुश थी। उसने जैसे ससुराल की कामना की थी यह लोग उसके आस पास भी नहीं थे। वह राम को भी ठीक तरह से नहीं जानती थी। राम ने जो रूप गंगा को दिखाया था उससे वह प्रभावित थी और

दूसरी चीजें वह उसका बचपना समझ कर छोड़ देती थी। उम्र में राम गंगा से दो साल छोटा भी था और वह नासमझ भी था।

गंगा का जन्मदिन था और उस दिन राम के पूरे परिवार को गंगा की माँ ने घर पर न्यौता दिया था रात के खाने पर। वह सभी लोग आए थे। राम ने गंगा को हाथ की घड़ी दी थी और उसकी माँ ने ग्यारह रू. लिफाफे डालकर गंगा को दिया थे। राम की दीदी और जीजा ने तो कुछ भी नहीं दिया उसे और बोलने लगे हम सगाई पर ही देंगे। गंगा को बहुत अजीब लगा यह सब देख कर। वह लोग अपने साथ सगाई की अंगूठी लेकर आए थे। इसके बारे में गंगा को या उसके परिवार को मालूम तक नहीं थी। सभी लोग बैठक में बैठे हुए थे और उसकी (राम) माँ ने उछलते हुए बोला आज गंगा का जम्मदीन है बहुत ही शुभ दिन है तो फिर आज ही हम इन दोनों की सगाई कर देते हैं। गंगा के माता–पिता उन लोगों के चहररे को देखते ही रह गए। गंगा के पिता ने सवाल किया आज कैसे ही सकता है यह सब। राम की माँ बोली बिल्कुल हो सकता है हम तो उसी तैयारी के साथ आए थे। सगाई का मतलब अंगूठी पहनाना ही तो होता है यह दोनों एक दूसरे को अंगूठी पहना देंगे तो हो गई सगाई। उनके इस फैसले से गंगा और उसका परिवार खुश नहीं था। परंतु वह कुछ कर नही पाते थे उन लोगों के सामने। वह औरत बहुत ही चालाकी से अपनी सारी बातें मनवा लेती थी लोगों से। उस दिन भी उसने ऐसा ही किया। उस घर का हर एक इंसान बहुत ही सातिर दिमाग था जिसमें गंगा फंस चुकी थी। गंगा की माँ ने गंगा को कहा जाकर वह सगाई की अंगूठी ले आ। गंगा चली तो गई लेकिन माँ के कमरे तक पहुँचने में उसे जैसे बहुत ही तकलीफ हो रही थी। उसे ऐसा लग रहा था कि, उसे अपनी मर्जी से कुछ करने का अधिकार ही नही है। उसकी जिंदगी का यह पड़ाव कैसा है। उसकी सारी इच्छाएँ धरी की धरी रह गईं। उसने जो सपना लिया था सगाई वाले दिन के लिए सब चकनाचूर हो गया वह भी सिर्फ राम की माँ की वजह से। उसे राम के ऊपर भी गुस्सा आ रहा था वह चाहता तो अपने परिवार को मना सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। गंगा लेकिन सोचने पर मजबूर हो गई थी। यदि राम एक सगाई जैसा फैसला भी अपनी माँ का आँचल पकड़ कर ले रहा है तो फिर जीवन में वह मेरे साथ कैसे चलेगा। अगर तब भी अगर वह दूसरों की ही बात मानता रहेगा तो हमारे जीवन का क्या होगा। यह सब बातें गंगा के मन में चल रही थीं। परंतु उसने अपने हृदय को मनाते हुए बोला ''चलो कोई बात नहीं कम से कम मेरी शादी के लिए मेरे माता–पिता मान तो गए मेरे लिए तो यही खुशी की बात है। गंगा ने खुद को बोला ''चल गंगा अब खुश हो जा और अपने जीवन के नए पड़ाव को खुशी–खुशी अपना लें।'' गंगा

खुशी–खुशी अंगूठी लेकर बाहर आ गई। उन दोनों ने एक दूसरे को अंगूठी पहना दी लेकिन जब गंगा ने अपनी अंगूठी को देखा तो उसे राम की माँ की चालाकी सामने दिखाई दे गई और उसने सोचा क्या होगा मेरा इस घर में। गंगा ने जो अंगूठी अपने लिए पसंद की थी यह अंगूठी वह वाली नहीं थी। इन लोगों ने वो अंगूठी राम की बहन पूजा के लिए ली थी वही वाली अंगूठी राम ने गंगा को पहना दी। लेकिन गंगा ने कोई सवाल नहीं किया क्योंकि उसके लिए अंगूठी की कीमत महत्वपूर्ण नहीं थी। उसके लिए तो यह पल और एहसास और इसकी महत्वता ही महत्वपूर्ण थी। फिर उन दोनों ने सभी के पैर छूकर आर्शिवाद लिया। राम के जीजा ने उन दोनों को एक लिफाफा दिया और बोला यह हमारी तरफ से तुम्हारे लिए है। वह लिफाफा राम ने गंगा को दे दिया। परंतु वह लोग तो सगाई करने आए थे अपने हिसाब से । उनका कहना था कि वह पूरी तैयारी के साथ आए थे वहाँ पर लेकिन वह लोग अपनी होने वाली बहू के लिए कुछ भी नही लाए थे। खाली हाथ आए थे वे लोग परंतु गंगा की माँ जो भी कुछ धीरे–धीरे खरीदती रहती थी गंगा के लिए उन्होने उसी में से सभी का मान सम्मान कर दिया। राम की माँ ने सगाई के नाम पर गंगा को एक रूपया तक नहीं दिया और उसकी बहन ने ईक्किस रूपये दिया। गंगा को बहुत ही शर्मिदा होना पड़ा अपने परिवार के सामने उन लोगों के जाने के बाद। गंगा की माँ ने बोला यह लोग इतने गरीब है कि वह लोग तेरे लिए एक साड़ी तक नहीं ला पाए सगाई के नाम पर। गंगा के पास कोई जवाब नहीं था माँ की बात का। यही सब तो वह भी सोच रही थी। सगाई होने के बाद ज बवह राम को मिली तो उसने पूछा यह सब क्या था राम उस दिन। तुम्हारे यहाँ पर बहू सत्कार ऐसा होता है क्या ? तुम्हारी माँ मेरे लिए सगुन की एक बिंदी तक नही ला पाई तो फिर शादी में खर्चा क्या करेंगी। हाँ लेकिन उन्होने दहेज की लंबी लिस्ट तो पकड़ा ही दी है। अब यह मत कहना की यह सब तुम नहीं जानते हो। राम ने कहा मुझ पर विश्वास करो मुझे कुछ नहीं पता। गंगा ने राम को कहा, हर लड़की का अपना एक सपना होता है अपने जीवन साथी को लेकर, अपने ससुराल को लेकर, अपने आने वाले जीवन को लेकर। तुम मुझे बताओ क्या मैं खुश हूँ। गंगा जब भी कभी राम के घर जाती थी तो राम का परिवार उसके साथ इस तरह से व्यवहार करता था जैसे कि गंगा उस घर में बहू बनकर आ चुकी है। राम की माँ से रसोईघर में काम करवाती थी वह भी बड़े प्यार से और बोल देती थी अगर काम करेगी तो सेहत अच्छी रहेगा और काम करना भी आ जाएगा। गंगा कर देती थी लेकिन उसे कभी–कभी शक भी होता था उन लोगों के ऊपर। किंतु एक ही पल में वह सोचने लगती थी शादी के बाद तो सभी खाना बनाते हैं अगर मैंने भी बना लिया तो क्या हो गया। वह हर बात को बहुत ही मामूली समझती थी। राम के दादाजी भी आए हुए थे। गंगा उनसे मिलने गई वह उनसे मिलकर

बहुत खुश हुई। उसने दादाजी के पैर छुए और आर्शिवाद लिया। दादाजी ने बोला बेटा तुझे चाय बनानी आती है क्या ? गंगा ने हँसते हुउ बोला हाँ दादाजी मैं अभी लाती हूँ। उसके दादाजी रोज 4:00 बजे चाय और बिस्कुट खाते थे। उन्होंने गंगा की चाय की बहुत तारीफ की और पूछा खाना भी आता है बनाना। गंगा बोली हाँ दादाजी मुझे सारा पंजाबी खाना बनाना आता है और आप लोगों का गुजराती खाना मैं सीख लुंगी आप बिल्कुल चिंता मत करना। मैं आपको शिकाया का कोई मौका नहीं दूंगी । तभी वहाँ पर राम की दीदी और जीजा भी आ गए। गंगा ने उनके पैर छूकर हैलो बोला। लेकिन वह बिना कुछ कहे अपनी सास के पसा चला गया। वह लोग धीरे–धीरे बातें कर रहे थे लेकिन जो भी बातें कर रहे थे शायद गंगा के ही बारे में हो रहीं थी उसे बार–बार अपना नाम सुनाई दे रहा था। वह उठकर वहाँ चली गई और बोली जीजा जी क्या बातें हो रही हैं। उसने पूछा आप चाय पीयेंग क्या, उसने मना कर दिया और बोला, तुम्हें शादी की इतनी जल्दी क्यों है। हमारा राम तो इतना हेंडसम दिखाई देता है। उसे तो बोलीवुड वाले फ्रि में ही उठाकर ले जाते अगर वह तुम्हारे चक्कर में नहीं पड़ता तो उसे तो दुनिया की कोई भी लड़की हाँ बोल देती उसका करियर तो तुम्हारी वजह से नहीं बन पाया है अभी तक। तुम्हारे चक्कर में जो पड़ा हुआ है वो। गंगा को यह सब अच्छा नहीं लगा सनकर। उसने कहा पहली बात मैं आपके साले के पीछे नही पड़ी थी बल्कि वह मेरे पीछे पड़ा था। और रही करियर की बात उसने मेरी वजह से कुछ नही खोया है बल्कि मैंने अपना सब कुछ बरबार कर दिया है राम की वजह से। मेरा पूरा परिवार दुखी है मेरे इस फैसले को लेकर तीन सालों से अपने परिवार को मनाने की कोशिश कर रही हूँ। आपको क्या पता मैंने क्या कुछ नहीं झेला है राम की वजह से। गंगा रोती जा रही थी। राम की माँ ने भी उसे चुप नहीं कराया और बोलती हुई निकल गई कि, रोने दो इसे। रोने से सारा दुख कम हो जायगा। राम यह सब खड़ा–खड़ा देख रहा था लेकिन वह गंगा को चुप कराने नहीं आया। गंगा को गुस्सा आया और उसने खडे होकर राम को बोल दिया अगर तुम्हारे घरवालों को ऐसा लगता है कि मेरी वजह से तुम कुछ नहीं कर पा रहे हो। या मैं तुम्हारे रास्ते का कांटा हूँ तो हमें यह रिश्ता आगे नहीं बढ़ाना चाहिए। मेरे लिए भी रिश्तों की कमी नहीं हैं। तुम आज मेरे साथ नहीं खड़े हो सकते तो तुम शादी के बाद क्या करोगे। तुम्हारे जीजा का कोई अधिकार नहीं है मुझ से इस तरह बात करने का। शादी के लिए तुम लोग हमारे पीछे पड़े थे हम नहीं ! अपने घरवालों से फिर से बात कर लेना वह लोग क्या चाहते हैं और मुझे भी तुम्हारे साथ शादी करने का कोई शौक नहीं है। आज के बाद मैं यहाँ आऊंगी और न ही मुझे तुम्हारे साथ शादी करनी है। गंगा वहाँ से जाने लगी तो राम ने उसके पैर पकड़ लिए और रोने लगा। राम बोला अगर तूने मुझे छोड़ दिया तो मैं मर जाऊंगा। गंगा ने पलट

कर देखा और बोली तुम लोग कोई ड्रामा तो नहीं कर रहे हो मेरे साथ । इतना कह कर गंगा वहाँ से निकल गई। राम ने काफी देर तक गंगा का पीछा किया बाद में वे वापस चला गया। गंगा यह सोच रही थी, हर इंसान मेरे साथ ही ऐसा व्यवहार क्यो करता है। अपने घर देखो तो रमन मेरे पीछे पड़ा रहता है। राजीव ने भी मर्यादा को लांग दिया। माँ ने भी कभी कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पूनम ने भी मुझ पर शक किया थां पापा भी नाराज़ रहते है। मेरे दोस्तों ने भी मुझे ही अपना मौहरा बना लिया है। हे भगवान् यह सब मेर साथ क्या हो रहा है। मेरा फैसला गलत तो नहीं है। कहीं मैंने किसी गलत इंसान को वचन तो नहीं दे दिया। मुझे कोई बहुत बड़ी कीमत तो चुकानी नहीं पड़ेगी मेरे इस फैसले से। आज जो भी कुछ रम के घर हुआ है यदि मेरे परिवार को यह पता चल गया तो क्या होगा। बड़ी मुश्किल से सभी को राज़ी किया है शादी के लिए बाद में बहुत मुश्किलें खड़ी हो जाएंगी। गंगा ने सोचा मैंने दादा जी को भी वचन दे दिया है और दादा जी तो कितने अच्छे हैं। मुझे वह बहुत प्यार करते हैं। उन्होंने तो मुझे ''राधा'' का भी नाम दे दिया है। उसका जीजा तो कभी–कभी आया करेगा देख लूंगी क्या होता है आगे। सभी घरों में ऐसा कोई न कोई तो होता ही है। हमारे घर भी तो है पूनम का पति उसका भी तो मैं सहन करती हूँ। अगर मैं ऐसी छोटी–छोटी बातों से टूट गई तो मेरी जिंदगी तो यहीं पर रूक जाएगी। गंगा बहुत दुखी थी तो उसने हमा को फोन लगाया बात करने के लिए। फोन हेमा की भाभी ने उठाया। उसने पूछा भाभी हेमा से बात करा दो मेरी मैं गंगा बोल रही हूँ । फोन से आवाज आई क्यों मज़ाक कर रही हो तुम। हेमा तो तुम्हारे ही घर आई है कल से। गंगा कुछ समझ नहीं पाई उसने फिर बोला, भाभी आप मुझे पहचानी नहीं हो क्या ? मैं गंगा हूँ मुझे हेमा से बात करनी है। भाभी फिर बोली गंगा तुम झूठ क्यों बोल रही हो हेमा तो तुम्हारे ही घर पर है कल से उसने कहा मैं हेमा से पिछले दो महिने से नहीं मिली हूँ। हेमा की भाभी गंगा के ऊपर ही इलज़ाम लगाने लगी। गंगा तुम तो बहुत अच्छे घर की संस्कारी लड़की हो। हमें तुमसे यह उम्मीद नही थी कि, तुम हेमा को गुमराह करोगी। हम तो तुम्हें बहुत ही भोली समझते थे। लेकिन तुम तो हमारे साथ छल कर रही हो। भाभी ने फोन रख दिया। गंगा सोचने लगी यह सब मेरे साथ क्या हो रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे मैं सभी की दुश्मन हूँ । घर इंसान मुझे धोखा क्यों दे रहा है। गंगा का दोस्ती और रिश्तों पर से जैसे विश्वास ही टूट गया हो। वह काफी देर सोचती रही और उसने हेमा के घर फिर से फोन उठाया था। गंगा ने उसकी माँ का हाल चाल पूछा और कहा आंटी भाभी को फोन देना प्लीज़ ! उन्होनें हेमा की भाभी को फोन दे दिया। हेमा की भाभी गंगा से चिल्ला कर बात कर रही थी। गंगा ने उन्हें बोला पहले तो आपको फोन रखना नहीं चाहिए था इस तरह से । आप ऐसे अपनी नंनद का पता लगाएंगी अधूरी बात करके। दूसरी बात

यह आप मुझसे उम्र में बहुत ही छोटी हैं फिर भी मैं आपसे इज्जत से बात कर रही हूँ क्योंकि आप हेमा की भाभी हैं। आपकी नंनद कहाँ जाती है, किससे मिलती है मुझे नहीं पता लेकिन वह मेरे नाम का इस्तेमाल कर रही है यह मेरे लिए परेशानी का विश्य है। आपकी नंनद ने तो दोस्ती की हत्या ही कर डाली है । उसने तो मेर भोले पन का फायदा न जाने कितनी बार उठाया होगा। जब आपकी नंनद वापस आ जाये तो उसी को पूछ लेना कि, वह कहाँ गई थी और उसने मेरे नाम का सहारा क्यों लिया है। जब वह घर आ जाये तो आप मुझे फोन जरूर करना। एक बात और मैं आपसे बोलना चाहती हूँ। आपकी शादी जरूर हो गई है लेकिन अभी भी आपको व्यव्हार करना नहीं आता है। मुझे मालूम है कि मेरा यह बोलना आपको अच्छा नहीं आता है। मुझे मालूम है कि मेरा यह बोलना आपको अच्छा नहीं लग रहा होगा। लेकिन किसी भी शरीफ लड़की के ऊपर लांछन लगाने से पहले आपको हजार बार सोचना चाहिए। सभी लड़कियां आपकी ननंद जैसी नहीं होती हैं। मैंने कभी भी अपने परिवार से झूठ नहीं बोला है। मैं हर बात को सुनने यह सुलझाने की हिम्मत रखती हूँ। यह सब आपके अंदर भी होनी चाहिए। इतना कहकर उसने फोन रख दिया। अगले दिन हेमा का फोन आया। गंगा ने हेमा को बोला तुझे जो भी कुछ बात करनी है यहाँ आकर कर करना फोन पर नहीं। हेमा ने बोला मेरी भाभी तुझ से बात करना चाहती हैं। गंगा ने कहा दे दे फोन । उसकी भाभी ने गंगा से मॉफी माँगी और बोली काश सभी को आपके जैसी बेटी और सहेली मिल जाए तो कभी कहीं कुछ गलत नहीं होगा। गंगा ने कहा अगर आपको मुझ पर भरोसा हो तो अपनी नंनद को आज गांधीनगर भेज देना। मुझे उससे बात करनी है। भाभी ने बोला वो जरूर आएगी। गंगा ने फोन रख दिया। गंगा अपने जीवन से दुखी होती चली जा रही थी। गंगा को हर जगह एक अकेला पन महसूस होने लगा था। गंगा जब भी दुखी होती थी वह अपनी आँखें बंद कर लेती थी और एहसास करती थी जैसे किसी ने उसका हाथ अपने हाथों में पकड़ रखा है। उसे ऐसा लगता था जैसे कोई है जिसने मेरी तकलीफें अपने हाथ में ले ली है और उस पल वह काफी हलका महसूस करती थी। और जब आँखे खोलती थी तो अपने आस पास देखती थी लेकिन उसे कोई नज़र नहीं आता था। किंतु वह हाथों का स्पर्श उसे अपनी तरफ आकर्षित करता था और एक अपने पन का एहसास दे जाता था। गंगा जब सोचती थी वह हाथ के स्पर्श का एहसास किसका है तो उसे रो का नाम नहीं आता था। जब भी वह राम के साथ होती थी उसे सिर्फ एक तनाव का ही एहसास होता था। जैसे–जैसे वह राम के परिवार के समीप हो रही थी उतना ही ज्यादा वह दुखी होती चली जा रही थी। अ बवह अपने फैसले से पीछे भी नही हट सकती थी क्योंकि जब भी वह ऐसा सोचती थ्ज्ञी उसने सामने उसका दिल आकर खड़ा हो जाता था। वह इतना तो जान चुकी थी कि, राम जितना

भोला और समझदार दिखाई देता है वह वास्तव में ऐसा है नहीं । लेकिन फिर भी उसे इतना भरोसा था उस पर कि, मुश्किल वक्त में वह उसका साथ नहीं छोडेंगे। गंगा का प्यार एक माँ के समान था। जो प्यार के साथ – साथ नाराज भी होती थी फिर अंत में सभी की गलतियाँ भुला कर उन्हें गले भी लगा लेती थी। उसे सुधरने का फिर एक मौका भी देती थी। गंगा प्रत्येक व्यक्ति को इसी तरह प्यार करती थी। गंगा राम की बड़ी से बड़ी गलतियों को भी मॉफ कर देती थी और उसे उसकी गलती को सुधारने का मौका भी देती थी। किंतु उसे यह नहीं पता था कि, राम उसके विश्वास और प्यार का नाजायज फायदा उठा रहा है।

गंगा के दरवाजे की घंटी बजी। गंगा की माँ ने दरवाजा खोला तो सामने हेमा खड़ी थी। गंगा की माँ ने उसे अंदर बुलाया आर गंगा के कमरे में भेज दिया। गंगा ने जैसे ही उसे देखा गंगा उसकी तरफ मुस्कराई और बाली घर पर बता कर आई है। हेमा ने बोला हाँ मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ। गंगा कुछ बोलती उससे पहले ही हेमा ने गंगा से मांफी मांग ली। गंगा ने उसे पूछा तूने अपने घर पर झूठ क्यों बोला और मेरे नाम का इस्तेमाल क्यों किया। ऐसा न जाने तू कब से कर रही थी जो मुझे पता तक नहीं था। यदि उस दिन मैं तेरे घर पर फोन नहीं करती तो यह सब मुझे कभी भी पता नहीं चलता। हेमा अपनी आँखों में आँसू लिए चुपचाप यह सब सुन रही थी। गंगा ने उसे फिर कहा तूने क्या सोचा था कि गंगा तो किसी को भी कुछ नहीं बोलती है तो मैं उसका इस्तेमाल कर लेती हूँ। काजल का भी मामला तुझे पता था। तो फिर आज तुझमें और काजल में क्या फर्क रह गया है। तेरे चरित्र के बारे में मुझे सब कुछ पता था लेकिन फिर भी मैंने तुझसे दोस्ती कर ली क्योंकि तेरा व्यवहार तेरे चरित्र जैसा नहीं था। मुझे ऐसा लगता था कि तू मेरी अच्दी मित्र है और तू मुझे कभी धोखा नहीं देगी। तू कहाँ जाती है, किसके साथ जाती है मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। यह तेरी जिंदगी है लेकिन तेरी वजह से मेरे चरित्र पर अंगूली उठाई है तेरी भाभी ने। मैंने तुझे कभी भी कुछ नही बोला था। तूने जो भी कुछ उस दिन राहुल के साथ किया था राम के घर सब कुछ मुझे पता है। हेमा नकारने लगी लेकिन गंगा ने उसे फिर बोला राम की माँ ने तुझे और राहुल को देखा था उस दिनं हेमा चुप हो गई। मैं तो तुझे अपनी सच्ची मित्र समझती थी लेकिन तू क्या निकली। हेमा ने बहुत मॉफी मांगी गंगा से । गंगा क्या करती आखिर उसे सब छोड़ना ही पड़ा। बस उसने हेमा को एक ही बात बोली कल तेरी शादी हो जायेगी तो क्या ससुराल में भी ऐसा ही करेगी तू, जो तूने मेरे साथ किया है। लेकिन उस दिन के बाद गंगा सिर्फ अपने में ही रहती थी और वह मित्र बनाने से भी डरती थी। राम के परिवार के लोग गंगा से किसी न किसी चीज की मांग करते रहते थे वह

भी गंगां के माता–पिता के खर्चे पर। अगर उन्हें कहीं पर भी पुलिस की मदद चाहिए होती थी या फिर किसी होटल में पार्टी करनी होती थी या फिर कहीं घूमने के लिए गाडीयों की जरूरत होती थी या फिर लोगों को सामने खुद को दिखाना होता था तो वह गंगा को बोल देते थे कि, अपने पापा को बोल कर हमारा काम करवा दो। उसके पिता उनका काम करवा तो देते थे लेकिन वह सोच मे पढ़ जाते थे कि यह लोग शादी के बाद कहीं मेरी बेटी को दुखी तो नहीं करेंगे। कहीं इन लोगों को माँगने की आदत तो नही है।

गंगा की शादी का महुरत निकल आया था होली के बाद का। गांग की माँ ने बाकी बची हुई सारी तैयारियाँ भी कर ली थीं। जो गंगा के रिश्तेदार दिल्ली, यू.पी. में रहते थे उन सब को फोन पर न्यौता दे दिया गया था। शादी के लिए केटरस, फोटोग्राफर, ब्यूटी पार्लर आदि सभी को बोल दिया गया था बस शादी के कार्ड छपवाने को देने थे। किसी वजह से वह प्रिटिग प्रेस वाला आ नहीं पाया था। गंगा बहुत खुश थी अपनी शादी को लेकर परंतु शायद भगवान को कुछ और ही मंजूर था शादी को सिर्फ दो महिने ही रह गए थे और एक दिन गंगा के फूफा जी का फोन आया और उन्होंने बतया कि गंगा के दादाजी काफी बीमार हैं वह अपनी आखिरी सांसे गिन रहे हैं। वह गंगा के पापा को मिलना चाहते हैं। यह सुनकर गंगा के माता–पिता दिल्ली के लिए रवाना हो गए। उनके निकलने के 15 मिनट बाद ही फिर से फूफाजी का फोन आया। उन्होनें गंगा से पूछा पापा मम्मी निकल गए क्या ? उसने बता दिया वह निकल गए हैं, तो उन्होनें खबर दी कि, अब दादाजी इस दुनिया में नहीं रहे हैं। यह सुनकर गंगा सोफे पर ही बैठ गई। तभी उसके पापा ने स्टेशन से गंगा को फोन किया और पूछा किसी का कोई फोन आया था क्या ? और यह बताया कि हम ट्रेन में बैठ गए हैं। गगा दो मिनट चुप रही और उसने अपने पिता को बोला आप लोग आराम से पहुँचना । देखना दादाजी जल्द ठीक हो जाएंगे बस आप माँ का ध्यान रखना। गंगा जब अपने पिता से यह सब बोल रही थी उसकी आँखों से आंसू निकलते ही जा रहे थ लेकिन उसने अपने माता–पिता को यह नहीं बताया। फोन रखने के बाद गंगा फूट–फूट कर रोती रही लेकिन उसे उस घड़ी संभालने वाला कोई भी उसके पास नहीं था। उसे वो सारे पल याद रहे थे जो पल उसने अपने दादाजी के साथ बिताए थे। उसने राम को फोन किया और उसे यह सब बता दिया तो वह वहाँ पर आ गया। गंगा बहुत परेशान थी। राम की माँ ने गंगा को फोन किया और उसे राम के साथ घर पर बुला लिया। ज बवह राम के घर पहुँची तो सभी ने कहा तू इतना परेशान मत हो जो होना होता है वही होता है। वह रो रही थी लेकिन शायद उन लोगों के पास दिल ही नहीं था। राम ने उसे पानी दिया

लाकर और उसने पूछा गंगा चाय पीयोगी क्या? वहाँ पर राम की बहन भी बैठी हुई थी। उसने (राम) अपनी बहन से चाय बनाने को बोल दिया। उसकी बहन को यह सब अच्छा नही ंलगा और बोल दिया तेरी होने वाली पत्नि सामने बैठी हुई है और तू मेरे से बोल रहा है। तू तो अभी से गंगा के ईशारों पर नाचने लगा है। गंगा यह सब देख रही थी और जैसे ही राम की बहन उठी गंगा ने उसे हाथ पकड़ कर बैठा दिया और बोली दीदी आप बैठों मैं चाय बना लाती हूँ। गंगा रसोईघर में चली गई लेकिन (पूजा) राम की बहन राम पर बरस पड़ी। मुझे अपनी पत्नि का नौर समझ रखा है क्या? राम ने कहा वह बहुत दुखी थी इसलिए मैं उसे यहाँ ले आया और वैसे भी मम्मी ने ही उसे फोन करके यहाँ बुलाया है। पूजा बोलने लगी वह कोई पहली लडकी नही ंहै जिसके घर मौत हुई है वैसे भी दादा इन लोगों के पास नहीं रहते थे जो यह इतना नाटक कर रही है।गंगा यह सब सुन रही थी परंतु उसने पूजा को पलट कर जवाब नहीं दिया। गंगा जैसे ही बाहर आई पूजा चुप हो गई लेकिन म नही मन वह अकेला पन महसूस कर रही थी और सोच रही थी यह कैसे लोग हैं। किसी की भी मौत पर इन लोगों को कोई अफसोस नहीं होता है। गंगा को जब वहाँ बैठे–बैठे थोड़ा वक्त बीत गया तो उसने राम की माँ को बोला, आंटी आप मेरे साथ मेरे घर चलोगी क्या ? मैं अकेली हूँ वहाँ पर । उसने कहा मैं तुम्हारे साथ कैसे चल सकती हूँ राम के पापा के लिए खाना भी तो बनाना होता है मुझे। उसने (गंगा) फिर कहा पूजा दीदी भी तो यहाँ पर हैं वह अंकल को खाना दे देंगी । पूजा ने भी मना कर दिया उसने कहा मेरा अपना भी तो घर है। मुझे भी अपने पति और बच्चे का ध्यान रखना होता है। पूजा बोली तू तो बिल्कुल अकेली है तू ही क्यों नहीं आ जाती यहाँ पर। गंगा बोली नहीं दीदी हमारे घर शादी से पहले ससुराल में लड़कियाँ नहीं रहती हैं, तो मैं कैसे यह सकती हूँ और कल सुबह मेर माता–पिता का भी तो फोन आएगा। वह चिंतित हो जाायेंगे मुझे वहाँ न पाकर । पूजा फिर बोली तो क्या हुआ ? तू बता देना कि तू यहाँ पर है। पूजा बोली तू तो अभी से हमारी बातें नहीं मानती है शादी के बाद क्या करेगी फिर। राम की माँ भी पूजा को ही समर्थन दे रही थी। उसकी माँ बोली यहीं पर रूकजा वैसे भी अभी तेरे माँ–बाप यहाँ नहीं हैं तुझे टोकने वाले। अगर वह पूछ भी लें तो सच बताने की क्या जरूरत है। उसने राम की माँ को बोला आंटी मैं कभी झूठ नहीं बोलती हूँ। उसने (राम की माँ) अकड़ कर बोला तो फिर राम को ले जा अपने साथ हम नहीं आ सकते हैं तेरे साथ। गंगा यह सोच रही थी कि इन लोगों ने तो अपना असली रंग अभी से ही दिखा दिया है। क्या होगा मेरा इन सब लोगों के बीच । इसकी माँ ने यह नहीं सोचा इस वक्त गंगा बहु मायूस है बल्कि वह ऐसा बोल रही है कि अपने माँ बाप से झूठ बोल दे। और घर पर रहकर हमारा गुजराती खाना बनाना सीख ले। गंगा ने राम को बोला मुझे घर छोड़ दो। वह वापस आ गई अपने

घर। उसने राम से बोला हमारी शादी सिर्फ दो महिने ही रह गए हैं। आज तेरी माँ ने और बहन ने क्या दिखाया है मुझे । इस वक्त उन लोागें को मेरा साथ देना चाहिए था। लेकिन उन लोगों ने तो मुझे अकेला ही छोड़ दिया। रात हो गई थी राम भी अपने घर चला गया। राम ने रात को वापस आकर अपने पिता से कुछ पैसे मांगे तो उसके पिता ने झट से मना कर दिया और बोले क्यों चाहिए और तेरे पैसे कहाँ गए। उसने जवाब दिया पापा मुझे स्कूटर में पेट्रोल भरवाना है और मैं तो अपनी सारी तनख्वा आप को ही ला कर देता हूँ। आप ही तो सारा हिसाब रखते हो। उसके पिता ने बोला तो फिर इस महिने का हिसाब पूरा हो गया है। मेरे पास दोबारा मांगने मत आना। उसने फिर अपने पिता को पूछा तो फिर मैं पैट्रोल कहाँ से भरवाऊंगा। उसके पिता ने झट से बोला – गंगा से जाकर मांगले उसी की वजह से तो तेरे स्कूटर का पेट्रोल खत्म हुआ है। राम ने कहा लेकिन मैं उससे कैसे मांग सकता हूँ। क्यों नहीं मांग सकता उन लोगों के पास पैसे की क्या कमी है। तेरे ससुराल वाले इतना भी नहीं कर सकते क्या। राम ने कहा लेकिन पापा वह घर पर अकेली है और मेरी उससे शादी होने वाली है। हमारा फर्ज बनता है उसका ध्यान रखना । उसका पिता चिल्लाकर बोला तो हम क्या करें। तेरी माँ ने तो उसे कहा था यहाँ पर रूखने के लिए लेकिन वह इतनी जिद्दी है कि, तेरी माँ और बहन की भी उसने बात नहीं मानी। उसने हमारी बेइजती की है। वैसे भी तेरी शादी में बहुत खर्चा हो जाएगा हमारा । हमने उसे उसके माँ–बा पके सामने बोला भी था। तुम दोनों भाग कर शादी कर लो लेकिन उसने अपने माँ–बा पके समने हमें साफ–साफ मना कर दिया । उसे हमने समझाया भी था भाग कर शादी करने से शादी का सारा खर्चा बच सकता है और वो सारा पैसा हम तुम्हें दे देगें जो कुछ हमने उसे देना है कपड़े और गहने घर पर रखे है वो उसका ही तो है। उसने अपने माँ–बाप के सामने हमारी सारी इज्जत निकाल दी फिर भी तू उसी की तरफदारी कर रहा है। वह तो अभी से हमारे साथ चलने को तैयार नहीं है। तो फिर वह आगे क्या करेगी। राम ने कहा वह इज्जत से विदा होना चाहती है भाग कर नहीं। लेकिन जब हमें कोई परेशानी नहीं है तो उसे क्या तकलीफ है। वैसे भी उसकी वजह से हमारा ज्यादा खर्च हो रहा है। जाकर उससे भी खर्चा मांग लेना। जो उसकी वजह से हमारा खर्च बढ़ा है वह तो उसी को देना पड़ेगा नहीं तो हम उकसे कपड़े और गहने कम कर देंगे। राम ने यह सारी बातें गंगा को जाकर बता दीं। यह सुनकर गंगा को बहुत बुरा लगा। उसने सोचा जो लोग आज ऐसा व्यवहार कर रहे हैं जब कि, मेरे माता – पिता भी घर पर नही ंहै। इस वक्त तो इन लोगों को मेरा सहारा बनना चाहिए था। इस वक्त इन लोगों को मेरे माता–पिता बनकर मेरे पास आना चाहिए था। दूसरे दिन राम की माँ का फोन आया और बोलने लगीं तुझे गुलाब जामुन बनाने आते है क्या ? गंगा ने बोला हाँ मैं बना लेती हूँ। तो फिर ठीक है

कल मैं राम को घर भेज दूंगी । बाजार से गिट्स के दो 500 ग्राम वाले पैकिट खरीद लाना और हाँ याद रखना उसमें इलायची जरूर डालना और घी में ही बनाना। दूसरे दिन गंगा ने वह सरे गुलाब जामुन बना दिये और फिर उसने राम को फोन कर दिया। थोड़ी देर बाद उसके घर राम और उसकी माँ आ गए। उसकी माँ ने आकर कुछ नहीं पूछा। सिर्फ यह पूछा मिठाई तैयार हो गई क्या। उसकी माँ ने तीन–चार गुलाब जामुन उसके लिए छोड़ दिया बाकी सारे डब्बे में भर लिए और बोली अच्छा हम चलते हैं घर पर आज महमान आने वाले हैं लेकिन राम ने या फिर उसकी माँ ने एक बार भी यह नहीं सोच कि, गंगा इस वक्त अकेली है घर पर अभी तो इसके दादा की मृत्यु को एक हफ्ता भी नहीं गुजरा है और हम इससे अपने महमानों के लिए मिठाईयाँ बनवा रहे हैं। जब इसके माता–पिता को यह सब पता चलेगा तो वह हमारे बारे में क्या सोचेंगे। न ही किसी ने यह पूछा तूने खाना नहीं खाया हो तो यहाँ पर हमारे साथ खा ले। गंगा के दिमाग में चल रहा था जब मेरे माता–पिता यहाँ पर होते हैं तो यह लोग किसी न किसी बहाने से मुझे वहाँ बुलाते रहते हैं लेकिन अब तो इन्होनें मुझे पूछा तक नहीं।

राम की माँ हर दूसरे दिन गंगा से कुछ न कुछ बनवाती रहती थी। लेकिन उसे पूछना या उसका ध्यान रखना जरूरी नहीं समझती थी वह। राम वही करता थ जो उसकी माँ उसे करने के लिए बोलती थी। ऐसे ही करते–करते गंगा को ऐसा लगने लगा था जैसे उसने कोई रेस्टोरेन्ट खोल रखा है। लोग फोन पर ओडर कर देते हैं और घर आकर खाना ले जाते हैं। वो सबको बनाकर खिलाती थी लेकिन उस ही कोई पूछने वाल नहीं था वहाँ पर। अति तो उस दिन हो गई राम शाम को गंगा से मिलने आया और गंगा को उसके ऊपर से सिगरेट की बदबू आ रही थी। गगां ने जब उसे पूछा तो उसने झूइ बोल दिया लेकिन गंगा को भरोसा नहीं हुआ। उसने उससे बोली मेरी कसम खा कर बोल लेकिन उसने गंगा की झूठी कसम तक खा ली। गंगा को किसी भी तरह का नशा करने वाले इंसान बिलकुल भी पसंद नहीं थे। जैसे ही सिगरेट की बदबू उस तक आती थी तो उसकी तबियत खराब होने लगती थी। राम वापस अपने घर चला गया और वहाँ जाकर उसने सिगरेट से अपनी बाजू पर निशान लगा दिये। दूसरे दिन वह वापस गंगा के घर आया तो उसने गंगा को अपना हाथ दिखाया तो उसके हाथ पर बहुत बड़ा छाला था जलने की वजह से। गंगा उससे नाराज जरूरी थी लेकिन उसका जला हुआ हाथ देख क रवह घबरा गई और उसने राम से पूछा यह कैसे हुआ। उसने बताया मैंने खुद को सजा दी हैतेरा दिल दुखाने के लिए। गंगा ने फिर पूछा लेकिन यह जला कैसे उसने फिर से कहानी बनाना शूरू कर दिया लेकिन उस दिन गंगा ने उसके जेब मे रखी हुई

सिगरेट देख ली थी। गंगा ने बोला यहाँ से चले जाओ और कल तक यहाँ मत आना। कैसे हो तुम लो मैंने पहले भी तेरा इतना बड़ा गुनाह मॉफ कर दिया था। उस दिन तेरे जीजा ने जो भी कुछ मेरे साथ किया उस दिन भी तूने मेरा साथ नहीं दिया और अब तू मुझ से झूठ बोल रहा है। मैं सब कुछ सहन कर सकती हूँ लेकिन झूठ और धोखा नहीं। मैं यहाँ अकेली हूँ हमारे घर इतना बड़ा हादसा हो गया और तेरे माता – पिता एक बार भी मुझे मिलने नहीं आए। कैसे लोग हो तुम सब। राम गंगा के ऊपर चिल्लाने लगा था और बोलने लगा थ तुझे मेरे परिवार के बारे में कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं है। उन दोनों का बहुत झगड़ा हुआ और अंत में राम ने गंगा को बोल ही दिया। तेरे से तो अच्छी काजल थी काश मैंने उसे हाँ बोल दिया होता वह मम्मी को भी पसंद थी। गंगा ने उसे शांत होकर देखा और कहा अब मेरे घर तभी आना जब मेरे माँ–बाप वापस आ जाएँ मुझे भी तेरी माँ से बात करनी है। अगले दिन राम की माँ का फोन आया और बोलने लगी तूने क्या बोल दिया है मेरे बेटे से। जब से वह आया है रोता ही चला जा रहा है। गंगा ने जवाब दिया पहले तो अपने बेटे से ही पूछ लो और फिर भी आप अगर जानना चाहती हैं तो मैं आपको सब कुछ बता देती हूँ। गंगा ने उसकी माँ को सब कुछ बता दिया और बोल दिया मुझे आप लोगों के घर बहु बनकर बाने का कोई शौक नही है आप उसकी शादी काजल से ही करवा दो। एक बात और मैं आपको बताना चाहती हूँ आपके बेटे ने मुझे यह बताया था कि काजल उसकी बहन है। गंगा थोड़ी हँसी और बोली आप लोगों में बहन से शादी होती है क्या ? फिर गंगा ने फोन रख दिया।

कुछ दिनों में गंगा के माता पिता भी वापस आ गए और उन्होंने बोला तेरे दादाजी की मौत के बाद हम एक साल तक तेरी शादी नही कर सकते हैं। हमें सभी को बताना होगा। फिर जो भी तैयारियाँ की हुई थी उन सभी को उसके पिता ने मना कर दिया फोन पर। दूसरे दिन राम की माँ का फोन आया और उसने गंगा की माँ को यह बोला कि गंगा मेरे बेटे से शादी नहीं करना चाहती है। यह सुनकर गंगा की माँ को धक्का लगा और उन्होंने कहा मैं गंगा से बात करती हूँ। गंगा ने यह सारी बातें माँ को साफ साफ बात दीं और बोली मैं ऐसे लड़के से कभी शादी नहीं कर सकती जो मेरे दिल के साथ खेलता हो। गांग के पिता उसके फैसले से खुश हो गए थे। गगा ने मना तो कर दिया था लेकिन वह मन ही मन और अकेले में बेठकर रोती रहती थी। राम के पिता ने गंगा की माँ को बोला जब यह शादी ही नहीं हो रही है तो गंगा को बोलना सगाई की अंगूठी हमें वापस दे जाये। यह सुनकर गंगा की माँ ने कहा आप अपेन बेटे को यहाँ भेज दीजिए वह आकर ले जाएगा। राम के पिता ने बोला हमारा बेटा क्यों आएगा। गंगा की माँ ने बोला क्योंकि शादी के लिए आप लोग हमारे

पीछे पड़े थे। आपका बेटा बार–बार यहाँ आता था। सगाई भी तो आपके हिसाब से ही हुई थी हमारे हिसाब से नहीं।

अगले दिन राम गंगा के घर आया तो गंगा ने ही दरवाजा खोला। राम ने गंगा से बहुत सारी मॉफी मांगी और रोने लगा उसके पैर भी पकड़ लिए और बोलने लगा मुझे एक और मौका दे दे। मैं अपने घर वालों की तरफ से भी मॉफी मांगता हूँ लेकिन मुझे मत छोड़। गंगा ने कहा आज शादी से पहले जा लोग ऐसा व्यवहार कर सकते हैं तो तुम लोग बाद में क्या करोगे और वैसे भी यह तेरा फैसला था मेरा नहीं। गंगा अपने कमरे में बैठी रोती रही। राम उसकी माँ के पास गया औ बोला आंटी यह मेरी अंगूठी आपको वापस करने आया हूँ। यह सुनकर गंगा की माँ को बुरा लगा लेकिन खुद को संभाल लिया। उन्होने राम से बोला तुम तो रिश्ते बहुत जल्द ही बदल लेते हो। आज तक तुमने मुझे सिर्फ माँ कहकर पुकारा था लेकिन जैसे ही तुमने अंगूठी वापस की मैं माँ से आंटी बन गई। तुम्हारे घरों में रिश्तों की यह जगह है क्या ? तो फिर शायद मेरी बेटी का फैसला इस बार ठीक है। राम अपनी अंगूठी मंदिर में रख गया और गंगा की अंगूठी वापस ले गया। राम अगले दिन वापस आया और जाकर गंगा की माँ के ऊपर जोर जोर से चिल्लाने लगा आपकी बेटी कुछ नहीं समझती है मैं उसे कितना प्यार करता हूँ। मैं आज आप लोगों से वादा करता हूँ शादी तो मेरी गंगा से ही होगी आप देखना। गंगा ने बाला आकर मेरी माँ की तबियत ठी नहीं है यहाँ आकर तमाशा मत करो। राम की आँखें लाल हो रही थीं। वह बोलते – बोलते हकला रहा था और खडे होकर हिल रहा था। और बोलता जा रहा थ कि अगर तू मेरी नहीं हुई तो मैं तेरे घर पर आकर अपनी जान दे दूंगा। यह सुनकर उसकी माँ थोड़ा डर गई थी। ज बवह चला गया तो उसकी (गंगा) माँ ने बोला इसको बोलना यहाँ आकर ऐसे नाटक न किया करे। गंगा दुखी थी अपने फैसले से उसे ऐसा लग रहा था कि शायद मैंने गलत फैसला ले लिया है। गंगा घर पर बैठी–बैठी रोती रहती थी और दुखी रहती थी। एक दिन राम की माँ गंगा से मिलने आई और वह गंगा को समझाती रही और अपने बेटे के प्यार की दुझाईयाँ देती रही। वह बार–बार गंगा को यह वादा दे रही थी कि मैं खुद यह जिम्मेदारी लेती हूँ की शादी के बाद तुझे उस घर में पूरा मान सम्मान मिलेगा। गंगा ने पूछा अगर ऐसा नहीं हुआ तो । उसकी (राम) माँ बोली मैं उन सभी से रिश्ते खत्म कर लूंगी लेकिन तेरा साथ जरूर दूंगी। यहाँ की सारी बातें राजीव, पूनम और रमन को भी पता चल गई थीं। पूनम ने अपनी माँ को बोला अब आप लोग जल्दी से जल्दी इसकी शादी कर दो लड़का ढूंढ कर । अब इसका दिमाग उस लड़के से हट गया है। हम यही तो चाहते थे भगवान ने अपने आप ही ऐसा कर दिया। अब

पापा को बोलो ज्यादा देर न करें। अगर राम फिर से उसके सामने आया तो वह फिर से पिघल जायगी। रमन तो बहुत खुश हो गया था कि गंगा का रिश्ता टूट गया है। अब रमन रोज फोन करता था और गंगा के साथ भी मीठी–मीठी बातें करता था। राम के बारे में बातें करता रहता था। जान–बूझ कर राम के साथ बीते वक्त की बातें करता रहता था। जिस वजह से वह मन ही मन राम से शादी करने को तैयार थी। लेकिन अब क्या हो सकता था । दूसरी तरफ राम के परिवार के लोग उसे उकसा रहे थे कि तू उसे भगा कर ले जा बाकी हम संभाल लेंगे। गंगा की माँ ने गंगा से आकर बोला हम तेरे लिए लोगों से रिश्ते की बात कर रहे हैं लकिन एक बात ध्यान रखना जहाँ तेरी बात चले वहाँ तू राम का कोई जिक्र नहीं करेगी। उसने कहा क्यों ? उसकी माँ बोली क्योंकि हमें समाज में रहना है। समाज में हमारी इज्जत है और तेरी वजह से हम अपनी इज्जत दाव पर नहीं लगाएंगे। उसने कहा मैं जिस भी इंसान से शादी करूंगी उससे मैं झूठ की बुनियाद पर अपना रिश्ता शुरू नहीं करूंगी। उसे मैं अपनी जिंदगी की सच्चाई पहले बताऊंगी और फिर भी वह मुझ से शादी करने को तैयार होता है तो ही मैं यह शादी करूंगी, नही ंतो जिंदगी भर कुँवारी रहूँगी। गंगा ने बोला अब आप जो करना चाहते हैं वह आप कर सकते हैं। गंगा की माँ ने बताया कि, पूनम का फोन आया था कल रात को वह बता रही थी, रमन का एक कॉलेज समय का दोस्त है उससे हमने गंगा की बात चलाई थी। वह लड़का गंगा से अपने परिवार को मिलवाना चाहता है। उन सभी ने गंगा की तस्वीर देख रखी है उन्हें गंगा पसंद है। सिर्फ एक बा रवह लोग इससे मिलना चाहते हैं। पूनम ने बोला अगर गंगा तैयार है तो उसे कल भेज देना। गंगा की माँ ने उनके बारे में पूछा उन्हें तो कोई तकलीफ नहीं होगी गंगा के वहाँ आने पर। पूनम बोली नहीं माँ उन्होने ही तो यह रिश्ता बताया है। वह खुश हैं कि गंगा राम के चंगुल से बाहर आ गई है। यह सुनकर गंगा के मन में दुख हुआ। उसे ऐसा एहसास हो रहा था जैसे कुछ गलत होने वाला है उसके साथ। वह बार–बार सोच रही थी क्या मेरा फैसला सही है। अंदर से आवाज आई (मन से) तुझे यह अब सोचने का कोई अधिकार नहीं है। अब तूने अपनी डोर अपने माँ को दे दी है। मत सोच ज्यादा जो कुछ भी होता है अच्छे के लिउ ही होता है। गंगा ने माँ को हाँ बोल दिया और पूछा पापा जानते हैं यह सब ? माँ ने बताया हाँ और अगर तुझे लड़का पसंद आ जाये तो हमें बता देना। गंगा की सगाई राम से टूट जरूर गई थी लेकिन फिर भी वह दोनों आपस में फोन पर बातें करते थे। गंगा ने यह सब राम को बता दिया था। अगले दिन वह बरौड़ा जाने वाली है अपनी बहन के पास । राम गंगा को मिलने अहमदाबाद बस स्टोप पर आया था और उसने गंगा को कहा मैंने तुझे खो दिया है हमेशा के लिए वह भी अपनी ही गलती की वजह से। राम ने उसका नाम उसका नाम पूछा तो गंगा ने उसका नाम

मेहुल बताया। गंगा राम को देखती चली जा रही थी जहाँ तक वह उसे दिखाई दिया। वह एक दूसरे को नजरों स`ही अलविदा कह चुके थे। वह जिस सीट पर बैठी थ्ज्ञी उसे पास वाली सीट पर एक सरदार लड़का बैठा हुआ था। वह उन दोनों की बातें सुन रहा था जब बस वहीं पर खड़ी थी। उसने गंगा से बात करना शुरू की और पूछज्ञ वह लड़का वहीं पर तुम्हारा 'बोयफ्रेंड था क्या ? गंगा ने जवाब दिया वह मेरा मंगेतर था लेकिन अब नहीं है! उस अंजान लड़के ने पूछा तो फिर ऐसा क्या हो गया कि अब वह आपका बोयफ्रेंड या मंगतेर कुछ भी नहीं रहा! डसने (गंगा) उसे अपनी प्रेम कहानी क्यों सुना डाली। उस अंजान लड़के ने कहा मैं तो एक अजनबी हूँ तुमने मुझे अपनी कहानी क्यों सुना दी। अगर मैंने इसका फायदा उठा कर तुम्हें बदनाम कर दिया तो फिर तुम क्या करोगी। उसने (गंगा) कहा तुम ऐसा कुछ नहीं कर पाओगे क्योंकि मुझे भगवान पर भरोसा है और वह मेरे साथ कुछ गलत नहीं होने देंगे । वह अंजान लड़का हंसने लगा और बोला आप बहुत ही भोली हैं और आपका दिल भी। आपके साथ कभी कुछ गलत नहीं हो सकता है। गंगा राम के बारे में सोच रही थी और तभी खयाल आया और सोच यदि मैं अभी भी राम के ही बारे में सोचती रहूँगी तो फिर मेहुल से और उसके परिवार से मैं बात कैसे कर पाऊंगी। मुझे आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए । गंगा पूनम के घर पहुँच गई। किंतु इस बार रमन का व्यवहार बहुत ही बदला हुआ था। उसे देखने के बाद ऐसा लग ही नहीं रहा था कि, यह वही इसांन है जो हर वक्त सिर्फ लोगों के साथ बत्तमीजी ही करता है। पूनम ने गंगा को उदास बैठे देखा तो उसने गंगा से बोला अब राम के बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं है। तूने सही फैसला लिया है अब सिर्फ आगे ही देखना पीछे मुड़कर मत देखना । वह लड़का तेरे लायक नहीं है। यह लड़का तुझे बहुत खुश रखेगा उसके घर पर किसी भी चीज की कमी नहीं है। वह घर का बड़ा बेटा है। गंगा यह सब सुन रही थी उसने अपना सिर अपने हाथों से पकड़ा हुआ था, उसकी आँखे बंद थीं उसने अपना सिर अपने हाथों से पकड़ा हुआ था, उसकी आँखें बंद थीं और वह रो रही थी। थोड़ी देर बाद गंगा को एक घर दिखाई देने लगा था। वह रास्ता भी जो उसके घर तक जाता था। उसके घर का एक–एक व्यक्ति और (मेहुल) वह लड़का खुद भी। उसके घर का सामान आदि तभी एक दम से रमन ने आकर उसे हिलाया और पूछा क्या हुआ तुझे! गंगा बोली कुछ नहीं। पूनम ने भी पूछा क्या हुआ तुझे उसने कहा आज हम जहाँ जाने वाले हैं मैंने वह जगह देखी है। रमन ने पूछा मतलब ? गंगा बोली मैंने अभी मेहुल का घर देखा है। रमन उसका मजाग उड़ाने लगा। गंगा ने फिर उसे सारा वर्णन कर दिया यह सुनकर वह भौचक्का रह गया। उसने कहाँ! मेहुल का घर ऐसा ही है। यह तीनों मेहूल के घर पहुँचे तो गंगा ने उसके माता–पिता के पैर छूए। मेहुल के घरवाले तो आज ही गंगा से शादी

करवाने को अपना सारा घर दिखाया, अपना जिम सेंटर भी दिखाया और गंगा के बारे में पूछा कि वह क्या करती है, उसकी पसंद न पंसद। मेहुल को गंगा फोटो से भी ज्यादा सुंदर लगी थी। मेहुल ने गंगा को बोला कल हम दोपहर को खाना खाने बाहर जायेगें फिर पता नहीं उसे क्या हुआ उसने कुछ सोचने के बाद बोला हम कल नहीं परसों जायेंगी। गंगा ने मेहुल से कुछ भी नहीं पूछा। तीसरे दि मेहूल पूनम के घर आया और वहाँ पर पूनम और रमन भी आए थे लेकिन वह उन दोनों के साथ नहीं बैठे थे। कहीं दूर जाकर बैठे थे। मेहुल ने गंगा को कहा मैं तुम्हें शादी के बाद काम नहीं करने दुंगा। मेरे लिए पत्नि का अर्थ है पति और सास–ससुर की सेवा करना। तुम्हें बाद में घर पर सिर्फ साड़ी ही पहननी होगी। मेरे माँ–बाप की तुम्हें इज्ज़त करनी होगी। गंगा से उसने यह भी पूछा क्या तुम्हारा कोइ बॉयफ्रेंड है। गगा ने कहा इस बारे में मैं आपसे कल बात करूंगी। उसके बाद वहाँ पर रमन और पूनम भी आ गए फिर बाद में सभी एक साथ ही घर वापस आ गए। जब रात को सभी ने खाना खा लिया तो मेहूल पूनम के घर आ गया। गंगा और पूनम ने उसे आदर से अंदर बुलाया और पूछा चाय पीयेंगे क्या ? मेहुल बहुत ही गुस्से में था और बोला मैं यहाँ चाय पीने नहीं आया हूँ। मुझे गंगा से बात करनी है। पूनम को कुछ शक हुआ जरूर कुछ बात है। वह गंगा के ऊपर आकर चिल्लाने लगा और बोला तूने हमसे झूठ क्यों बोला। वह पूनम के ऊपर भी गुस्सा हुआ और बोला मुझे तेरे से यह उम्मीद नहीं थी कि, तू भी अपनी बहन का झूठ बोलने में साथ देगी। पूनम ने बोला मेहूल आपको जो भी बात करनी है आराम से बैठकर करो। उसने कहा मुझे गंगा से बात करनी है। गंगा भी वहाँ आकर बैठ गई। उसने कहा बोलिए आपको क्या बात करनी है मुझसे। उसने कहा मैं तेरे साथ शादी नहीं कर सकता हूँ। तूने मुझसे झूठ बोला है। तूने मुझे यह नही ंबताया की तेरी सगाई टूट गई है। मैं ठुकराई हुई लड़की से शादी नहीं कर सकता हूँ। पहले तूने अपने आशिक के साथ नैन मटक्के किये और जब लगा ि कवह तेरी खुशियाँ पूरी नहीं कर पाएगा तो आ गई मेरे साथ शादी करने के लिए । तेरा क्या भरोसा शादी के बाद कोई पैसे वाला आदमी मिल जायेगा तो तू मुझे भी धोखा देगी। तेरे जैसी ही लड़कियाँ होती हैं जो घरों को बरबाद करती हैं अपना शरीफ सा फोटो दिखा कर तूने हम सब को धोखा दिया है। और उस लड़के (राम) को तो मैं छोडूँगा नहीं। उसके तो मैं हाथ पैर तोड़ दूंगा और कहीं फिकवा दुंगा। पता भी नही चलेगा कहाँ गायब हो गया वो । मुझे पागल समझ रखा था क्या जो मैं तेरे भोले चहरे को देखकर ही तुझसे शादी कर लेता। अगर मैंने तेरी छान बीन न करवाई होती तो मुझे तेरे बारे मे कुछ भी नहीं पता चला होता। अब पूनम और गगा से यह सब सुना नहीं जा रहा था। पूनम ने कहा तुम गलत समझ रहे हो गंगा को। यह वैसी लड़की बिल्कुल भी नहीं है। मेहुल बीच में ही बोल पड़ा पूनम अपनी बहन की तरफदारी मत कर।

तेरे और तेरी बहन में जमीन आसमान का फर्क है। गंगा गुस्से में खड़ी हो गई और पूनम से बोली दीदी अब आप चुप रहना। इसने मुझसे सवाल किये हैं तो इसके जवाब भी मैं ही दूंगी। गंगा बोली हाँ तो श्रीमान मेहुल आप मुझसे बात करिए। अब तक हम चुपचाप से आपकी बकवास सुन रहे थे तो अब आप बीच में नही बोलोगे। पहली बात आपको बात करने की तमीज बिल्कुल भी नहीं है हमें ऐसा लगा था शायद आप थोड़ा सा दिमाग रखते हैं लेनि अफसोस आपके पास तो दिमाग के साथ–साथ दिल भी नहीं है। दूसरी बात आप लोगों ने शादीके लिए हाँ बोली थी हमने नहीं। अगर आपने और आपके परिवार ने मुझे बहु के रूप में देखा तो इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। आपको मैं सच बात देती हूँ कि मुझे आप बिल्कुल भी पसंद नहीं आए थे। तो फिर शादी करने का तो सवाल ही नहीं उठता है आपके साथ। आपकी हिम्मत कैसे हुई मेरी छान–बीन करने की। यह आपको किसने अधिकार दिया है। मेरी सगाई टूट गई है या फिर मैं किसी को प्यार करती हूँ यह बातें मैं आपको तब बताती जब मुझे आप पसंद आए होते। लेकिन मैं आपको पसंद क्यों करूं आपके अंदर न तो समझदारी है, न ही दिमाग और न ही बड़ों की इज्जत करने की नीयत। जो इसांन अपने माता–पिता की बात नहीं मान सकता वह भी महमानों के सामने वह किसी और के माता–पिता की क्या इज्जत करेगा। मैंने तो उसी दिन तुम्हें रिजेक्ट कर दिया था आपका व्यवहार देख कर। और रही मेरी सगाई की बात नहीं मान सकता वह भी महमानों के सामने वह किसी और के माता–पिता की क्या इज्जत करेगा। मैंने तो उसी दिन तुम्हें रिजेक्ट कर दिया था आपका व्यवहार देख व्यवहार देख कर। और रही मेरी सगाई की बात यह सगाई इसलिए टूटी है क्योंकि वह लोग दहेल के लालची हैं और अपने बेटे से गलत काम करवाते हैं। फिर भी मैं उसे प्यार करती हूँ यह जानते हुए भी की उनका बेटा एक अच्छा पति कभी नहीं बन पाएगा। मैं प्यार दिल से करती हूँ किसी के रूतबे से नहीं। मेरे लिए दिल माईने रखता है रूपया पैसा या रूतबा नहीं। आत्मा पवित्र होनी चाहिए इसांन की ना की बड़ा रूतबा। और आपने क्या बोला था कि मैंने उसके साथ नैंन मटक्के किये थो। तो आप ध्यान से सुन लीजिए। जिन लोगों की आत्मा और दिल पवित्र होते हैं वह इसे प्यार का नाम देते हैं और जिन लोगों की नजरों में गंदगी होती है वह लोग इसको नैन मटक्के का नाम ही देते हैं जो आपने किया। रही मेरे प्यार की बात मैं जिसको भी प्यार करती हूँ और उकसे लिए मैं कठिन से कठिन कार्य भी कर सकती हूँ। प्यार को कभ्ज्ञी दौलत से नहीं जाता। आप भी यह सब सीख लेना जिससे भी आप शादी करो। सबसे पहले तो उस पर भरोसा करना और यदि उससे कोई गलती हुई भी हो तो उस पर शक मत करना उसे दूर करने की कोशिश करना। भरोसा करोगे तो शायद आपको प्यार का अर्थ खुद ही समझ आ जायेगा। और रही धोख देने की बात मेरे माता–पिता ने

प्यार करना और भरोसा करना सिखाया है, किसी को धोखा देना नहीं। आपने तो मुझसे बहुत सारी कमिया निकाल दीं थीं। क्या कभी अपने बारे में सोचा है तुम्हारी टांग में खराबी है ऊपर से तुम मेरे से 9–10 साल उम्र में बड़े भी हो। आपने यह कैसे सोच लिया कि मैं आपको हाँ बोल दुंगी। आपकी इतनी उम्र हो गई है तो फिर आपकी शादी क्यों नहीं हुई अभी तक क्या मैं आपके ऊपर शक नही कर सकती हूँ। मर्दों को तो लड़कियों में कोई कमी नहीं चाहिए होती है चाहें वह खुद कितने भी बिगडे हुए और बत्तमीज़ हों। आज के बाद किसी लड़की के साथ यह सब मत करना जो आज आपने साथ किया है और आप मेरी चिंता तो बिल्कुल भी मत करना। जहाँ मेरा संजोग होगा मैं वहीं जाऊंगी। अब आप अपने घर जा सकते हैं और हाँ आज दोपहर के खाने के लिए धन्यवाद आपका। मेहुल गंगा की बातें सुनने के बाद उससे नजरें तक नहीं मिला पा रहा था और वह वहाँ से उठ कर चला गया। लेकिन इन सब में रमन दूर खड़ा हुआ था। उसने एक बार भी मेहूल को चुप कराने की जरूरत नहीं समझी और न ही वह कुछ बोला म नही मन मुस्करा रहा था वह। ऐसा लग रहा था जैसे कि यह सारी उसी की कोई चाल थी और शायद रमन ने ही गंगा के बारे में सब कुछ बताया होगा। गंगा का दिमाग खराब हो गया था। पूनम भी रो रही थी जो भी कुछ उसके घर हुआ था उस दिन। रात काफी हो चुकी थी उस दिन उसने पूनम को भी सोने भेज दिया था। गंगा अकेली बालकनी में बैठी रही। कभी उसकी आँखें नम होती थीं, कभी वह फिर से सोचने लगती थी हमारा समाज ऐसा क्यों हैं लेकिन उन्हें तो तमाशा करना होता है हर छोटी–बड़ी बात को लेकर। कैसा है हमारा पुरूष प्रधान समाज पुरूष की कमियों को भी नजरंदाज और अनदेखा कर दिया जाता है। परंतु जब बात औरत की आती है तो दूसरों की गलतियाँ भी उन्हीं पर लाद दी जाती हैं। उस दिन गंगा की पूरी रात वहीं बैठे–बैठे ही निकल गई थी। गंगा यही सोचती रही बचपन से लेकर आज तक उसे न जाने कितनी परीक्षाओं से गुजरना पड़ा है। बस उन बातों के रूप अलग थे। लेकिन बचाव तो दिल पर ही लगे थे। उसे तो यह समझ ही नहीं आता था कि वह किन बातों को याद रखे और किन बातों को भुला दे। वह भगवान से सवाल करती थी गलती मेरी है या गलती उन परिस्थितियों की है जो कि मेरे नसीब की है। जब भी मुझे ऐसा लगने लगता है कि अब मेरी जिंदगी की गाड़ी रास्ते पर आने वाली है तभी मुसिबतों का बड़ा सा पहाड़ सामने आ कर खड़ा हो जाता है। यह सब सोचते–सोचते उसकी आँखे कब लग गयी उसे पता ही नही चला। अगली सुबह गंगा ने मेहुल का बिजिटिंग कार्ड टेबल से उठाकर अपने पर्स में रख लिया जो रमन ने देख लिया था। उसने कहा जब शादी ही नहीं हेने वाली है तो इसका तू क्या करेगी। उसने कहा (गंगा) मेरी मम्मी को देना है उन्होंने कहा था लाने के लिए। रमन बोला मम्मी के बहाने खुद ही ले कर जा रही है।

वहाँ से फोन कर–करके उसे परेशान करेगी। रमन नजदीक आकर चुटकियाँ मार – मार कर आवारा लोगों की तरह बातें कर रहा था। वह एक दम गंगा के करीब आ गया था और उसका हाथ खींचकर बोला चल–चल जाकर मुझे उसका कार्ड निकाल कर दे, दे चुपचाप से नही ंतो मैं खुद ले लूंगा। गंगा ने उसे धक्का देते हुए बोला जीजू आप थोड़ा दूर से बात करें मेरे साथ। याद रहें मैं आपकी साली हूँ। गंगा ने कार्ड निकाल कर टेबल पर रख दिया और बोली मुझे ऐसे लोगों की किसी भी चीज में कोई दिलचसबी नहीं है। रमन चिड़ कर बोला मेहुल किसी समझदार लड़की से ही शादी करेगा। वह तो तेरी शक्ल देख कर फंस गया था। जब उसने तेरी अक्ल देखी तो उसने तुझे ना पसंद कर दिया। पूनम ने जैसे ही रमन को बोला उसने उसके साथ भी लड़ाई कर डाली। रमन बोला तू उसके लायक ही नहीं है जो वह तेरे साथ शादी कर लेता। गंगा ने बोला मैं उसके लायक नहीं हूँ या वह मेरे लायक नही है। और वैसे भी मैं आपसे क्यों बात कर रही हूँ। आपसे बात करने का मतलब है ‘‘भैंस के सामने बीन बजाना’’। और वैसे भी आप जिसको इतना समझदार और संस्कारी बता रहे हैं। उसे अभी आप देखना वह मेरे से मिलने भी आएगा और मेरे सामने शादी का प्रस्ताव भी रखेगा और वह अब सारी कोशिशें भी करेगा मुझ से शादी करने के लिए। लेकिन अब मेरी जिंदगी में उसकी कोई जगह नही है। गंगा की बात खत्म ही हुई थी कि, मेहुल ने रमन को फोन किया और बोला मैं अभी तेरे घर आ रहा हूँ पूनम को बोलना मैं नाश्ता वही करूंगा आकर। रमन का मुँह उस वक्त देखने लायाक था। पूनम ने पूछा किसका फोन था ? वह कुछ भी बोल नहीं पाया तुरंत गंगा बोल पड़ी जीजू की चुप्पी बता रही है मेहुल का फोन था और वह यहीं पर आ रहा है। रमन गंगा को समझ नहीं पा रहा थ कि इसको सबकुछ पहले ही क्यों पता चल जाता है जो होने वाला होता है। थोड़ी देर बाद दरवाजें ही क्यों पता चल जाता है जो होने वाला होता है। थोड़ी देर बाद दरवाजें की घंटी बजी और मेहुल अंदर आया। उसने गंगा को आकर रात के लिए मॉफी मांगी और हैलो बोला। गंगा के संस्कार यह बोल रहे थे कि, तू उसके साथ कोई गलत व्यवहार मत करना। गंगा चुपचाप से अपना नाश्ता करती रही और वहाँ से अंदर वाले कमरे में चली गई पूनम ने भी ज्यादा उससे बात नही की थी उस दिन। मेहुल ने फिर से पूनम को बोला क्या मैं गंगा को आज बाहर लेकर जा सकता हूँ मुझे उससे बात करनी है। मैं फिर से इस रिश्ते के बारे में सोचना चाहता हूँ। पूनम ने उसके चहरे की तरफ देखा और बोली कल आपने खुद सब कुछ खत्म कर दिया है। अब ना तो हम उसे आपके साथ भेजेंगे और न ही वह जाना चाहेगी फिर भी यदि आपको ऐसा लगता है कि वह आपकी बात मानेगी तो आप कोशिश कर सकते हैं। पूनम ने गंगा को बाहर बुलाया । गंगा बाहर आई तो मेहुल बोला मैं आपसे अकेले में कुछ बात करना चाहता हूँ । गंगा ने उसे

बोला आपको जो भी बात करनी है सबके सबके सामने करा। कल रात भी तो आपने सभी के सामने ही सब कुछ बोला था, तो फिर अब शर्म क्यों आ रही है आपको । वैसे भी हम दोनों में अब वह रिश्ता नहीं है कि मैं आपके साथ कहीं भी जाऊं । जिन लोगों से मेरे कोई रिश्ते नही होते हैं मैं उनके साथ कहीं भी नहीं जाती हूँ। वह गंगा को मना रहा था वह फिर बोला हम दोस्ती के नाते तो जा ही सकते हैं। गंगा हँसी और बोली, हमारा न तो दोस्ती का रिश्ता है और न ही दिल का। आप जीजू के मित्र हैं तो आप उनके साथ जहाँ जाना चाहें जा सकते हैं और वैसे भी आज मैं वापस जा रही हूँ अपने घर । गंगा का दिल इतना कोमल क्यों था। वह तो अपने दुश्मनों को भी मॉफ कर देती थीं उसने मेहुल से किसी भी तरह का रिश्ता ना रखने का फैसला किया था फिर भी उसने उन सब बातों को एक बुरी घटना समझ कर छोड़ दिया था। गंगा वापस गांधीनगर चली गई थी। घर आकर उसने अपनी माँ को सब कुछ बता दिया। यह सब सुन कर उसकी माँ के आँखों में आँसू थे। वह अपनी बेटी के लिए दुखी थी। गंगा अपनी माँ के पास आकर बैठ गई और अपनी माँ को बोला आप दुखी क्यों होती हो। हमारे साथ वही होता है जो हमारे नसीब में होता है। शायद मेहुल के साथ मेरा रिश्ता इतना ही था। कोई बात नहीं आप दुखी मत होना। आपकी बेटी बहुत बहादुर है। वह सभी तरह के तूफानों को पास करने की हिम्मत रखती है। जो होता है अच्छे के लिए ही होता है। भगवान् पर भरोसा करो। गंगा की माँ ने उसे एक बात और बताई कि तुम्हारे पापा का तबादला (जैसलमेर) राजस्थान हो गया है। पापा को दो दिन में जाकर कुर्सी संभालनी है। गंगा ने बोला चलो फिर से नई जगह हम जायेंगे । गंगा अपने ऊपर के मन से तो खुश थी लेकिन अंदर का मन घबरा रहा था। उसे यह अहसास हो रहा था कि, अ बवह राम को हमेशा के लिए खो देगी। कुछ दिनों में गंगा के माता पिता जैसलमेर चले गए और गंगा अपने भाई के पास सूरत चली गई। गंगा हर रोज़ अपना शादी का जोड़ा देख–देख कर रोती रहती थी। राम के पास गंगा सूरत वाला फोन नम्बर और पता भी था। उसने वहाँ पर भी फोन करना शुरू कर दिया था। ज बवह सूरत में थी तो एक दिन वह अचानक से राजीव के घर आ गया और गंगा को बोलने लगा मैं तेरे बगेर मर जाऊंगा । मुझे छोड़ कर मत जा। गंगा का मन फिर से पिघलने लगा था लेकिन इस बार वह मजबूर थी। उसकी माँ किसी नकिसी वजह से वहाँ फोन करती रहती थी। और दूसरी तरफ पूनम अपने माता–पिता को बोलती रहती थी आप जल्दी से कोई लड़का देख लो इसके लिए। यदि उन लोगों ने फिर से गंगा को अपनी तरफ खींच लिया तो इस बार इसको उन लोगों से दूर करना मुश्किल हो जायेगा। उसके माता–पिता ने बोला हम एक हफ्ते बाद सूरत जा रहे हैं तू भी आ जाना वहाँ बैठकर कुछ सोचते हैं। राम जिस वक्त सूरत आया था तो उसकी माँ ने राम के हाथ कुछ पैकेटस दिये गंगा के घर रखने

के लिए। राम वहाँ पर उसकी माँ के कहने पर ही आया था। उसकी माँ ने थोड़े से चावल के दाने, पीली दाल के दानें, हनुमान जी मंदिर का सिंदूर और सवा पाँच रूपये यह सब चुपचाप राम से उसके घर रखवा दिये थे। जो बात गंगा को भी पता नहीं चली। वह उसी दिन वापस अपनी माँ के पास चला गया। गंगा को पिछली सारी बातें याद आती रहती थीं और वह रोती भी रहती थी। लेकिन उसे चुप कराने वाला या समझने वाला उसके पास कोई नहीं थ्ज्ञा। जब गंगा को मानसिक तौर पर किसी के सहारे की जरूरत थी तो उसके पास कोई नहीं था । वह अपनी हिम्मत खुद ही थी। गंगा को अकेले में वह भी याद आने लगा था । जिस दिन गंगा बरौड़ा से वापस आई थी और उसने सारी बातें मेहुल की बताईं थी और फिर एक दो दिन के बाद उसकी माँ ने बोला कि तू चिंता मत कर हम तेरा रिश्ता बहुत ही बड़े और अच्छे घर मे करेंगे। बस तू हमें अपनी पसंद बता देना। गंगा ने बोला– जो मुझे अपनी पत्नि के रूप में सच्चा मित्र समझ सके, मुझ पर भरोसा कर सके और वह ऐसा हो कि मैं उसकी इज्जत कर पाऊं, मैं उस पर गर्व कर पाऊं, वह मुझे सच्चे माईने में पत्नि का दर्जा दे पाए, हर सुख दुख में मेरा साथ दे पाए, और जिंदगी में कभी वह कोई भूल भी कर बैठे तो मुझसे आकर झूठ न कहे। अपने माता–पिता के साथ–साथ वह मेरे माता–पिता की भी इज्जत कर सके। सबसे जरूरी बात वह समझदारी के साथ सही और गलत का फर्क पता कर सके। इन सब बातों की समझदारी किसी लड़के में हो ऐसा मुझे लगात नहीं है। अगर मैं राम के बाद किसी से भी शादी करूंगी तो एक बच्चे वाले इसांन से करूंगी। मैं किसी कुंवारे लडके के साथ शादी नहीं करना चाहती हूँ। मैं एक ऐसे इंसान से शादी करना चाहती हूँ जो एक बच्चे का पिता हो। मैं किसी के भी घर में पत्नि बनकर नही जाना चाहती हूँ । मुझे तो किसी की माँ बनकर जाना है। जिस इसांन ने एक बार जिंदगी को चलाया होता है वह इसांन दिल की गहराई भी समझ सकता है और मुझे ऐसे व्यक्ति से शादी करनी है जो मेरे दिल को समझ सके ना कि, दूसरों की बातों में आकर अपने ही रिश्ते को जला बैठे। यह बात सुनकर गंगा की माँ बोली यह तू कैसी बातें कर रही है। तू कुंवारी लड़की है और तू किसी दूजिये के साथ शादी करेगी वह भी एक बच्चे वाले इसांन से । तू बच्चे की माँ बनना चाहती है। उसने (गंगा) कहा हाँ तो फिर क्या हो गया माँ बनने के लिए माँ की ममता होना जरूरी होता है। न कि अपनी कोख से बच्चे को जन्म देना। क्या मैंने मौसी के तीनों बच्चों को माँ बनकर नहीं पाला है। बच्चे को सिर्फ माँ की ममता की जरूरत होती है। मैं कभी भी किसी दूसरे मर्द के साथ वह संबंध नहीं बना पाऊंगी जो सही माईने में पत्नि और पति के बीच होता है। मैंने दिल से सिर्फ राम को ही अपना पति माना है। अगर मेरी शादी राम के साथ हो जाती तो मैं सिर्फ उसके ही बच्चे को जन्म देती लेकिन मैं यह किसी और के साथ नहीं कर

पाऊंगी। मैंने आपको अपनी पसंद बता दी है। या तो आप मेरी शादी राम से करवा दो या फिर मेर लिए आप ऐसा कोई रिश्ता ढूंढ लो जिसका वर्णन अभी मैंने आप से किया है। अब माँ गंगा की बात सुनकर नाराज भी हुई और परेशान भी हुई। इसने यह कैसी शर्त रख दी है हमारे समक्ष। गंगा वहाँ से उठकर अपने कमरे में चली गई वह बहुत दुखी भी थी उस दिन। गंगा अपने कमरे में जाकर सोफे पर बैठ गई। उसने अपनी आँखें बंद कर रखरी थीं और उसे एक आदमी दिखाई देने लगा वह गंगा के घर की तरफ बढ़ता चला आ रहा है। उसने काले रंग का सूट पहना हुआ है। नीले रंग की शर्ट पहनी है और लाल रंग की टाई लगाई हुई है। वह गंगा के दरवाजे तक आ चुका था और वह वहीं खड़ा हो गया। उसके थोड़ी दूरी पर 4–5 साल का एक लड़का भी उकसे साथ है। उसने भूरे रंग का स्वेटर पहना हुआ है। वह अपने पापा के पीछे अपनी धुन में चला आ रहा है और आकर उसने अपने पापा का हाथ पकड़ लिया। जैसे ही वह घर की घंटी बजाने वाला होता है सही उसी वक्त गंगा की झटके से आँख खुल गई और उसकी धड़कन तेज हो गइ। उसने सोचा यह कौन हैं और यह मैंने क्यों देखा।

गंगा के माता – पिता जैसलमेर से सूरत आ गए थे और पूनम बरौड़ा से आई थी। राखी का त्यौहार था सभी ने आराम से और प्यार के साथ इसे मनाया। गंगा की माँ ने सभी को उसकी शर्त की बात बता दी तो घर में तूफान सा आ गया फिर से। गंगा ने बड़ी ही मुश्किल से अपने परिवार का प्यार और भरोसा वापस पाया था लकिन उसने वह सभी कुछ मेहुल की वजह से फिर से खो दिया था। अब राम का परिवार सिकी न किसी वजह से गंगा तक पहुँचने का प्रयास करता रहता था और गंगा को अपनी तरफ खींचता रहता था। उसकी माँ (राम) कभी उसे राम के दादाजी का वास्ता देती थी कभी राम की झूठी कहानी सुनाती थी। जिस पर गंगा भरोसा कर लेती थी। कभी वह लोग गंगा को अपना वादा याद दिलाते थें। अब गंगा का मन फिर से उन लोगों की तरफ आकर्षित होने लगा था। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि यह भी उनकी एक चाल है अपना बदला लेने का। उस वक्त गंगा को यह पता नहीं था कि उसे राम से विवाह करने की बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। पूनम ने फिर आकर गंगा को समझाया शुरू कर दिया था कि अपने ड्रामे बंद कर दे। मम्मी–पापा को परेशान करना बंद कर दे। गंगा ने भी अपनी जिद पकड़ ली थी । मुझे कुँवारों लड़कों पर भरोसा नहीं है। हर रोज का यही सब चल रहा था उसके साथ। एक दिन फिर से राम ने अपने पापा से गंगा के घर फोन करवाया । राम के पापा ने गंगा के पापा को शादी के लिए मनाने की कोशिश की लेकिन गंगा के पापा ने उन्हें बोल दिया। पहले भी तो आपके ही साथ रिश्ता जुड़ रहा था, लेकिन आप

लोगों ने क्या व्यवहार किया था हमारी बेटी के साथ वो भी उस समय जब कि, वह घर पर अकेली थी। अब हम फिर से आप के ऊपर भरोसा कैसे कर सकते हैं। आपका बेटा अभी मेरी बेटी की बातें नहीं मानता है तो फिर शादी के बाद भी अगर उसने ऐसा ही किया तो हम क्या करेंगे । राम के पापा बोले आप इसकी चिंता मत करो हम गंगा को अपनी बेटी बनाकर घर में रखेंगे और यदि राम ने कभी गंगा को धोखा भी दिया तो हम अपने बेटे का साथ छोड देंगे लेकिन गंगा को दुखी नहीं होने देंगे गंगा के पिता ने कहा हमें घर पर बात करनी पड़ेगी और फोन रख दिया फोन रखने के बाद गंगा के पिता ने गंगा से पूछा यहाँ का नम्बर तूने दिया था उन लोगों को ? गंगा ने मना कर दिया। पूनम और उसकी माँ ने गंगा को चिल्लाते हुए पूछा तो फिर इन लोगों ने यहाँ फोन कैसे कर दिया। गंगा ने फिर उन्हें बताया कि जब हमारी सगाई हुई थी उस समय राजीव ने राम को अपना नम्बर दिया था ओर यह दोनों फोन पर भी बातें किया करते थे। राजीव का नाम सुन कर सभी चुप हो गए लेकिन उससे किसी ने जवाब नहीं माँगा क्योंकि वह लड़का है और लडके की तो सारी गलतियाँ मॉफ होती हैं। शाम को राजीव के घर वापस आने पर गंगा की माँ ने सभी से पूछा क्या हमें गंगा की शादी राम से कर देनी चाहिए पहले तो सभी ने मना कर दिया परंतु फिर राजीव बोला इस मामले में मुझे दूर रखा करो। मुझे इसे किसी भी कार्य में कोई दिलचस्बी नही है आपको जो करना है वह आप लेग कर सकते हैं। और रही शादी की बात मेरे पास समय होगा तो मैं आ जाऊंगा नही ंतो मेरा इंतजार मत करना। हमें हर समय इसके फैसलों के साथ चलने का कोई शौक नहीं है। जब इसका मन आया शादी के लिए हाँ बोल दी जब मन आया ना बोल दी। इसने तो शादी को मजाक बना रखा है। यह पागल है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम भी पागल हैं। गंगा के पिता ने भी राजीव को समर्थन दिया। गंगा वहाँ पर अपना सिर झुकाए चुपचाप सब कुछ सुन रही थी। पूनम ने बोला पापा आप जल्दी से जल्दी कोई लड़का क्यों नहीं देख रहे हो। अगर आपने पहले ही मेरी बात मान ली होती तो शायद यह नौबत नहीं आती। उसकी माँ कुछ नहीं बोली। पूनम अगले दिन वापस अपने घर चली गई थी। घर पर सिर्फ गंगा और उसकी माँ ही थे राम की ही बात चल पढ़ी थी दोनों में । गंगा की माँ ने गंगा के चरित्र पर लानछन लगाते हुए बोलीं जरूर तू उसके साथ हमबिस्तर हुई होगी इसलिए ही तुझे वही लड़का चाहिए। तुझे हमारी इज्जत से कोई लेना देना नहीं है। गंगा से यह सब सुना नहीं जा रहा था। उसने कहा तो फिर आप पापा के साथ इसलिए ही रहती हो क्या ? आप प्यार के लिए नहीं रहती हैं। बहतर होगा आप मेरे से ऐसी बातें न करें आप भी आराम से रहो और मुझे भी प्यार से रहने दो। जब से मैं राम से जुड़ी हूँ तब से आज तक आप लोगों ने सिर्फ कलैश ही किया है। मुझे तो ऐसा लगाता है अगर मेरी शादी उसके

साथ हो भी गई तो वह ठीक से चल ही नहीं पाएगी। जिस चीज में इतनी टोक–टाकि हो जाती है वह तो बरबाद ही होती है। उसने अपनी माँ बोला अभी आप चुप हो जाओ इतना बाल कर गंगा अपना मुँह धोने के लिए खड़ी हुई और एक दम से उसकी माँ आई और गंगा के बाल खींचे और उसे चार–पाँच थप्पड़ लगा दिये और गाली देते हुए बोली हमारे से जबान लड़ाती है। आज मैं तेरा काम ही खत्म कर देती हूँ। गंगा ने झट से अपनी माँ का हाथ पकड़ लिया और बोली अगर आज के बाद आपने ऐसा कुछ भी किया तो मरो मरा मुँह देख लेना। अब पीछे रहना। पहले भी आपने बचपन से लेकर आज तक मुझे बहुत सताया है। राजीव को सिर पर बैठाया है और मुझे सजा दी है। आपके बेटे ने भी मुझ पर हाथ उठाया था, तब तो आप चुप थीं। तब तो आपको बुरा नहीं लगा था। अब मैं छोटी बच्ची नहीं रही हूँ अब मैं पच्चीस साल की हो चुकी हूँ। मुझे किसी भी बात के लिए मजबूर मत करना वरना शायद मैं भी भूल जाऊंगी कि, आप मेरी माँ हैं। गंगा की माँ को एहसास हुआ यह गुस्से में मैंने यह क्या कर दिया और सोचा अगर मैं उसकी मदद नहीं करूंगी तो फिर कौन करेगा। अगले दिन फिर से राम के दादा जी का फोन आया। उस दिन उन्होंने गंगा के पिता से बात की थी और बोले बेटा मैं तुम्हारे पिताजी की उम्र का हूँ। आज मैं आपके सामने अपने हाथ जोड़कर गंगा का रिश्ता माँग रहा हूँ अपने पौते के लिए। आप शादी क लिए मान जाओ। मैं आपके पैरों में अपनी पगड़ी रख कर गंगा का हाथ मांग रहा हूँ। आप मना मत करो। राम के दादा जी की यह बात सुनकर गंगा के पिताजी मना नहीं कर पाए और उन्होंने दादाजी को वादा दे दिया और फोन रख दिया। लेकिन फिर भी शादी की कोई बात नहीं की। राजीव ने पूछा क्या बात हुई आपकी। उसके पिता ने सारी बातें राजीव को बता दीं तो राजीव ने कहा यह सारा नाटक उस लडके राम का ही रचाया हुआ है। गंगा ने राजीव को बोला तूने तो ऐसा बोला था कि तुझे इन सब बातों में कोई रूचि नही है तो अब यह बस बोलने का कोई अर्थ नहीं है।

कुछ दिनों में गंगा के माता पिता के वापस जाने का वक्त भी हो गया था। उसके माता पिता के वापस जाने के कुछ दिनों बाद गंगा भी अपने माता पिता के पास जैसलमेर चली गई। उसे वह जगह बहुत पसंद आई। गंगा को गांव के लोग ओर किले जैसी जगह अपनी ओर आकर्षित करती थीं। वहाँ पर जाकर उसे ऐसा महसूस होता था जैसे इस जगह से उसका कोई गहरा संबंध है। राम के माता पिता ने ना जाने कहाँ से जैसलमेर का पता निकाल लिया था। गंगा के घर का उन लोगों ने रात को फोन आया कि कल हम वहाँ पर आ रहे हैं। गंगा की माँ चकित थी यह सब सुनकर । फोन रखने के बाद उन्होंने गंगा से पूछा तूने दिया था पता उन लोगों को । गंगा ने कहा अब तो

शक करना बंद करो मैं अब थक चुकि हूँ इन सब बातों के जवाब देते–देते । मुझे नहीं पता इन लोगों को कहाँ से पता चला है। अगली सुबह वह लोग जैसलमेर आ गए थे । गंगा के पिता उन्हें खुद लेने गए थे। गंगा पुरानी सारी बातें भुला कर उन लोगों के साथ प्यार से पेश आ रही थी। गंगा ने उन दोनों के पैर छूए और उनका हाल पूछा। गंगा के माता–पिता का देखकर ऐसा लग ही नहीं रहा था कि वह लोग इस रिश्ते से ना खुश हैं। जब उन लोगों का नाश्ता हो गया तो राम की माँ ने अपने बैग में से गंगा की सगाई की अंगूठी निकाली और उसे (गंगा) अपने हाथों से पहना दी और उसे एक साड़ी भी दी और बोली गंगा हमें मॉफ कर दे। हम शादी के बाद तुझे अपनी बेटी की तरह ही रखेंगे। उसके बाद सब कुछ ठीक हो गया था। वह लोग वहाँ पर 6–7 दिन रूके थे और उसके बाद वह लोग पुष्कर के लिए चले गए। अब फिर से गंगा की शादी की बातें शुरू होने लगी थीं। गंगा अपने माता पिता के पास 7–8 महीने रूकी थी और इस बीच में गंगा की माँ ने गंगा के लिए गहने भी खरीद लिये थे जो कुछ गंगा को चाहिए थे। अब सब कुछ ठीक होता दिखाई दे रहा था। गंगा बहुत खुश थी। अब गंगा के पिताजी ने जैसलमेर से भीलवाड़ा (राजस्थान) तबादला ले लिया था। वह लोग अपना सारा सामान लेकर भीलवाड़ा पहुँच गए थे। अब गंगा की फिर से शादी की तारीख निकल आई थी। गंगा की माँ ने बोला हम सूरत चलते हैं राजीव के पास और वहाँ जाकर बची हुई तैयारियाँ भी कर लेंगे। गंगा की माँ 2–3 महिने सूरत रूकी थीं और भीलवाड़ा वापस चली गई थी । गंगा सूरत में ही थी। उसने वहाँ रह कर शादी में किसको क्या देना था वह सब कुछ अलग–अलग बैगों में रख दिया था। उसने अपने बैग भी तैयार कर लिये थे। दहेज का सारा सामान उसने अपनी देख रेख में संभाल लिया थां वह वहाँ पर रहकर अकेले ही सब कुछ संभाल लेती थी। राजीव की गंगा को कोई मदद नहीं थी। फिर भी उसने उससे कभी कोई शिकायत नहीं की थीं वह तो सिर्फ अपनी नौकरी पर ध्यान देता था। गगा इन सब कामों के साथ–साथ घर भी संभालती थी और कभी–कभी राजीव के दोस्त खाने पर भी आते थे वह उन सब का खाना भी बनाती थी। सभी उसकी बहुत तारीफ करते रहते थे। गंगा शादी को लेकर खुश तो थी लेकिन फिर भी उसके मन के किसी कोने में अपने ससुराल वालों को लेकर शक और चिंता भी थी। गंगा के सपने पूरे होने जा रहे थे फिर भी वह उतना खुश नहीं हो पा रही थी जितना उसे होना चाहिए था। उसे राम के केरियर को लेकर चिंता होती थी। वह सोचती रहती थी कि , शादी तो हो रही है लेकिन वह यह सब सोच कर परेशान हो रही थी कि, अब आगे क्या होगा। राम तो इतना कमाता भी नहीं है। क्या यह लोग जैसे दिखाई देते हैं वह लोग ऐसे ही हैं। गंगा के मन में अजीबों गरीबों ख्याल आते रहते थे। आखिर अब वह दिन आने वाला था जिसकी शुरूआत चार साल पहले हुई

थी। गंगा के माता – पिता भी सूरत आ चुके थे। गंगा ने सारी तैयारियाँ कर रखी थीं और घर भी साफ सुथरा कर रखा था गंगा ने। सभी लोग गांधीनगर जाने के लिए तैयारियाँ कर रहे थे। गंगा की तो यह इच्छा थी कि वह अपने माता–पिता के घर से ही विदा होती या तो सूरत वाले घर से या भीलवाड़ा वाले घर से लेकिन राम की माँ ने गंगा के पिता को मजबूर कर दिया था। उन लोगों की बात मानने पर। राम की माँ अपने घर पर यह बोल रही थी कि, हम भीलवाड़ा बारात लेकर नहीं जायेंगे हमारा बहुत सार खर्चा हो जायगा। राम की माँ सुधरी नहीं थी उसने तो सिर्फ गंगा के परिवार के सामने नाटक किया था। शादी करवाने के लिए। गंगा और उसका परिवार इन सब बातों से अंजान थे। वह लोग तो अपनी बेटी की खुशियाँ पूरी करने में जुटे थे। सन् 2002 मई का महीना जब गंगा का परिवार वहाँ से 5–6 गाड़ियाँ लेकर गांधीनगर को निकला था। जब गंगा घर से निकलने वाली थी तो गंगा मंदिर में जाकर हाथ जोड़ कर खड़ी हुई थी। तभी उसे एक दम से किसी की अर्थी दिखाई देने लगी अपनी आँखों में उसके आगे पीछे उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। गंगा ने एक दम से अपनी आंखें खोल दीं घबरा कर। उसने भगवान से प्रार्थना की है भगवान सब कुछ ठीक ठाक करवा देना। गंगा की माँ ने भी भगवान के आगे माथा टिका दिया और न जाने वह इतना क्यों रोई थीं उस दिन। जैसे ही उनकी कार शहर को पार करने वाली थी अचानकर उनकी ही आँखों के सामने एक बहुत बुरा हादसा हो गया। वह लोग वहाँ से निकल गए लेकिन गंगा के मन में यह शक आने लगा था कि कुछ तो होने वाला है जो उसे पता नहीं चल पा रहा है। आखिरकार वह लोग गांधीनगर पहुँच ही गए थे। सभी सबसे पहले राम के ही घर गए थे। वहाँ से राम और उसकी बहन पूजा दोनों उनके साथ उस घर तक आए थे जहाँ पर उन लोगों के रूकने का इंतजाम किया हुआ था। मई में ही उसकी लगुन लिखी गई थी और उसी दिन उसकी हल्दी भी थी। सभी ने बहुत ही मजा मस्ती की थी उस दिन। लेकिन शाम को अचानक से पानी की मोटर में आग लग गई। घर में सभी परेशान हो गए थे। बड़ी ही मुश्किल से आग को बुझाया था। गंगा के मन में फिर से एक बार अमशकुन का शक पैदा हो गया। दुल्हन की हल्दी दुल्हें के घर भेजनी होती है तो गंगा के परिवार के लोग वहाँ हल्दी लेकर गए लेकिन वह लोग राम की सगाई की अंगूठी फिर से भूल गए। गंगा की मौसी पीछे–पीछे जा कर देकर आई। शादी वाले दिन तक दुल्हा –दुल्हन एक दूसरे का चहरा नहीं देखते हैं लेकिन फिर भी राम की माँ उसे किसी न किसी बहाने से गंगा के पास ले ही आती थी। पता नहीं वह औरत कैसी थी। उसके लिए रीती रिवाज कोई माईने नहीं रखते थे। शादी से दो दिन पहले वह अपने बेटे के साथ वहाँ आ गई और बोलने लगी की मैं यहाँ पर देखने आ गई थी कि आपको किसी चीज की जरूरत तो नहीं है। और वहाँ आकर उस कमरे में

घुस गई जहाँ गंगा के माँ–पिताजी ने दहेज का सामान रखा हुआ था। बाहर आकर उसने अपने बेटे को ईशारे से बुलाया और उसे वह सब दिखा दिया और बोली गंगा को बोलना हमें म्युजिक सिस्टम भी चाहिए। दोनों की आँखों में चमक थी। गंगा के माता–पिता ने अपनी बेटी के लिए गहने ज्यादा बनवाए थे और अपनी बेटी के नाम बैंक में पैसे भी डिपोजिट करवा दिये थे। यह बात उसके सुसराल वाले नहीं जानते थे।

आखिरकार गंगा की शादी का दिन आ गया। वह गंगा के सपनों को पूरा होने का द्वार था या फिर बहुत ही गहरी साजिश का द्वारा था गंगा के लिए यह तो सिर्फ भगवान ही जानता था। गंगा का पूरा परिवार मेरिज होल में पहुँच गया था वहाँ गंगा को तैयार करना था लेकिन ब्यूटीशियन अभी तक नहीं आई थी क्योंकि राम की माँ ने उसे अपने घर बुला लिया था। खुद को तैयार करवाने के लिए और उसके घर की दूसरी औरतों को तैयार करने के लिए। गंगा उसके इंतजार करती चली जा रही थी लेकिन जब वह वक्त पर नहीं आई तो गंगा ने अपना मेकअप खुद ही कर लिया । गंगा हर चीज में माहिर थी। जब वह खुद तैयार हो गई। तब जाकर वह लड़की वहाँ पर आई थी। उसने आकर सारी बातें गंगा को बताई तो गंगा को बहूत गुस्सा आया। उसने कहा हम यहाँ पर इंतजार कर रहे हैं और वहाँ पर उन लोगों ने तुझे रोक कर रखा था। मैं खुद ही तैयार हो गई इसलिए लेकिन तेरी जरूरत तो यहाँ थी। उसने कहा अब तू मेरी हेयर स्टाईल बना दे बाकी तो सारा कुछ मैंने कर ही लिया है। राम की माँ ने अपने सभी खर्चों का बिल गंगा के माता–पिता के बिल में ही जोड़ दिया था उसने पूरी शादी में यही किया था। उस शादी में रमेश की गर्लफ्रेंड भी आई थी माँ बाप से छिपते छिपाते । वह उत्तरी भारत से थी उसका नाम रीमा था। यह ऐसी नागिन थी जिसका काटा बच नहीं सकता था। शैतानों की टीम मे ंएक और शैतान आ गया था रीमा नाम का। वह लड़की गंगा से पांच साल छोटी थी। उसने मंगलसूत्र पहन रखा था और मांग भी भरी हुई थी। राम की माँ सभी के सामने उसे अपनी बहू बता रही थी। वह लड़की खुद को किसी ब्यूटी क्वीन से कम नहीं समझती थी। राम की माँ रीमा को अपने खानदान की विश्व सुन्दरी बोलती थी।

गंगा की शादी में पूनम और राजीव बहुत नाचे थे। वह बहुत खुश थे। यह दोनों इतना नाच रहे थे कि उनका ढोल ही फट गया था उस दिन। उस दिन गंगा बहुत सुंदर लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई परी आ गई है आसमान से। लेकिन उसके सुसराल वालों की नजर तो गंगा के गहनों पर और रूपयों पर थी। सबसे पहले उसने गंगा को यह बोला कि शादी का जोड़ा कितना गंदा है ऐसा लग रहा है जैसे गांव के लोग पहनते है। गंगा को यह सुनकर बुरा लगा उसने उसे बोल दिया

(हाई सोसायटी के लोग ऐसे ही कपड़े पहनते है इसलिए यह महँगे होते हैं) शादी का जोड़ा तो ससुराल से ही आता है लेकिन आप लोगों ने तो मना कर दिया था। गंगा को उस औरत में सासपना दिखाई देना शुरू हो गया था। लेकिन गंगा चुप रही यह सोच कर आज मेरी शादी है कोई भी तमाशा नहीं होना चाहिए आज यहां पर। मेरे माँ बाप की इज्जत उछल जायेगी अगर कुछ भी हुआ यहाँ पर तो । गंगा की शादी सम्पन्न हो चुकी थी। फिर भी गंगा का मन दुखी हो रहा था। उसे नहीं पता क्यों ऐसा हो रहा था उसके साथ। गंगा विदा भी हो गई । लेकिन जब वह ससुराल की चौखट पर पहुँची तो उसने देखा कि उसकी आरती उतारने रीमा आई है। राम की माँ सोफे पर बैठ कर लोगों से बातें कर रही थी । लेकिन स्वागत तो सास करती है गंगा ने रीमा को बोला तुम क्यों कर रही हो यह सब। उसकी माँ बोली हमने इसको अपनी बहू मान लिया है यही करेगी आरती। अगर इससे आरती नही करवानी है तो ऐसे ही अंदर आ जा। यह सारे नाटक तेरी माँ कर लेती है मेरे से नहीं होते हैं। यह सुनकर गंगा के पैरों के नीचे से जमीन ही खिसक गई थी। वह चुप रही उसने राम की तरफ देखा लेकिन राम को तो कोई फर्क ही नही ंपड़ा हो जैसे । उस पल गंगा को अपने माँ बाप की सारी बातें सही लगने लगीं थीं उसने सोच इसलिए ही मेरे पिता नहीं चाहते थे इस घर में मेरी शादी करना उसे ऐसा लगा मैं वापस चली जाती हूँ अपने माता–पिता के पास। उसी पल गंगा ने फिर सोचा अगर मैंने ऐसा कुछ भी किया तो मेरे माता–पिता की क्या इज्जत रहेगी। वह लोग तो शर्म से मर ही जायेंगे। गंगा सोच ही रही थी कि, राम ने उसे हिलाया और बोला भाभी तेरा इंतजार कर रही हैं। गंगा को फिर से दूसरा झटका लगा उसके मुँह से भाभी सुन कर। गंगा ने उसे कुछ नहीं बोला। वहाँ पर न तो कुमकुम का थाल था न ही चावल से भरा कलश। उसने राम को धीरे से बोला यह कैसा ग्रहप्रवेश है हमारां राम ने अकड़ कर बोला मेरी माँ की इज्जत मत उतार अंदर चल अभी । गंगा को तो जैसे हर कदम पर काँटे मिलना शुरू हो गए थे। गंगा के यहाँ एक रिवाज होता है और वह जाकर अपनी सास को बताना होता है। गंगा ने भी यही किया। उसकी बात सुनकर राम की माँ गंगा पर जोर से चिल्लाई और बोली तू मुझे सिखाएगी रिवाज क्या होते हैं। यह तो तेरी माँ को मुझे बताना चाहिए था। उसनें तो हमें फोन नहीं किया अपनी बेटी को पहले ही सिखा पड़ा कर भेजा है उन लोगों ने। अभी मुझको को घर पर आए हुए दो घंटे भी नहीं हुए थे कि उसकी परीक्षाएँ शुरू हो गई थीं। गांग के ऊपर चिल्लाकर वह वहीं पर बैठ कर जोर–जोर से रोने लगी थी। राम बाथरूम में नहा रहा था। वह भी बाहर आ गया अपनी माँ की आवाज सुनकर । वह गंगा के ऊपर चिल्लाया और बोलने लगा तूने मेरी माँ को क्या बोल दिया है जो कि मेरी माँ रोने लगी है। मेरी माँ तो बहुत सीधी है जरूर तूने ही माँ से कुछ कह दिया है। राम

अपने दोनों हाथों को जोड़ कर गंगा से बोलने लगा (रोता हुआ) गंगा हमें मॉफ कर दे, तू हमारे घर में आकर फूट मत डाल। हम सभी एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। हमें एक दूसरे से अलग मत कर तू यहाँ आकर। मेरी माँ तेरी वजह से रो रही है जरूर तूने ही उसे कुछ न कुछ कहा होगा। मेरी माँ तो किसी से कभी कुछ भी नहीं बोलती है। मुझे मेरी माँ से अलग करने की कोशिश मत कर। गंगा उसकी माँ को चुप कराती जा रही थी और राम को भी। वह समझ ही नहीं पा रही थी कि, यहाँ पर यह हो क्या रहा है। वह अपनी सास से मॉफी मांगती चली जा रही थी और अपने पति से भी । उसने राम से बोला अलर आप लोगों को ऐसा लगात है कि मुझ से कोई गलती हो गई है तो मुझे आप लोग मॉफ कर दीजिए लेकिन रोना बंद कर दीजिए। नीचे सारे महमान बैठे हुए है अगर किसी को थोड़ी भी भनक पड़ गई तो बात के बतंगड बन जाएंगे। वह अपनी माँ के गोद में सिर रख कर रोने लगा। गंगा नीचे रसोईघर में जाकर पानी लेकर आई। गंगा उनके खानदान की पहली बहू थी। जब वह नीचे आई तो सभी की उस पर ही नजर थी परंतु किसी ने यह नहीं सोच कि, अभी तो इसे इस घर में आए हुए चार घंटे भी नहीं हुए हैं और हम इसे रसोईघर में जाकर काम करने दे रहे हैं। गंगा ने अपना भारी सा लंहगा पहना हुआ था। गहनों से लदी हुई थी। वह धीरे–धीरे सीढ़ीयों से चढ़ती हुई ऊपर वाले कमरे में उन दोनों के लिए पानी लेकर गई तो देखा दोनों कुछ बातें कर रहे थे और जैसे ही गंगा का देखा चुप हो गए। उसने उन दोनों को पानी दिया और वहीं बैठ गई। थोड़ी देर के बाद राम की माँ ने राम को देखा और बोली मैं अब नीचे जाती हूँ और यह बात किसी को पता नहीं चलनी चाहिए। इस बात को यहीं खत्म कर देना। इतना बोल कर वह नीचे चली गई और थोड़ी देर के बाद राम भी अपनी माँ के पीछे–पीछे चला गया गंगा को वहीं पर अकेला छोड कर। गंगा के एक ही पल मैं सारे सपने टूट गए थे। उसे ऐसा लगा राम उसके साथ कोई खेल, खेल रहा है। अभी तो गंगा ने शादी का जोड़ा तक नहीं उतारा था और इन लोगों ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया था। गगां के पास उस समय कोई भी नहीं आया था। तभी वहाँ इसका कॉलेज का मित्र राहुल कमरे में आया और गंगा से पूछा तू इतनी उदास क्यों है। अपने घर की याद आ रही है क्या ? गंगा ने सिर हिलाते हुए हाँ बोला । परंतु उसे ऐसा लग रहा था जैसे गंगा उससे कुछ फीकी सी साड़ी थी। वह साड़ी उसने गांग को थमाते हुए बोला मम्मी ने कहा है कि, यह साड़ी पहन कर नीचे आ जा खाना खाने के लिए । राम और राहुल नीचे चले गए। गंगा ने उस साड़ी को खोला तो देखा कि ये तो पुरानी साडी है गंगा को ऐसा लगा जैसे वह कोई भिखारन है और वह लोगों की उतरन पहन रही है। वह सोच रही थी नयी नवेली दुल्हन के लिए तो लोग नए–नए कपड़े और गहने देते हैं शादी में। लेकिन इन लोगो ने तो मेरे लिए एक सूट तक नहीं

रखा है। पता नहीं यह साड़ी किसकी है। मेरी अटेची की चाबी भी घर पर ही रह गई है और अब तो काफी रात हो गई है मेरे पास तो फोन भी नहीं है मैं किसके साथ बात करूं। इन लोगों ने तो मुझे शादी मे सिर्फ 'दो' ही साड़ी दी हैं। वह तो पहनने लायक ही नहीं है। मैंने राम को बोला भी था मेरे लिए कुछ सूट तैयार करवा कर घर पर रखवा देना लेकिन यहाँ तो कुछ भी नहीं है। गंगा क्या करती उसने वह साड़ी उठाई और पहन ली। जब वह नीचे उतर कर आयी तो उसने देखा नीचे सारी घर की औरतें घेरा लगा कर बैठी हुई थीं। वहाँ पर गंगा के माईके से मिले उसके गहनों का बैग और उके कपडों की अटैची खुली हुई थी। सभी लोग उन्हें खोल–खोल कर देख रहे थे। गंगा ने राम को बोला जब मेरे घर से अटेची की चाबी आ गई थी तो आप लोगों ने मुझे क्यों नहीं बताया। मैं अपने ही कपड़े पहन लेती। राम एक दम से बोला तो क्या हुआ तुझे हमारे कपडों से तकलीफ है क्या ? यह मेरी बहन की साड़ी है जो तूने पहनी हुई है। गंगा ने राम को घूरते हुए बोला दुल्हन किसी की उतरन नही पहनती है। कम से कम उसकी अहमियत तो समझनी चाहिए थी तुम लोगों को। अब मुझे तेरा असली चहरा समझ आ गया है राम ! काश मैं पहले समझ गई होती । शादी की पहली राम को गंगा ने राम को अपने पास बैठाकर उसका हाथ पकड़कर यह बोला – आज से हम पति – पत्नि बन गए हैं । हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ गई है। हम दोनों का रिश्ता आज के बाद विश्वास और प्यार का होना चाहिए आज तक जो भी नादानियाँ या गलतियाँ तेरे से हुई है या मेरे से हुई हैं उन्हें पीछे छोड़कर हमें आगे बढ़ना है। हम दोनों को एक दूसरे का सहारा बनकर आगे बढ़ना है। हमारे रिश्ते के बीच झूठ और धोखा कभी नहीं आना चाहिए। हमें लोगों को दिखाना है कि हमारा फैसला सही था। हमें एक दूसरे के अधूरे कामों को एक साथ मिलकर पूरा करना होगा, एक दूसरे की हिम्मत बनकर। जीवन में कभी कोई ऐसा वक्त भी आ सकता है कि, कोई हमें भड़काकर हमारी जिंदगी मे आग लगाने की कोशिश कर सकता है तो उस समय तुम्हे सही का साथ देना होगा। आज आप मुझसे वादा करो मैंने जो भी कुछ कहा है, आप सब मेरा अच्छा दोस्त बनकर निभांएगे। राम ने गंगा को वादा दे दिया ओर बोला मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगा राम बोला अब जीवन भर मैं तुझे नहीं छोड़ सकता हूँ। लेकिन अगर तूने कभी मुझे छोड़ा तो मैं तुझे रोकुंगा नहीं। गंगा ने कहा मैं अपने वादे कभी भी नहीं तोड़ती हूँ अगर ऐसा होता तो मैं आपसे शादी कभी नहीं करती। आपसे शादी करना मेरा वादे का सबूत है गंगा ने राम को कहा। गंगा ने घर की सारी जिम्मेदारियाँ शादी के दूसरे दिन से ही उठा ली थीं। उसे ऐसा लग ही नहीं रहा था कि वह नई नवेली दुल्हन है। शादी के एक हफ्ते के बाद वह हनीमून पर भी गए थे। वहाँ गंगा ने अपने माईके और ससुराल वालों के लिए बहुत सरे तोहफे खरीदे थे। गंगा ने मनाली से एक प्यारा सा

बच्चों के लायक सुन्दर सा मग और प्लेट खरीदी था। वह खरीदते समय उसने राम से पूछा क्या हम पूजा दीदी के बेटे के लिए भी खरीद लें। राम ने मना कर दिया और बोला उसके लिए तुम पहले ही बहुत सारा खरीद चुकी हो। गंगा ने फिर से एक बार और पूछ लिया और बोली हम वापस यहाँ नहीं आ पाएंगे इसलिए आप मुझे बता दो। राम ने मना कर दिया। गंगा ने सिर्फ एक ही 'मग' खरीद लिया। वह बहुत ही सुंदर था। वह मग गंगा ने यह सोच कर लिया था कि, जब भी कभी उनका पहला बच्चा होगा। यह मग वह उसे देगी यह बोल कर यह तेरे मम्मी–पापा का प्यार है तेरे लिए। वह उसे बार–बार उलट पलट कर देखती रही। उसे देख–देख कर वह बहुत खुश हो रही थी। गंगा ने अपने लिए कुछ नहीं खरीदा था। वहाँ पर उसे अपने लिए एक चप्पल पसंद आई तो राम ने वह नहीं लेने दी और बोला यह तो बहुत महंगी है मैं तुझे अहमदाबाद से ले दुंगा। गंगा ने हँसकर उसे हाँ बोल दिया। जब वह लोग वापस होटल आ गए और अगले दिन वापस जाने की तैयारी कर रहे थे । तब राम ने बोला यह मग मेरे भांजे को दे देना। यह सुन कर गंगा का चहरा उतर गया उसने उसे बोला लेकिन मैंने जब तुम्हारे से पूछा था तो तुमने मना क्यों कर दिया था। अब हम वहाँ जा भी नहीं सकते हैं। वैसे भी यह मैंने अपने होने वाले बच्चे के लिए खरीदा है। हमारी तरफ से पहला तौहफा । मैंने किसी को भी नहीं छोड़ा है। लेकिन क्या जो हमारे जीवन में नही है वह कभी तो होगा। उसके लिए मैंने कुछ खरीदा है तो तुम्हें मेरी जजबात की कद्र नहीं है क्या। यह उसके लिए है जिसे हम अपना बच्चा बोलेंगे। राम बोला क्या पागलों जैसी बातें कर रही है तू मेरे भांजे से जलती है तू किसी को भी प्यार नही कर सकती है' तेरे अंदर दिल ही नहीं है । तू लालची है। तुझे मेरे परिवार की खुशियाँ सहन नहीं होती हैं। गंगा ने बोला अगर मुझे पता होता कि तू इतना नासमझ है तो मैं शायद तेरे से शादी कभी नहीं करती। और रही लालच की बात तुम्हारे घर में ऐसा कुछ नहीं है जिसका मुझे लालच होगा। अभी मुझे समझ आया मेरे माँ–बाप इस शादी के क्यों खिलाफ थे। राम चिल्लाकर बोल तो फिर अभी वापस चली जा। गंगा खड़ी हो गई और बोली यही है तेरा प्यार। इसलिए शादी के लिए मेरा दिमाग खराब किया था राम बोला हाँ मैं ऐसा ही हूँ अगर तूने मेरी बात नहीं मानी तो मैं अपना सिर पटक–पटक कर जान दे दूंगा। गंगा ने उसे कुछ नहीं बोला और अपना सिर पकड़ कर बैठ गई। गंगा को एक दम से कुछ आवाज आई और उसने पलट कर देखा तो राम अपने सिर को दीवार पर पटक रहा था और बोलता जा रहा था। मेरे से गलती हो गई जो तुझे ऐसा बोल दिया गंगा भाग कर आई तो उसने राम को पीछे खींचा तो उसने गंगा को धक्का दे दिया। जिस वजह से गंगा नीचे जमीन पर जोर से गिरी और वह बेहोश हो गई। राम दीवार पर सिर मारता जा रहा था। जब उसने देखा कि गंगा की आवाज नहीं आई है तो वह

तेजी से आया और गंगा को उठाया लेकिन गंगा होश में नहीं थी। उसका बी0पी0 लो हो जाने की वजह से उसे चक्कर आ गया थां राम ने उसके चेहरे पर पानी डाला लेकिन उसकी तबियत में सुधार नहीं आया। उसने किसी से बात करके डाक्टर को बुलाया डॉक्टर ने कुछ दवाईयां दीं और कहा यह सब मानसिक तनाव की वजह से हुआ है। आप तो हनीमून पर आए हैं तो फिर मानसिक तनाव तो होना नहीं चाहिए था । डॉक्टर को शायद कुछ समझ आ रहा था। डॉक्टर ने राम की तरफ देखते हुए बोला ध्यान रहे यह बहुत कमजोर है। वह दोनों वापस गांधीनगर आ गए थे। गंगा ने सभी को सामान दे दिये। उसने राम के भांजे को वह 'मग' भी दे दिया जो वह अपने बच्चे के लिए लाई थी। राम ने उसे बोला यह तू उसे क्यों दे रही है। गंगा ने उसकी तरफ देखते हुए बोला जब मैंने अग्नि के सात फेरे लिए थे तब मैंने एक वादा किया था कि मेरे पति की खुशी में ही मेरी खुशी होगीं शादी का अर्थ भी यही होता है। वह तो मेरा जजबात था अपने बच्चे के लिए, तुम्हारा नहीं थी। सभी को घर में पता चल गया था कि मनाली में पर क्या हुआ है। लेकिन किसी ने भी राम को कुछ नहीं बोला। अब गंगा धीरे–धीरे सब कुछ समझने लगी थी। गंगा की सास गंगा को किसी न किसी वजह से टोकती रहती थी और उसमें कमियाँ निकालने की कोशिश करती रहती थी। गंगा की सास इस बात का ध्यान रखती थी कि वह दोनों अलग–अलग रहें। इन दोनों के बीच ऐसा कोई सम्बन्ध न हो जाये जिससे गंगा माँ बन जाये। गंगा को उन लोगों का व्यवहार बहुत ही अटपटा सा लगता था। लेकिन वह उन सब बातों को यह सोच कर छोड़ देती थी कि, घरों में ऐसी छोटी–छोटी बातें तो होती ही रहती हैं। उन्हें दिल पर नहीं लगाना चाहिए। वह सभी का बहुत ध्यान रखती थी। एक दिन शाम को पूजा की सांस घर पर आई वह राम की माँ के साथ कुछ बातें कर रही थी। तभी वहाँ पर गंगा भी आ गई। जैसे ही उन लोगों ने गंगा को आते देखा वह लोग चुप हो गए और अपनी बातें बदल दीं। राम की माँ ने राम को कहा तू काकी (पूजा की सास) के साथ चला जा और कुछ ईशारों में वह तीनों बातें करने लगे। गंगा इतना तो समझ रही थी कुछ तो है जो यह लोग मुझसे छिपा रहे हैं। राम और उसके जीजा की माँ कहीं जाने के लिए खड़े हो गए। गंगा ने पुछा मंदिर जा रहे हैं आप लोग – राम ने कहा हाँ। गंगा तुरंत बोली तो फिर मैं भी चलती हूँ। उसकी काकी ने एक दम से मना कर दिया। गंगा को बहुत अजीब लगा। उसने सवाल किया क्यों मैं क्यों नहीं चल सकती हूँ। राम बोला काकी का बोलने का मतलब है अभी नहीं जाना कल जायेंगे। तो फिर हम दोनों चले जाते हैं बूढें लोगों को क्यों परेशान करना। हम मंदिर भी चले जायेंगे और काकी का काम भी कर देंगे। वह तीनों एक दूसरे की शक्ल देखने लगे। तभी राम की माँ बोली लेकिन तू कैसे जा सकती है, खाना कौन बनाएगा। गंगा चुप हो गई। गंगा की सास ने उसे

रसोईघर में भेज दिया और वह लोग दूसरे दरवाजे से निकल गए। रात को गंगा ने राम को पूछा मेरे से क्या छुपाया जा रहा है। राम थोड़ा सा सकपका गया उसकी बात सुनकर और बोला तू हमारे ऊपर शक करती है। गंगा ने कहा तो फिर तुम लोगों में इशारा क्यों चल रहा था। राम ने गुस्से में बोला तेरे से तो बात करना ही बेकार है। इतना कहकर वह कमरे से बाहर चला गया। गंगा भी वहीं बैठी रही और बैड पर लेट गई। लेकिन वह सो नहीं पा रही थी काफी देर हो चुकी थी। अब उसे चिंता हुई और उसने बाहर जाकर देखा कि कहीं आधी रात को वह बाहर तो नहीं चला गया जब वह सीढ़ीयाँ ऊतरी तो देखा नीचे हौल में वह अपनी माँ के गोद मे सिर रखकर लेटा हुआ था और उसकी माँ उसके बालों में हाथ फिरा रही थी। वह उलटे पैर वापस आ गई। उसने अगले दिन पूछा रात को कहाँ गये थे। उसने जवाब दिया मैं रात को अपने मित्र के घर चला गया था। गंगा ने सोचा यह झूठ क्यों बोल रहा है मुझसे। गंगा ने उस बात को वहीं छोड़ दिया। दो–तीन दिन के बाद राम की माँ ने राम को कहा गंगा को हमारे गुरू जी का आशिर्वाद दिला ला जा कर। वह दोनों वहाँ गए। वहाँ एक गुरू जी बैठे हुए थे। उन गुरूजी का छोटा सा कमरा था जहाँ वह गए थे। गंगा ने गुरू जी के पैर छूए और आर्शिवाद लिया। उन्होने राम को पूछा यह लड़की वही है क्या ? राम ने सिर हिलाते हुए हाँ बोल दिया। गंगा ने पूछा गुरूजी हमारा शादी शुदा जीवन कैसा रहेगा। उन्होने कहा राम और सीता जैसी जोड़ी है तुम्हारी । गंगा ने कहा लेकिन गुरू जी राम और सीता तो अलग हो गए थे। सीता माता ने तो बहुत कष्ट भोगे थे और बहुत सी परीक्षाओं का सामना करना पड़ा था । क्या हम भी अलग हो जायेंगे गुरू जी ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और बोले सारी दुनिया तुम्हारे कदमों में आकर गिरेंगी। शौहरत की भी कभी कमी नही होगी। बहुत ही जल्द तुम्हारी दुनिया बदलने वाली है। और तुम किसी ऐसे कार्य को करने वाली हो जिसमें तुम्हें बहुत ही इज्जत और धन मिलेगा। उन्होंने राम के आगे कुछ गेंहूँ के दाने डाले और बोले यह दाने देख रहा है तू गुरूजी ने वह दाने उठाकर एक कागज में रख दिये और राम को देते हुए बोले यह तेरा जीवन है। लेकिन राम समझ नहीं पाया। उसने फिर से पूछा मतलब ? गुरू जी ने बोला यदि तूने या तेरे परिवार ने इस लड़की को दुखी किया या धोखा दिया तो तुम्हारा पूरा खानदान तबाह हो जायेगा। यदि यह लड़की अपनी मर्जी से घर को छोड़कर जाती है वह भी हँसी खुशी से तो कोई बात नहीं है लेकिन अगर इसको सताया गया और फिर इसके कदम तुम्हारे घर के बाहर गए तो उसी घड़ी से तुम्हारा बुरा वक्त शुरू हो जायेगा, इस बात का ध्यान रखना कि यह लड़की तुम्हारे घर की तकदीर है। फिर उन दोनों ने देवी माँ की तस्वीर को प्रणाम किया और जाने लगें। तभी गुरू जी ने राम को रोककर बोला कि अपनी काकी को कल भेज देना कुछ बात करनी है उस दिन हो नहीं पाई थी।

गंगा को उस दिन की सारी कहानी पता चल गई थी वहाँ आने से। परंतु उसने राम से कुछ नहीं बोला। गंगा ने घर पहुँच कर खाना खाते समय सबके सामने राम को कहा 'वादा' भगवान की पूजा करने जैसा होता है। यदि वादा करो तो उसे पूरी श्रद्धा से पूरा करो नही ंतो मत करो। वादा तोड़ने वाले को भगवान कभी मॉफ नहीं करते हैं। राम की माँ बोली लेकिन यह सब तू राम को क्यों बोल रही है। गंगा ने जवाब दिया आपका बेटा सब कुछ जानता है। रही मेरी बात तो मैं झूठ बोलने वालों को मॉफ नहीं करती हूँ। राम और उसकी माँ एक दूसरे को देख रहे थे। इसी तरह दिन निकलने गए और तीन चार महिने बाद एक दिन यह खबर आई कि रमेश और उसका जीजा, रीमा (रमेश की गर्लफ्रेंड) को भगा कर ले आए हैं और रमेश के एक दोस्त के घर छुपा दिया है। यह बात गंगा के कानों तक पहुँच गई। उसे यह बात पसंद नहीं आई उसने कहा यह शादी मत करवाना। रीमा अच्छी लड़की नही है। वह लड़की इस घर को बर्बाद कर देगी। अगर वह इस घर में आई तो इस घर के दो टुकड़े हो जायेंगे। जो लड़की अपने माईके से भाग सकती है वह ससुराल को इज्जत कैसे देगी। राम की माँ बोली तेरी भी तो शादी करवाई है हमने तो फिर वह क्यों नहीं आ सकती इस घर में। गंगा ने कहा मैं घर से भाग कर नहीं आई हूँ । गंगा ने बोला मैंने अपने माता – पिता को मनाने में चार साल लगा दिये। मुझे बहुत कुछ झेलना पड़ा है इस रिश्ते को इज्जत दिलाने के लिए। मैंने अपने माता–पिता से कुछ नहीं छुपाया है। लेकिन उसके माँ बाप को तो अब पता चला है। भागकर आने में और इज्जत से आने में फर्क है। राम की माँ बोली हाँ तो अच्छा है न । भागकर शादी करने से खर्चा तो नहीं होता है। गंगा बोली मम्मी जी जिंदगी में रूपया – पैसा ही सब कुछ नहीं होता है। आगे आपकी मर्जी । किसी को भी गंगा का सुझाव अच्छा नहीं लग रहा था। यहाँ तक कि, राम को भी नहीं । राम की माँ बोली हमारी बड़ी बहू आ रही है घर पर। उसने गंगा को बोला तेरी जेठानी आ रही है घर पर, उसके आने की तैयारियाँ कर। जा कर घर को साफ कर दे हमें उसका स्वागत भी तो करना है। गंगा ने कहा अगर उसका परिवार पीछे–पीछे आ गया तो आप क्या करेंगी उस वक्त। उसकी सा इतराकर बोली तो फिर तेरे पापा कब काम आएंगे तभी रमेश का फोन आ गया और घबराकर बोला रीमा के परिवार को सब पता चल गया है और वह हम लोगों को मार देंगें। गंगा की सास बोली गंगा अपने पापा को बोल कर हमारी मदद के लिए कुछ पुलिस वालों को बुलवा लें। गंगा की सास ने गंगा के पापा को फोन किया और सारी बातें बात दी। उस समय गंगा के पापा ने रीमा के परिवार की समझाया और बोला हम भी दिल्ली के ही रहने वाले हैं। आप की बेटी यहाँ पर खुश रहेगी। उसके परिवार को गंगा के पिता की बात समझ आ गई और बोले यदि इस घर में आपकी बेटी नहीं होती तो हम इस शादी के लिए कभी तैयार नहीं होते। इस घर के

एक–एक इसांन को हम मार डालते। रीमा और रमेश की शादी करवा दी गई । लेकिन रीमा हमेशा गंगा से नफरत करती रहती थी। वह खुद को उसकी जेठानी बोल बोल कर उसे दबाती रहती थी। गंगा ने भी उसे एक दिन बोल दिया, तू मेरे से पांच साल छोटी है और रिश्ता बड़ा हो जाने से कोई समझदार नहीं हो जाता है। समझदारी तो इंसान के कर्मों और उसकी बुद्धि से आते हैं और घर के संस्कारों से । बेहतर होगा तू अपना जेठानी पना अपने पास रख। तू मेरे पिता का नाम लेकर बात करती है यह मैं सहननही करूंगी। तू खुद को सास–ससुर की जगह पर समझती है यह नहीं हो पाएगा। बहू है बहू बनकर ही रहना और आज के बाद मेरे माता–पिता से इज्जत से बात करना। मैंने तुझे सिर्फ एक परिवार के सदस्य की नजर से ही देखा है लेकिन अगर तू मेरे पापा का नाम लेगी तो फिर मुझे भी अपने पिता का रूतबा तुझे याद दिलाना पडेगा। तू एक बस ड्राईवर की बेटी है और में एक आई0 पी0 एस0 ओफिसर की बेटी हूँ । इस फर्क को याद रखना जब भी तू मेरे माता पिता के सामने आए। रीमा ने यह बात नमक मिर्च लगाकर सभी लोगों को बता दी। अब इस घर में गंगा को छोटे के नाम पर दबाया जाता था और रीमा को घर की बड़ी बहू बोल–बोल कर सिर पर चढ़ा रखा था। गंगा सुबह से लेकर रात तक घर के कामों में पड़ी रहती थी। सभी लोग उसे दबाते ही रहते थे लेकिन वह चुप रहती थी। जिससे इस घर में शांति का माहौल बना रहे। लेकिन उसकी अच्छाईयाँ किसी का भी समझ नहीं आती थी। गंगा के सारे गहने और उसके सारे कपड़े और उसकी एक–एक चीज उस खानदान की औरतें माँग–माँग कर ले जाती थी। फिर वापस करने का कोई अता पता नहीं होता था। गंगा की सास उसका सारा सामान उसे बिना पूछे किसी को भी दे देती थी। गंगा को घर में हमेशा यह बोलकर दबाया जाता था कि, अब तू अपने बाप के घर नहीं रहती है अब तू अपने पति के घर रहती है और तेरा पति सिर्फ चार हजार रूपये ही कमाता है। तो फिर तेरी औकात तो एक नौकर वाली ही है इस घर में । गंगा यह सब सुन कर चुप रह जाती थी और जाकर अपने कमरे में रोती रहती थी। गंगा ने शादी के बाद एम0ए0 करने की बात कही थी। तो ससुराल वालों ने मना कर दिया और बोले अगर तेरा पति तेरा खर्चा उठा सकता है तो उसको बोल या फिर अपने बाप को जाकर बोल। गंगा का पति अपने घर वालों को कभी कुछ नहीं बोल पाता था। अगर गंगा उसे ज्यादा बोलती थी तो बोल देता था कि, अगर मैंने ज्यादा बोला तो पापा हमें घर से ही निकाल देंगे फिर हम कहाँ जायेंगे। गंगा उसकी बातों को सुनकर चुप हो जाती थी। राम जो भी कमाता था उसके पापा वह सारे पैसे उससे ले लेते थे और उसके खर्च के लिए कुछ पैसे उसे दे देते थे। यह सब जानने के बाद भी गंगा ने उसे कभी गलत नहीं भड़काया। उसके परिवार के खिलाफ । एक दिन गंगा ने दादा जी को जल्दी खाना खिला दिया था। इस वजह से

दादा जी को फिर से भूख लग आई थी। गंगा ने फिर से उन्हें खाना खिला दिया। दादाजी गंगा को बहुत प्यार करते थे। लेकिन उसकी सास उस पर भड़क गई कहने लगी, तुझे पता नहीं है तूने इस बुढ़े को कितना खाना खिला दिया है आज । इसको क्या काम है बस खाता ही रहता है। खर्चा तो हमारा होता है तुझे नहीं करना पड़ता है इसलिए लुटाती रहती है। गंगा ने कहा मम्मी जी आप कैसी बातें कर रही हैं, दादाजी आपके ससुर हैं आप थोड़ा इज्जत से तो बात करो इनके साथ। उसकी सास ने बोला अगर तेरे को इतनी ही फिक्र है तो इनका भी खर्चा तुम लोग ही दोगे। तेरे पति की तो कोई औकात ही नहीं है कि अपनी पत्नि का भी खर्चा उठा सके तो इस बुढ़े का खर्चा कैसे उठाएगा। तू एक काम करना अपने गहने मुझे दे दे और आराम से रह और जितना भी खाना खराब करना है करती रहे। गंगा ने अपने सारे गहने उठाकर अपनी सास को दे दिये, लेकिन उसके ससुर ने बोला यह तू क्या कर रही है। अगर इसके पापा को पता चल गया तो हमें जेल में डाल देंगे। अभी इसके गहने वापस देदे हम देखते हैं बाद में क्या करना है इसके साथ। अभी कुछ दिन शांत रह तू। उसकी सास ने वह सारे गहने वापस कर दिये गंगा को। दादाजी गंगा की हालत देख कर बहुत दुखी होते थे। गंगा और दादाजी जब भी समय मिलता था वह बातें करते रहते थे। अब गंगा को उस घर के एक–एक व्यक्ति की सारी कहानी पता चल गई थी। उसके दादाजी गंगा से मॉफी मांगते थे और बोलते थे तेरी यह हालत सिर्फ मेरी वजह से ही है अगर मैंने तेरे माता–पिता को मजबूर न किया होता तो तू इस घर में यह सब नहीं झेल रही होती। गंगा ने बोला दादाजी हर इंसान अपना नसीब लेकर आता है और मैं भी अपना नसीब लेकर आई हूँ । आप खुद को दोष मत दो सब ठीक हो जायेगा। दादाजी गंगा का बहुत आर्शिवाद देते थे। और कहते थे काश तेरी दादी जिंदा होती तो तेरे साथ ऐसा कुछ नहीं होता। तभी गंगा की माँ का फोन आया। उसकी माँ ने पूछा तू कैसी है बेटा। गंगा रोती आवाज में बोली अच्छी हूँ मैं। लेकिन उसकी माँ पहचान गई थी कुछ तो हुआ है वहाँ। उसकी माँ ने फिर पूछा तो फिर तू रो क्यों रही है। उसने कहा मैं आपसे बात कर रही हूँ इसलिए रोना आ गया। उसकी माँ ने कहा अगर कोई बात हो तो मुझे बात देना जरूर। उसकी माँ ने ससुराल वालों के बारे में पूछा तो गंगा ने जवाब दिया मेरे सास – ससुर तो बहुत अच्छे हैं। मुझे कोई काम भी नहीं करने देते हैं वह लोग मेरी आँख में एक आँसू तक नहीं आने देते हैं। गंगा मन में सोच रही थी माँ मैं आपको सच्चाई कैसे बताऊँ । आप दुखी हो जायेंगी यह सब सुनकर। यह लोग मुझसे क्या करवाना चाहते हैं अगर आपको पता चला तो पता नहीं फिर क्या होगा। तभी एक दम से गंगा को चक्कर आ गया और उसे तभी के तभी राम अस्पताल ले गया। वहाँ डॉक्टर ने बताया कि गंगा माँ बनने वाली है। यह सुनकर गंगा खुश हो गई और राम भी । घर पर जाकर

उसने यह खबर सबको दी। सभी खुश तो हुए थे लेकिन कुछ तो था जो उन्होने गंगा के सामने नहीं बोला था। गंगा बहुत कमजोर थी उसे डॉक्टर ने आराम करने के लिए बोल दिया था। ज्यादा काम करने के लिए सख्त मनाई थी उसे। लेकिन क्या ऐसा हो सकता था। गंगा की सास ने दूसरे दिन कहा, बच्चे की इतनी भी क्या जल्दी है तुम लोगों को। उसकी जिम्मेदारी कैसे उठाओगे तुम दोनों। अब तो इस बच्चे के बाद तुम्हें हजार रूपये तो बच्चे के भी देने पडेंगे गंगा ने अपनी सास को तो कुछ नहीं कहा लेकिन मन में सोचने लगी इन लोगों की दुनिया रूपया – पैसा पर शुरू होती है और उसी पर खत्म हो जाती है। यह कैसे लोग हैं गंगा की सास ने राम को अपने पास बुलाया और बोली तू रमेश से छोटा है तो तेरा बच्चा पहले कैसे हो सकता है। रमेश इस खानदान का बड़ा बेटा है तो इसका बच्चा भी तो बड़ा ही होना चाहिए। गंगा को बोलना की कल जाकर बच्चे की सफाई करवा लेगी। पहले मैं रमेश का बच्चा देखना चाहती हूँ बाद में तेरा। राम को अपनी माँ की बात समझ आ गई थी अब तक। गंगा ने यह खुशखबरी अपनी माँ, बहन और भाई सब को भी दी। वह सभी खुश थे। राजीव कहने लगा मैं तो अब दो जगह से मामा बनूंगा वाह मजा आ गया (पूनम भी माँ बनने वाली थी लेकिन जब रमन को गंगा की खबर मिली तो वह चिड़ गया और अपनी पत्नि से बोला, मुझे पता नहीं था कि वह इतनी बड़ी मुर्ख है। बच्चे की इतनी जल्दी क्या थी उसे) तभी राम कमरे के अंदर आया और बैठ गया। उसने कहा गंगा मैं अभी इतनी जल्द इस बच्चे की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता हूँ अभी मेरी उम्र ही क्या है गंगा ने कहा तेरी उम्र नहीं है लेकिन मेरी तो है। मैं छोटी नहीं हूँ 26 साल छोटी उम्र नहीं होती है। और रही जिम्मेदारी की तो फिर शादी कैसे कर ली मेरे साथ। तब नहीं सोचा था क्या तू मेरी जिंदगी खराब तो नहीं कर रहा है। राम बोला रमेश मेरा बड़ा भाई है और वह इस व्यास खानदान का बड़ा बेटा भी है। तो फिर पहले रमेश के घर बच्चा आना चाहिए। तो मैं ऐसा चाहता हूँ कि कल जाकर तू बच्चा निकलवा देना। हम बाद में भी तो सोच सकते हैं सारी उम्र पड़ी है अभी तो। उसकी बात सुनकर गंगा भड़क गई और बोली यह इच्छा तेरी नहीं है तेरी माँ की है। तूने जो कुछ भी मुझे आकर बोला है यह सब तेरी माँ की भाषा है। आज तक मैंने तेरे घरवालों की कोई बात नहीं टाली है। लेकिन अब बात मेरे बच्चे की है। इस बार नहीं हो पाएगा मुझसे। और रही बात रमेश की तो हमारी शादी पहले हुई है और दूसरी बात मैं 26 साल की हूँ और रीमा केवल 20 साल की ही है। तेरे घर वालों को रमेश की शादी हमारे से पहले करनी थी और उसकी पत्नि मेरी उम्र की होनी चाहिए थी। रमेश के लिए बच्ची को क्यों उठा लाए फिर। मेरा बच्चा इस दुनिया में आकर ही रहेगा। मैं देखती हूँ मुझे कौन रोकता है। जिस किसी ने भी ऐसी कोशिश की तो उसे मैं जान से मार डालूँगी। मेरा बच्चा कोई मनाली से खरीदा हुआ 'मग' नहीं है

जो मैं किसी के भी कहने पर उसे निकाल फेंकू – याद रखना मेरी बात को। तुझे शर्म आनी चाहिए अपनी माँ की बात मानते हुए। गंगा ने राम को कहा मुझे मालूम है तेरी माँ मुझसे क्या काम करवाने के लिए इस घर में लेकर आई है। उन्हें बोल देना उनका वैष्या पना उसी को मुबारक हो। इस धंधे पर अपनी बेटी और सीमा को बैठा देगी जाकर बोल देना अपनी माँ को। मुझे मालूम है कि वह रोज–रोज जो पराए मर्दों को घर पर बुलाती है वह क्यों बुलाती है। फिर भी मैंने कुछ नहीं बोला किसी को। वह लोग मुझे कैसी–कैसी नजरों से देखते है वह मुझे ही पता है । क्या मैंने कभी तुझे कुछ कहा है। नहीं ना, तो फिर आज यह सब क्यों ? तू पहली बार बाप बनने जा रहा है और तुझे अपने होने वाले बच्चे के लिए कोई दर्द नहीं है। दर्द है तो सिर्फ तेरे भाई के लिए है। शर्म कर थोड़ी । अब गंगा की सास ने सभी को यह बात फैला दी थी कि, गंगा घर की छोटी बहु है फिर भी वह अपने बच्चे को जन्म देना चाहती है। हमारे खानदान की परंपरा को तोड़ना चाहती है यह लड़की। जब भी कोई रिश्तेदार घर आता था तो वह गंगा को ताईना मारे बगैर नहीं मानता था। सभी उसके आने वाले बच्चे के लिए एक ही बात करते थे। रीमा को पहले होना चाहिए था। वह हमारे खानदान की बड़ी बहू है। गंगा पूछती थी तो फिर मैं कौन हूँ। रीमा जो भागकर आई है, और यहाँ पर सिर्फ मेरी वजह से ही है। फिर भी वह आपके सिर का ताज है। जो आप लोगों को अपने पैर की जूती समझती है। मैं आपको अपने सिर का ताज बनाकर रखती हूँ तो आप मेरे ही सिर पर जूती मारते हैं। यह लोग कुछ कर नहीं पाए तो वह गंगा को दूसरी तरह से परेशान करने लगे। गंगा रसोई में ज्यादा खड़ी नहीं हो पाती थी फिर भी आए दिन घर पर पार्टी रखी जाती थी और पार्टी का सारा इंतजाम गंगा से ही करवाते थे। गंगा कई बार तो रसोई में ही गिर जाती थी लेकिन किसी को कोई मतलब नहीं था राजीव ने राम के लिए सूरत में बहुत अच्छी नौकरी का इंतजाम कर लिया था। उसे मालूम था कि राम का गांधीनगर में कोई करियर नहीं है। और उससे (राजीव) अपनी बहन की यह हालत देखी नहीं जा रही थी। राम को सूरत जाना था इस बात को लेकर उसके ससुराल वालों ने गंगा को ही दोष दिया था। उन्होंने कहा यह लड़की हमारे बेटे को हमसे दूर कर रही है। गंगा अपने मन में सोच रही थी दूर तो आप लोगों की वजह से हुआ है आपका बेटा। आप लोग हमेशा उसे भड़काते रहते हैं मेरे खिलाफ। वह हमेशा पूजा के ससुराल वालों का काम करता रहता है कभी वह अपनी माँ का काम कर रहा होता है। कभी अपने पिता का, कभी अपने जीजा का। नौकरी पर तो जाने का समय ही नहीं है उसके पास। लेकिन जब उसकी पत्नि को उसकी जरूरत होती है तो उसे नौकरी याद आ जाती है। वाह ! क्या पति है मेरा। लेकिन गंगा

ने इन सब बातों के बारे में अपने माईके में नहीं बताया था। वह लोग सिर्फ राम की नौकरी के बारे में ही जानते हैं।

गंगा के ससुराल में गंगा के खिलाफ षड़ियंत्र रचे जा रहे थे कैसे इसके पेट में पल रहे बच्चे को मारा जाये। वह लोग इंसान के रूप में शैतान थे। उसकी सास, जेठानी और नंनद बाहर के कमरे में बैठकर टी.वी. देखते रहते थे या बातें करते रहते थे और गंगा रसोईघर में कभी खडे रहकर तो कभी बैठ कर खाना बनाती रहती थी। उसके खाने पीने का कोई ध्यान नहीं रखता था। फिर भी वह किसी से कोई शिकायत नहीं करती थीं उसे मसालों और छौंक लगाने से परेशानी हेती थी तो वह अपने मुँह पर कपड़ा बांध लेती थीं वह लोग गंगा की इस हिम्मत से जलते थे। एक दिन गंगा सोफे पर ही लेट गई उसने रीमा को बोल दिया आज तू बना लेना खाना। रीमा ने मना कर दिया और बोली तू कोई पहली औरत नहीं है जो माँ बनने वाली है इसका मतलब यह नहीं है कि तू सोती रहेगी। गंगा ने उसे घूरते हुए बोला तेरे संस्कार नजर आ रहे हैं मुझे। मैं तेरे से कोई और उम्मीद रख भी नहीं सकती हूँ। रीमा वहाँ से चली तो गई में लेकिन जाकर सास – ससुर के कान भर दिया और बोली गंगा आपके संस्कारो पर अंगुली उठा रही है और आपके चरित्र पर भी अंगूली उठा रही है। गंगा तो इन सब बातों से अंजान थी। रीमा राम को भी फोन करके भड़काती रहती थी। यह सब बातें गंगा को मालूम नहीं थी। लेकिन उसके मन में गंगा को लेकर नफरत भर चुकी थी। वह राजीव के साथ मन में गंगा को लेकर नफरत भर चुकी थी। वह राजीव के साथ बड़े प्यार से रहने का ड्रामा करता था। क्योंकि राम का सारा खर्चा राजीव ही उठा रहा था। और इन सब के साथ – साथ राम का अपेक्षा नाम की लड़की के साथ चक्कर शुरू हो गया था। अपेक्षा के बारे में गंगा या उसका परिवार कुछ नहीं जानता था। परंतु राम का पूरा परिवार यह सब जानते थे। राम अपने परिवार के साथ मिलकर गंगा और उसके बच्चे को मारने की साजिश रचाते रहते थे। लेकिन वह लोग खुलकर कुछ नहीं कर पाते थे क्योंकि गंगा के पापा पुलिस में थे। राम की माँ, बाप, रीमा, रमेश, पूजा और उसका पति सभी अपेक्षा से मिल चूके थे और उससे बातें करते रहते थे। अब यह लोग गंगा को हटाकर अपेक्षा को लाना चाहते थे। क्योंकि यह लोग गंगा से देह का धंधा करवाना चाहते थे लेकिन यह हो नही पाया तो वह उनके किस काम की।

एक दिन गंगा की सास ने गंगा को जड़ी बूटियों का काड़ा दिया उसे पीने के लिए लेकिन उस काड़े में बच्चा गिराने की दवा मिली हुई थी। उसकी सास ने गंगा को बडे प्यार से बोला यह काड़ा मैंने पूजा की सास से मँगवाया है बहुत दूर से। खासतौर पर तेरे लिए इसको पीने

से तेरी सहत बन जाऐगी। उसकी सास बोली आज तक कभी मैंने किसी का इतना ध्यान नहीं रखा है जितना कि तेरा रख रही हूँ। मैंने इसे बहुत महनत से तैयार किया है इसे बेकार मत जाने देना। गंगा ने जब उस काडे की शक्ल देखी तो वह काड़ा लाल और कोल रंग का मिश्रण दिखाई दे रहा था। उसमें एक अजीब सी बदबू भी आ रही थी। फिर उसे दादाजी की बातें याद आने लगीं। लेकिन फिर उसने सोचा यह तो इनके खानदान का वारिस है जो मेरी कोख में पल रहा है। शायद इसके लिए यह औरत कोई षडयंत्र नहीं रचेगी ऐसा गंगा ने सोचा। जैसे ही उसने पहला घूंट पीया उसे एक दम से चक्कर आया और उसने अपनी सास से नजरें चुरा कर वह काड़ा फेंक दिया और कप को धो दिया। गंगा की सास ने बड़े प्यार से पूछा तूने पी लिया पूरा। उस दिन गंगा ने अपनी सास को झूठ बोल दिया लेकिन मन ही मन वह भगवान से मॉफी भी मांग रही थी । सास ने पूछा काड़ा कैसा लगा ? गंगा ने जवाब दिया बहुत कड़वा था। उसकी सास ने मुस्कराते हुए कहा यह काड़ा तीन दिन और तुझे पीना है। गंगा ने पूछा तीन दिन और क्यों ? उसकी सास ने जवाब दिया तभी तो इसका असर होगा। जहाँ से मँगवाया है उन लोगों ने ही यह हमें बताया था। वहाँ तो दूर–दूर से लोग आते हैं। अगले तीन दिन भी गंगा ने यह काड़े फैंक दिये। लेकिन गंगा को यह मालूम नहीं था कि इस काडे में कोई दवाई मिली हुई है उसके बच्चे को मारने के लिए। गंगा के मन के अंदर से आवाज आती थी और वह उसकी बात मान लेती थी। तीन दिन गुजर जाने के बाद भी जब गंगा को कोई तकलीफ नहीं हुई तो, उसकी सास ने बोला तेरी तबियत ठीक है अभी उसने कहा हाँ मम्मी जी। गंगा काफी कमजोर रहती थी और उस पर भी घर के काम का बोझ बहुत ज्यादा रहता था उसके ऊपर । उसकी सास जान बूझ कर उसे परेशान करती थी कि वह परेशान हो जाये या फिर उन लोगों के षडयंत्र काम कर जायें। लेकिन गंगा के साथ शायद कोई शक्ति थी जो उसकी मदद करती रहती थी। जिसके बारे में शायद स्वयं गंगा को भी नहीं पता था। अगर कभी गंगा खाना बनाने की हालत में नही होती थी तो उसे कोई पानी का भी नहीं पूछता था। इस वक्त गंगा को बसे ज्यादा राम की जरूरत थी लेकिन वह उसके साथ नहीं था उन पलों में। वह अकेले मे रोती रहती थी और अपने नसीब को कोसती रहती थी। एक दिन तंग आकर उसने अपने पति को बोल दिया यहाँ आकर मुझे लेकर जाओ। क्या तुम्हें मेरा ख्याल है थोड़ा सा भी। यहाँ क्या–क्या हो रहा है मेरे साथ । क्या तुम अपनी माँ को कुछ बोल नहीं सकते हो। मुझे ऐसे माहौल की आदत नहीं है लेकिन आज तक मैंने किसी को कुछ नहीं बोला राम ने अपनी माँ को बोला गंगा का थोड़ा ध्यान रखा करो। यदि उसने अपने माँ–बाप को कुछ बात दिया तो फिर राजीव भी मेरी मदद नहीं करेगा। राम की माँ उस पर चिल्लाने लगी और बोली हम तेरी पत्नि का पूरा ख्याल रखते हैं। वह झूठ बोलती है

और हमने नहीं कहा था कि तू बच्चे को पैदा करे। यह उसकी मर्जी है तो करती रहे। हमें उससे कोई मतलब नहीं है उससे या तेरे से। आज तू अपनी पत्नि के पीछे माँ की बेईजति कर रहा है। मैं तुझे श्राप देती हूँ कि तुम लोग भी सूरत में कभी सुखी नहीं रहोगे और जैसे तू हमें परेशान कर रहा है तेरी औलाद भी तुझे परेशान करेगी। फोन जोर से पटक कर उसने गंगा को भी बोला जैसे तू हमें परेशान कर रही है तुझे श्राप लगेगा। राजीव की पत्नि भी आकर तेरे माँ बाप का जीना हराम कर देगी। गंगा ने अपनी सास को कुछ नहीं बोला। सिर्फ यह कहा, इस बात का जवाब आप खुद से माँगना क्या आपकी बातों में सच्चाई है। मम्मी जी अपने बेटे को कोई भी माँ श्राप कैसे दे सकती है। उसकी सास गुस्से में वहाँ से चली गई। अब तो हर रोज ऐसी कहानियाँ गंगा के साथ रोज होती थी। गंगा की जैठानी ने एक दिन जाकर गंगा की अलमारी में अपना मेकप छुपा दिया और नीचे आकर घर वालों के सामने हंगामा शुरू कर दिया और बोली मेरा मेकअप कहाँ गया वह बहुत महँगा है। उसने अपनी सास को बोला आप गंगा की अलमारी की तलाशी ले लो जाकर। गंगा भी अपने कमरे में आई थी। जैसे ही उसने अपनी अलमारी खोली उसको पता चल गया कि, किसी ने उसकी अलमारी को हाथ लगाया है। फिर उसने देखा तो रीमा का मेकअप रखा हुआ था। गंगा को सब कुछ समझ आ गया था। उसने किसी को कुछ नहीं कहा और उसने रीमा का समान उसके कमरे में जाकर रख दिया। नीचे से सीमा सभी को अपने साथ ऊपर लेकर आ गई। उसकी सास गंगा से पहले ही नाराज थी और उस पर रीमा ने यह नाटक कर डाले। अब गंगा की सास को अच्छा मौका मिल गया था गंगा को चार बातें सुनाने का। वह तीनों गंगा के कमरे में आ गईं। गंगा की सास ने पूछा रीमा का मेकअप तूने कहीं देखा है क्या ? उसने मना कर दिया और तभी रीमा बोली मम्मी जी मैंने सभी जगह देख लिया है सिर्फ गंगा की ही अलमारी देखनी है शायद यहाँ पर गलती से आ गया हो। गंगा ने जवाद दिया ऐसा कैसे हो सकता है। सीमा के सामान के हाथ पैर है क्या जो चलकर मेरी अलमारी में आ गया। आप लोग छोटी सी बात का इतना बतंगड़ क्यों बना रहे हैं वह भी रीमा के बोलने पर। इस लड़की पर भरोसा करना मतलब अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। गंगा की सास ने बोला इसका मतलब तूने ही चोरी की हे। गगां ने गुस्से में बोला मैं एक संस्कारी खानदान से हूँ जहाँ पर सच्चाई से काम किये जाते हैं ऐसे छोटे काम तो वह लोग करते है जिन लोगों ने अपने घरों में कुछ देखा नहीं होता है और मैंने अपने घर में सब कुछ देखा है। गंगा ने अलमारी खोल दी और रीमा को कहा मेरी अलमारी खाली कर के देख ले और वापस ठीक भी कर देना। रीमा ने उसी जगह पर बार–बार देखा और सारी अलमारी खाली कर डाली लेकिन उसे वहाँ कुछ नहीं मिला। गंगा ने अपनी सास को उस दिन बोल दिया। यह हैं रीमा के संस्कार छोटी सी

बात के लिए इसने तमाशा कर डाला। गंगा ने बोला मम्मी जी जाकर जरा रीमा का भी कमरा देख लेना शायद इसको अपना सामाान वहीं मिल जाए। जब उन लोागें ने जाकर देखा तो वह रीमा के ही कमरे में मिला। सीमा इस बात से चिढ़ गई थी और जब सभी नीचे चले गये तो गंगा को बोली आज तो तू बच गई। अब तू देख मैं कैसे तुझे इस घर से निकालती हूँ यह घर कैसे मैं अपने नाम करवाती हूँ। बहुत ही जल्द मैं तुझे तेरे पति से दूर कर दूंगी। गंगा ने उसे बोला कम से कम भगवान से तो डरा कर। उसके बाद से आए दिन इस तरह की चीज़ें होती रहती थीं गंगा के साथ। गंगा थोड़ी चौकन्नी रहती थी उन लोगों से । उसने कभी उन लोगों की बातें एक दूसरे को नहीं बातई थीं क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि, घर के अंदर शांति का माहौल बना रहना चाहिए। लेकिन शायद गंगा ने यही बहुत बड़ी भूल की थी लोगों की बातों पर ज्यादा ध्यान न देकर। काश उसे उन लोगों के शैतानी दिमागों का पहले ही पता चल गया होात तो उसे वह सब नहीं झेलना पड़ता जो उसने ओर उसके परिवार ने झेला। कभी वह लोग सारे घर के पानी की नौब बंद कर देते थे, कभी वह लोग गहने चुराने का इल्जाम लगा देते थे, कभी उसकी सास सोंठ के लड्डू में बच्चे गिराने की दवाई मिलाकर उसे खाने को दे दती थी, कभी पडिंत के पास जाकर उसके लिए मंत्र फूंकवा कर सेब लेकर आती थी और गंगा को खाने के लिए दे देती थी। जब कभी राम घर आया होता था तो वह कमरे के बाहर खडे होकर उनकी बातें सुनती थी। यह सब देख कर ऐसा लगात था मानों यह गंगा की जिंदगी नहीं है जैसे किसी फिल्म की कहानी चल रही हो या फिर हम कोई किताब पढ़ रहे हैं। क्योंकि असल जिंदगी में तो ऐसा कुछ नहीं होता है। लेकिन जो भी कुछ गंगा के साथ उस घर में होता है, अंत में वह लोग मूंकी ही खाते थे। कोई शक्ति थी जो उसे बचा लेती थी हर बार। उन लोगों के सारे वार खाली ही जाते थे। लेकिन गंगा को बहुत ही बड़ी मुसिबतों का सामना करना पड़ता था। वह हर बार अपने बच्चे को बचा ही लेती थीं गांग की सास और उसका नंदोई किसी तांत्रिक के पास जाया करते थे और वहाँ से वह उसके लिए कुछ न कुछ ले – ले कर आया करते थे। लेकिन गंगा इन सब से बेखबर थी। एक दिन वह लोग तांत्रिक के पास से हाथ में बांधने वाली मौली लेकर आए थे। वह मौली गंगा की लंबाई की बराबर तीन बार नापी गई थी और उसे संतरी रंग के सिंदूर में डूबाया गया था और उसके अंदर थोड़ी–थोड़ी दूरी पर गांठे लगा रखी थीं। उस धागे में कहीं लाल, कहीं पीला और कहीं काले रंग लगे हुए थे। उस धागे को उसकी सास ने गंगा के पेट पर बांध दिया था । सही उसी जगह जहाँ पर औरत का बच्चा होता है। गंगा ने कोई सवाल नहीं किया अपनी सास से। उसने यह पूछा इससे क्या होगा मम्मी जी। उसकी सास ने जवाब दिया इससे तेरा बच्चा सही सलामत पैदा हो जायेगा और तबियत भी सुधरी रहेगी। यह धागा तुम दोनों

की सलामती के लिए बांधा गया है। अब इसको तब खोलना जब तू इस बच्चे को जम्न देने अस्पताल जायेगी। तब तक इसे मत खोलना लेकिन गंगा को यह कहाँ पता था कि, यह धागा उसकी सलामती के लिए नही है। इसमें तो मंत्र फुंके हुए है गंगा और उकसे बच्चे की मौत के लिए। तांत्रिक ने यही बोला था कि, इससे तुम्हारी बहु का बच्चा 24 घंटे के अंदर ही मर जायेगा और जब जहर शरीर में फैल जायेगा तो गंगा भी मर जायेगी। उसकी सास ने वह धागा दिन के 12:45 को उसके पेट पर बांधा था। उसके बाद गंगा को शरीर में थकावट होने लगी थी। उस दिन उसकी तबियत भी खराब हो गई थी। उसे उलटियाँ आती चली जा रही थीं। उसे पेट में भी दर्द हो रहा था। उसने अपनी सास को बताया चिंता मत कर सब ठीक हो जायेगा। वह अपने कमरे में जाकर लेट गई। उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था उस दिन। जब वह कुछ घंटे के बाद बाथरूम गई तो उसने देखा कि वहाँ रक्त (खून) पड़ा हुआ था। गंगा के जलन भी हो रही थी उस भाग में। गंगा घबरा गई और सोचने लगी यह क्या हो रहा है मेरे साथ। वह अपनी सास के पास आई और उसने अपनी सास को सब कुछ बताया और बोली मुझे डॉक्टर के पास जाना है आप मुझे लेकर चलो। गंगा की सास ने उसे कहा तू चिंता मत कर सब ठीक है। किसी किसी औरत को ऐसा हो जाता है डरने की कोई बात नहीं है। मैंने भी तीन–तीन बच्चों को जन्म दिया है। तेरा पहली बार है अभी इसलिए तू डर रही है। उसकी सास ने उसे ऊपर आराम करने को भेज दिया, लेकिन गंगा बेचेन थी। उसने राम से भी बात की तो राम ने कहा, मम्मी को भी तो पता ही है इस बारे में। मेरी माँ पर भरोसा कर। उसकी बात से गंगा सहमत नहीं थी। लेकिन वह करती भी क्या वह चुप हो गई। गंगा के मन में अजीब – अजीब ख्याल आ रहे थे उस दिन। गंगा ने खाना भी नहीं खाया था उस दिन लेकिन उसकी सास और नंदोई बड़े खुश हो रहे थे यह बात कर–कर के आज तो असर हो ही गया है। गंगा सो चुकी थी अपने कमरे में जाकर और उसे सपना आया कि, एक अर्थी जल रही है और एक दम से उस अर्थी मे से देवी माँ प्रकट होती हैं और सामने गंगा खड़ी हुई है। उसके हाथ में एक मरा हुआ बच्चा है और गंगा जोर–जोर से रो रही है अपने बच्चे को लेकर । देवी माँ उस मरे हुए बच्चे के माथे पर हाथ रखती हैं और वह बच्चा वापस जिंदा हो जाता है। गंगा अपने बच्चे को देख कर खुश हो जाती है और अपने बच्चे को अपने गले से लगा लेती हैं उसका बच्चा उसे देख कर हँस रहा है। देवी माँ गंगा को बोलती हैं यह बच्चा सिर्फ तेरा अपना है। इन लोगों का खून तो मर चुका था यह बच्चा भगवान का प्रसाद है तेरे लिए और तू किसी भी बात की कोई चिंता मत करना। यह लोग या संसार का कोई भी व्यक्ति तेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा क्योंकि मैं हर पल, हर घड़ी तेरा साया बनकर तेरे साथ चलूंगी। माँ ने कहा देख इस चित्ता को यह कौन है

जैसे ही गंगा ने उस चिता की तरफ देखा तो वह हेरान हो गई। वह चिता राम की थी। गंगा ने माँ को बोला यह क्या है माँ। उन्होंने जवाब दिया आने वाले कुछ समय में यह होने वाला है जो तू अभी से देख रही है। देखते ही देखते देवी माँ गंगा के शरीर में प्रवेश कर जाती हैं। गंगा अचानक से घबराती हुई उठ गई। उसकी धड़कने तेज–तेज चलने लगीं थीं। उसने कमरे में नजर दौड़ाकर देखी तो वह कमरे में अकेली थी। घड़ी में सुबह के चार बजे थे । लेकिन वह सोचने लगी मुझे ऐसा सपना क्यों आया। वह बहुत परेशान थी लेकिन यह बात वह किसी को भी नहीं बता सकती थी। उसने अपने हाथ जोड़े भगवान को कहा, सभी की मदद करना और सभी के घर में सुख शांती रखना। अब गंगा बिल्कुल ठीक थी। उसकी सास ने अगले दिन पूछा अब तेरी तबियत कैसी है उसने जवाब दिया अब ठीक है मम्मी जी। राम घर आया था उतरायण (मकर शंक्रान्ति) के लिए। गुजरात में सभी पतंग उड़ाते हैं उस दिन। यह त्यौहार 14 जनवरी को मनाया जाता है। उसके एक दिन पहले ही गंगा को इंजेक्शन लगा था और डॉक्टर ने उसे आराम करने के लिए कहा था। वह काफी कमजोर रहती थी। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता था कि, गंगा आराम से रह सके। गंगा की सास ने उसे कहा कि, वह सभी मौसी के घर जाने वाले हैं पतंग उड़ाने। सुबह जल्दी तैयार हो जाना जाने के लिए। गंगा ने बोला मेरी तबियत अच्छी नही है आप लोग चले जाना मुझ से नहीं हो पाएगा। उसकी सा बोली ऐसा नहीं चलता है तुझे तो जाना ही पड़ेगा तू इस घर की बहू है। अगर तू नही जायगी तो मौसी को बहुत बुरा लगेगा। गंगा बोली लेकिन मम्मी मैं दर्द से खड़ी नहीं हो पा रही हूँ तो ढ़ेड घंटे का रास्ता मैं कैसे सहन करूंगी। आपको पता है डॉक्टर ने भी उसे आराम करने को कहा है। लेकिन उसकी सास ने बोल दिया तुझे जाना है मतलब जाना है आगे तेरी मर्जी। गंगा ने सोचा इन लोगों के पास थोड़ा सा भी दिल और दिमाग होता तो ऐसी नोबत ही नही आती। रही बात राम की उसे तो अपनी जिम्मेदारियां निभानी ही नहीं आती हैं। कॉलेज वाले राम में और मेरे पति राम में जमीन आसमान का फर्क है। अगले दिन वह दोनों सुबह निकल गए लेकिन रास्ते भर गंगा बहुत परेशान हुई । राम अपनी मोटर साईकल बहुत तेज चला रहा था ऐसा लग रहा था मानों सब कुछ योजना के मुताबिक ही हो रहा है। वह लोग राम की मौसी के घर पहुँच गए तो उसकी मौसी ने बोला सभी बच्चे छत पर पतंग उड़ा रहे हैं तुम भी चले जाओ ऊपर ही गंगा ने बोला नहीं मौसी जी मैं नहीं जा पाऊंगी मुझे आराम करना है। उसने सारी बातें बता दी मौसी सास को और कहा मुझे थकावट हो रही है। आप बुरा न मानें तो मैं नीचे ही बैठूं क्या ? झट से उसका मौसा बोला यहाँ पर आराम करने आई है क्या ? आराम ही करना था तो अपने ही घर पर रह लेती। गंगा ने कुछ नहीं बोला उन्हें गंगा ने पानर पीया और छत पर चली गई। सीढ़ीयाँ चढ़ कर वह थक चुकी

थी तो उसने सोचा मैं जाकर बैठ जाती हूँ। सीढ़ीयों के पसा एक चारपाई पड़ी हुई थी बिल्कुल किनारे पर और छत की दीवारें भी छोटी ही थीं। गंगा जैसे ही उस चारपाई पर बैठी वह चारपाई एक तरफ में मुड़ गई और दीवार की तरफ गिर गई और गंगा वहीं सीढ़ीयों के पास जाकर गिर गई उसने एक दम से खुद को संभाला और खुद को सीढ़ीयों से गिरने से बचा लिया और दूसरे हाथ से उसने अपने पेट को पकड़ा हुआ थां उसकी आँखों के आगे अंधेरा सा छा गयां और उसे ऐसा लगा अब वह नही बच पाएगी। एक ही पल में उसे अपने माँ–पिताजी और भाई–बहन को याद कर लिया और वह बेहोश होने लगी। राम उसके सामने ही था परंतु वह उसके पास नहीं आया। वहीं पंतग उडाते हुए कुछ बच्चों ने चिल्लाया गंगा मामी गिर गई हैं। तब राम उसके पास आया और उसे पकड़ कर नीचे ले गए। थोड़ी दे तो राम वहाँ खड़ा हुआ और बोला। अच्छा अब तू यहाँ पर आराम कर मुझें ऊपर जाकर पतंग चलानी है। इतना बोल कर वह वहाँ से चला गया। गंगा की मौसी सास वहाँ थीं। उसने कहा मुझे वापस घर जाना है दर्द बहुत ज्यादा है मुझसे सहन नहीं हो रहा है। उसने कहा अच्छा मैं ऊपर जाकर राम को नीचे भेजती हूँ। गंगा इंतजार करती रही लेकिन उसके पास कोई नही आयां वह दर्द से कराह रही थी लेकिन छत पर तो जोर–जोर से गाने बज रहे थे और शोर शराबा हो रहा था। उसकी आवाज कमरे से बाहर तक नहीं जा पा रही थी। वह बार–बार भगवान को याद कर रही थी और बोल रही थी, हे भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना उसे कुछ मत होने देना। कैसे निरदयी लोग हैं यह सब गंगा बिस्तर पर पड़े–पड़े सोच रही थी। मेरे मम्मी – पापा सही कहते थे इन लोगों के बारे में वह सोच रही थी, ऐसा लगता है कि, किसी ने यह पलंग छत पर जान–बूझ कर रखा हुआ था। वह भी सीढ़ीयों के पास। जब वह टूटा हुआ था तो ऊपर क्यों रखा था। अगर मैं छत से नीचे गिर जाती तो क्या मैं बचती। यह सब जानबूझ कर ही हुआ है। गंगा को विश्वास हो गया था और उसे यह भी समझ आ गया था कि राम के सहित कोई नही चाहता कि, मैं अपने बच्चे को जन्म दूँ। सभी लोग मेरे बच्चे से जलते हैं। राम रात को ही नीचे आया सभी के साथं गंगा ने उससे कोई बात नहीं की और बोली अब घर चले क्या ? अगर तेरी सब मजा मस्ती हो गई हो ता। गंगा ने रास्ते भर राम से कोई बात नहीं की। घर पहुँच कर राम ने अपनी माँ को बताया कि आज गंगा चारपाई से गिर गई थी लेकिन यह सब सुनके भी किसी ने गंगा का हाल नहीं पूछा। गंगा इंतजार कर रही थी शायद कोई तो उसके लिए चिंता जाहिर करेगा लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। गंगा की सास ने कहा हाँ मुझे पता चल गया था। लेकिन यह अब तो ठीक है। गंगा ने किसी को कुछ नही बोला और अपने कमरे में चली गई। राम ने पूछा तू ऊपर क्यों आ गई इस तरह। गंगा ने कहा मुझे पेट और पीठ में बहुत दर्द हो रहा है। कल मुझे डॉक्टर के

पास ले चलना कहीं बच्चे को कुछ हुआ न हो। उसने बताया लेकिन कल तो मैं सूरत जा रहा हूँ वापस । गंगा ने कुछ नही बोला उसे और वह मुँह पलट कर सो गई। दूसरे दिन उसकी सास ने बताया कि हमने तेरा श्रीमंथ करने का मर्हुत निकाल लिया है इसी महिने है। अपने माता–पिता को बता देना। उसने कहा यह तो आप लोगों को बताना चाहिए। उसकी सास ने कहा तू भी तो बता सकती है उन्हें । तू कोई दूध पीती बच्ची तो नहीं है। गंगा को बुरा लगा उनका ऐसा बोलना। उसने हँसते हुए बोल दिया, मम्मी जी जब मैं शादी होकर आयी थी और आपको मैंने अपन रिवाज़ बताया था तो आपने मुझे यहि बताया था कि, फोन तेरी माँ को करना चाहिए बच्चों से नहीं बुलवाना चाहिए उन्हें । तब तो मैं बच्ची ही थी आपकी नजरों में तो फिर आज अचानक से मैं बड़ी कैसे हो गई। अब गंगा की सास को सब कुछ समझ आ गया था। राम के पिता तो गुस्से में ही बैठे हुए थे न जाने क्यों। जब भी गंगा अपने ससुर के पैर छूने जाती थी वह न तो उसे आर्शिवाद देते थे और न ही कोई बात करते थे। उन लोगों का कहना था कि गंगा सात बजे की चाय हमें बनाकर क्यों नहीं देती है उसकी सास को ही बनानी पड़ती है। उन लोगों का मानना था कि बहू के होते हुए भी उसकी सास चाय बनाकर ला रही है। लेकिन उन लोगों को यह नहीं दिखाई देता था कि वह 7:30 के बाद सारा दिन सिर्फ लोगों की चाकरी में ही लगी रतह है। जिस दिन उसकी हिम्मत नही होती थी खाना बनाने की तो उसे उस दिन खाने का पूछा भी नहीं जाता था। वह सोचती रहती था।

यह है हमारा समाज और यह होती है हमारे समाज में बहुओं की इज्जत क्या है बहू ? एक काम करने की मशीन या उन्हें वारिस देने की कोई मशीन। एक नौकरानी में और बहू में क्या फर्क है शायद कोई नहीं । लेकिन शायद नौकरानी एक बहू से बेहतर है। कम से कम उसे उसकी महनत के लिये कुछ तो मिल ही जाते हैं लेकिन हमारे समाज की बहुओं को तो तारीफ तक नहीं मिलती है। जब तक उसेक हाथ पैर चलते रहते हैं तब तक वह संस्कारी भी भी होती है, दयालु भी होती है और न जाने क्या–क्या होती है लेकिन अगर उसने एक दिन कोई काम नहीं किया तो उसी दिन उसका औहदा बदल जाता है। उसी दिन उसके माँ–बाप के संस्कारों पर शक कर लिया जाता है। अगर लोगों को शादी के बाद अपने बेटों को सिखाना भड़काना ही होता है उसकी पत्नि के खिलाफ तो फिर वह अपने बेटों की शादी ही क्यों करते हैं। क्या सिर्फ अपना वंश बड़ाने के लिए या फिर अपने खानदान का नाम जिंदा रखने के लिए। लानत है ऐसे समाज पर। अब गंगा के श्रीमंथ का समय आ गया था। लेकिन गंगा का श्रीमंथ छठे महिनें में ही हो गया था। श्रीमंथ के बाद गंगा अपने माता–पिता के घर चली गई। क्योंकि उसके ससुराल में बहु का पहला बच्चा माईके में ही होता है।।

गंगा को छोड़ने राम भी साथ आया था। गांग के पिता ने राजीव के लिए भी एक लड़की देख रही थी शादी के लिए। वह सभी लोग सबसे पहले अजमेर गये थे लड़की को पसंद करने । लेकिन किसी के भी पसंद करने या नहीं करने का तो कोई सवाल नही उठता था। पिताजी ने तो लड़की वालों को पहले ही वचन दे दिया था। उस लड़की का नाम रीटा था। जब गंगा ने पहली बार उसे देखा तो उसने अपनी माँ को मना कर दिया। उसने कहा हमारा भाई तो राजकुमार जैसा लगता है लेकिन यह लड़की तो राजीव के लायक ही नहीं लग रही थी। रंग को भी छोड़ दिया जाता है लेकिन वह लड़की खोई हुई थी उसके चेहरे पर खुशी बिल्कुल भी नहीं थी। गंगा ने बोला आप लोग एक बार फिर भी सोच लीजिए कि आप लोग क्या करना चाहते हैं। गंगा की तबियत खराब होने लगी थी। तो फिर सभी जल्दी से काम में बैठे और भिलवाड़ा पहुँच गए। वहाँ पर पूनम भी थी दोनों बहनों ने गले मिले और अंदर आ गई। घर पर जाकर गंगा को ऐसा लगा जैसे कि वह किसी जेल मे से छूट कर खुली हवा मे ंआई है। वहाँ पर उसके खाने पीने का पूरा ध्यान रखा जाने लगा था लेकिन वह जल्द ही थक जाती थी इसलिए उसकी माँ उसे डॉक्टर के पास ले गई चेकअप के लिए अब गंगा का सातवां महिना चल रहा था। डॉक्टर की शक्ल पर खुशी कम थी तो उसकी माँ ने घबराते हुए पूछा कोई चिंता की बात है क्या? गांग भी डर गई थी उस समय। डॉक्टर ने पूछा आपका कभी कोई ऐकसीडेंट हुआ था या फिर आप कभी गिर गई थी क्या? गंगा ने बातया छठे महिने में मैं चारपाई से गिर गई थी। डाक्टर ने पूछा तो फिर तुम्हारे ससुराल वालों ने डॉक्टर को नहीं दिखाया था क्या। गंगा ने बताया कि उसकी सास लेकर नहीं गई । जब बाद में भी मैनें सोनोग्राफी का बोला तो उन्होंने नहीं करवाई। उस समय की सारी बातें डॉक्टर ने गंगा से पूछीं और फिर बताया कि, जिस वक्त आप गिरी थी उस समय आपके बच्चे के ऊपर असर हुआ था। और आपके ऊपर भी पड़ा था। सिर्फ भगवान ने ही आपकी और आपके बच्चे की मदद की है। आपको पता होना चाहिए जिस तरह आपका ऐक्सीडेंट हुआ था शायद आप अपने बच्चे को खो चुकीं होती यह सुनकर तो गंगा के और उसकी माँ के हाथ पैर ठंडे ही पड़ गये थे। डॉक्टर ने बताया कि, अभी आपको अपना ज्यादा से ज्यादा ध्यान रखना होगा क्योंकि आपका बच्चा काफी कमजोर है और वह कमजोर ही पैदा होगा। अब ज्यादा समय नहीं है इसलिए आप चिंताऐ मत करना, खुश रहने की कोशिश करना और खाने पीने का ध्यान रखना। वहाँ से आने के बाद गंगा की माँ ने सब कुछ फिर से पूछा। गंगा ने शादी के बाद की सारी बातें अपने घर वालों को बता दी। यह सुनकर उसकी माँ ने गंगा को अपने गले से लगा लिया और बोली तू इतनी समझदार कैसे हो गई। हम तो सोच भी नहीं सकते थे हमारी बेटी इतनी समझदार है। वह तीनों रोने लगी। गंगा की माँ और बहन को उन

लोगों पर बहुत गुस्सा आ रहा था। लेकिन फिर भी उन लोगों ने किसी से कुछ नही कहा। राजीव के रिश्ते को लेकर घर पर काफी बहस हुई थी। गंगा के पिता ने कहा मैंने फैसला कर लिया है राजीव की शादी रीटा के ही साथ होगी और आज के बाद यहाँ इस बारे में कोई बातें नहीं होगी। अगले हफ्ते वह लोग राजीव का रोका करने आ रहे हैं। गंगा ने अपने पिता से बोला क्या आपने उस लड़की के बारे में पता कर लिया है। उसके पापा ने कहा अभी तू इस हालत में नही है कि हम तुझे कुछ बोलें हमारे घर का मामला है हम सुलझा लेंगे तुम दोनों सिर्फ अपने घर की चिंता करो। यह सुनकर गंगा और पूनम दोनों चुप हो गई। उस दिन जब गंगा सोई तो उसने सपने में रीटा को ही देखा। उसने देखा कि यह लड़की किसी दूसरे लड़के को प्यार करती है और इसकी शादी जबरदस्ती की जा रही है और यह खुश नहीं है राजीव के साथ। उसने यह भी देखा कि राजीव रीटा के साथ अलग रहता है और वहाँ पर मेरे मम्मी पापा आए हैं। मम्मी–पापा को देख कर वह गुस्से में अंदर चली गई है। जाकर अपने पति के साथ लड़ाई कर रही है। हर जगह यह लोग हमें परेशान करने आ जाते हैं। हमारी अपनी कोई जिंदगी ही नहीं है। वह खडे होकर चिल्लाकर बात कर रही है और राजीव उसके सामने हाथ जोड़कर सिर झुकाकर नीचे बैठा हुआ है। अचानक से वह झटके से उठी तो पूनम ने पूछा क्या हुआ तुझे उसने पूनम को सब कुछ बता दिया लेकिन शायद घर पर किसी ने उसे ध्यान से सुना ही नहीं था। गंगा बार–बार बोलती रही यह रिश्ता मत करो लेकिन किसी ने इसकी कोई बात नहीं मानी। अब वह दिन आ गया था जिस दिन वह लोग राजीव का 'रोका' की रसम निभाने आए थे। लेकिन उस दिन भी रीटा के चहरे पर कोई खुशी नहीं झलकर रही थीं । वह लोग तो राम के परिवार से भी ज्यादा गये गुजरे दिखाई दे रहे थे उनके व्यवहार से । लेकिन गंगा के पिता को तो कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उन्हें तो सिर्फ लड़की पढ़ी लिखी होने के साथ–साथ लड़की संस्कारी भी होनी चाहिए। उसे चुप कर दिया गया और राजीव का 'रोका' हो गया रीटा के साथ। गंगा ने रीटा को बिंदी लगाते वक्त बोला आज से तू सिर्फ अपने माता–पिता की बेटी ही नहीं है, इस परिवार की होने वाली बहू भी है। हमारे खानदान में लड़कियाँ 'रोका' होने के बाद से बिंदी जरूर लगाती हैं और हाथ में चूडी जरूर पहनती हैं इस बात को ध्यान रखना। रीटा कुछ नहीं बोली गंगा की बात सुनकर। गंगा ने सोचा कुछ तो है जो हमें दिखाई नहीं दे रहा है। पूनम का पति पूनम को मिलने आया था। वहीं उसी कमरे में रात को गंगा अपने पैरों को गरम पानी से धोकर सोफे पर बैठी थी। रमन के पास बैड पर गंगा का वेनीटी बोक्स रखा हुआ था। गंगा को ऐसा लगता था कि शायद रमन का व्यवहार बदल गया है उसके प्रति। लेकिन यह सिर्फ उसका भ्रम था। रमन उसके वेनिटी को बार–बार उछाल रहा था और बोलने लगा इसे मैं तेरे पास

फैंक दूं क्या। गंगा ने बोला मत फैंकना इसमें वजन बहुत ज्यादा है मेरे पेट पर लग जायेगा। पूनम भी बोल रही थी ऐसा मजाक मत करो। गंगा की माँ ने रमन को बोला यह मजाक बंद करो अगर उसके पेट पर लग गया तो रात को ही डॉक्टर के पास जाना पड़ेगा हमें। इस वक्त गंगा का आठवाँ महिना चल रहा है। लेकिन रमन ने किसी की बात नहीं मानी और बीवी को बोला चल हट और उसने वह वेनीटी गंगा की तरफ फेंक दियां गंगा के पास इतना भी समय नहीं था कि वह उठ पाती या संभल पाती। उसने एक दम से अपने हाथों को पेट पर रख लिया लेकिन उससे क्या होता है। उसका वेनीटी गंगा के पेट पर जोर से आकर लगा। गंगा की जोर से चीख निकल गई और उसकी आँखों के सामने अंधेरा सा छा गया। गंगा को फिर से एक बार ऐसा लगा जैसे अब वह नही बचेगी। अब गंगा के आँसू निकलते ही जा रहे थे और वह रोते–रोते अपनी मम्मी की पुकारती चली जा रही थी। रमन को फिर भी शर्म नहीं आई और उसने अपना सिर झटक दिया गंगा की तरफ । पूनम ने उसे बहुत झड़काया और बोला जाकर गंगा से मॉफी मांगो। इस बार पर उसने पूनम को बोला माफी मेरी जूती पूनम ने बोला अगर उसके बच्चे को कुछ हो गया तो फिर तू देखना क्या होता है तेरा। रमन ने बोला वो हट नहीं सकती थी वहाँ से। पूनम ने फिर बोला तुम पागल हो क्यां वह एक दम से कैसे उठ सकती थी। तुम उसके बच्चे को मारना चाहते हो। रमने ने अपनी पत्नि को झड़का दिया और बोला तू चुपचाप से यहाँ बैठी रह ज्यादा मेरी बहन – मेरी बहन मत किया कर। गंगा की माँ गंगा को अपने कमरे में पकड़ कर ले गई थी। उके मम्मी–पापा गंगा को पकड़ कर बैठे हुए थे । वह लोग रमन से नाराज थे और उसके पापा रमन के बारे में बोलते जा रहे थे। उसके पापा ने डॉक्टर को भी फोन किया लेकिन वह उस समय अमरजेंसी केस देख रहे थे। गंगा के पास जैसे ही पूनम आई वह चुप हो गई। पूनम ने पूछा गंगा ज्यादा दर्द है क्या ? गंगा ने बोल दिया अब ठीक है आप जाकर सो जाओ सब ठीक है। आपको आराम की जरूरत है आप आराम करो। गंगा ने पूनम को वापस भेज दिया। गंगा की हालत ठीक नहीं थी वह अपनी माँ को बोल रही थी, मम्मी मेरे बच्चे को चोट तो नहीं लगी होगी। उसकी माँ चिंतित थी। गंगा को लेकर । अगले दिन वह डॉक्टर के पास गई उसे लेकर (गंगा)। डॉक्टर ने बोला यह कैसे हुआ। गंगा की माँ ने डॉक्टर को सब सच बता दिया। डॉक्टर ने कहा पहले ही बच्चा कमजोर है और आपका ऐक्सीडेंट भी हुआ था फिर भी आप लापरवाही क्यों बरत रही है। डॉक्टर ने गंगा को एक दवाई दे दी लगाने के लिए। कुछ दिनों में पूनम को एक बेटा पैदा हुआ। गंगा बहुत खुश थी। लेकिन जैसे ही गंगा बच्चे को हाथ लगाने लगी रमन ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसका हाथ झटक दिया और बोला खबरदार जो मेरे लड़के को हाथ भी लगाया। यह मेरा बेटा है और तू मेरे बेटे को हाथ नही लगा

सकती है। चल भाग यहाँ से Senseless, stupid वगैरह–वगैरह उसने इतनी बातें सुना दी गंगा को । वहाँ पर बहुत सारे लोग थे लेकिन उसने किसी के बारे में नहीं सोचा। एक बार फिर से रमन ने समाज के सामने उकी इज्जत निकाल दी थी। लेकिन उसने रमन को पलट कर जवाब नहीं दिया। वह एक बार फिर चुप लगा गई सिर्फ अपनी बहन के लिए और अपने माँ बाप की इज्जत के लिए। गंगा बाहर जाकर बैठ गई। रमन अपनी बीवी और बच्चे से दूर नहीं होता था। वह इस बात का घ्यान रखता थ कि, कही गंगा या बाहर का कोई आकर उसके बच्चे को उठा न ले। रमन ने गंगा को पूनम के बच्चे को तीन दिन तक अपनी गोद में उठाने नहीं दिया था। गंगा जब उस बच्चे की आवाज सुनती थी तो वह वहाँ पर आ जाती थी। रमन उसे जैसे ही देखता था उठकर बैठ जाता था। गंगा दूर से ही उसे देख–देख कर रोती रहती थी। कितनी बार तो रमन ने उसे कमरे से बाहर निकाल दिया था बोल कर वह भूखा है उसे दूध पीना है चल बाहर जा यहाँ भीड़ मत कर अंदर आकर, गंगा चुपचाप बाहर आ जाती थी सिर्फ उस घर की शांति भंग न हो इस वजह से और पूनम के लिए परेशानियाँ और ज्यादा न बढ़ जायें। गंगा रमन को रमन को मूर्ख समझकर छोड़ देती थी हमेशा।

अब राजीव की भी सगाई थी। गंगा ने खुद रीटा (बहू) का मेकअप किया था उस दिन, इसके वाबजूद की गंगा के बच्चा पैदा होने का आखिरी (नौवां महिना) समय चल रहा था। फिर भी वह अपनी जिम्दोरियाँ उठा रही थी। यह सोचकर कि, माँ अकेले कैसे सब कुछ संभालेंगी। सगाई वाले दिन गंगा होटल के दूसरे कमरे में जाकर लेट गई थी। राजीव की सगाई में भी राम नहीं आया था। वह गंगा को एक बार भी मिलने नहीं आया था। गंगा ने उसके सामने एक इच्छा जाहिर की थी कि, जब मेरा बच्चा इस दुनिया में आए तो वह हमारे साथ यहाँ पर हो। राजीव की सगाई के एक हफ्ते बाद गंगा ने एक सुंदर से बेटे को जन्म दिया। लेकिन उसके ससुराल से कोई नहीं आया यहाँ तक राम भी नहीं आया। उसे बहुत बुरा लगा। लेकिन गंगा को क्या पता था कि वह इतनी खुश है अपने बच्चे को देख कर लेकिन उसके पति को तो अपनी 'रखेल' के साथ रंग रलिये मनाने से फुरसत ही नहीं थी। जब गंगा ने पहली बार अपने बच्चे को देखा तो वह ऐसा लग रहा था मानो किसी भगवान ने बच्चे के रूप में जन्म ले लिया हो। वह अपनी माँ से आखों की भाषा में बातें कर रहा था। उसकी आँखों में एक अलग सी चमक थी और उसका माथा बड़ा और चौड़ा, लंबे –लंबे घुंघराले बाल, उसके होंठ ऐसे लग रहे थे मानों किसी कलाकार ने पैंसिल से बना दीए हों । गंगा उसे देख कर अपना सारा दुख भूल गई थी उस दिन। राम उसके जन्म के छठे दिन आया था वह

भी अपने माँ–बाप और राजीव के साथ। गंगा उससे नाराज थी, उसने उसके साथ ठीक से बात नही की सिर्फ यह बोला काश तेरे अंदर थोड़ा सा बाप वाला दिल होता। गंगा के बच्चे का नाम करण संस्कार हो चुका था। जो दादी – दादा के फर्ज होत हैं। वह सारे गंगा के माता–पिता ने निभाए थे। उन लोगों ने तो सिर्फ एक ही काम किया था, कैसे भी करके अपने खर्चे बचा लो और गंगा के माता–पिता से पूरे करवा लो। उन लोगों को सिर्फ लेना अच्छा लगता था, देना नहीं । राम की माँ गंगा के बेटे के लिए संतरी रंग के एक कपड़े का वस्त्र बनवा कर लाई थी और उसने वह गंगा को श्रीमंथ के समय ही दे दिया था। और बोला था बच्चे को सबसे पही पहनाना है यह हमारा रिवाज होता है। लेकिन गंगा को यह पता नहीं था कि यह रिवाज नहीं होता है यह तो तंत्र मंत्र वाला कपड़ा है। क्योंकि उसके तांत्रिक ने कहा था जैसे ही वह इस कपड़े को उसके शरीर से लगाएंगी वह बच्चा दो दिन से ज्यादा जिंदा नहीं बचेगा। इस वजह से वह लोग पहले नहीं आए। अब रीमा भी माँ बनने वाली थी। अभी भी वह इसी कोशिश में थी कि इसका बच्चा मर जाये। लेकिन हर बार वह बच ही जाता था। यह लोग गंगा और उसके बेटे से और ज्यादा जलने लगे थे। गंगा की सास गंगा को जल्दी बुला रही थी क्योंकि रीमा का श्रीमंथ था। गंगा जहाँ अपने बेटे को लेकर गई तो, गंगा ने अपनी सास को कहा यह बच्चा पहली बार अपने घर पर पैर रखने वाला है तो मैं चाहती हूँ आप एक पूजा रखवा दें अपने पौते के नाम की। उसके सास–ससुर ने बोल दिया हमारे पास फालतू के पैसे नहीं पड़े हैं जो हम उड़ाते रहें। अपने पति को बोल के खर्चा करवाले। उसने भी मना कर दिया। गंगा मन ही मन यह सोच रही थी क्या ऐसे भी लोग होते हैं।

उसने इतना विचित्र परिवार पहली बार देखा था। राम गंगा को तरह – तरह से परेशान करता था। शारीरिक तौर पर और मानसीक तौर पर भी वह गंगा के दिल या तकलीफ से कोई लेना देना नहीं था। उसे तो अपनी हवस मिटानी होती थी। गंगा का बेटा ऊपर का भी दूघ पीने लगा था और उसने अपनी माँ का दूध पीना छोड़ दिया था। गंगा की सास उसे कच्चा घी खिला देती थी। जब गंगा आस–पास नहीं होती थी। जब गंगा वापस अपने माँ बाप के पास गई तो बच्चा बहुत बीमार था डॉक्टर ने जब चैक किया तो उसने बताया कि बच्चे को तो असथमा है। यह सुनकर गंगा के पैरों के नीचे की जमीन ही खिसक गई। उसके घबरा कर पूछा जनम के वक्त तो नहीं था। यह दो– ढ़ाई महिने तक भी ठीक था। अब क्या हो गया फिर। डॉक्टर ने कहा इस बच्चे को कुछ ऐसा खिलाया गया है जिसमें चिकनाहट हो। जैसे घी या मक्खन! गंगा ने बताया कि उसकी सास ने इसे भीगे हुए बादाम में कच्चा घी मिलाकर खिलाया था। डॉक्टर ने बोला इसी वजह से हुआ है यह सब

लेकिन अब ध्यान रहे आगे से ऐसा कुछ न हो। अब आपको एक बात का खास ध्यान रखना पडेगा कि, इस बच्चे को हर मौसम में बहुत संभालकर रखना पडेगा और अगर ऐसी कोई भी चीज ज्यादा इसके अंदर गई तो इसे असथमा हो सकता है। गंगा की माँ को उसकी सास पर बहुत गुस्सा आया और बोली क्या उसने कभी बच्चे नहीं पाले है या फिर इस बच्चे से कोई जलन है। गंगा ने कहा अभी छोड़ो मम्मी आगे से मैं ध्यान रखूंगी। बड़ी ही मुश्किल से उसकी तबियत ठीक हुई। गंगा को वापस ससुराल बुला लिया गया यह बोल कर कि, दादाजी बीमार हैं उनकी सेवा करने वाला वहाँ कोई नहीं है। लेकिन जब गंगा ने जाकर देखा तो वहाँ रीमा भी आई हुई थी उस समय तक दादाजी ठीक थे। उसने कहा दादाजी तो ठीक हैं फिर झूठ क्यों बोला गया। रीमा बीच में ही बोल पड़ी तुझे सिर्फ अपने माईके वाले ही दिखाई देते हैं। हर वक्त माईके में ही पड़ी रहती है तू। गंगा ने भी उसको जवाब दे दिया । पहली बात तू मेरी सास नहीं है जो इस तरह से बात कर रही है मेरे साथ। हर समय तुझे अपना रिश्ता याद रहता है इसलिए तू मुझे बड़ी बनकर सिखाती रहती है तो फिर अपनी उम्र भी याद रखा कर तू मेरे से पाँच साल छोटी है। तुझे मैं शादी से भी पहले से जानती हूँ। तू जो भी पत्र रमेश को लिखती थी हर एक पत्र वह मुझे पढ़ाता था उसी वक्त मैंने उसे बोल दिया था। यह लड़की बहुत चालाक है। अभी तो पत्रों के सहारे मीठी–मीठी बातें कर रही है और कुछ दिनों में यह लड़की शादी की भी बात करेगी । तू तो भाग कर ही आ गई। मैं माईके अपनी मर्जी से नहीं रहती हूँ। हमारी सास ने ही मुझसे कहा था तेरा पति तो सूरत रहता है तो फिर तू यहाँ क्या कर रही है। हम तेरा खर्चा नहीं उठा सकते हैं तू अपने माईके चली जा वही लोग उठांएगे तेरा खर्चा। अगर अब बात समझ आ गई हो तो मेरे सामने आज के बाद ज्यादा मत बोलना। वैसे भी जब औरत माँ बनने वाली होती है उस समय अच्छे काम करने चाहिए तो बच्चा भी वैसा ही होता है। लेकिन गंगा को तो यह पता ही नहीं था कि रीमा ने सभी घरवालों के मन में उसके लिए इतना जहर घोल दिया था कि अ बवह इस जनम में तो नहीं मिटेगा। इस घर के लोग तो इस ताक में थे कि कैसे इसके बच्चे को इससे दूर किया जाये (लेकिन ऐसे लोग यह भूल जाते हैं, मारने वाल से बचाने वाला बड़ा होता है। सच्चे इंसान की तो भगवान हर हाल में मदद करते हैं किसी भी रूप में आकर)। रीमा तो दादा जी के ऊपर अंगूली उठाने से भी नहीं डरी थी। उसने यह बोल कि दादाजी उस पर बुरी नजर रखते हैं। यह गंगा कुछ ज्यादा ही दादाजी – दादाजी करती रहती है। जब इसकी इज्जत पर वह हाथ डालेंगे तब इसे पता चलेगा। हर वक्त दादाजी के आगे पीछे घूमती है। अब तो वह इतने जवान हो गये हैं कि बिना छड़ी के ही चल देते हैं। यह बात घर के प्रत्येक व्यक्ति को मालूम थी फिर भी किसी ने उसे कुछ नहीं बोला। उलटा दादाजी के ऊपर ही

चिल्लाने लगे। यह बात गंगा को सहन नहीं हुई उसने राम को बोला यह सब क्या चल रहा है यहाँ पर। यह कल की लड़की दादाजी के ऊपर अंगूली उठा रही है और सभी उसकी ही बात मान रहे हैं। इसका कैसा चरित्र है मैं जानती हूँ । लेकिन तेरे पापा अपने पिता के बारे में यह सब कैसे सुन सकते हैं। यह बात उसकी सारी बातें सुन रही थी। फिर क्या था उसने चिल्ला–चिल्ला कर हंगामा कर डाला और सभी को इक्कठ्ा कर लिया और कहने लगी यह हमारे बेटे को भड़का रही है। गंगा ने अपनी सास को बोला मम्मी जी मैं भड़का नही रही हूँ। उसे सही और गलत बात रही हूँ। उस दिन गगां की भी आवाज ऊंची हो गई थी। उसके (गंगा) ससुर बोलने लगा ऐ लड़की आवाज नीचे रखकर बात कर मेरी पत्नि से। तुझे शर्म नहीं आती है तू कैसे बात कर रही है अपनी सास से। तेरे यही संस्कार है क्या। गंगा ने भी जवाब दे दिया पापा जी मेरे संस्कार तो यह कहते हैं सही को अपना सिर का ताज हमेशा बनाकर रखना और गलत के सामने कभी झुकना मत। बड़ों की इज्जत के लिए खुद को भी कुरबान कर देना लेकिन अन्याय कभी सहन मत करना। आप मेरे सामने संस्कारों की अगर बात करेंगे तो शायद मैं आपके घरों के संस्कारों की तस्वीर आपको दिखा दुंगी । आपको अपनी पत्नि की इज्जत का तो बड़ा ख्याल है लेकिन अपने पिता की इज्जत का बिल्कुल भी ख्याल नहीं है। अगर आज मैंने ऊंची आवाज में अपनी सास के साथ बात कर ली तो आपको और उनको और सब को बहुत बुरा लग गया लेकिन क्या कभी आप लोगों ने खुद को देखा है आप लोग दादाजी के साथ क्या व्यवहार करतें हैं। उन्हें कितना बुरा लगता होगा। क्या कभी आप लोग दादाजी को कोई इज्जत देते हैं नहीं, कभी नही। आप लोगों की इज्जत तो सभी को करनी चाहिए और दादाजी को जो आप बुढ़ापे में इतना परेशान कर रहे हैं उसका आपको कोई दुख नहीं है। उस दिन तो वह लोग चुप हो गए। लेकिन इसका बदला उन लोगों ने उसके बेटे से लिया। गंगा ने सभी के लिए खाना बना दिया था और सभी को परोस भी दिया था। उसका बेटा दूध के लिए रो रहा था तो उसने फ्रिज में देखा कि दूध का बर्तन खाली था। उसने अपनी सास को पूछा मम्मी जी दूध नहीं है मुझे बेटे को दूध पिलाना है वह रो रहा है। उसकी सास ने बोला दूध तो खत्म हो गया है तू खाना खा ले। दूध बाद मे आ जायेगा। उसने अचंभे के साथ बोला लेकिन मेरा बेटा भूखा है उसे दूध चाहिए। वह रो रहा है। आप किसी को भेज कर मंगवा दीजिए। वह अकड़ कर बोली, दिखाई नहीं दे रहा है क्या तुझे हम खाना खा रहे हैं । उसने कहा पापा जी को भेज दो फिर। उसकी सास बोली वह अभी नहीं जायेंगे वह सो रहे हैं। गंगा का बेटा जोर–जोर से रोता चला जा रहा था। सभी औरतें खाना खा खा कर चली गईं। लेकिन किसी ने भी गंगा के बच्चे का रोना नहीं सुना। गंगा ने जल्दी से दूध के बर्तन में पानी डाला और उसे हलका सा गरम करके अपने बच्चे का रोना शांत

किया और पड़ोस के घर से थोड़ा सा दूध मांग कर ले आई और अपने बच्चे को पिला दिया। गंगा उस दिन खुद को लाचार महसूस कर रही थी। उसे अपने माता–पिता की याद आ रही थी। वहाँ पर तो किसी भी चीज की कोई कमी नहीं थी। वहाँ तो मेरे बेटे के लिए कितना सारा दूध होता था और यह लोग तो मेरे बेटे के लिए एक बोतल दूध तक नहीं ला सके। आज मुझे अपने बेटे का पेट भरने के लिए लोगों के सामने हाथ फैलाने पडें हैं। यह सोच–सोच कर गंगा अपने बेटे को गले लगा कर फूट–फूट कर रो रही थी। गंगा ने तो उस दिन खुद खाना खाया और न ही रात को खाना बनाया। उसने दादाजी को खिचड़ी बना कर खिला दी थी। रात को घर पर बहुत सौर सराबा हुआ गंगा के साथ लेकिन राम कुछ भी नहीं बोला उन लोगों से। उसने गंगा को भी कुछ कहने से मना कर दिया। गंगा ने कहा यह बच्चा मेरा है। आज तक मैंने सब कुछ सहन किया है लेकिन आज नहीं करूंगी। अब यह लोग मेरे बेटे को मौहरा बना रहें है। तुझे तो कोई लगाव ही नहीं है अपने पुत्र से, लेकिन मुझे है। मैंने इसको नौ महिने कोख में रखा है। तुझे क्या पता माँ के दर्द का। तेरी माँ के पास माँ की ममता होती तो तुझे भी इस बात का एहसास होता। वह रो रही थी और दर्द भरी आवाज में बोल रही थी मैं तेरे बच्चे की बात कर रही हूँ किसी पराये के बारे में नहीं। गंगा ने गुस्से में कमरे का सारा सामान यहाँ वहाँ फैंक दिया था गंगा ने राम को बोला मुझे जवाब चाहिए। जवाब दो मुझे । गंगा जोर–जोर से चीख रही थी। राम भी गंगा के ऊपर चिल्लाने लगा तो फिर तू क्या चाहती है। मैं अपने माँ–बाप से जाकर लड़ाई करूं। मेरी माँ ने मुझे अपनी कोख में रखा है उसका कर्ज है मुझ पर और मेरे पापा के सामने अगर मैंने कुछ भी कहा तो वह हमें घर से निकाल देंगे। फिर हम कहाँ जायेंगे। गंगा ने उसकी बात का जवाब देते हुए बोला। कोख में तो सभी रखते हैं अपने बच्चे को। मैंने भी रखा है तेरे बच्चे को। अपने माँ बाप का कर्ज पता है और अपने बीवी बच्चों के लिए फर्ज नहीं मालूम तुझे ! और रही घर से निकालने की बात हम तो वैसे भी सूरत ही शिफ्ट हो रहे हैं अगले महिने। तो फिर निकालने की बात कहाँ से आ गई यहाँ पर। मेरे से ही गलती हो गई जो मैंने यह इच्छा रख ली कि, हमारे बेटे को अपने दादा–दादी के साथ कुछ समय रह लेगा। लेकिन यहाँ तो लोगों के पास दिल ही नहीं है। मेरा बच्चा भूख से रो रहा था और तेरे घर के लोग खाना खा रहे थे। और तेरे पापा को तो सोना था। पोते के लिए दूध नहीं ला सके । तू तो बाप कहलाने के लायक ही नहीं है। गंगा की सास उनके कमरे के बाहर खड़े होकर सब कुछ सुन रही थी। उसने फिर जाकर राम के पिता के कान भर दिये। फिर क्या था दूसरे दिन सुबह गंगा ने दादाजी को खाना कर वहाँ पर पड़ा सामान ठीक कर रही थी और उसके ससुर ने चिल्लाना शुरू कर दिया। गंगा ने कुछ जवाब नहीं दिया वह अपना काम करना उसके ससुर ने गंगा के हाथ को

खींचते हुए बोला– ऐ लड़की मैं तुझ से बात कर रहा हूँ। गंगा ने फिर भी आराम से पूछा क्या हुआ पापा जी आपको कुछ चाहिए। गंगा एक बोतल को टेबल पर टिका रही थी अब वह बार–बार गिर जाती थी। उसका ससुर फिर चिल्ला कर बोला, तू इस तरह हमारे सामने सामान फैंक मत और कल तूने अपने सास के साथ बतमिजी क्यों लाते हो। आप लोग उनके पैर की धूल भी नहीं हो। उसका ससुर उसके पास आकर फिर से चिल्लाया एक थप्पड़ मारूंगा तो सामान फैंकना भूल जाएगी । गंगा का दिमाग पहले से ही बिगड़ा हुआ था और उस दिन उसके बेटे को बुखार भी था। गंगा की तबियत ठीक नहीं थी फिर भी राम उसके पास नहीं था। वह कमरें में बैठा हुआ था। गंगा ने अपने ससुर से बोला आपको क्या परेशानी है मुझसे। मैंने कोई सामान नहीं फैंका है वह गिर गया था। ससुर ने उसे गुजराती में गाली देते हुए फिर से वही बात दौहरा दी गंगा ने टेबल पर रखी बोतल, डब्बे, थालियाँ और बाकी का सारा सामान एक – एक करके फैंक दिया और बोली फैंकना इसे कहते है। अभी शायद आपको समझ आ गया होगा। फैंकने और रखने में फर्क होता है। गंगा ने बोला शादी से पहले से आप लोग बड़ी–बड़ी बातें किया यिा करते थे लेकिन जैसे ही शादी हुई आप लोगों ने अपना असली चहरा दिखा ही दिया। काश मैं आप लोगों को पहले से पहचान गई होती। आज तक आप लोगों की बातों को मैंने समझौता किया है और अपने माता–पिता को भी नहीं बताया। लेनिक आज वह मेरे बेटे की है। अगर मेरे बेटे को किसी ने भी नुकसान पहुँचाने की कोशिश भी की तो मैं उसे छोडूंगा नहीं। अगर मेरे बेटे को कुछ भी हुआ आप लोगों की वजह से तो मैं सारी दुनिया में आग लगा दुंगी यह याद रखना। उसके ससुर की आँखे गुस्से से लाल हो रही थीं और बोला चल निकल मेरे घर से अभी के अभी। तुझे इस घर में रहने का कोई अधिकार नहीं है। तेरे जैसी घटिया लड़कियों के लिए इस घर में कोई जगह नहीं है। तभी उसकी सास भी बोल पड़ी आज से तू हमारे खानदान की बहू नहीं है। मैं तुझे इस खानदान से बाहर करती हूँ। और छोड़ दे मेरे बेटे को हम उसकी दूसरी शादी करवा देंगे। गंगा बोली वाह क्या माँ–बाप हैं। इसका मतलब आप लोगों ने दहेज के लिए ही शादी की थी। अब आप देखो मेरे पापा आप लोगों का क्या करते हैं। तभी राम भी नीचे ऊतर आया आवाजें सुन कर उसके पापा ने उसे बोला देख तेरी पत्नि को समझा दे। अगर हमारे घर में रहना है तो यह सब नहीं चलेगा। उसे हमारे तरीके से ही रहना होगा और घर का काम करना होगा। घर पर सभी इकटठा हो गए थे। रीमा ने राम की बहन और जीजा को फोन करके बुला लिया था। राम ने बोला आज तक मैंने सिर्फ आप लोगों की ही बात मानी है। लेकिन आज नहीं मानूंगा। कल मेरा बच्चा भूखा रहा इसलिए ही गंगा को बुरा लगा। उसके पापा ने राम को थप्पड़ लगा दिया और बोला मेरे घर में खड़े होकर मुझसे जबान लड़ाता है। आज और अभी अपने

बीवी बच्चों को लेकर यहाँ से निकल जा। आज से तू और तेरे बीवी बच्चे मर गए हैं हमारे लिए। मेरे सिर्फ दो ही बच्चे हैं आज के बाद पूजा और रमेश। मैं तुझे श्राप देता हूँ तू सूरत में जाकर एक दिन भी खुश नहीं रहेगा। तेरा बेटा बा पके लिए तरस जायेगा। मैं तुझे अपनी जायजाद से बेदखल करता हूँ और मैं तुझसे यह अधिकार भी छीनता हूँ, जब मेरी या दादा की मौत होगी तू मेरी अर्थी को कंधा नहीं देगा। अब मेरा वारिस सिर्फ रमेश है और उसका होने वाला बच्चा है। तेरे बेटे से हमारे कोई रिश्ते नही ंहै। वह चुटकियाँ बजाता चला जा रहा था और उसे घर से जाने को बोल रहा था। राम ने गंगा को बोला जाकर अपना सामान बांध ले हम अभी यहाँ से राजीव के पास सूरत जा रहे हैं। राम ने पूनम को फोन कर दिया और सब कुछ बता दिया। फिर पूनम और उसकी माँ ने उन लोगों की खटिया खड़ी कर डाली और अंत में यही बोला यदि मेरी बेटी या उसके बच्चे को कुछ भी हुआ तो तुम्हारा पूरा व्यास खानदान कल की सुबह जेल में होगा फिर हम देखते हैं तुम्हें कौन बचाता है। पूनम ने उसकी सास को बोला तुम लोगों ने मेरी बहन को घर की नौकरानी बना रखा है। उसे तुम्हारे चरित्र के बारे में पहले स ही पता था फिर भी मेरी बहन ने तुम्हारी इज्ज़त की है अब तक। फोन रखने के बाद वह लोग थोड़ा शांत हुए और गंगा से बोले तेरी माँ और बहन ने हमारी बेईजती की है। तेरा फर्ज हम लोगों की तरफ है न कि अपने माईके की तरफ। गंगा ने अपनी सास को बोला शायद आप भूल गए हैं कि, मैं कभी गलत को साथ नहीं देती हूँ और आप लोग गलत हैं। इतना कहकर गंगा ऊपर सामान बाँधने चली गई। लेकिन जब उसने देखा कि, अमन गंगा का (बेटा) को बहुत तेज़ बुखार है तो उसने राम को बोला अपनी बाईक निकाल लो हमें डॉक्टर के पास जाना है। अमन बुखार में तप रहा है। डॉक्टर ने उस दिन कहीं भी बाहर जाने को मना किया था। अभी अमन चार महिने का था। राम अगले दिन सूरत चला गया। गंगा को वहीं पर छोड़ कर और बोला कुछ दिन और सहन कर ले इन लोगों को फिर हम आराम सर सूरत में रहेंगे। गंगा ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया और एक हफ्ते बाद वह सूरत चली गई अपने भाई राजीव के पास वहाँ उसकी माँ भी थी। उस दिन गंगा यह सोच रही थी मेरा क्या वजूद है इस संसार में। मेरा घर कहाँ है। माँ के घर से मैं विदा हो चुकी हूँ। ससुराल वालों ने हमें घर से निकाल दिया है। पति तो अभी भी मेरे भाई के साथ रहता है तो फिर कहाँ है मेरा अपना घर। कुछ दिनों में राजीव की भी शादी हो जायेगी। घर पर भाभी आने के बाद हमें यहाँ से भी निकलना पड़ेगा। हे भगवान् अमन क्या नसीब लेकर पैदा हुआ है। जब से यह मेरी कोख मे ंआया है तब से इसने पता नहीं क्या – क्या झेला है मेरे साथ–साथ । मैंने ऐसे जीवन की कामना तो नहीं की थी। पता नहीं क्या होगा मेरे बेटे का इन जानवरों के बीच। अब राजीव की भी शादी हो चुकी थी। गंगा अपने माता–पिता के पास भीलवाड़ा

ही रह रही थी और राजीव सूरत में रह रहा था। राम, राजीव की शादी के बाद भीलवाड़ा घूमने तक नही ंआया था। पिछले छह महिनों में बहुत कुछ बदल चुका था राम और गंगा के रिश्ते के बीच। लेकिन फिर भी वह राम पर आँखें बंद करके भरोसा करती थी। उसे अपने बेटे अनन के लिए दुख भी होता था। गंगा अपने पति और बच्चे के साथ अपने घर में रहना चाहती थी। वह भी अपने बच्चे के बचपन के को दूसरे बच्चों जैसा बनाना चाहती थी। वह भी चाहती थी कि, अमन अपने पापा की गोदी मे बैठकर खेले। वह दोनों अपने बच्चे को एक साथ घुमाने ले जायें। गगा भी अपना छोटा सा संसार चाहती थी। वह हर हाल में अपने पति के साथ खुश रहना चाहती थी। लेकिन यह तो सिर्फ गंगा के सपने ही थे और सपने कभी पूरे नहीं होते हैं। गंगा अब उस दिन का इंतजार कर रही थी जिस दिन राम उन दोनों को लेने आयेगा। किंतु जब भी गंगा ने राम से आने की बात बोली उसने उसे यह बोल कर टाल दिया, गंगा कुछ दिन और इंतजार कर ले। अभी मैं सूरत मे ठीक से बस सेटल नहीं हो पाया हूँ। कभी वह एक महिने का वादा करता था, तो वह क्या बहाना कर देता था। गंगा उस समय बहुत नाराज भी होती थी। उसके साथ झगड़ा भी करती थी। लेकिन फिर भावनाओं में बह जाती थी और वह अगली तारीख तक इंतजार करती रहती थी लेकिन राम उसका इंतजार खत्म नहीं करता था। उसे दुख होता था यह सोचकर अब अमन 10 महिने का हो गया है लेकिन फिर भी वह अपने पापा को पहचानता तक नहीं थां गंगा का दर्द वही जानती थी और कोई नहीं। गंगा को क्या पता था जिस समय वह अपने सुखी संसार के सपने लिया करती थी, उस समय राम अपेक्षा के साथ रंग रलियां मनाता था। राम गलत लोगों के चक्कर में फंस चुका था और उसे वही अच्छा लगता था। उसे हर रोज़ नई लड़की चाहिए होती थी। वह सिगरेट, शराब और ड्रग्स भी लेने लगा था। यह सारी बातें उसके घर वाले जानते थे। लेकिन इन सब बातों का राजीव तक को भनक नहीं थी।

उस दिन जो कुछ भी गांधीनगर में गंगा के सामने राम और उसके पिता ने किया था वह सब एक नाटक था गंगा को उसके माईके भेजने के लिए। राम जो भी कुछ कमाता था वह उसमें से पंद्रह हजार अपने माँ आप के पास भेज देता था। लेकिन गंगा को उसने कभी एक रूपया तक नहीं दिया था। गंगा को उसके माता–पिता ही पाल रहे थे। लेकिन कभी उसके परिवार ने कोई सवाल नहीं किया था गंगा से । वह लोग तो अमन के साथ खुश रहते थे। गंगा के माता–पिता को तो गंगा और अमन की आदत सी हो गई थी। सूरत में राम को उसका परिवार भड़काता रहता था गंगा के खिलाफ और बोलते थे यह तो दिल्ली की रहने वाली है इस घर को तोड़ देगी। अपेक्षा अच्छी

लड़की है हमारे गुजराती समाज की है। हम तेरी शादी इससे करवा देंगे। बस तू गंगा से तलाक ले–ले। हम सब एक ही जगह रहेंगे घर का पैसा घर में ही रहेगा। अपेक्षा भी कमाती है अभी । गंगा तो मोटी हो गई है तरबूजे जैसी। उसमें तो कोई सुंदरता ही नहीं है। राम का हौसला और बढ़ गया था। वह लोग गंगा को लाना ही नहीं चाहते थे लेकिन सीधा–सीधा मना भी नहीं कर सकते थे। गंगा के सामने कुछ तो नाटक करना ही पडेगा। दूसरी तरफ रमन (पूनम का पति) भी राम को गंगा के प्रति भड़काता रहता था। यह बोल–बोल कर कि गंगा को तो तेरी कोई फीक्र नहीं है। वह तो माईके में ही पड़ी रहती है। जब उसे तू ले आए तो अपने पैर के नीचे दबाकर रखना, नही ंतो वह तुझे अपना नौकर ही समझेगी। तू अपनी सारी पगार उसके हाथ में मत रखना नही ंतो वह फालतू खर्च ही करती रहेगी। आखिर में बोल देता था यह सब बातें गंगा को मत बताना नही ंतो वह पूनम के कान भर देगी और हमारे घर में झगड़ा हो जायेगा। अब राम को यह भरोसा हो चला था कि गंगा बहुत ही चालाक है। अब राम का दिल अपेक्षा के लिए परेशान होने लगा था। बेचारी गंगा इन सब बातों से अंजान थी और अपने पति का हर दिन इंतजार करती रहती थीं अमन के लिए तो पता का होना ना होने के बराबर ही था।

आखिर गंगा ने एक दिन राम को पूछ ही लिया तू क्या करना चाहता है। क्या हम जिंदगी भर अपने माता–पिता के घर ही पड़े रहेंगे। राम ने फिर से वही बोला गंगा कृप्या संभाल लो कुछ दिनों की बात है। मुझे एक अच्छी नौकरी मिलने वाली है। गंगा ने कहा अभी भी तो अच्छी नौकरी ही है। और हमारे वहाँ आने से तुझे नौकरी देने को मना कर देंगे क्या। इस बार गंगा उसकी बातों में नहीं आई। गंगा ने उससे सवाल किया जरा बताना मुझे अपने माईके में कितना समय हो गया है। और तेरे घर वालों को तो अच्छा ही है उन लोगों का खर्चा जो बच रहा है। लेकिन उन लोगों को तो अपने वारिस से कोई लगाव नहीं है। सीमा को तो लड़की हुई है। हमारा समाज लड़के को ही अपना वारिस मानते हैं जो मैंने दिया है। फिर भी मेरी कोई इज्जत ही नहीं है। गंगा ने अपनी बात को जारी रखते हुए बोला अगर तुम हमें लेने नहीं आए तो मैं खुद ही आ जाऊँगी। और वैसे भी तुम मुझे जानते हो जो मैं ठाँनती हूँ वह मैं कर ही लेती हूँ। क्या गांधीनगर की तरह यहाँ से भी मुझे अपने बेटे के साथ अकेले ही आना होगा। तब जाकर राम तैयार हुआ आने के लिएं कुछ दिनों मे वह गगा को लेकर सूरत आ गया। वहाँ पर कुछ दिन तो वह राजीव के घर रूके फिर उन्होंने अपना घर देख लिया था। वह तीनों वहाँ रहने चले गये। गगा अपने संसार में खुश रहने की कोशिश करती थी। गगा को उस पर शक होता था। राम गंगा को किसी भी बात के लिए टोकता नहीं था। लेकिन

वह खोया रहता था अपनी ही दुनिया में। कई बार गगा उससे पूछती थी क्या चल रहा है तेरे दिमाग में लेकिन वह कुछ भी जवाब नहीं देता था। वह गंगा से काफी तेज झगडे भी करता था। और गुस्सा आने पर गंगा को कभी दीवार में जोर से धक्का दे देता था। कभी जोर से बिस्तर पर पटक कर चला जाता था। वह अपनी बात मनवाने के लिए किसी भी हद तक चला जाता था। वह गंगा के ही सामने अपने सिर को दीवार मे ंमारने लगता था। कभी उठक–बैठक भी करता था एक ही सांस मे 250 से 300 तक। आखिर में गंगा को उसकी बात माननी ही पड़ती थी। अब अमन दो साल का हो चुका था। राम हर रोज गंगा को शारीरिक कष्ट भी देता था। गंगा चाहें बीमार हो या कुछ भी हालात हों चाहें रात हो या दिन हो। जब भी राम कहे गगा को अपना पत्नि धर्म निभाना ही पड़ता था। राम न जाने कितनी बार गंगा का और उसकी आत्मा का शोषण करता था फिर भी उसने राम का वह रूप किसी को नहीं बताया था। उसक मानना था चार दीवारी की बाते यदि बाहर जाती हैं तो वह सार्वजनिक हो जाती हैं। लोग और समाज तो सिर्फ तमाशा ही देखते हैं राम ने अपनी छवी गंगा के परिवार और समाज के सामने बहुत ही अच्छी बनाई थी। धीरे–धीरे करके गंगा ने राम को उसी लायक बना लिया था जैसा कि गंगा के पिता अपना दामाद देखना चाहते थे। अब इन लोगों के पास कार भी थी। अमन को कारों का बहुत शौक था बचपन से ही। वह सबसे पहले कार बोलना ही सीखा था। वह दो चीजें बहुत बोलता था 'पापा कब आएंगे' और 'वो गई कार'। गंगा अमन की तोतली भाषा में बोले शब्द सुन कर सब कुछ भूल जाती थी। गंगा अपने परिवार के सामने राम की छवि को खराब नहीं करना चाहती थी। राम गंगा के परिवार के सामने खुद को एक आदर्श पति और पिता बनकर दिखाता था। गंगा भी उसमें उसका साथ देती थी। राम के घरवाले जब भी सूरत आते थे गंगा सब कुछ भूल कर अपना बहू धर्म भली भांती निभाती थी। गंगा ने पिछली बातों की छोड़ दिया था। गंगा का मानना था यदि हमें आगे बढ़ना है तो पिछली बातें हमे ंपीछे ही छोड़ देनी चाहिए। जब भी उसकी सास सूरत आती थी वह घर पर या तो कुछ भी रख जाती थी या फिर कुछ ले जाती थी। अमन जब एक साल का था तो उसका चाँदी का पैर में पहनने वाला कड़ा कहीं खो गया था। वह कहीं हीं मिला था। एक दिन अचानक अलमारी में सामने घर मे जाकर मिला था। कभी मंदिर में रखा हुआ ताबीज मिलता था। कभी गद्दे के नीचे मौली और एक रूपये का सिक्का मिलता था। एक दिन तो होली का दहन वाले दिन गंगा के सिरहाने रूई की सात बातीयाँ मिली थीं । यह सब कुछ अकसर शुक्रवार को ही मिलता था। घर पर भी कलह क्लेश बढ़ने लगा था। एक दिन तो हद ही हो गई थी। घर पर काम वाली काम कर रही थी। गंगा भी बीमार थी राम के मोबाईल में किसी का संदेश आया उसमें एक लड़की का फिगर साईज लिखा हुआ था। गंगा ने यह

सब दुख लिया फिर क्या था जब गंगा ने पूछा यह क्या है और यह अपेक्षा कौन है। तो राम चिल्लाने लगा और बोला मुझे क्या पता गंगा ने बोला जब फोन तुम्हारा है और लड़की का नाम भी आया है तो फिर किसे पता होना चाहिए। राम ने बोला मेरे पास तेरे बकवास सवालों के जवाब नहीं हैं और उसने गंगा को दीवार में धक्का दिया और गगा उलटी होकर पलंग पर गिर पड़ी । अमन पास में बैठ कर मम्मी–मम्मी पुकारने लगा और अपनी मम्मी के सिर में धीरे–धीरे हाथ घुमा रहा था। उसने कुछ सोचा और किचन मे चला गया वहाँ राम धीरे–धीरे किसी से बात कर रहा था। काम वाली को उसने भेज दिया था वापस। अमन उसे देख कर थोड़ा डर गया फिर उसने अपनी ऐड़ी उठा कर पंजों पर खडे होकर एक ग्लास में पानी निकालने लगा तो राम ने उसकी अंगूली वॉटर फिलटर के नल में दबा दी। अमन जोर से रोया और फिर उस ग्लास को गंगा के पास ले आया। वह छोटा सा बच्चा अपने आँसू पौंछता भी जा रहा था और उसने अपनी माँ के सिर पर हाथ फिराते हुए धीरे – धीरे उसके मुँह मे पानी डालने लगा। गंगा ने खुद को संभाला तो उसने अमन को अपनी गोद मे बैठा लिया और रोने लगी। जब बाहर जाकर देखा तो वहाँ कोई नहीं था।

गंगा पूरा–पूरा दिन राम का इंतजार करती रहती थी न तो उसका कोई फाने आता था और जब गंगा उसे फोन करती थी तो वह बाले देता था अभी मैं तुझे बाद में फोन करता हूँ किंतु उसका फोन नहीं आता था। गंगा और अमन आपस में ही खेलते रहते थे। दोनों खाना भी अकेले खा लेते थे। रात को अमन पापा–पापा बोलता हुआ सो जाता था। राम रात को कभी 12:00 बजे आता था कभी 1:30 से 2:00 के बीच में आत था। ज्यादातर गंगा रात को खाना नहीं खाती थी वह उसका इंतजार ही करती रहती थी। जब गंगा पूछती थी तो बोल देता था वह उसका इंतजार ही करती रहती थी । जब गंगा पूछती थी तो बोल देता था हमारे कम्पनी के बडे साहब आए हुए है उन्होने मुझे अभी छोड़ा था। मैं सीधा घर आया हूँ। गंगा उसको भरोसा कर लेती थी। लेकिन गंगा का मन नहीं मान रहा था। उसे ऐसा लगता था जैसे राम का किसी के साथ कुछ तो चल रहा हैं। राम सुबह 7:00 बजे निकल जाता था। इन बातों को लेकर दोनों में झगड़ा होता था। गंगा उसे बोलती थी मैं तुझसे सिर्फ तेरा थोड़ा सा समय ही तो मांगती हूँ। कभी तो हमे ंघुमाने ले जा सकता है या फिर तूने दूसरी शादी कर ली है। राम फिर चिल्लाने लगता था तेरा दिमाग खाली है इसलिए तेर दिमाग ज्यादा ही चलता है। गंगा ने उसी रात को सपना देखा कि एक सांवली सी लड़की है उसके छोटे–छोटे बाल हैं। लंबी है और उास को भी पता नहीं है। राम ने रमन को बोला है मैं गगा से छुटकारा चाहता हूँ क्या करूं । रमन ने बोला गंगा तुझे छोडेगी नहीं। राम ने कहा अगर वो मुझे नहीं छोडेगी तो मैं उसे

छोड़ देता हूँ। तभी एक दम से राम छत से नी कूंद जाता है और वह मर जाता है। वह लड़की अपेक्षा थी और वह वहाँ पर हँसती है खडे होकर तभी पीछे से रमेश आता है और वह उसे एक बैग देता है। अपेक्षा उस बैग को लेकर अपने पुराने आशिक के साथ वहाँ से चली जाती है और राम की रूह मरने के बाद गंगा और अमन के आस–पास घूमती रहती है। गंगा फिर से खुद को सफेद रंग की साड़ी में देखती है। गंगा जब कभी भी इस तरह के सपने देखती थी उसकी आत्मा तक काँप जाती थी उठने के बाद। लेकिन यह सब वह किसी के साथ भी बाँट नहीं सकती थी। वह पूनम के साथ घंटों बातें करती रहती थी लेकिन बाद मे तो वह खुद को अकेला ही पाती थी। राम अपना सारा गुस्सा अमन के ऊपर निकाल देता था। गंगा अब राम के ऊपर नजर रखने लगी थी। अपने बेटे को लेर उसके मन में एक डर सा बैठ गया था अपने पति की तरफ से । गगा अपने अकेले पन को दूर करने के लिए मनन के साथ खेलती थी कभी उसके साथ बातें करती थी, कभी–कभी वह अपनी मौसी के घर चली जाती थी। जब गंगा अपनी मौसी के घर जाती थी उस समय राम उसे खुद छोड़ने जाता था और राम चिंतारहित हो जाता था। उन दिनों वह अपेक्षा को घर ले आता था और वह उसे अपने पत्नि का दर्जा देता था। दोनों मिल कर षडयंत्र करते रहते थे कि, हम गंगा को अपने रास्ते से कैसे निकालें । गंगा इन सब बातों से बेखबर थी। राम गंगा को इतना परेशान करता था फिर भी गंगा उसकी सभी गलतियों को मॉफ कर देती थी और राम को फिर से एक नया मौका दे देती थी। उसे वह समझा देती थी और बोल देती थी कि, आज वाली गलती फिर मत दौहराना लेकिन राम अगली बार कुछ और नया काम कर देता था। गंगा उसे बोलती रहती थी इतना बचपना अच्छा नहीं है। तू एक बच्चे का बाप है यह सब करना तुझे शोभा नहीं देता है। गंगा राम को फिर भी इतना प्यार करती थी कि वह उसके लिए कुछ भी कर सकती थी। वह उसे जो करने के लिए कुछ भी कर सकती थी। वह उसे जो करने के लिए बोलता था गंगा वही करती थी। राम गंगा के अंदर अपेक्षा को हि देखता था। गंगा के बहुत ही सुंदर और लंबे घने कमर से नीचे तक बाल थे। जो उसे बहुत प्रिय थे। राम ने एक दिन गंगा को कहा तेरे बाल बहुत लंबे हैं। तू बिल्कुल भैंजी टाईप लगती है। मुझे छोटे–छोटे बाल पसंद हैं। तू अपने बाल कटवा लेना जाकर। गंगा ने राम को जवाब दिया लेकिन कॉलेज टाईम पर तो तुझे मेरे यही बात बहुत पसंद थे तो फिर अब पसंद बदल कैसे गई। राम ने कहा पहले तू एक सुंदरी दिखाई देती थी और अब तू भैंजी बनकर रह गई है। पहले हर लड़का तेरे करीब आने की ताक में रहता था और अब तेरी तरफ कोई देखेगा भी नहीं चाहता है । तू इतनी मोटी हो गई है जो अपनी उम्र से दुगनी लगती है। अब तो मुझे तेरे साथ चलने में भी शर्म आती है। गंगा को बुरा तो बहुत लगा लेकिन उसने बड़ी सरलता से उसे बोला,

प्यार शारीरिक सुंदरता नहीं होता है। प्यार तो एक भरोसा है और एक वादा है जिसका सीधा तार हमारी आत्मा और दिल से जुड़ा होता है। फर्क यह है कि, तूने शरीर से प्यार किया है और मैंने आत्मा से । इसलिए हमारे विचार भी हमारे प्यार जैसे ही हैं। गंगा ने कहा पहले मैं सिर्फ किसी की बेटी थी और तेरी प्रेमिका थी लेकिन अब मैं किसी की पत्नि, बहु, भाभी और माँ भी हूँ। जब रिश्ते बढ़ते हैं तो उसके साथ हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती हैं और चिंताए भी। फिर मैं एक सुंदरी कैसे दिखाई दे सकती हूँ। आज मुझे एहसास हो गया है कि, मेरा फैसला बहुत ही गलत था। उसकी बातें सुनकर राम ने किसी को फोन किया और बाहर निकल गया। गंगा कुछ समय अमन को अपनी गोद में लेकर बैठ रही । अमन ने तोतली आवाज मे पूछा क्या हुआ मम्मी। गंगा की आंखे नम थीं राम की वजह से। उसने घर के बाहर झांकर देखा तो बाहर बहुत ही ज्यादा गर्मी थी। थोड़ी देर के बाद उसने बाल उसने अपने बेटे को लिया और ब्युटी पार्लर में जाकर अपने बाल कंधे तक कटवा दिये। पार्लर वाली लड़की ने बोला भी था दीदी आप बाल मत कटवाओ आपके बाल बहुत सुंदर हैं गंगा ने बोला, मेरे लिए मेरे पति की खुशी मेरे बालों से ज्यादा महत्वपूर्ण है। वह लड़की बोली आप अपने पति को बहुत प्यार करती हो। रात को जब राम घर वापस आया तो उसने गंगा को ध्यान से देखा तक नहीं और बोला मुझे बहुत नींद आ रही है। मैं थक गया हूँ। राम ने खाना भी नहीं खाया और सौ गया। गंगा बाहर के कमरे मे ही बैठी रह गई। अमन सो चुका था राम का इंतजार करते–करते । दूसरे दिन भी उसे जल्दी जाना था गंगा जब तक उठकर बाहर आई तब तक राम जा चुका था। उसे अपना जीवन बोझ लगने लगा था। राम का भाई रमेश और भाभी रीमा सूरत में ही आकर रहने लगे थे। यह बात गंगा को काफी दिनों बाद पता चली थी। राम उन लोगों से रोज मिलता था। एक दिन राजीव और उसकी पत्नि घर पर खाने पर आए थे और राम ऑफिस से आया था लकिन उस दिन वह अजीब सा व्यवहार कर हा था। उसने किसी से भी बात नहीं की थी उसके शरीर से कुछ अजीब सी बदबू भी आ रही थी। उसे जोर–जोर से खाँसी आ रही थी जैसे कि तम्बाकू खाने वाले व्यक्ति के ऊपर से आती है। गंगा ने उसे पानी देते हुए पूछा सिगरेट पीने लगा है क्या ? उसने गांग की बात का कोई जवाब नहीं दिया और न ही पानी पीया। तभी अमन भी पापा – पापा बोलता हुआ राम से चिपक गया। राम ने उसे हटने के लिए कहा लेकिन वह नहीं हटा। राम को गुस्सा आया और उसने अमन को इतना मारा कि उसका सिर सोफे के कोने मे जाकर लगा। गंगा उस पर चिल्लाई और बोली मारेगा क्या मेरे बच्चे को। अमन गंगा की गोद मे जाकर छुप गया। राम अपने कमरे मे तेजी से चला गया। गंगा भी उसके पीछे नही गई। थोड़ी देर बाद वह कमरे से बाहर आया और मनन को गंगा की गोद से घसीटता हुआ कमरे में ले गया और अंदर से

कुंद लगा ली। अमन को वह जोर–जोर से मारने लगा। गंगा ने जोर – जोर से दरवाजा खड़काया और गंगा भी चिल्ला रही थी छोड़ दे मेरे बेटे को। अगर उसे कुछ भी हुआ तो तेरे खानदान को मैं तबाह कर दूंगी। वह अमन को मारता चला जा रहा था। मारने की आवाजें बाहर तक आ रही थीं। गंगा बाहर तड़प रही थी। राजीव ने भी दरवाजा खड़काना शुरू कर दिया। तब एक दम से उसने दरवाजा खोला तो गंगा और राजीव ने देखा कि उसकी आँखे लाल हो रही थी और वह वापस से कहीं बाहर चला गया। अमन अपनी माँ की ओर जोर से भागा और रोते–रोते बोल रहा था मम्मी मुझे बचा लो–मम्मी मुझे बचा लो, रोते–रोते अमन सो गया। गंगा ने राम की माँ को फोन लगाया और उसने उन्हें सारी बाते बता दीं और बोला अपने बेटे को समझा देना यहाँ पर यह सारे पागलपन न करे। गंगा बोली आपके बेटे को कोई मानसिक रोग तो नही है। जब से शादी हुई है मैंने उसका यह रूप बहुत बार देखा है। अगर यह सब बंद नहीं हुआ तो फिर मुझे पुलिस का सहारा लेना पड़ेगा आप लोगों के खिलाफ। राम उस रात वापस नहीं आया पता नहीं कहाँ गया था। अगले दिन जब वह वापस आया तो गंगा के पैरों में गिरकर मॉफी मांगने लगा। कहने लगा मुझे मालूम नहीं मुझे क्या हो जाता है जो मैं ऐसा कर बैठता हूँ। गंगा ने बोला कल को हम दोनों की हत्या कर देना और बोल देना मुझे से गलती हो गई। गंगा ने उससे बात नहीं की और अमन भी राम के पास जाने से डर रहा था। गगा काफी समय से नोटिस कर रही थी कि अमन राम के पास जाने से डरता था। अब तो आए दिन राम घर से गायब रहने लगा था। एक दिन राम घर आकर बोला मुझे नौकरी से निकाल दिया गया है और वह रोने थोड़ी देर के बाद वह बोला मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी ने हमारे ऊपर कोइ जादू टोना कर रखा है। गगा ने उसे आकर समझाया हर मुशकिल का हल होता है। उसे सुलझाया जा सकता है। लेकिन आराम से । परंतु जो कुछ भी तू पिछले कुछ दिनों से कर रहा है। क्या वह ठीक था। आज कल तू कहां जाता है मैंने कभी कुछ नहीं पूछा । जब तुझे लगे कि मैं तेरी पत्नि नहीं मित्र हूँ तो बता देना। मैं कुछ नहीं पूछूंगी तब तक। कुछ देर वह शांत रहा और बोला मैंने हमारे गांधीनगर वालें पंडित से बात की है, वह ऐसा बोल रहा था, कि हमारे ऊपर भारी संकट मंडरा रहा है उसका निवारण करना पडेगा। गंगा ने बोला घर की सुख शांति की बात है तो कोई बात नहीं उन्हें बुला लेते हैं। राम ने बताया कल वह आ रहे हैं मैंने सब कुछ तैयार कर लिया है उनके साथ। पंडित घर पर आया और उसने कहा कि, अमन के अंदर दादाजी की आत्मा प्रवेश कर गई है। उन्हें निकालना जरूरी है। उसने घर के मंदिर की दिशा भी बदलवा दी थी। उसने बताया तुम तीनों के ऊपर काला जादू करवाया गया है। गंगा ने उनका नाम पूछा । पंडित ने नहीं बताया। गंगा बोली मैं जानती हूँ वह कौन है। आप हाँ या ना बोल देना। गगा ने अपनी सास

और राम के जीजा का नाम बोला। पहले तो पंडित ने कुछ नहीं बताया काफी पूछने पर उन लोगों ने हाँ बोल दियां उसने (पंडित) गंगा, अमन और राम को थोडे–थोड़े बात काटे और रख लिए। गंगा ने पूछा आप इनका क्या करोगे। उसने कहा इनका कुछ काम करना है गंधी नगर जाकर। पूजा खत्म हो गई थी उसने बताया अब सब कुछ ठीक हो जायेगा। अब सारे असर खत्म हो गए हैं। लेकिन फिर भी राम के चेहरे पर वह खुशी नहीं थी। उसे देखने से ऐसा लग रहा था जैसे कुछ तो है जो उसके दिमाग में चल रहा है। गंगा ने फिर सोचा शायद मैं ही ज्यादा सोच रही हूँ। राम अपनी नौकरी को लेकर परेशान होगा शायद गगा ने सोचा।

गंगा यह नहीं जानती थी कि, यह पंडित उसकी परेशानियाँ दुर करने नहीं बल्कि बड़ाने आया था। इसे राम ने घर की परेशानियां दूर करने के लिए नहीं बुलाया था। राम की माँ जिस तांत्रिक के पास जाया करती थी उसने गंगा और उसके बेटे के बाल माँगे थे। इन दोनों की मौत करवाने के लिए। राम अब सिर्फ अपेक्षा के ही बारे में सोचता रहता था। वह कागज पर अपेक्षा के घर का नक्शा बनाता रहता थां अब वह पूरा दिन घर पर ही होता था और जब फोन आता था तो वह बोल देता था, कि मैं कंसलटेंट से बता कर रहा हूँ। अमन को बाहर ही रखना और वह दरवाजा बंद कर लेता था। गंगा भी उस पर भरोसा करके वहाँ नहीं आती थी। कुछ समय बाद वह कहीं चला जाता था फिर घर पर वापस आने का पता नहीं होता था। गंगा एक दिन अमन को स्कूल की बस में बैठाकर वापस घर आई तो उसने देखा राम किसी से गुजराती में बातें करते करते रो रहा थां उसे समझ नहीं आया यह क्या हो रहा है। गंगा काफी परेशान थी इन दिनों। वह रात को सोते समय भगवान से बोलकर सोती थी हे भगवान् कल की सुबह मुझे कुछ अच्छी खबर सुना देना और फिर पूरा दिन बस हर पल उसकी नौकरी की खबर सुनने के लिए भगवान से पूजा करती रहती थी। राम से ज्यादा तो गंगा ही दुखी रहने लगी थी।

जनवरी का महिना था अमन रोज की तरह स्कूल गया था। अमन साढ़े तीन साल का हो गया था। राम के मोबाईल में बार बार फोन बज रहा था और वह काट देता था उसने पूछा किसका फोन काट रहे हो। उठा लो फोन शायद कोई काम का फोन हो। उसने कहा ऐसे ही है। गंगा रसोईघर में चाय के बर्तन रखने चली गई। उसी बीच फोन फिर आया और राम ने किसी को गुजराती में बोला मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ। गंगा ने फोन छीन लिया और हैलो किया तो फोन कट गया। गंगा ने राम को कहा कौन थी फोन पर। राम ने झूठ बोल दिया और बोला तूने कुछ गलत सुन लिया है। दोनों में बहुत झगड़ा हुआ और आखिर में वह हमेशा की तरह घर से बाहर निकल गया। गंगा ने पूनम को

फोन किया और सारी बातें बता दीं। पूनम ने बोला उसकी जिंदगी में शायद कोई और भी है और वह अकेला नहीं है शायद उसका पूरा परिवार उसका साथ दे रहा है। गगा ने भी यही बोला हाँ दीदी मुझे भी ऐसा ही लगता है। रात को जब वह सो रहा था तो गंगा ने उसके मोबाईल देखा। उसमें अपेक्षा के बहुत सारे फोन कोल मिस हुए थे। उसने फोन वापस रख दिया वहीं पर। सुबह नाश्ता करने के बाद उसने पूछा ये अपेक्षा कौन है। राम बोला कोई नहीं मेरे ओफिस में काम करती थी। गंगा ने पूछा तुम दोनों का क्या रिश्ता है। राम चुप था लेकिन गंगा गुस्से में थी। राम की नजरें और सिर झुका हुआ था। गंगा ने बहुत सारा बोल दिया था। राम के परिवार को लेकर और उसके संस्कारों को लेकर। लेकिन फिर भी वह चुप था राजीव को सब कुछ बता दिया। उस समय गंगा की माँ राजीव के पास घूमने आई हुई थी। राजीव ने राम को उसी वक्त घर पर बुलाया और पूछा। राजीव गुस्से में था उसने राम को बोला तेरी वजह से मेरी बहन ने हमारे से बहुत कुछ सुना था। हमारे रिश्ते तक टूट गये थे तेरी वजह से। शादी के बाद भी तेरे घरवालों ने मेरी बहन और भाँजे का जीना हराम कर दिया था फिर भी मेरी बहन सब कुछ सहन करती रही। फिर भी उसने तेरा साथ नहीं छोड़ा। गाड़ी बंगलो में रहने वाली लड़की ने तेरे लिए सब कुछ सहन किया। तेरे परिवार ने उसे नौकर तक बनाकर रखा हुआ है। तुझे क्या लगता है हमें कुछ पता नहीं है क्या ? आज तू उसी को धोखा दे रहा है वो भी एक सड़क छाप लड़की के लिए। जिसका चरित्र बिगड़ा हुआ है। जो हर आते – जाते लड़के पर नजर रखती है। मुझे अपेक्षा की सारी कहानी पता है राजीव ने राम को बोला। मैं तुझे शर्त लगा कर बोल सकता हूँ मेरी बहन से ज्यादा इस संसार में तुझे कोई प्यार नहीं कर सकता है। तेरे लिए वह अपनी जान तक दे सकती है और तू उसे ही धोखा दे रहा है। लेकिन राम ने फिर भी सच नहीं बताया किसी को भी। राम घर गया तो गंगा अपेक्षा को घर पर बुला कर बैठा रखा था। गंगा ने बड़ी ही सरलता से उससे बात की थी। जब तक राम घर वापस आया था गंगा ने अपेक्षा को चाय पानी सभी कुछ दे दिया था। गंगा को अपेक्षा ने नफरत तो हो रही थी लेकिन उस वक्त वह उसके घर पर महमान थी। गंगा ने उससे प्यार से ही बात करनी चाही थी उस वक्त। जैसे ही राम ने अपेक्षा को घर पर बैठे हुए देखा उसके तो होश ही उड़ गए थें गंगा ने राम के सामने अपेक्षा से पूछा क्या है तुम दोनों का रिश्ता अपेक्षा ने बोला राम तो मेरे बड़े भाई जैसे हैं। फिर भी आपको अगर हमारे ऊपर शक है तो मैं राम को राखी बांधने को तैयार हूँ। शायद तभी आपको हमारे ऊपर विश्वास होगा। अपेक्षा वहाँ से उठी और राम का हाथ पकड़ कर मंदिर में ले गई। फिर उसने देवी माँ के सामने से सिंदुर उठाया और राम को माथे पर टीका लगा दिया और पर्स में से राखी निकाल कर राम की कलाई पर बांध दी। राम ने भी सीना तान कर बोला अब तो

तुझे भरोसा हो गया होगा, हमारे ऊपर। उस वक्त गंगा खुद को कोस रही थी। उसने राम और अपेक्षा से मॉफी मांगी और बोली मुझे मॉफ कर देना मैंने इतने पवित्र रिश्ते पर शक किया। गंगा मन ही मन भगवान् से मॉफी मांग रही थी। गंगा मन ही मन सोच रही थी कि, कोई भी इंसान कितना भी झूठ बोलेगा लेकिन भगवान के सामने खडे होकर कभी झूठ नहीं बोलेगा। लेकिन फिर भी दिल के किसी कोने में कुछ था जो गंगा को परेशान कर रहा था। गगां ने उन लोगों की बातों पर तो भरोसा कर लिया था लेकिन फिर भी राम की आँखें कुछ और ही बता रही थीं। गंगा ने अपनी माँ को फोन करके यह सब बताया तो उन्होंने कहा वह झूठ बोल रहा है। उसे यह पता है कि, वह तुझे कैसे बेवकूफ बना सकता है। यहाँ पर उसने ऐसा कुछ नहीं कहा और उसकी आँखों में चोर था, जिस वक्त हमने तेरा नाम लिया था उसके सामने। गंगा ने अपनी माँ को कहा मम्मी उसने मंदिर में खडे रहकर यह सब बोला है। गंगा की माँ ने कहा अपन ध्यान रखना बेटा। उस बारे में गंगा ने राम से फिर कभी कोई बात नहीं की लेकिन शायद भगवान गंगा के ही साथ थे। एक दिन फिर उसने राम के मोबाईल में एक संदेश देखा। वह संदेश बहुत ही अशलील था। वह संदेश अपेक्षा ने ही भेजा था। उसे (गंगा) अपनी माँ की बात याद आने लगी। गंगा ने राम को उस संदेश के बारे में पूछा तो वह बोला उस दिन तो बहुत नाटक कर रही थी तू मॉफी मांगने का, तो फिर आज क्या हो गया। गंगा चिल्ला कर बोली हाँ मुझे फिर से शक हो रहा है कौन बहन अपने भाई को यह सब लिखती है जो उसने लिखा है। क्या पूजा भी यह सब लिखती है तुझे । राम की आँखें यहाँ वहाँ घूम रही थी गंगा ने राम को बोला यहाँ जा रहा है राम ने गंगा को झटका देते हुए बोला मरने जा रहा हूँ और राम चला गया। गंगा राम का इंतजार करती रही लेकिन ना उसने फोन किया और न ही वह शाम तक घर आया। रात को वह घर आया तो गंगा ने कुछ नहीं बोला उसो। गंगा अमन के लिए फल काट रही थी उसने राम को भी पूछा फल खाना है क्या ? उसने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और बोला जहर दे दे मुझे। यह सुनकर गंगा ने बोला यह क्या तरीका है बात करने का। अगर गलती की है तो उसे कबूल करने की हिम्मत रखो। वह अंदर कमरे में गया चिल्लाता हुआ और आकर बोला मुझे तेरे से तलाख चाहिए। यह सुनकर गंगा के पैरों तले जमीन सरक गयी। गंगा के हाथ में फलों का टोकरा था उसने वह जमीन पर फैंकते हुए कहा तलाक तो नहीं मिलेगा तुझे और क्यों चाहिए। उसने कहा क्योंकि तू दुखी हे मेरे साथ। हम अलग हो जायेंगे तो फिर तू खुश तो रहेगी। गंगा ने कहा मैं तेरे साथ ही रहना चाहती हूँ लेकिन जो भी कुछ तेरा चल रहा है वह सब छोड़ दे । मेरी तरफ और अमन की तरफ ध्यान दे। अगर तेरे कदम बहक भी गए हैं तो कोई बात नहीं मैं सब कुछ भूलने को तैयार हूँ। कभी—कभी गलती हो जाती है इंसान से तेरे से भी हो गई

होगी। लेकिन हकिकत यही है कि तू शादी शुदा है और एक बच्चे का बाप भी है। मैं तेरी मदद करूंगी अपेक्षा को भुलाने में। हम फिर से नए सिरे से अपनी जिंदगी को शुरू करेंगे। अपेक्षा तेरा प्यार नहीं है। राम काफी देर से सुनता चला जा रहा था और खड़ा हो गया और फिर गंगा को पकड़ा और दीवार तक घसीटते हुए ले गया और उसके मुंह को जोर से दबाते हुए बोला हाँ मैं प्यार करता हूँ अपेक्षा से बोल तू क्या करेगी मेरा। मुझे तेरे से तलाक चाहिए बस। अब मैं तेरे साथ रहना नहीं चाहता हूँ। गंगा ने बोला इसका मतलब उस दिन तुम दोनों ने मिलकर मुझे पागल बनाया था। राम बोलने लगा मेरी वजह से तू दुखी है हे ना। तो फिर मैं आज जाकर मर जाता हूँ तू आराम से रहना यहाँ पर अपने बेटे के साथ। गंगा ने कहा तो क्या यह तेरा बेटा नहीं है। राम ने कहा नहीं, मुझे नहीं पता यह किसका बेटा है किसका खून है। गंगा ने उसे जोर से पीछे धक्का दिया और बोली तू मेरे चरित्र पर अंगूली उठा रहा है तो फिर आज फैसला होकर ही रहेगा। अब मैं कल जाकर तुम दोनों का DNA Test करवाऊंगी फिर मैं देखती हूँ यह किसका खून है। और आज तूने मुझे आखिर दिखा ही दिया तेरे अंदर तेरी माँ का ही खून है जो आज तक भी तेरी माँ पराए मर्दों के साथ हमबिस्तर होती है। यह वजह थी जो मेरा परिवार इस शादी के खिलाफ था। लेकिन मुझे लगा माँ के कर्मों की सजा मैं बेटे को क्यों दूं। लेकिन उस वक्त मैंने यह नहीं सोचा था कि बेटा भी बदचलना निकलेगा। अब गंगा को अपना घर संसार उजड़ता हुआ नजर आ रहा था। वह फूट – फूट कर रो रही थी और उसका बेटा अमन भी अपनी माँ से लिपट कर रोने लगा था। राम वहाँ से चला गया और गंगा उसे पुकारती ही रह गई। राम ने राजीव को मेसेज किया मैं अपनी जिंदगी खत्म कर रहा हूँ कल अपनी बहन को आकर ले जाना। राजीव ने राम को फोन किया लेकिन उसने फोन नहीं उठाया। राम पहले भी आए दिन मरने की धमकियाँ देता रहता था लेकिन जब भी गंगा ने उसके माता पिता को बताया तो उन लोगों ने यह बोल कर पीछा छुड़ा लिया कि यह तुम पति–पत्नि के बीच का मामला है हम क्या करें। गंगा रात भर राम का इंतजार करती रही लेकिन वह नहीं आया। अमन भी अपने पापा के बारे में पूछते हुए सो गया। राम सुबह वापस घर आया और आते के साथ उसने पागल पन का नाटक करना शुरू कर दिया। वह बंदर की तरह उछल रहा था और बंदर की तरह आवाजें निकाल रहा था। वह बार बार बोल रहा था कि मैं तेरा दोषी हूँ, मैं पागल हूँ। गंगा बार–बार उसे पकड़ने की कोशिश कर रही थी लेकिन उस दिन वह काबू में नही आ रहा था। उसने अमन को भी अपने ही तरह कूंदने को बोला। अमन तो बच्चा था उसे ऐसा लगा रहा था कि, उसके पापा उसके साथ खेल रहे हैं। राम हँसता चला जा रहा था। उसके बाद उसने गंगा का डुपट्टा लिया और जोर से गले में दो गांठे मार लीं। गंगा जोर से चीखी और उसका दुपट्टा

खोला। गंगा के सारे नाखून भी टूट गए थे। वह गंगा को बहुत परेशान कर रहा था उस दिन। गंगा ने अपने भाई–भाभी को बुला लिया था। कभी वह लाईट बोर्ड में अंगूली घुसाता था। कभी बैड से फुटबोल की तरह नीचे गिर रहा था। कभी वह सोफे के नीचे घुसने की कोशिश कर रहा था। अपने दोनों हाथों से अपने गालों पर जोर–जोर से थप्पड़ मार रहा था। गंगा ने अपने सास–ससुर को यह सब बताया और बोला आप लोग आ जाईए यहाँ पर। मेरे से यह संभाला नहीं जा रहा है। वह घर में पैरों से नहीं चल रहा था बंदर की तरह उछल–उछल कर चल रहा था। कभी वह तकिये को अपने मुँह पर रखकर देख रहा था कि सांस कितनी देर में घुट सकती है । गंगा उसके आगे पीछे घूम रही थी वह उसे एक सेकेंड के लिए भी अकेला नहीं छोड़ रही थी। जैसे उसने देखा कि गंगा का भाई, भाभी और उसका एक मित्र घर पर आए हैं वह उन लोगों से आराम से बातें करने लगा, यहाँ तक कि वह उन लोगों के लिए पानी तक लेकर आया ट्रे में रखकर। गंगा घबरा गई थी। वह डरी हुई अंदर के कमरे में बैठी थी। राम उसके पास दबे पावँ आया और आकर उसकी तरफ से 'भो' किया। गंगा एक दम डर से चिल्ला पड़ी। राम ने उसकी तरफ इस नजर से देखा (जैसे कि किसी भूतिया फिल्म में भूत देखता है किसी को) कि गंगा सिसक गई। (राम) वह उसे बोला तू डर रही है मुझसे – यह बात उसने अपनी आवाज बदल कर बोली और कहने लगा तेरे भाई को वापस भेज दे मुझे यहाँ कोई नहीं चाहिए। अमन यह सब नाटक देख रहा था लेकिन बाद में अमन को भी डर लगने लगा था अपने पापा से। राम ने तालियाँ बजाना शुरू कर दीं और बोला कैसी लगी मेरी ऐक्टिंग बिलकुल असली लग रही थी हैं ना। तू डर गई थी आज मैनें तुझे देखा था। तेरी आँखों में डर था आज। बाद में बोला आज तो मैं बोलीवुड के सबसे उत्तम सीतारे से भी अच्छी ऐक्टिंग कर रहा था। अगर आज वह यहाँ पर होता तो वह मुझे बेस्ट ऐक्टर ऐवॉड ही दे देता। यह सुनकर गंगा का दिमाग खराब हो गया था। गंगा ने राजीव को बोला तू अपने ऑफिस चला जा। यह तो अब ठीक है। लेकिन राजीव नहीं गया। उसने कहा मैं तुझे इस पागल के साथ कैसे छोड़ सकता हूँ। तभी रमेश भी आ गया घर पर। गंगा बाहर वाले कमरे में बैठी हुई थी अपने भाई – भाभी के साथ। राजीव का दोस्त राज अंदर की तरफ रसोई में आया और उसने देखा कि रमेश और राम एक दूसरे को अंगूछा दिखा रहे थे। रमेश बहुत अच्छी गुजराती में बोल रहा था साईक्लोजीकली तू बिल्कुल सही जा रहा है ऐसे ही करते रहना। जैसे ही रमेश ने देखा कि राज अंदर आया है वह चुप हो गया। राजीव और राज को पता चल गया था कि यह लोग गंगा को जानबूझ कर डराने की कोशिश कर रहे हैं। उस दिन न तो घर पर खाना बना था और ना ही किसी ने कुछ खाया था उस दिन जैसे ही रात होने को आई उसने फिर से गंगा के सामने मरने का नाटक शुरू कर दिया था। लेकिन

ऐसा नाटक वह सिर्फ गंगा के सामने ही करता था। दूसरों के सामने तो वह बिल्कुल ठीक रहता थां राजीव अब थक चुका था उसने कहा मैं अब जाना चाहता हूँ। तो गंगा ने उन्हें भेज दिया। उसने राम की बूआ फूफा और उनके बेटे को बुला लिया था उस दिन। जो राम को पता नहीं थीं राम ने उस दिन तय कर लिया था कि वह आज रात को गंगा और अमन को मौत के घाट उतार देगा लेकिन ऐसा हो नहीं पाया। जैसे ही उसने उन लोगों को देखा तो उसने गंगा को जोर से धक्का देते हुए पूछा क्यों बुलाया है तूने इन लोगों को यहाँ पर मैंने मना किया था ना तुने फिर भी बुला लिया। गंगा के पैर में चोट भी आ गई थी लेकिन राम को क्या फर्क पड़ता था। रात को गंगा उसे बार–बार बुला रही थी सोने के लिए लेकिन वह आ नहीं रहा था। गंगा को उसने बोल दिया सोने के लिए। गंगा को उस दिन उससे इस तरह डर लग रहा था मानों कोई पागल, पागलखाने से भाग कर उसके घर आ गया हो। गंगा बिना पलक झपकाऐ राम के ऊपर नजर रखे हुए थी। वह बार–बार अंदर आता था और जाकर अपने बूआ फूफा को देखता था वह सो रहे हैं या नहीं। जैसे ही वह गंगा के करीब आता था गंगा को राम से डर लगता था । वह बार–बार गंगा को बोल रहा था बेडरूम का दरवाजा बंद कर ले। लेकिन गंगा ने नहीं किया। कब तक गंगा जगी रहती उसकी एक दम से आँख लग गई और कुछ आवाज आई तो अचानक से आँख खुली और उसने देखा कि राम की आँखें लाल हो रखी थीं। उसके मुंह से थूक बह रहा था। वह ठीक से भी खड़ा नही हो पा रहा था। वह इस तरह हिल रहा था जैसे शराबी झूमता है और उसके हाथ में तकिया लगा हुआ था। कभी वह अमन की तरफ बढ़ता था कभी गंगा की तरफ। यह देख कर गंगा झटके से उठ कर बैठ गई और एक दम से बोली यह क्या कर रहा है। तू यहाँ क्यों खड़ा है। वह धीरे–धीरे हँसता हुआ बोला तू डर गई ना मेरे से। तुझे क्या लगा मैं तुझे मारने आया हूँ। गंगा का दिल जोर–जोर से धड़क रहा था। वह वापस जाकर बालकनी में कुर्सी पर बैठ गया और बढ़बढ़ाने लगा। मैंने गंगा की जिंदगी बरबाद कर दी है। मुझे जीने का कोई अधिकार नहीं है। मेरे छोटे–छोटे–छोटे .... छोटे टुकडे करके गंगा के सामने डाल देने चाहिए फिर भी उसे कोई फर्क नहीं पडेगा। फिर भी वह यही बोल रही होगी कि, मैं तेरे साथ रहना चाहती हूँ। वह अचानक तेजी से उठकर आया और गंगा के पैरों को कस के पकड़ लिया। उसने (गंगा) अपने पैरों को छुडाने की बहुत कोशिश की लेकिन उसने नहीं छोडें। राम का हाथ ऊपर की तरफ बढ़ता ही जा रहा था और वह गंगा को घूर–घूर कर भी देख रहा था। गंगा ने उसे हटने को कहा लेकिन वह नहीं हटा। गंगा जोर से चीखी तो उसके बूआ फूफा एक दम भाग कर आ गए और गंगा झट से बैठ गई और रोने लगी। उसने अमन को भी एक दम से अपनी और खींचा और अमन को पकड़ कर बैठ गई। गंगा ने बूआ को बोल इसे बाहर ले

जाओ अपने कमरे में। वह उसे बाहर ले गई और गंगा ने अंदर से कुंदी लगा ली। वह बहुत डर गई थी। जैसे ही सुबह हुई उसने पूनम को यह सब रामायण बात दी और पूनम, रमन के साथ सूरत आ गई गंगा के पास । रास्ते भर रमन ने पूनम का दिमाग खराब कर दिया था। तेरी बहन की वजह से उसका पति पागल हो गया है। गंगा ने राम के माता–पिता को फिर से फोन किया लेकिन वह लोग तो आने को ही तैयार नहीं थे। राम की माँ ने बोला हम वहाँ नहीं आएंगे वो तो अब पागल हो गया है। हमारे हिसाब से वह मर गया है। गंगा ने अपनी सास को बोला कैसी माँ हो तुम यहाँ पर तुम्हारा बेटा पागल हो रहा है या फिर वह पागल बनने का नाटक कर रहा है और आप लोग यहाँ आने को ही तैयार नहीं है। गंगा ने बोला अगर आप यहाँ नहीं आएंगे तो मैं वहाँ आ जाऊंगी राम को लेकर। गांग ने जब धमकी दे दी। अपनी सास को और उसने उनके सामने मिनतें करी तब जाकर वह लोग सूरत आने को तैयार हुए। गंगा ने राजीव को बोला इसे किसी डॉक्टर के पास ले जाओ इसके दिमाग पर कुछ असर हो रहा है। राजीव गुस्सा होकर बोला उसे कुछ नहीं हुआ है वह बिल्कुल ठीक है। वह तेरे सामने पालगपन का ड्रामा कर रहा है। वह सिर्फ तुझे पागल करना चाहता है और उसका पूरा परिवार उसमें शामिल है। दूसरों के साथ तो वह बिल्कुल ठीक रहता है। गंगा ने बोला जो भी है एक बात तो तुम लोग उसे डॉक्टर के पास ले जाओ। राजीव अपने दो तीन मित्रों को लेकर उसे बहला कर डॉक्टर के पास ले गए। पहले राम को बोला गया था कि, वह लोग किसी मित्र को मिलने जा रहे हैं तो तू भी हमारे साथ चल। राम खुश होकर उनके साथ चला गया। लेकिन वह लोग उसे डॉक्टर के पास लेकर गए थे। ज बवह लोग वहाँ पहुँचे तो राम चिल्ला कर राजीव तुने मुझे धोखा दिया है। मैं तुम लोगों को छोडूंगा नहीं। तुम लोग मुझे डॉक्टर के पास लाए हो। डॉक्टर ने राजीव से अकेले में बात करने की बात बोली और राम को बाहर भेज दिया। डॉक्टर ने राजीव से पूछा यह लड़का ड्रग्स लेता है क्या? राजीव ने मन कर दिया और बताया मैं इसे पिछले आठ सालों से जानता हूँ लेकिन ऐसा कभी देखा नहीं कुछ। डॉक्टर ने बताया इसे कोई बीमारी नही है। इसे देखने के बाद ऐसा लगता है कि इसे किसी बात का कोई डिपरेशन है। सिर्फ इसे डिपरेशन की दवाई की ही जरूरत है सिर्फ । लेकिन अपने जो कुछ भी इसके बारे में मुझे बताया है यह एक ही वजह से होता है। या तो इसांन बहुत एक्सट्रीम में पागल हो जो यह नहीं है या फिर वह ड्रग्स लेता हो और आप कहते हैं ऐसा भी नहीं है तो यह लड़का आप सब के सामने ड्रामा कर रहा है। यह आपकी बहन से पीछा छुड़ाना चाहता है और कोई बात नहीं है। इस बात में तो मैं या कोई भी डॉक्टर नहीं कर पाएंगे। हाँ , मैं आपकी बहन से भी बात करना चाहता हूँ कंही उनका व्यवहार ऐसा तो नहीं है जिस वजह से यह उन्हें छोड़ना चाहता है। राजीव ने गंगा की तरफ से बोला मेरी बहन

जैसी पत्नि नसीब वालों को ही मिलती है। अब इसे कोई दूसरी औरत अपने जीवन में लानी है। डॉक्टर ने कहा मुझे सारी कहानी समझ आ गई है। यह लड़का बहुत ही शातिर है। अपनी बहन को बोलना इस लड़के से होशियार रहे। डॉक्टर ने राम के भाई और पिता के बारे में भी पूछा। वह लोग क्यों नहीं आए इसे लेकर यहाँ पर। राजीव ने बताया पिता को आना नहीं था और भाई ने कहा मेरे पास समय नहीं है। वह लोग वापस आ रहे थे तब राम ने फिर से उन लोगो ंके सामने ड्रामा किया और बोलने लगा गंगा के अंदर तो कोई भी आकर्षण नहीं है। मुझे तो उसके साथ बिस्तर में लेटने में मजा ही नहीं आता है। ऐसी मोटी भैंस के साथ कोई भी शारीरिक संबंध कैसे बना सकता है। मुझे तो अपेक्षा जैसी लड़की चाहिए थी। लेकिन गंगा अब वैसी नहीं रही। राम राजीव के दोस्तों को हाथ मार–मार कर बोल रहा था अगर तुम्हें मेरी बात का भरोसा न हो ता आज घर पर आकर उसका शरीर देखना वह तरबूजे जैसी हो गई है। राजीव गाड़ी चला रहा था उसे बहुत गुस्सा आ रहा था लेकिन डॉक्टर के कहने पर वह चुप था। राम गंगा को उसके सामने (राजीव) बेईजत कर रहा था और राजीव से यह सब सहन नहीं हो रहा था और वह अपने ऑफिस चला गया। उसके बाद गंगा की माता भी उसको मिलने आई थी लेकिन उनके सामने तो वह बिल्कुल ठीक था कोई तकलीफ नहीं थी। राम एक मिनट या एक भी सेंकेड ऐसी नहीं छोड़ता था जिस वक्त वह गंगा को मानसिक तनाव नही देता हो। उसने अपना गोल (तारगेट) गांग को ही बना रखा था। उसने गंगा से पीछा छुड़ाने के लिए साम दाम दंड भेद सभी का प्रयोग कर लिया था। जिसमें उसके परिवार का पूर्ण रूप से सहयोग था। अब तो हालात यह हो गए थे कि गंगा को अपना जीवन बोझ लगने लगा था लेकिन फिर भी वह सब कुछ सहन करती चली जा रही थी वह भी सिर्फ अपने बेटे के लिए और अपने परिवार के लिए। वह हर पल सिर्फ भगवान से यही प्रार्थना करती थी कि हे भगवान अब तो मेरी परेशानियाँ आप ही दूर करें और आप ही कोई रास्ता निकालें।

राम के पिता गंगा को बोलते रहते थे कि तुम राम को छोड़ दो। वह तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहता है। जब गंगा बोलती थी कि आपकी खुशी के लिए मैं उसे छोड़ दूंगी लेकिन सिर्फ सच्चाई के साथ। आपके झूठों के साथ नहीं। वह लोग गंगा पर दवाब डाल रहे थे कि, वह समाज में लोगों को यही बोले कि, वह राम से छुटकारा पाना चाहती है क्योंकि राम की नौकरी छूट गई है और वह मेरे खर्चे उठा नहीं पा रहा है। गंगा बोलती थी लेकिन यह तो झूठ है । सच्चाई तो यह है कि आपका बेटा अपेक्षा के साथ अपना रिश्ता बनाना चाहता है। तलाक राम को चाहिए मुझे नहीं । उसकी बात सुनकर राम के माँ–बाप गंगा को कहते थे कि, वैसे तो तुम प्यार करने का नाटक करती हो और

अपने प्यार की खुशी भी तुम उसे नहीं दे सकती हो– राम के पिता का ऐसा कहना था। अगर राम को प्यार करती हो तो तुम उसे छोड़ दो और परेशान मत करो हमारे बेटे को। गंगा ने जवाब दिया वह सिर्फ आपका बेटा नहीं है वह मेरा पति भी है और मेरे बेटे का पिता भी। काश भगवान ने थोड़ा सा दिमाग आप लोगों को भी दे दिया होता तो शायद आज आपका बेटा ऐसा नहीं होता । अब गंगा के सब्र का बांध टूटने लगा था। फिर भी गंगा राम को डिपरेशन की दवाईयाँ अपने हाथों से खिलाती थी। लेकिन वह उसे थूंक देता था। गंगा उसे फिर से खिला देती थी। और एक रात को राम ने बोला मुझे बाहर घूमने जाना है। गंगा ने उसे मना भी किया था लेकिन वह फिर से बंदर बनकर उसे दुखी करने लगता था कभी वह अमन की साईकिल को ही पैर से धकलने लगात था। यह सब देख कर वह उसके साथ चली गई। लेकिन उसे डर भी लग रहा था। अमन घर पर ही था राम के माँ –बाप के पास। गंगा ने चुपचाप से अपने भाई को फोन करके सब कुछ बता दिया और बोला मैं बाहर जा रही हूँ। तू घर पर आ जाना कृप्या, राजीव ने कहा कोई बात नहीं मैं चला जाता हूँ। बस तू अपना ध्यान रखना। राम सुनसान रास्ते से उसे लेकर जा रहा था जहाँ बसें भी चल रही थीं। चलते–चलते राम ने गंगा को एक दम से धक्का दिया और गंगा रोड़ की तरफ चली गई। पीछे से बस वालों ने बस को संभाला और बोला आराम से चलो मरना है क्या ? राम एक दम से बोला अरे गंगा सॉरी गलती से धक्का लग गया था। गंगा ने बोला अब घर चलते हैं काफी देर हो गई है। घर से थोड़ी दूर फुटपाथ पर वह बैठ गया और बोला मैं थक गया हूँ थोड़ी देर बैठ कर जातें हैं। रात के 12:30 बज चुके थे । वहाँ पर सन्नाटा भी था। पास में ही झुंड में कुछ लड़के जा रहे थे वह गंगा की तरफ देखते जा रहे थे। वह राम को समझा रही थी सब कुछ ठीक हो जायेगा तू चिंता मत कर। मैं तेरे साथ हूँ। भगवान हमारी परीक्षा ले रहें हैं। उसको भी हम पार कर जायेंगें । गंगा इधर उधर भी देख रही थी उसे अंधेरे से डर भी लगता था। लेकिन उस समय उसे अपने पति की हिम्मत बनना था ऐसा गंगा को लगता था। हकिकत तो यह थी कि राम और उसका परिवार गंगा को पागल करने करने की कोशिश कर रहे थें । सब कुछ एक प्लान के हिसाब से ही होता था। वह गंगा को पागल करार दिलवाना चाहते थे और इसके सहारे तलाक दर्ज कर देते वह लोग।

गंगा रोड की दूसरी तरफ देख रही थी और तभी राम ने चुपचाप से धीरे से गंगा के कंधे पर हाथ रखा। गंगा एक दम से डर गई लेकिन उसने राम को महसूस नही होने दिया। राम ने अपनी गर्दन इस तरह गंगा की तरफ घुमाई जैसे डरावनी फिल्मों भूत अपनी गर्दन घुमाता है, धीरे से उसने अपनी आँखों की पुतिलियाँ कोने मे कर लीं थी और वह धीरे से हंसने लगा। गंगा उसका यह रूप देख

कर डर गई थी लेकिन फिर भी वह उसकी तरफ हंसके ही बात कर रही थी। राम बोला तू डर गई थी ना। राम गंगा के बारे में जानता था कि गंगा डरावनी फिल्में नहीं देखती है उसे डर लगता है। गंगा ने बोला नही ंतो ऐसा तो कुछ भी नहीं है। अब गंगा राम की हर बात में हाँ में हाँ मिलाती रहती थी। अगर वह रात को दिन कहता था तो वह उसे दिन ही कहती थी। अगर वह दिन को रात कहता था तो वह रात ही कहती थी। वह अमन को भी फूटबोल की तरह फैंक देता था। गंगा फिर भी उसे कुछ नहीं कहती थी। वह अमन को ही चुप करा लेती थी। राम और उसकी माँ हर व्यक्ति को गंगा के खिलाफ मनगडंत झूठी कहानी सुनाते रहते थे चाहें वह उनके घर की नौकरानी हो या फिर वहाँ का चौकीदार हो या फिर वहाँ पर रहने वाले आस पास के लोग हों। हर वक्त वह गंगा को मारने की धमकी देता रहता था और गंगा डर जाती थी फिर वह गंगा से अपने हिसाब से काम करवा लेता थां राम ने एक महने के अंदर तीन बार मरने की कोशिश की थी। गंगा हर बार उसे बचा लेती थी। वह उसे समझाती भी थी वह भी बडे आराम से। जरा अमन के बारे में सोच इसका क्या होगा अगर तूने ऐसा कुछ भी किया तो । क्या तुझे पता है मुझे अमन के स्कूल फीस भरने के लिए भी लोगों के सामने हाथ फैलाने पडेंगे। क्या कभी सोचा है कि तेरे बगैर हमारा जीवन नर्क हो जायेगा। मैं तो कमाती भी नहीं हूँ। एक दम से राम बोला तो जाकर कमा ले तू तो जवान है, खूबसूरत है तुझे तो बहुत सारे मर्द मिल जायेंगें एक ही रात में लाखों कमा सकती है। गंगा ने उसे बोला तो फिर शायद तेर माँ और बहन यह करते होंगे हैंना। इसलिए तू मुझे भी यह सलाह दे रहा है तू पति नहीं दलाल है और अगर मैं इतनी ही खूबसूरत हूँ तो तुझे क्या हो गया है। जब से हमारी शादी हुई है हर रोज पता नही कितनी बार तूने मेरा शारीरिक शोषण किया है। अपेक्षा तो मेरी फटी हुई जूती के भी लायक नहीं है और उसे तूने अपने दिल की रानी बना रखा है। तू एक बच्चे का बाप है तुझे शर्म आनी चाहिए। गंगा ने अपना दिमाग शांत किया और राम का हाथ पकड़ कर उसे समझने लगी अब तू कॉलेज में जाने वाला बच्चा नही हे। तेरी कुछ जिम्मेदारियाँ हैं हमारे प्रति। उन्हें हम दोनों को मिल कर ही पूरा करना है, यह बात तुझे समझनी होगी। अगर हमारी शादी नहीं होती तो मैं खुद तेरी शादी अपेक्षा से करवा देती लेकिन अब यह नहीं हो सकता है। अगर फिर भी तुझे जिंदगी की सच्चाईयाँ समझ नहीं आ रही हैं तो जाकर ले आ उसे यहाँ पर और कर ले शादी। मैं समझूंगी वह मेरी छोटी बहन है लेकिन मैं अपने बेटे के सिर से बाप का साया हटने नहीं दुंगी । मैं अपने बेटे के लिए यह भी सहन कर लूंगी। इस पर राम बोला नहीं। मुझे हम दोनों के बीच में तू या तेरा बेटा नहीं चाहिए। गंगा ने राम को पूछा मुझे एक बात सच–सच बता देना क्या मेरे लिए भी तूने यह सब किया था अपने घरवालों के सामने राम बोला 'हाँ' ऐसा ही किया था और एक बात और

मैं तुझे बता देता हूँ शायद तब तू मुझे छोड़ दे। मेरी मम्मी और जीजा ने तेरे ऊपर काले जादू करवाए हुए थे ताकि तू हमारे कब्जे में आ जाए। तुझे तो हम अपने धंधे पर बैठाना चाहते थे। लेकिन तूने तो बच्चा ही पैदा कर लिया। हमने तेरे बच्चे को मारने के लिए बहुत कुछ किया लेकिन तू हर बार मनन को बचा लेती थी। तेरा नसीब अच्छा था। उस दिन भी तू बच गई थी जिस दिन तू चारपाई से गिरी थी। तेरे पेट पर जो धागा बांधा था वह मामूली नहीं था और न ही जो अमन को मम्मी ने बंधवाया था पौने तीन साल में वह सब तेरे बच्चे को मारने की साजिश थी। गंगा ने उसे बोला फिर भी तो हम दोनों जिंदा है क्योंकि भगवान हमारी मदद हमेशा करते हैं। अब गंगा से और सहन हो रहा था उसने कहा अब तो चुप हो जा और कितना धोखा देगा तू मुझे । राम बोला अरे अभी तो और भी है तुझे बताने के लिए वह तो सुन ले, (राम गंगा और अमन का दुश्मन बन चुका था) गंगा यह सब सुनकर रोती चली जा रही थी और उसका B.P कम हो रहा था लेकिन राम को क्या फर्क पड़ता था। वह तो बोलता ही चला जा रहा थां तुझे काजल याद है! गंगा ने कुछ नहीं बोला सिर्फ उसकी तरफ देखा। वह रोते–रोते बोल रही थी। अब चुप हो जाओ मैं अब सहन नहीं कर पा रही हूँ। राम फिर भी बोल रहा था हमारा रिश्ता तो सुन ले हमारे बीच मे ंवही रिश्ता था जो हमे दोनों के बीच है – शरीर का रिश्ता। गंगा अचानक से जमीन पर गिर गई। राम ने अपनी माँ को फोन करके बताया तो वह बोली अब इसे इसके माईके भेज दे। इतना सुनने के बाद वह तेरे साथ सारे रिश्ते तोड़ देगी। लेकिन अभी तो होश में ले आ और इससे मांफी भी मांग लेना, नहीं तो वह जाऐगी नहीं यहाँ से। राम ने गांग को पानी दिया और उसके सिर को अपनी गोद में रख कर उसे सहलाने लगा। अमन भी अपनी माँ को प्यार करता रहा अपने छोटे–छोटे हाथों से। गंगा चिंता की वजह से बेहोश हो गई थी। उसे चिंता की वहज से चक्कर और उलटियाँ होती जा रही थीं। पूरी रात ऐसे ही निकल गई । अगले दिन राम ने गंगा की भाभी (रीटा) को घर पर बुला लिया और उसकी मौसी को भी बुला लिया। जब गंगा सो रही थी तो रीटा उसी के पास बैठी थी और अमन भी। राम के साथ बाहर कमरें में उसकी मौसी को बोल रहा था कि उसने मुझे अपना नौकर बनाकर रखा हुआ है। पानी भी मैं ही उसे ला कर देता हूँ। बाथरूम में गीजर भी मैं ही चालू करता हूँ। बच्चे को भी मैं ही संभालता हूँ। उस महारानी को तो सिर्फ सोना ही आता है। वह मेरे माता–पिता की भी इज्जत नहीं करती है वगैरहा–वगैरहा बोलता रहा। बाद में बोला मौसी जी आप यह सब गंगा को मत बोलना नही ंतो वह मेरा जीना हराम कर देगी। जब गंगा उठी तो राम अंदर गया और गंगा से मॉफी मांगने लगा और बोला, मुझे मॉफ कर दे मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। मुझे नहीं मालूम मैं अपेक्षा की तरफ कैसे झुक गया ओर मेरे मन में उसके लिए ऐसे जजबात आ गई लेकिन अब मैं

बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया है। आज के बाद हमें कोई अलग नही कर पाएगा मैं अपने बच्चे की कसम खाता हूँ। अब मैं एक अच्छा पिता और पति बनकर दिखाऊंगा कृप्या मुझे एक मौका दे दे सुधरने के लिए। मैं वादा करता हूँ इस बार ऐसा कुछ नहीं होगा तेरे साथ। मैं पूनम और राजीव से भी मॉफी मांग लूंगा। यह सुनकर गंगा को जैसे दूसरा जन्म ही मिल गया। उसने राम को गले से लगाते हुए बोला, मुझे खुशी है कि तेरी तबियत ठीक हो गई और तुझे अपनी गलती का एहसास भी हो गया। आज से हम दोनों अपना नया जीवन शुरू करेंगे। हम ऐसा सोचेंगे जैसे आज ही हमने शादी की है। तू भी भूल जा मैं भी भूल जाती हूँ। मैं जिम जाना शुरू कर दुंगी। मैं मोटी हो गई हूँ ना तो कोई बात नही मैं वापस पहले वाली गंगा बन जाऊंगी। गंगा उसको गले लग कर बहुत रो रही थी और बोल रही थी, पिछले कुछ दिनों जो भी कुछ हुआ था हमारे साथ मैं बहुत डर गई थी वह सब देख कर। मुझे ऐसा लगता था जैसे किसी ने मेरी आत्मा को मेरे शरीर से निकाल कर अलग कर दिया है। राम भी रोता जा रहा था। गंगा ने फिर उसे चुप करते समय अपनी कॉलेज टाईम की माला निकाली और उसे बोला। इस माला में तू फिर से गांठ लगा दे। अब यह गांठ उस दिन खुलेगी जिस दिन भगवान् हमें एक दूसरे से अलग करेगा गंगा धीरे–धीरे उठी उसे बहुत कमजोरी हो रही थी। उसने एक डब्बे में से लम्बी सी काले मोती वाली माला निकाली और राम को पकड़ाती हुई बोली इसमें गांठ लगा कर मुझे पहना दो। राम ने उस माला में गांठ मार दी और गंगा के गले में जैसे ही डाली वह गांठ अपने आप खुल गई। यह देख कर गंगा एक दम से डर गई और एक ही सेकेंड में उसे फिर से राम के ऊपर शक हुआ कहीं यह सब उसका नाटक तो नहीं है। एक ही पल में उसने सोचा मैं यह क्या सोच रही हूँ अगर मैं उसपर भरोसा नहीं करूंगी तो फिर आगे कैसे बढ़ूंगी। शायद गांठ ठीक से नहीं लगी होगी। गंगा ने फिर से गांठ लगाई लेकिन वह फिर से खुल गई। गंगा ने इस बार माला को गले से उतार कर वापस वहीं रख दिया जहाँ से निकाली थी। गंगा के मन में एक चिंता जरूर हो गई थी लेकिन फिर उसने सब कुछ समय पर छोड़ दिया। अब गंगा के मन में इस इंतजार ने जगह बना ली थी एक न एक दिन हमारे जीवन में खुशियाँ जरूर आएंगी देर से ही सही। उस दिन घर में शांति रही। गंगा ने पूनम को फोन किया और बताया दीदी आज मैं बहुत खुश हूँ। राम वापस मेरे पास आ गया है उसने मेरे से और अमन से मॉफी भी मांगी है। पूनम को कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। उसने गंगा को बोला एक दम से वह बदल कैसे गया। तू उस पर नजर रख मुझे तो यह भी एक उसका नाटक ही लग रहा है। वह बोली तू बहुत भोली है गंगा और वह परिवार तेरा फायदा उठा रहा है। गंगा ने पूनम को बोला अगर मैं भरोसा करना ही नहीं चाहूँगी तो मैं उसे कभी मॉफ नहीं कर पाऊंगी। एक बात और कल तीनों

अहमदाबाद जा रहे हैं मम्मी के पास। पूनम ने चौंक कर बोला अचानक से ? पूनम ने फोन तो रख दिया परंतु थोड़ी चिंता भी हुई । वह सोच रही थी कुछ तो है जो हमें दिखाई नहीं दे रहा है।

अगले दिन राम गंगा को लेकर अहमदाबाद पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर उसने गंगा के माता–पिता से भी मॉफी मांगी। गंगा के माता–पिता आठ–दस दिन में लखनऊ जाने वाले थे। गंगा के मामा के पास पूनम ने अपने माता–पिता को लखनऊ जाने के लिए मना किया था। लेकिन फिर भी उसके पिता ने बोला हमारा जाना तय है इसलिए जाना ही होगा। पूनम ने अपनी माँ को भी समझाने की कोशिश की थी अभी आप अपना जाना टाल दो। गंगा के घर मे अभी टेंनशन चल रहा है पहले हमें इसे ठीक करना है। परन्तु गंगा की माँ ने जवाब दिया अब तो सभी कुछ ठीक हो गया है। आने के बाद हम देखते हैं क्या करना है। पूनम के माता – पिता नहीं माने और वह लखनऊ चले गए। गंगा पूनम के पास आ गई। गंगा का मन बहुत विचलित हो रहा था वहाँ पर। गंगा राम को फोन नहीं करती थी और न ही राम गंगा को फोन करता था। गंगा ने 27 तारीख को राम को फोन किया और पूछा पूनम के घर कब आएगा। उसने जवाब दिया अभी एक बहुत बड़ी कम्पनी में इंनटरव्यू है दो दिन बाद फिर मैं वहीं से आ जाऊंगा। फिर हम तीनों वापस आ जायेंगे। राम पिछले तीन दिनों से रमेश के ही घर था। राम का दिमाग वापस पहले जैसा ही हाने लगा था। अगले दिन अगले दिन गंगा ने राम को फिर फोन किया और पूछा अभी तू कहाँ है। राम ने गंगा के साथ फिर से उसी तरह बात की जैसे कि वह पहले से करता चला आ रहा था। गंगा को इतना तो समझ आ गया था कि, यह सब वह रमेश और सीमा की वजह से ही कर रहा है। गंगा ने बोला सीमा से मेरी बात करा दे। उसे फोन दे दे। लेकिन राम ने बोला तू क्या बात करना चाहती है उससे। राम ने गंगा की बात नहीं करवाई। उस दिन उसने फिर से गंगा से तलाक की बात बोली और बोला मैं तेरे साथ अब और नहीं रह सकता हूँ। दोनों के बीच उस दिन भी बहुत झगड़ा हुआ और गगा ने उसे बोला ठीक है तू मेरे से अलग होना चाहता है। तो फिर मेरे मम्मी–पापा वापस आ जाएँ मैं तुझे तलाक दे दुंगी। तेरे पूरे खानदान और मेरे परिवार के सामने । अब तू खुशियाँ मना उस अपेक्षा के साथ । एक बात और सीमा और रमेश को बोल देना गंगा ने उन्हें बधाई दी है वह दोनों हमें अलग करना चाहते थे। वह उन्होंने आखिर कर ही दिया। जैसे ही उसने (राम) उन लोगों का नाम सुना वह उन लोगों की तरफदारी करने लगा और फोन जोर से काट दिया। अगले दिन। गंगा का दिल बहुत बेचेन था और वह बार–बार अपना फोन देख रही थी शायद राम उसे फोन करे। वह उसके फोन का इंतजार कर रही थी लेकिन उसका फोन नहीं आया। फिर दोपहर को एक बजे उसका फोन आया। गंगा ने सब

कुछ भुला कर राम से बडे ही प्यार से पूछा अभी तू कैसा है। राम ने उसे बोला मुझे तेरे से बात नहीं करनी है फोन अमन को दे–दे। गंगा ने बिना कुछ बोल अमन को फोन दे दिया। अमन से उसने क्या बोला मालूम नहीं। अमन ठीक से बातें नही करता था उस वक्त वह केवल साढे तीन साल का ही तो था। उस दिन गंगा को बहुत बुरा लगा। उसने सोचा सारी गलती तो उसी की हे और उसके परिवार की है फिर भी इसे बात का कोई दुख नहीं है और मेरे ही ऊपर अकड़ दिखा रहा है। उसने सोचा मैं आराम से रात को बात कर लूंगी तब तक उसका गुस्सा भी शांत हो जायेगा। तब तक वह घर भी आ जायेगा। दो दिन बाद होली भी थी। उस दिन गंगा का जन्मदिन भी होता है। उस दिन गंगा को सुबह से रोना भी आ रहा था और इसा वजह से उसने खाना भी नहीं खाया था । लेकिन वह हर पल हर घड़ी राम के ही बारे में सोचती रहती थी। राम कैसा भी उसके साथ व्यवहार करता था लेकिन उसे अपने प्यार पर भरोसा था। एक न एक दिन राम को अपनी गलतियों का एहसास जरूर होगा और यह बात उसने राम को बोली भी थी। जिस दिन तू अपने दिल से मेरे पास आएगा मैं तुझे बिना किसी सवाल किये अपना लूंगी। रिश्तों में अगर प्यार है तो रिश्तों का कोई अर्थ होता है अन्यथा सब कुछ बेकार होता है।

गंगा सोच रही थी बैठे–बैठे काश राम ने मेरी बात मानी होती तो आज हम सभी दुखी नहीं होते । उसकी माँ को तो उससे कोई लगाव ही नहीं है। अगर उसे राम से प्यार होता तो वह उस दिन मेरे से इतनी बड़ी बात नहीं बोलती। गंगा की सास उस दिन गंगा को बोल रही थी कि मुझे पता है राम पागल हो चुका है अगर आज से 15 दिन बाद राम मौत हो गई तो सबसे ज्यादा जिंदगी तो जिंदगी तो तेरी ही खराब होगी । हमारे पास तो फिर भी पूजा और रमेश हैं लेकिन तू तो विधवा हो जायेगी। गंगा अपनी सास पर जोर से चिल्लाई और बोली मेरा पति पागल नहीं है और आपको यह कैसे मालूम की वह 15 दिनों में मरने वाला है। उसकी सास बोली अगर ऐसा हुआ तो फिर तू क्या करेगी। गंगा को एक दम से झटका लगा और उसने सोचा यह मैं क्या सोच रही हूँ। गंगा उस समय अपनी डायरी लिख रही थी। मनन चार बजे के आस पास पापा–पापा चिल्लाने लगा और रोने लगा फिर वह रोते –राते सो गया। गंगा ने सोचा जब यह उठेगा मैं उसकी बात करवा दुंगी लेकन भगवान् को शायद कुछ और ही मंजूर था। तभी गंगा के पास राम का मेसेज आया और उसमें लिखा हुआ था कि, मैं अपना जीवन खत्म कर रहा हूँ। उसने बहुत गंदी गाली भी लिखी थी और लिखा था मेरी मौत के जिम्मेदार तेरे परिवार के सब सदस्य होंगे। मेरी अंतिम इच्छा है कि, इन लोगों को कड़ी से कड़ी सजा मिले और इन लोगों का सारा जीवन जेल में ही बीते। अंत में लिखा था मुझे फोन

करने की कोशिश भी मत करना। यह मेसेज उसने पूनम और रमन को भी किया था। लेकिन राजीव को नहीं किया। यह सब देख कर गंगा को बहुत बुरा लगा। और गुस्सा भी आया। लेकिन गंगा ने उस बात पर ध्यान नहीं दिया उसने अपनी बहन को भी बताया। उसकी बहन ने भी यही बोला हो गया आज फिर से उसका नाटक शुरू। लेकिन मन ही मन गंगा भगवान् से प्रार्थना कर रही थी। सब ठीक हो जाये। इसके दिमाग को ठीक कर दो भगवान् राजीव का 4:30 बजे रमन के पास फोन आया और उसने बताया कि आप लोग जल्दी से सूरत के लिए निकल जाओ राम ने आत्महत्या कर ली है । रमन हक्का–बक्का रह गया यह सुनकर । उसने पूछा तुझे किसने बोला। राजीव ने बताया अभी थोड़ी देर पहले रमेश का फोन आया था मेरे पास। उसने बताया और बोल रहा था जाकर मिठाईयाँ बाँटो मेरा भाई मर गया है। वहाँ पर राजीव अकेला था। वह फूट–फूट कर रो रहा था। रमेश ने पुलिस को बताया कि लाश को मैंने नीचे उतारा है। रमेश और राम के पूरे परिवार ने गंगा के खिलाफ बयान दिया था। और यह बोला सभी से गंगा, राम को बहुत परेशान करती थी और झगड़ा करती थी इसलिए राम ने आत्महत्या कर ली। रमेश की आँखों में एक आँसू तक नहीं था। लेकिन राजीव रो –रो कर बुरा हाल हो रहा था। एक पुलिस वाले ने ही राजीव को पानी दिया लाकर। पुलिस को ऐसा लगा जैसे वह राम का भाई है लेकिन जब उन्हें पता चला कि वह तो उसका साला है और रमेश भाई है। पुलिस को रमेश पर थोड़ा शक गया। क्योंकि लाश के पास सबसे पहले रमेश ही मिला था और पिछले 3–4 दिनों से वह रमेश के ही पास था। बरौड़ा से गंगा अपने दीदी, जीजा और उनका एक मित्र सभी के साथ निकल चुकी थी। राजीव का बार–बार रमन के पास फोन आ रहा था जिस वजह से पूनम को शक हुआ कुछ तो गड़बड़ है। रमन ने पूनम को बता अब राम इस दुनिया में नही रहां। पूनम, गंगा से अपने आँसू छुपाने की बहुत कोशिश कर रही थी लेकिन गंगा ने देख लिया थां उसने पूनम को बोला दीदी आप रो क्यों रही हो राम को कुछ नहीं हुआ है। वह ठीक हो जायेगा उसने मेरे से वादा किया है कि अब वह मुझे धोखा नहीं देगा। गंगा अपनी बहन को यह बस बोल जरूर रही थी लेकिन उसके आँसू निकलते ही जा रहे थे। वह बार–बार अपनी बहन को समझा रही थी दीदी राम बिल्कुल ठीक है आप चिंता मत करो।

वह सभी आखिरकार सूरत पहुँच ही गए। घर पहुँचने से पहले रमन ने गंगा को बताया कि राम मर चुका है और वहाँ पुलिस भी आई होगी तो हिम्मत रखना कुछ गलत मत करना। गंगा बोली नही जीजू आपने गलत सुना होगा राम ऐसा कैसे कर सकता है। उसने मुझे वादा दिया था। इस बार हम अलग नहीं होंगे। ऐसा लग रहा था जैसे गंगा के दिमाग पर कोई असर हो गया है। गंगा बार–बार

इसी बात को दौहराती जा रही थी। वह लोग उस जगह पहुँच गए जहाँ गंगा रहती थी। गंगा ने देखा दूर रोड़ तक गाडियाँ खड़ी हुई हैं और नीचे एक एम्बूलेंस खड़ी हुई थी। गंगा के कदम बढ़ नहीं रहे थे । अमन ने पूछा मम्मा पापा घर पर ही होंगे ना तो वह नीचे क्यों नहीं आए। राजीव ने गंगा को संभाला और वह उसे पकड़ कर ले जा रहा था। गंगा सीढ़ियाँ चढ़ तो रही थी लेकिन उसे ऐसा लग रहा था मानों वह किसी पहाड़ पर चढ़ रही हो। वहाँ लोगों की भीड़ लगी हुई थी। गंगा को चक्कर भी आ रहे थे। उसका भाई रोत चला जा रहा था। जब वह अपने घर की चौखट पर पहुँची और उसने देखा राम जमीन पर लेटा हुआ है वह मर चुका था। उसके पास एक दिया जल रहा था। सफेद चादर उसके शरीर पर पड़ी हुई थी और उसका खानदान इक्कठा हो रखा था रीमा रमेश, उसकी माँ ओर उसका जीजा गंगा से नजरें चुरा रहे थे। जैसे ही गंगा ने राम को देखा वह भाग कर उसके पास आई और चादर हटा दी न तो गंगा के आँसू निकल रहे थे और न ही उसकी आवाज। गंगा की आँखे फटी की फटी रह गई थी। वह उसके सिर को सहलाने लगी और उसके शरीर पर हाथ घुमाने लगी लेकिन उसके पास कोई नहीं आया। राम के पापा को छोड़ कर कोई भी नहीं रो रहा था। सभी की नजरों में चोर था। गंगा का भाई उसके पीठ पर जोर – जोर से मुक्के मारने लगा और रोते–रोते बोल रहा था गंगा रो ले कुछ तो बोल। गंगा को सदमा सा लगा गया थां पूनम भी दरवाजे के अंदर आकर जोर–जोर से चीख रही थी राम का नाम लेकर और बोल रही थी तूने मेरी बहन को धोखा दे दियां मेरी बहन तुझे कितना प्यार करती थी क्या तुझे नहीं मालूम था। अभी उठ, तू उठ, क्यों उठ नही रहा है। पूनम ऐसा बोलते – बोलते रमन की बाहों में गिर गईं। पूनम को दूसरे घर में ले गए। उसे वहाँ ले जा कर लिटा दिया गया लेकिन पूनम बेहोशी में भी गंगा को पुकार रही थी और बोल रही थी मेरी बहन को बर्बाद कर दिया है। गंगा राम के पास एक तक करके बैठी रही लेकिन सिवाय उसके माईके वालों के उसे पास कोई नहीं आया । किसी ने उसके सिर पर हाथ तक नहीं रखा। उस दिन रीमा के चेहरे पर मुस्कान थी। गंगा स्तबद्ध होकर बैठी ही रही और उसका भाई उसे रूलाने की कोशिश करता रहा और एक दम से गंगा की जोर से चीख निकली और फिर वह जोर–जोर से रोने लगी। अमन अपने मरे हुए पापा के पेट पर बैठ गया और उससे लिपट गया। पापा–पापा बोलता रहा लेकिन जब कोई आवाज नही आई तो उसने राम के चेहरे को अपने छोटे–छोटे हाथों से प्यार किया और उसे चुम लिया। मनन ने अपनी माँ को बोला मम्मा पापा कुछ बोल क्यों नहीं रहे हैं। पापा ऐसे क्यों सो रहे हैं। पापा बीमार है क्या ? राजीव ने अमन को अपनी गोद में उठा लिया और अपने दोस्त को पकड़ा दिया। वह उसे बाहर ले गया। रमेश ने उस दिन अपने साथ कुछ गुंडे भी लेकर आया था। गंगा फिर रोते–रोते अपेक्षा का नाम लेने

लगी तो राम की बूआ ने गंगा के मुँह पर हाथ रख दिया और बोली यहाँ पर यह सब मत बोल। लेकिन गंगा बोलती रही। उसने रोते–रोते उसके जीजा और माँ का नाम भी लिया इन दुष्टों ने हमारे घर पर काले जादू करवाएँ हैं । इन लोगों ने मेरे पति को मारा है। इन लोगों की वजह से आज मेरा बेटा बिना बाप के रह गया है। गंगा को छोटा सा बेटा, यह बोलते बोलते गंगा बेहोश हो गई। जब उसे होश आया तो वह अपने घर में घूमकर देख रही थी सारा घर बिखरा हुआ था अलमारी खुली हुई थी। बिस्तर का सारा सामान बाहर पड़ा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानों किसी ने सारे घर में कुछ ढूंढा है। अगले दिन उसका अंतिम संस्कार भी हो गया था। गंगा के ससुराल वाले गंगा को वहीं छोड़ कर चले गए। किसी ने भी गंगा या उसके बेटे के ऊपर एक बार भी हाथ नहीं रखा। रमेश उस दिन बहुत मचल रहा था और बोलने लगा अब जल्दी चलो इन लोगों को जेल में भी तो डलवाना है। रमेश की माँ का यार भी था वहाँ पर। उसने बोला ऐसी गलती मत करना अभी तक पुलिस को यह मालूम नही है कि , यहाँ एक लड़की का मामला है सच्चाई अभी पुलिस को पता नहीं है। अगर गंगा ने अपने व्यान में अपेक्षा का नाम दे दिया और अगर उसने हमारे खिलाफ ब्यान दे दिया तो केस उलटा हो जायेगा फिर हमें कोई नहीं बचा सकता । इसलिए ऐसी बेवकूफी मत करना और यहाँ पर ज्यादा आपको रूकने की भी जरूरत नहीं है।

अब गंगा को अपना जीवन एक खाली कश्ती जैसी लग रही थी जो बीच मझदार में अकेली तैर रही है। अब गंगा को अमन की चिंता सताने लगी थी। अब मेरे बेटे का क्या होगा। गंगा को सारी बातें याद आ रही थी। अब तो उसके जीवन में सिर्फ मासूमियत ही थी। अब गंगा की सारी दुनिया अमन ही था। गंगा को देखकर ऐसा लगात था मानो शरीर में से आत्मा निकाल ली गई हो। यह सिर्फ एक शरीर है बिना आत्मा के। गंगा के माता पिता उसे अपने साथ अहमदाबाद ले आए। उसकी तेंरवी थी और पिंड दान करना था जो बेटा करता है। अमन ने उस पिंड को तोड़ दिया और बोला मैं नहीं करूंगा। बोलने लगा मम्मा इसको हम तोड़ देते हैं। अमन अपनी दादी के ऊपर चढ़ गया और उसकी गर्दन अपने हाथों से पकड़ ली और बोलने लगा बोल मेरे पापा कहाँ है तूने क्या किया है मेरे पापा के साथ। उसे देख कर ऐसा लग रहा था मानों कोइ उससे यह सब बुलवा रहा है। जब गंगा वहाँ अपेक्षा का नाम लेने लगी तो उसकी सा ने जोर–जोर से गायीत्री मंत्र शुरू कर दिये और रीमा बोली हम क्यों रोएं हमने क्या गलती की है। उस दिन भी गंगा को किसी न पुछा तक नहीं । गंगा के माईके वालों को किसी न पानी तक नहीं पूछा। उस दिन गंगा के पापा उसका बैग उसके कमरे में रखने गए आरै बोले आपकी बहू को आप अब यहीं रखिये अब यह दोनों आपकी जिम्मेदारी

हैं। लेकिन उसके (राम) के पिता ने मना कर दिया और बोला इसे आप वापिस ले जाईये । हम इन दोनों को यहाँ नहीं रख सकते हैं। गंगा के पिता चुपचाप गंगा का बैग उठा लाए। जब गंगा वापस जा रही थी तो उसने अपने ससुर और चाचाओं के पैर छूते हुए उनसे विदाई ले ली और फिर गांग हमेशा के लिए अपने माता–पिता के घर आ गई।

अब गंगा को अपनी जिंदगी कटी पंतग जैसी लगने लगी थी। उसे नहीं मालूम था अब उकी जिंदगी कहाँ जायेगी, क्या होगा उसके जीवन का और क्या होगा उकसे बेटे के जीवन का। अब उकसे सामने अपने बेटे की इतनी बड़ी जिम्मेदारी नजर आ रही थी लेकिन उसे यह नहीं पता था कि, वह कैसे यह सब निभाएगी। गंगा को अपने बेटे का K.G में दाखिला लेना था। तो उसके लिए वह सूरत गई और उकसे स्कूल गई टी.सी. लेने। उसकी प्रधानाचार्या ने कहा लेकिन अमन का रिजल्ट तो आपके भाई और जीजा जी लेकर जा चुके हैं। गंगा को उनकी बात सुनकर झटका लगा। गंगा बोली लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है। गगा ने उन लोगों का हुलिया पुछा और अगले दिन रमेश और उसके फूफा के लड़के का फोटो लाकर दिखाया। प्रधानाचार्या उन्हें पहचान गई और बोली यही तो आए थे रिज्लट लेने। गंगा ने फिर उन्हें बताया यह दोनों कौन हैं। उन लोगों पर गंगा बहुत नाराज हुई और बोली अगर कल को मेरे बेटे को ही कोई उठा लेता तो इसकी जिम्मेदारी कौन लेता। गंगा ने बोला अब मैं इन लोगों के खिलाफ F.I.R लिखवाने वाली हूँ। मेरे पति को तो यह लोग खा गए हैं, लेकिन मेरे बेटे पर मैं आंच नहीं आने दुंगी। उसने उसके फूफा को फोन लगा दिया और बोली आपके बेटे और रमेश के खिलाफ मैं रिपोर्ट कर रही हूँ। तुम्हारा लड़का मेर बेटे का रिजल्ट लेकर गया है वह भी झूठ बोलकर। जब जेल में चक्की पीसेगा तो धोखा देना भूल जायेगा। वह डर गया और उसने सच बता दिया। और बोला मैं तो सिर्फ रमेश के साथ गया था। यह सब रमेश की ही चाल थी। उसकी प्रधानाचार्या ने गंगा के सामेन हाथ जोड़े और बोली आप ऐसा मत करो मेरा स्कूल रजिस्टरड नहीं है मेरा स्कूल बंद हो जायेगा। गंगा को उसके ऊपर तरस आ गया और कुछ नहीं किया। गंगा ने अपने ससुराल वालों का सात महिने तक सूरत मे ंइतजार किया शायद कभी उन लोगों को अपने पोते की याद आ जाये और उसको मिलने यहाँ आ जाएँ। लेकिन जब कोई नहीं आया तो गंगा सूरत से अपना सारा सामान ले आइ। वह दो महिने पूनम के घर भी रही थी। पूनम के घर रहने के लिए उसे रमन के आग हाथ जोड़ने पड़े और तब जाकर उसने गंगा को वहाँ पर रहने की अनुमती दी। दो महिने तक रमन ने गंगा का जीना हराम कर दिया था। लेकिन फिर भी वहाँ रही थी। नही ंतो कहाँ जाती। अमन का स्कूल में दाखिला भी हो गया था। रमन ने ही करवाया

था। जब से राम की मृत्यु हुई थी तब से गंगा सिर्फ अमनन के लिए ही यहाँ से वहाँ भागती रहती थी। वह समाज मे जब बाहर निकलती थी तो वह एक मुस्कान अपने चेहरे पर लेकर निकलती थी जिससे कि लोगों को उसकी सच्चाई पता न चल जाए। कहीं लोग उसका फायदा उठाने की कोशिश न कर लें। लेकिन अंदर से गंगा कितनी कमजोर थी वह तो सिर्फ गंगा ही जानती थी। गंगा को समाज के सवालों का जवाब भी देना पड़ता था प्रत्येक व्यक्ति गंगा के जीवन को अलग–अलग तरीके से जानने के लिए उत्सुक रहता था। समाज सिर्फ गंगा के जीवन को अपना मनोरंजन ही समझता था। गंगा के जीवन में घटी बातों को लेकर लोग नमक, मिर्च, मसाले लगा कर एक दूसरे के सामने पेश कर देते थे। चाहें वह उसके रिश्तेदार हो या आस पड़ोस में रहने वाले पडौसी। गंगा के पास उसके जीने का मकसद केवल उसका बेटा ही था। अमन हर वक्त पापा के बारे में ही पूछता रहता था। गंगा ने अमन को बोल रखा था कि, अभी पापा बहुत बीमार हैं। वह अभी अस्पताल में ही है। जब वह ठीक हो जायेंगे वह घर आ जायंगे। 6 महिने तक अमन को यह मालूम नहीं चला था कि, उसके पापा की मृत्यु हो चुकी है। अमन दरवाजे पर खडे होकर राम का इंतजार करता रहता था पूरा–पूरा दिन और थक कर सो जाता था वह अपने पापा के आने का इंतजार हर पल करता था। उसकी माँ से वह तरह–तरह के सवाल करता रहता था। मम्मा अभी आप पहले की तरह अपने सिर में लाल टीका क्यों नहीं लगाती हो, आप गले में वह काली वाली माला क्यों नहीं पहनती हो। कभी – कभी तो अमन मंदिर से सिंदूर लाकर गंगा की मांग में भर देता था और कहता था मम्मा यह रोज़ लगाना भूल जाती हो। सूरत में तो रोज लगाती थीं। गंगा जब रोने लगती थी तो वह भी साथ में अपनी माँ से लिपट कर रोने लगता था। अमन बार–बार पूछता था कि मम्मा मेरे पापा होस्पीटल से वापस कब आएंगें पहले तो गंगा उसके सवालों के जवाब नहीं दे पाती थी। वह कई बार फोन से राम का नम्बर लगवाता था और गंगा लगा देती थी। अमन फोन पर पापा–पापा आप कब आओगे यह बोलता रहता था लेकिन सामने से किसी और की आवाज सुनकर वह फोन वाले व्यक्ति को बोलता था कि, यह तो मेरे पापा का नम्बर है इस वक्त वह होस्पीटल में हैं। अंकल आप मेरी पापा के साथ बात करवा दो। – फोन वाला व्यक्ति भी ऐसा सोचता होगा शायद गलत नम्बर लग गया है। गंगा अपने माता–पिता के घर बरौड़ा में अकेली रहती थी अमन के साथ। अभी गंगा के पिता 'रिटायर्ड' नहीं हुए थे। गंगा अपनी तकलीफों के साथ–साथ अपने माँ बाप के घर का भी ध्यान रखती थी। गंगा हर पल हर घड़ी भगवान् से यही प्रार्थना और सवाल करती थी कि, राम ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया। उसने अपने छोटे से मासूम बेटे के बारे में एक बार भी नहीं सोचा। मैने उसे कितना समझाया था लेकिन वह नहीं माना उसने अपने घरवालों की वजह से हमारा

जीवन नर्क बना दिया। उसने मेरे बेटे का सारा बचपन ही छीन लिया है। गंगा उसकी आत्मा को मॉफ नहीं कर सकती थी। वह उन लोगों से नफरत करती थी जिन लोगों की वजह से आज उन लोगों की यह हालत हुई है। गंगा जब भी अपनी आँखें बंद करती थी तो उसे राम का वह भयानक रूप अपनी आँखें, वह झटके से उठ कर बैठ जाती थी। एक दम से वह देखती थी कि, अमन उसे पास सो रहा है और उसने अपनी दूसरी तरफ तकियों से अपने पापा बना रखे होते थे। जब कभी गंगा रात को बाथरूम भी जाती थी तो अमन उसके साथ ही उठ कर चल देता था। वह अपनी माँ से बोलता था मम्मा मुझे पता है अब पापा नहीं आएंगे वह मर चुक हैं। उसकी बात सुनकर दोनों माँ बेटे रात–रात भर रोते रहते थे और अमन रोते–रोते माँ की ही गोद में सो जाता था। गंगा अपनी माँ के सामने खुश रहने की कोशिश करती थी। कहीं माँ के दिल पर असर ने हो जाए, उसे दुखी देख कर। किसी जमाने में गंगा हर वक्त दुल्हन की तरह कपड़े और गहनों से लदी रहा करती थी। अब वही गंगा बिल्कुल फीकी हो चुकी थी। उस ने तो जैसे अपने जीवन से रंगो को निकाल कर फैंक ही दिया था। अब वह सिर्फ अपने बेटे और परिवार के लिए ही जी रही थी। वह तो अब एक जिंदा लाश बनकर ही रह गई थी।

जब कभी उसे राम की वह बातें याद आती थीं तो उसके मन में राम की मौत को लेकर काफी सारे शक पैदा होते थे। जैसे कि अगर उसने लटक कर आत्महत्या की थी तो गर्दन पर सिर्फ आधे हिस्से में ही निशान क्यों था। क्यों सारा घर बिखरा हुआ था। उसका परिवार गांधीनगर से सूरत इतना जल्दी कैसे पहुँच गया हम भी तो उसी रास्ते से आए थे। हम लोग तो 12:00 बजे के बाद ही पहुँच थे । क्यों उसके भाई–भाभी, माँ, जीजा या उसकी बहन के आँखों में आँसू नहीं थे। क्यों राम के मुँह से सफेद झाग आ रही था। दरवाजे पर भी जूते के निशान थे। ऐसा जूता तो राम के पास था ही नहीं। पहले से तो वह बिल्कुल ठिक था लेकिन जब से वह अपने भाई के घर गया था तभी से उसका व्यवहार भी बदल गया था मृत्यु वाले दिन रमेश घर के पास वाले स्टोर में क्या कर रहा था। वह उस वक्त घर क्यों नहीं आया राम के ही साथ। वह समय तो उसके औफिस का होता था। तो फिर दोपहर मे वह (रमेश) वहाँ क्या करने आया था। रमेश का औफिस और हमारा घर दोनों विपरीत दिशाओं में था। क्या हुआ था उन दोनों के बीच उस दिन। रमेश और रीमा दोनों ही हमारे रहन – सहन के तरके से जलते थे। रीमा और रमेश मिलकर जितना कमाते थे उतना तो राम अकेला ही कमा लेता था। क्या राम उनकी साजिश का शिकार हुआ था। क्या राम को रमेश ने ही मार दिया था और बाद में उसे आत्महत्या का नाम दे दिया गया। अगर राम ने रमेश को 4 से 4:30 के बीच में

फोन कर दिया था तो फिर उसने राजीव को इतना देर के बाद क्यों बताया उसी वक्त क्यों नहीं बताया। गंगा जब भी यह सब सोचती थी उसका दिमाग बंद हो जाता था और अपने सिर को झिंझौड़ कर वहाँ से उठ जाती थी।

अब राम की मृत्यु को सात महिने गुजर चुके थे। उसे माता–पिता भी वहाँ पर आ चुके थे। अमन के दिमाग पर उसके पिता की मृत्यु का गहरा असर भी हुआ था। जब अमन को यह भरोसा हो चला था कि अब तो राम मर चुका है और मेरी माँ ही मेरी सब कुछ है तो फिर उसने राम के बारे में कुछ ऐसी बातें बताना शुरू किया जिसे सुनने के बाद गंगा के आँसू ही सूख गए थे उसके प्रति । अमन बहुत डरा हुआ सा हो जाता था जिस समय वह गंगा को वह बातें बताता था। अमन ने अपनी माँ को बताया कि, जब नानी–नाना राजीव मामा के घर होते थे और आप भी वहीं होती थीं और आप मुझे पापा के साथ जबरदस्ती घर भेज देती थीं। उस समय पापा अपेक्षा (वह गंदी वाली आंटी) को लेकर घर आते थे और पापा मुझे बालकनी में बंद कर देते थे फिर वह दोनों गंदे–गंदे काम करते थे। मुझे वहाँ डर लगता था और जब मैं रोता था तो पापा मुझे बहुत मारते थे और मुझे बोल देते थे मम्मी को मत बताना नही ंतो मैं तेरी मम्मी को यहाँ से नीचे फेंक दूंगा और वह मर जाएगी फिर तू क्या करेगा। एक दिन तो आंटी ने भी मुझे मारा था पापा के सामने। वह गंदी वाली आंटी आपके कपडे भी पहनती थी जब आप नहीं होती थी वहाँ। यह बात गंगा को याद थी कि जब भी वह राजीव के घर जाती थी उसके माता–पिता मिलने तब राम गंगा से यह बोल कर जाता था कि आज मुझे अपने ओफिस का कुछ काम करना है तो मैं 2–3 घंटे में वापस आ जाऊंगा । तो फिर गंगा अमन को भी उसके साथ भेज देती थी यह बोलकर अमन तेरे साथ कुछ समय रह लेगा पूरा दिन वह पापा–पापा करता रहता है और वैसे भी अमन बहुत ही शांत स्वभाव का था जब वह छोटा था। यह सुनकर गंगा ने एक दम से अमन को गले से लगा लिया और उससे मॉफी मांगी, और बोली – बेटा पहले ही बात दिया होता तो मैं तुझे वहाँ कभी नहीं भेजती। गंगा को अपने ऊपर ही गुस्सा आ रहा था मुझे तो उस पर भरोसा ही नहीं करना चाहिए था। जो इसंान पहले ही अपनी औलाद को मरवाने के लिए बोल सकता था, मैंने उस पर भरोसा कैसे कर लिया। अलग–अलग समय मे अमन ने गंगा को बहुत सारी बातें बताईं थी। उसने बोला एक दिन तो पापा मुझे अपेक्षा आंटी के घर ले गए थे और वहाँ पर भी पापा ने आंटी के साथ गंदे वाले काम किये थे और मुझे बोला यह बहुत ही अच्छा खेल होता है। तू भी हमोर साथ आकर खेल आजा में तुझे सिखाता हूँ इतना बोल कर अमन रूक गया गंगा ने कहा डर मत बता मुझे मैं किसी को नहीं बताऊंगी। अमन ने फिर बताना शुरू

किया और बोला मम्मी उन दोनों ने मेरे सारे कपड़े उतार दिये और आंटी मेरे सारे शरीर को अपने दाँतों से काट रही थी। और मेरा हाथ पकड़ कर गंदी जगह लगा रही थी। मैं जोर से चिलाया तो पापा ने मुझे मारा और मुझे उठा कर फैंक दिया मैं फिर जाकर डाईनिंग टेबल के नीचे छुप गया और आपको याद कर रहा था। हर बार पापा मुझे आपको मारने की धमकी देते थे और कभी बोलते थे कि वह खुद ही मर जायेंगे फिर तुझे चोकलेट कोई नहीं देगा। तेरी मम्मी तो नौकरी भी नहीं करती है। गंगा स्तबध होकर यह सब सुन रही थी और उसे राम की आत्मा से भी नफरत हो रही थी। उसने फिर बताया कि जब हमारे घर दादा–दादी आते थे और आप जब नहा रही होतीं थी या फिर किचन में होती थी वह लोग मुझे बोलते थे यह तेरी मम्मी नहीं है इसे मम्मी मत बोला कर और अपेक्षा आंटी की फोटो दिखाकर बोलते थे यह तेरी मम्मी है। दादा–दादी और पापा मुझे गंदी वाली पिचर भी दिखाते थे जब रात को कभी – कभी दादी मुझे बाहर ले जाती थी। पापा मुझे बोलते थे हम दोनों पंखें पर लटकने का खेल खेलेंगे लेकिन मम्मी जब यहाँ पर नहीं होगी तब। मम्मी आपको याद है क्या एक दिन पापा ने अपनी हाथ की नस काट ली थी। उस समय पापा ने मुझे भी कहा था तू भी कर के देख बड़ा मजा आता है इसमें। लेकिन खून देख कर मैंने आपको बुला लिया था। गंगा ने जोर से अमन को अपने सीने से लगा रखा था और रो रही थी मेरे बेटे ने क्या सहन कि है। इतना छोटा सा बच्चा यह सब झेल रहा था और मैं इन सब से बेखबर थी। अमन थोड़ी देर तो चुप रहा उसने फिर बताया कि, मम्मा आपको याद है एक दिन राजीव मामा घर पर आए थे और पापा ने मुझे मारा था फिर मुझे ले जाकर कमरा बंद कर लिया था। उस दिन पापा ने मेरा गला दबाया था और पापा भूत जैसे बन गए थे मुझे बहुत डर लग रहा था उस दिन। गंगा को उस दिन की कहानी समझ आ गई थी। उस दिन अमन की आँखें लाल क्यों हो रही थीं। अमन के मुँह से यह सब सुनकर गंगा को यह समझ नहीं आ रहा था कि वह अमन के लिए दुखी हो या यह सोचकर खुश हो कि उसका बेटा बहुत बड़ी साजिश का शिकार होते–होते बच गया। गंगा अमन की सारी इच्छाएँ पूरी करने की कोशिश करती थी। उसे जो भी खाना होता था या फिर कहीं घूमने जाना होता था या कोई भी इच्छा हो, गंगा सब कुछ पूरा करती थी। आस–पास के रहने वाले लोग इस नजर से देखते थे मानों विधवा होना कोई अपराध है। विधवा है तो उसे जीने का कोई अधिकार नहीं है। उसे सिर्फ सफेद कपड़े ही पहनने चाहिए। उसे अच्छा खाना खाने का कोई अधिकार नहीं है। यदि विधवा शुभ कार्यों में पहुँच गई तो उनके कार्यों को ग्रहण ही लग जाएगा। हर मर्द गंगा को अपनी निजी सम्पत्ति समझता था। उस सोसायटी के मर्द इसी ताक में रहते थे काश एक बार गंगा हमें अकेले में मिल जाये। अब गंगा वापस से 20 साल वाली गंगा दिखाई देने लगी थी। कोई भी

गंगा को 4 साल के बेटे की माँ नहीं बोलती था। गंगा इस हादसे के बाद टूट जरूर गई थी लेकिन वह अपनी और अपने बेटे की रक्षा करना भली भांती जानती थी। लोग वहाँ गंगा पर नज़र जरूर रखते थे लेकिन किसी की उससे बात करने की हिम्म्त नहीं थी। अब शायद वह समाज की नजरों का सामना करते–करते काफी मजबूत बन गइ थी। अब वह किसी शेरनी से कम नहीं थी। गंगा जब कभी दूसरे बच्चों को अपने माता–पिता के साथ देखती थी तो गंगा मन ही मन अमन के लिए दुखी होती थी । काश अमन के भी पापा आज जिंदा होत । काश उसने प्यार की अहमियत समझी होती। काश उसने अपनी जिम्मेदारियाँ निभाई होती । जब वह अमन की नजरों में पिता की कमी का दुख देखती थी तो, उस व्यास खानदान के लिए गंगा के मन से बदुआएँ ही निकलती थीं। अमन अपने दोस्त के साथ ब कभी बाहर खेलता था और उसके पापा को देखकर वह अपने पापा के पास चला जाता था और उनका हाथ पकड़ लेता था तो अमन भी उसके पापा के पास जाकर खड़ा हो जाता था और डरते–डरते धीरे से उसके पापा का हाथ छू लेता था फिर इधर – उधर देखता था कि कहीं कोई मुझे देख तो नहीं रहा है। जब वह लड़का अपने पापा के साथ चला जाता था तो अमन दुखी और तरसी नजरों से उसे देखता रहता था। यह सब देख कर गंगा अपने ऊपर काबू नहीं कर पाती थी लेकिन फिर भी करना पड़ता था अगर अमन माँ को रोते हुए देख लेता तो क्या होता। गंगा को अमन की चिंता होती रहती थी । जब से अमन ने अपनी माँ को वह सब बताया था जो उसके पिता ने उसे साथ किया था। इसलिए एक दिन वह उसकी क्लास टीचर से मिलने स्कूल गई। उसकी मैडम ने बताया कि अमन क्लास में खोया–खोया सा रहता है और बहुत ही शांत बैठा रहात है। गंगा को उसकी मेडम ने बताया कि इसे कांउसंलिंग की जरूरत है। उसकी मेडम के साथ जब मैं एक एक डॉ0 से मिलने गई तो उसने बताया इस बच्चे के दिल से वह सारी बातें निकालना जरूरी है नहीं तो इसका असर इसकी आने वाली जिंदगी पर पड़ सकता है। गंगा की सारी कहानी सुनने के बाद डॉ0 ने कहा जो भी हुआ अच्छा हुआ। अगर ऐसा नही ंहोता तो वह इंसान तुम दोनों को मार डालता। अगर नहीं मारता और तुम्हें और तुम्हारे परिवार को फँसा देता तब आप क्या करती । अगर अमन थोड़ा और बड़ा हो जाता और उस समय यदि ऐसा होता तो इसका अंजाम बहुत बुरा होता। अमन के साथ जो हुआ है और इतनी छोटी उम्र में पिता की मृत्यु हो जाने से यह डिपरेशन में चला गया है। इसे इस डिपरेशन से निकालना बहुत जरूरी है और इसके लिए सबसे पहले इस बच्चे के सामने पुरानी कोई बात न की जाए और आप ज्यादा से ज्यादा खुश रहें इसके सामने। इस बच्चे को प्यार की बहुत जरूरत है। इसके सामने इसके पिता का नाम ना लिया जाये और न ही कोई तस्वीर इसके सामने आए। डॉ0 ने गंगा को बोला यदि आप मेरी बात मानें तो आप दूसरी शादी कर लीजिए

आपके बेटे को पिता की बहुत जरूरत है। यह सुनकर गंगा बोली एक बार धोखा खाकर अब किसी और पर भरोसा नहीं कर पाऊंगी। डॉ0 ने बोला लेकिन आपको अपने बेटे के बारे में भी तो सोचना चाहिए। इसे ऐसे पिता की जरूरत है जो उसे समझ सके और इसकी इच्छाएँ पूरी कर सके। गंगा ने डॉ0 को बताया कि मेरा परिवार भी यही बोलता रहता है मुझसे । गगा अमन को 12 दिनों में डॉ0 के पास लेकर जाती थी और स्कूल में भी उसकी एक मेडम उसकी कांउसलिंग करती थी। वह जो भी कुछ गंगा को करने या लाने के लिए बोलती थी गंगा वही करती थी। घर पर भी वह इन सब बातों का ध्यान रखती थी। इसी वजह से गंगा के पिता का व्यवहार गंगा और अमन के प्रति काफी कड़वा हो गया था। गंगा और उसके पित के बीच काफी कड़वाहट आ गई थी लेकिन फिर भी वह अपना फर्ज निभाती रहती थी। घर पर सभी गंगा के ऊपर दवाब डाल रहे थे दूसरी शादी करने के लिए। वह लोग गंगा को अमन के भविष्य को लेकर समझाते रहते थे। उसकी माँ उसे बोलती थी, जब तक हम जिंदा हैं तब तक तो तुझे हम संभाल लेंगे लेनि बाद में क्या होगा तुम्हारा। राजीव और रीटा कैसे है वह तो तुझे पता ही है। तेरी भाभी तुझे अभी नहीं देख सकती तो फिर बाद मे क्या देखेगी। क्या तू अमन को जीवन भर पिता के बिना ही रखना चाहती है। क्या इसे बाप के प्यार की जरूरत नहीं है। गंगा यह सुन सुन कर परेशान हो गई थी और अमन अपने पापा का रोज इंतजार करता था और बोलता था मम्मा मेरे लिए नये पापा ला दो। आखिर काम गंगा ने अपने परिवार को हाँ बोल दी लेकिन उसकी एक शर्त भी थी। वह उसी से शादी करेगी जो मेरे बेटे का पवित्र मन से पिता बनने के लायक होगा। गंगा ने पिता ने उन सभी मेरिज साईट में पैसे भर दिये। अमन बोलता रहता था मेरे पापा मेरे जन्मदिन पा आएंगे। अब गंगा के लिए रिश्ते आने लगे थे। राजीव बात तो करता था लेकिन ठीक से नहीं । गंगा के पिता ने सब कुछ राजीव के ऊपर छोड़ रखा था और राजीव की पत्नि उससे लडाईयाँ करती रहती थी और बोलती थी। गंगा तेरी लड़की है क्या जो तू उसके लिए लड़के ढूंढ रहा है। वह मम्मी–पापा की जिम्मेदारी है हमारी नहीं और वैसे भी तेरी बहन की वजह से हमारी प्राइवेसी में खलल पड़ता है। रमन को जब पता चला कि गंगा ने शादी के लिए हाँ बोल दी है तो वह आए दिन पूनम से लड़ाईयाँ करता रहता था और बोलता था तेरी बहन तो बहुत बड़ी साधवी बनी घूमती थी कि, शादी नहीं करेगी। मुझे अब किसी दूसरे मर्द पर भरोसा नहीं है तो फिर अब क्या हो गया उसे। भूल गई अपने पति को, बस इतना ही था उसका प्यार। नहीं रह पा रही है वो बिना मर्द के। चली अब शादी करने। उसे शर्म नहीं आती विधवा होकर दूसरी शादी करने को तैयार हो गई है। पूनम ने बोला तुझे क्या तकलीफ है उससे। अगर इतनी ही परेशानी हो रही है तो हम अमन को गोद ले लेते हैं। रमन बोला 'चल हट' हमने कोई अनाथ आश्रम नहीं खोल रखा है

जो हम उसे गोद लेलें। वह भी तो अपने बाप जैसा बन सकता है। गंदे खून को मैं अपने घर कभी नहीं लाऊंगा। पूनम ने उसे चिल्लाकर बोला तो फिर मेरी बहन की खुशियों के बीच मत आना। रमन ने पूनम को बोला मैं देखता हूँ कैसे होती है तेरी बहन की शादी। अभी तू देखना मैं कैसे मुसिबतें बढ़ाता हूँ तेरी बहन के जीवन में। उसमें दम हो ता शादी करके दिखाए वो। उसकी तो मैं शादी होने नही दूंगा। फिर से रमन ने वही सब शुरू कर दिया था। वह राजीव, रीटा और उसके माता–पिता को भड़काता रहता था। दूसरी तरफ रीटा खुशियों के आडे आती रहती थी। रमन अमन के सामने अपने बेटे को गोद में बैठा कर प्यार करता रहता था सिर्फ गंगा को जलाने के लिए। अमन जाकर रमन के पास बैठ जाता था और धीरे–धीरे डरते हुए अपना हाथ रमन के ऊपर रखता तो। रमन उसे इस नजर से घूरता था कि वह डर जाता था आर अपनी माँ की गोद में आ जाता था। अमन की आँखें हर वक्त नम रहती थीं। उसे हर पल अपने पिता की याद सताती रहती थी। जब रमन ने ऐसा फिर से किया तो अमन अपने कमरे से पता नहीं कहाँ से अपनी नर्सरी की डायरी उठा लाया था शायद वह उसी ने कही पर रखी थी। उस डायरी में उसके मम्मी–पापा की फोटो लगी हुई थी। अमन ने राम की फोटो को अपने हाथों से प्यार किया और फिर उसे चूम कर अपने सीने से लगा लिया और बोला मेरे पास भी पापा हैं। देखों मेरी डायरी को इसमें मेरे मम्मी और पापा एक साथ हैं। लेकिन उस समय अमन की आँखों से आँसू बहते जा रहे थे और वह अपने आँसू ऐसे पौंछता था कंही मम्मी को पता न चल जाये। अगर कभी गंगा ने अमन को पूछ भी लिया क्यों रो रहा है बेटा तो वह बोल देता था कुछ नहीं मम्मी तेरी आँख में कचरा है। वह था तो 4 साल का लेकिन समय ने उसे अपनी उम्र से बहुत बड़ा कर दिया था। एक 4 साल का बच्चा अपनी माँ का दर्द समझता था लेकिन एक 40 साल का व्यक्ति नहीं समझ पा रहा था। गंगा ने उसे डांस क्लास में भी डलवाया था लेकिन वहाँ पर भी बच्चे जब उससे पूछते थे तेरे पापा कहाँ हैं तो वह चुप हो जाता था। बच्चे उसे चिढ़ाते थे तेरे पास तो पापा भी नहीं हैं जब वह रोते–रोते घर आता था तो फिर गंगा से सहन नहीं होता था। फिर गंगा उन बच्चों के घर जाकर उन बच्चों के माता पिता को बोल कर आई कि आप अपने घरों में मेरी बात करना बंद करें। आपके बच्चे मेरे बेटे को चिढ़ाते हैं आज तो मैंने सहन कर लिया लेकिन शायद अगली बार नहीं करूंगी। अपने बच्चों को संभाल कर रखिए। जिस जगह गंगा अपने माता–पिता के साथ रहती थी वहाँ के लोग गंगा के बारे में तरह–तरह की बातें करते थे। कभी उसके रहन सहन को लेकर कभी उसे पहनावे को लेकर। गंगा को एक ही बहुत बड़ा दोष था कि वह विधवा थी फिर भी अपने परिवार का बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखती थी। अमन का पाँचवा जन्मदिन आया। अब राम की मृत्यु को एक साल हो चुका था। उस दिन राजीव की मृत्यु को एक

साल हो चुका था। उस दिन राजीव ने एक लड़के को बुलाया था अमन के जन्मदिन वाले दिन। जब अमन को यह पता चला कि यह अंकल कौन हैं तो वह उसे अपना नया पापा समझ बैठा और ह उसे पापा बुलाने लगा। गंगा उसकी आँखों की खुशी देख कर अमन को मना नहीं कर पाई। वह लड़का दक्षिण भारत के किसी शहर से आया था। वह लड़का 'सेपरेटिड' था उसकी दो लड़कीयां थी। जब वह आया तो वह सभी को पसंद आया। गंगा ने उस दिन पहले उसे दखा नहीं था लकिन जब वह अमन को गोद में उठा कर प्यार कर रहा था तो उसने सोचा मुझे तो अपने बेटे के लिए पिता चाहिए और क्या चाहिए। गंगा ने उसे हाँ बोल दी। उसके बाद उन दोनों की फोन पर बातें भी हुई। गंगा ने उसे अपनी सारी कहानी सुना दी थी। उस लड़के ने गंगा से 3–4 दिन तो ठीक से बात की लेकिन फिर उसका प्यवहार गंगा को राम जैसा ही लगने लगा था। किंतु अमन उसको ही अपना पापा मान चुका था तो गंगा उसे मना न कर सकी। पापा ने उस लड़के की छान बीन करवाई तो वह लड़का धोखे बाज था। वह लड़का धुम्रपान और हर तरह का नशा भी करता था। इसलिए घरवालों ने मना कर दिया लेनिक गंगा अपने बच्चे का दिल कैसे तोड़ती । उस लडके ने बहुत शराब पीकर गंगा को फोन किया और नशे में अनाब– शनाइ बके जा रहा था और आखिर में बोला तेरा पति मरा नहीं था तूने ही उसे मारा है। तू जिसको भी मिलेगी उसका घर बरबाद कर देगी। गंगा ने उसे बोला काश आपके अंदर ठहराव होता तो आपकी पत्नि आपसे कभी अलग नहीं होती और फिर गंगा ने उससे कभी बात नहीं की। गंगा बहुत दुखी हो गई थी। वह पहले ही अपनी परेशानियों से झूझ रही थी। जैसे – तैसे वह अमन को संभाल रही थी एक और बड़ा झटका उन दोनों को मिल गया। गंगा ने यह बात घर वालों को नहीं बताई । लेकिन वह सोचती जरूर थी कि ऐसा क्या हो गया था उस लड़के को जो उसने ऐसा व्यवहार किया और वह तो मेरे चरित्र पर ही अंगूली उठा बैठा। गंगा के दिमाग में रमन का ही ख्याल आया कहीं उसी ने तो उस लडके के कान नहीं भर दिये। फिर सोचा इतना गिरा काम नहीं करेगा वो। अमन बार–बार उसी की बातें करता था और गई राते ंरोते–रोते सोया है। क्योंकि अमन ने उसे अपना पिता मान लिया था। गंगा बहुत परेशान थी ह भगवान् से जवाब माँग रही थी हे भगवान् मेरे साथ ही ऐसा क्यों हो रहा है। जिसकों मैंने प्यार किया उसने मेरा इस्तेमाल किाय। रमन और रीटा मेरे पीछे पड़े रहते है। जिसे मेरे बेटे ने पापा मान लिया उसने भी मेरे बेटे को दर्द दे दिया। क्या कभी हमारे नसीब में भी खुशियाँ आएंगी या नहीं। गंगा ने खुद को राम के जाने को बाद बड़ी मुश्किल से मजबूत किया था लेनिक फिर से एक और आंधी आई और गगा के विश्वास का घर फिर से बिखर गया। गंगा का परिवार उससे नाराज था। उनका कहना था कि हर व्यक्ति पर यह इतना भरोसा क्यों करती है। उस वक्त तो यह हमारी

बात ही नहीं मानती है और फिर जब धोखा मिलता है तो भागती हुई हमारे पास ही आती है। उसका परिवार अब उसे उसकी पिछली जिंदगी को लेकर ताईने मारने लगे थे। अमन के दिमाग पर बुरा असर पड़ने लगा था। अब उसकी पढ़ाई पर भी असर होने लगा थां गगा दिन प्रतिदिन कमजोर होने लगी थी। उसकी शादी को लेकर किसी ने भी कोई रूची नहीं दिखाई थी। गंगा का भी मन शादी पर से उठ गया था ज्यादातर गंगा घर पर अमन के साथ अकेली ही होती थी। उसके माता–पिता महिने में सिर्फ 10–15 दिन ही घर पर होते थे। वह लोग रिश्तेदारों में जाते रहते थे या फिर राजीव के पास अहमदाबाद। गंगा को एक ज्योतिषी के बारे में पता चला तो वह वहाँ चली गई। उसने बताया तुम्हारे ऊपर काले जादू अभी भी हो रहें हैं। उसेने बोला हाँ मुझे पता है मेरे ससुराल वाले करते थे। पंडित ने बताया आपको शायद पता नही है आपके ऊपर दो जगह से यह वार किये जा रहे हैं। पंडित की बात सुनकर गंगा के होश उड़ गए। गंगा ने पूछा क्या इसका कोई उपाय नहीं हो सकता है। उस पंडित ने बोला हो सकता है लेकिन उसमे खर्चा आएगा। गंगा ने बोला अगर खर्च करने से हमारे ऊपर जो संकट है वह खत्म हो सकता है तो मैं आपको पैसे देने को तैयार हूँ। पंडित ने बताया हम एक पूजा करेंगे जिस को करने से आपको कष्ट भी दूर हो जायेंगे। गंगा ने वह पूजा करवा ली और उस पंडित को पाँच हजार रूपये दियो। गंगा को लगा अब सब कुछ ठीक हो जायेगा लेकिन क्या सभी पंडित भगवान के सच्चे भक्त होते हैं। उस पंडित ने भी गंगा की मजबूरी का फायदा उठाया था। गंगा यही सोचे बैठी थी कि, अब मेरे जीवन से तकलीफें दूर हो जायेगी लेकिन शायद अभी वह वक्त आया नही था। समय गुजरता गया लेकिन उसके जीवन में कुछ बदलाव नही आया। एक बात जरूर बदली थी अब गगा का रिश्ता उसके परिवार के साथ पहले जैसा नहीं रहा था। अब तो हर बात में गंगा को ही दोषी माना जाता था । उसकी बहन उसकी मदद जरूर करती थी लेकिन वक्त आने पर वह उसे काफी कुछ सुना भी देती थी। गंगा को कभी लगता था कि वह उसके साथ ऊपरी तौर पर ही रिश्ते रखती है। उसका भाई और पिता रमन के बहकावे में आकर गंगा और अमन की तरफ से उखडे रहते थे। वह दोनों अमन को हमेशा राम का खून ही समझकर उसे धुत्तकारते रहते थे। यदि राजीव घर पर कभी गाड़ी लेकर आता था और अमन अपने मामा को यह बोलता था कि मुझे अपनी काम में बैठाकर एक चक्कर लगवा दो और मुझे सोसायटी के दरवाजे पर ही छोड़ देना मैं वहाँ से मम्मा के साथ पैदल ही आ जाऊँगा। राजीव से यह भी नहीं होता था। गांग के पीठ पीछे वह गुस्से में बोल देता था यह क्या गांव है जो बच्चे कार के पीछे–पीछे भागते हैं। मरे पास यह तमाशा करने का समय नहीं है। राजव अपनी पत्नि को डांटने लगता था तूने कहा था अमन को कार में बैठने के लिए। गंगा ने यह बात सुन ली थी। गंगा ने

अमन का हाथ पीछे की तरफ खींचा और अमन को अपनी बाहों में लेते हुए कहा। राजीव तू आराम से अपने परिवार के साथ अहमदाबाद के लिए निकल जा। अमन तुझे परेशान नहीं करेगा। गंगा और अमन की आँखें नम थीं। गंगा अमन को कमरे में ले गई फिर क्या था अमन जोर जोर से रोने लगा और बोलने लगा मम्मा आप मेरे लिए एक पापा भी नहीं ला सकती हो क्या? यह सुनकर गंगा को आत्मा तक हिल गई। वह अमन को घुमाने ले गई उसे बाहर खाना भी खिला कर लाई । अमन खुश हो गया। अमन के चहरे पर खुशी देख कर गंगा के चहरे पर भी खुशी आ गई दिल तो रो ही रहा था। उसका अमन के दुख का करण गंगा खुद को ही मानती थी। न तो वह राम से शादी करती ओर न ही अमन का जन्म होता और न ही उसे यह सब झेलना पड़ता। गंगा समय का इंतजार कर रही थी शायद कभी तो हमारे गंगा समय का इंतजार कर रही थी शायद कभी तो हमारे जीवन मूें भी चमत्कार होंगे। रमन गंगा की माँ को आए दिन बोलता रहता था कि, आप लोगों ने इसे अपने घर पर क्यों रखा हुआ है। इसे घर से बाहर क्यों नहीं निकाल देते हो। उसे जहाँ जाकर रहना है चली जाए हमारी बला से, जाकर रहे झोंपडे में तब उसे आटे – दाल का भाव पता चलेंगे। सब भूल जाएगी प्राईवेट ओटो करना, बडे–बडे खर्चे करना और ऐशो – आराम की जिंदगी जीना । आप इससे अपने रिश्ते तोड़ क्यों नहीं लेते हैं। पहले तो इसने आप लोगों के खिलाफ राम से शादी कर ली फिर भी आप लोगों ने इसे यहाँ पर रखा हुआ है। मेरी पत्नि को फोन कर–कर के परेशान करती है। हम लोग तो नौकरी वाले लोग हैं हमारे पास फालतू का समय नहीं है जो बातें करते रहें। बोल देना अपनी लड़की को खुद तो मुफ्त की रोटी तोड़ रही है यहाँ पर और मेरी पत्नि का सुबह का समय खराब करती है। गंगा की माँ ने रमन को तो कुछ नहीं बोला लेकिन गंगा को डांटने लगीं तू पूनम को इतना फोन क्यों करती है। तेरे फोन रखने के बाद उन दोनों का बहुत झगड़ा होता है। इतना फोन मत किया कर। गंगा ने अपनी माँ को आखिर उस दिन बोल ही दिया। आपकी बड़ी बेटी के घर पर झगड़ा होता है वह तो आपने मुझे बहुत जल्दी बोल दियां तो क्या रमन ने जो भी कुद आकर बोला उसे आपने कुछ बोला। गंगा की माँ बोली मुझे गुस्सा तो आया था लेकिन मैं फिर चुप लगा गई। पूनम के घर शांति बनी रहे इसलिए। पूनम को चिंता है आपको क्या आपने कभी मेरे बारे में सोचा है। मैं और मेरा बेटा किन हालातों मे रह रहे हैं। हमे कितनी निराशा होती होगी। पति का खोना क्या होता है और उसके बाद जीवन क्या होता है आपको क्या पता। आपको तो बस यह याद रहता है कि राजीव और पूनम के घरों में शांती बनी रहे। गंगा और उसका बेटा जाए भाड़ में हैना। गगा की माँ से यह सब सुनना गवारा नहीं हुआ और बिना सोचे समझे बोल पड़ी तेरा पति जवानी में ही मर गया तो तू क्या चाहती है सभी के पति मर जाएँ। यह सुनकर गंगा को बहुत दुख हुआ और

बोली जिसके नसीब में जीना होता है वह जीता है और जिसके नसीब में मरना होता है वह मर जाता है। इसमें आप या मैं कुछ नहीं कर सकते हैं। लेकिन मम्मी मुझे आपसे यह उम्मीद नहीं थी कि आप यह सब बोलोगी मुझसे । एक आप ही थीं जिस पर मुझे यह भरोसा था कि आप मेरे दर्द को समझती हो। गंगा ने बोला उस दिन पापा भी बोल रहे थे कि मेरे में ऐसा क्या है जो उनकी बहू मेरी इज्जत करें। पापा ने भी मेरी औकात मुझे बता दी थी और अपने बेटे और बहु की तारीफ करते नहीं थक रहे थे। आपके बेटे ने और बहु ने Post Graduation (P.G. Degree) कि है तो क्या मैं अनपढ़ गंवार हूँ। उस दिन पापा ने भी मुझे बोल दिया था कि मैं अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकती हूँ ऐसा क्यों ? अगर मैं विधवा हो गई तो इसमूें मेरी क्या गलती है क्या मैंने उसे मरने के लिए बोला था।

सभी मेरे से उस दिन भी नाराज हो गए थे जब मैंने पापा को यह बोला था कि, अब आप देखना 'यह गंगा' एक महिने के अंदर अमन को पिता ढूंढ कर दे देगी। क्योंकि इस घर के मर्दों में तो वह ताकत ही नहीं है कि वह मेरे बेटे के लिए पिता ला सकें। रमन, रीटा को भी फोन कर के इस घर की बातें पूछता रहा है और वह भी हमारे घर की सारी बातें रमन को और अपने परिवार को बताती रहती है। मेरी तो वह इज्जत ही नहीं करती है। मेरा बेटा तो उसे सहन ही नही होता है। उसका बस चले तो वह हम दोनों को मरवा देगी।

अब गंगा खुद ही अपने जीवन साथी की खोज में लग थी। वह 5–6 घंटो तक एक ही जगह बैठी–बैठी कम्पयुटर पर काम करती रहती थी। वह पूरी–पूरी रात बिता देती थी। कभी – कभी तो ह सुबह 6:00 बजे तक बैठी रहती थी। अब उसने ठान लिया था कि, अब वह अपने बेंटे की आँखों में आँसू नहीं आने देगी। लेकिन इन सब बातों की वजह से उसके पास बहुत सारे फोन आने लगे थे। किसी को गंगा की आँखें अच्छी लगी थीं, कोई उसके बालों की तारीफ करता था, किसी को उसकी आवाज अच्छी लगती थी लेकिन जब बात उसके बेटे अमन की आती थी तो लोगों के नजरिये ही बदल जाते थे। कुछ लोगो ने तो यहाँ तक बोल दिया था कि हमें आप पसंद हैं लेकिन हम आपके बेटे को नहीं अपना सकते हैं। लोगों को पत्नि के रूप में एक शो पीस चाहिए था। किसी जमाने में गंगा पराए मर्द की तरफ उस नजर से देखती तक नहीं थी और आज लोगों के सवालों के जवाब देने पड़ रहे हैं वह भी तरह–तरह के। यह सब सिर्फ राम और उसके परिवार की वजह से हो रहा है। लेकिन उन लोगों ने तो हमारे से सभी रिश्ते तोड़ लिए हैं। जिस दिन से उनका बेटा मरा है उन लोगो के लिए तो हम भी मर गए हैं। गंगा काफी दुखी हो गई थी और एक दिन वह अपनी

आँखें बंद करके बैठी हुई थी। उसे राम साथ बिताए हर एक पल याद आ रहे थे अचानक से उसे कुछ और अपनी आँखों में दिखाई देने लगा।

गंगा एक बहुत ही लंबे और सुनसान रास्ते पर चली जा रही है वह भी अकेले। चारों तरफ जंगल ही जंगल है सिर्फ एक रोड़ ही दिखाई दे रहा है जिस पर वह चल रही है। वह बहुत ही थक चुकी है लेकिन फिर भी वह चली जा रही है। वह बहुत ही ज्यादा दुखी है और रो भी रही है। चलते – चलते जब वह गिरने लगी है तो उसने खुद को संभाला और फिर जोर से भागी। भागते भागते वह एक ऐसी जगह पहुँच गई है जहाँ पर वह रास्ता खत्म होता था और वहाँ बहुत ऊँची फेंसिंग लगी हुई है। उस फेंसिंग के आगे बहुत गहरी खाई है। वह भी जंगली पौधों से ढ़की हुई है। गंगा नीचे की तरफ कूंद गई है और अचानक से किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया है और उसने गंगा को बोला कि यह तुम क्या कर रही हो मरना चाहती हो क्या? गंगा ने जवाब दिया जी के भी मैं क्या करूंगी। उसने कहा अमन के बारे मे नहीं सोचा क्या तुमने। गंगा बोली मुझे किसी के बारे में नहीं सोचना है। वह इसांन बोल तो फिर इतने सालों से क्यों सोचा था पहले ही मर गई होंती तुम। उस इंसान ने अभी भी गंगा का हाथ पकड़ा हुआ था। उसका शरीर भारी था। उसने काले रंग के कपड़े पहने हुए थे । उसकी आवाज भी भारी थी। गंगा को उसके साथ हाथ का स्पर्श ऐसा लग रहा था, जिसे वह हमेशा से महसूस करती थी अपने ख्यालों में लकिन गंगा को उसका चहरा साफ–साफ दिखाई नही दे रहा था। उसने गंगा को बोला कायर लोग मरा करते हैं लेकिन तुम तो बहुत बहादुर हो । तुमने कठिन वक्त में भी अपने बेटे का साथ नहीं छोड़ा है। अब तो तुम्हारा अच्छा समय आने वाला है। तुम मंजिल के काफी करीब हो। अगर तुम मेरा हाथ पकड़ कर आगे चलोगी तो तुम्हारा जीवन खुशियों से भरा हुआ है और तुम्हारे हिस्से की सारी खुशियाँ उसे मिल जाएँगी लेनिक अगर तुम मेरा हाथ छोड़ दोगी तो तुम इस खाई में गिर कर मर जाओगी और अपने बेटे को एक एसी गहरी खाई में धकेल दोगी कि वह जीवन भर मर–मर के जियेगा, अनाथ बनकर। क्या तुमने अपने बेटे के लिए ऐसे भविष्य के सपने देखे थे। तुम्हारे पास दो रास्ते हैं एक मेरा हाथ पकड़ कर ऊपर आ जाओ और दूसरा मेरा हाथ छोड़ दो और चली जाओ इस गहरी खाई में। गंगा ने उसा व्यक्ति का हाथ जोर से पकड़ लिया है और वह ऊपर आ गई है। फिर उस इसांन ने गंगा के कंधे पर अपना हाथ रखा और उसका सिर अपने कंधे पर टिका लिया है। फिर वह उसे अपने साथ ले गया है। गंगा को लेकिन फिर भी उसका चहरा नहीं दिखाई दिया है लेकिन इस बार उसे पीछे से उसके बाल दिखाई दे रहे हैं। तभी अमन मम्मा–मम्मा करता हुआ कमरे में आ गया और उससे लिपट गया।

गंगा को आभास हुआ यह तो सपना था। वह वहाँ से उठ गई और अमन के लिए खाना लेकर आई। वह काम तो कर रही थी लेकिन वह सपना उसकी आँखों से ओझल नहीं हो रहा था।

उसकी माँ गंगा को परेशान देख रही थी। उसे लग रहा था कुछ तो है जो गंगा को परेशान कर रहा है। उसकी माँ ने उससे पूछा क्या कोई बात है जो तुझे परेशान कर रही है। गंगा ने पहले तो मना कर दिया परंतु कुछ समय के बाद उसने माँ को अपना सपना बता दिया। उसकी माँ बोली इसमें परेशान होने वाली कोई बात नहीं है। भगवान् तुझे इशारा दे रहे हैं तू अब आगे ही आगे देख पीछे मुड़ कर मत देख । शायद कोई इंसान अब तेरी जिंदगी में अमन के पापा के रूप में आने वाला है। अब तू राम को अपनी जिंदगी से निकाल कर फेंक दे वह तेरी जिंदगी में अभीशाप बनकर आया था । तेरे जीवन में उजाला होने वाला है बहुत जल्द। उसको पहचान लेना और आगे बढ़ जाना। उसकी माँ बोली अगर तेरे पापा या मैं कुछ तुझे बोल देते हैं तो वह हम दिल से नहीं बोलते हैं। हमें तेरी और बच्चे की हालत देख कर दुख होता है। अगर तूने हमारी बात मान कर राम से शादी न की होती तो आज तेरी यह हालत नहीं होती। तूने तो फिर भी अपने माँ – बाप के साथ 25 साल जीवन व्यतित किया है लेकिन अमन तो अपने माँ–बाप के साथ रहा ही नही है। तू ही इसकी माँ और बाप बनी है। राम ने तो कभी अपना फर्ज निभाया ही नहीं था। गंगा अपनी माँ की गोद में सिर रखकर रोने लगी और उसकी माँ भी रोने लगी।

गंगा के माता–पिता दिल्ली आने वाले थे चार–पाँच दिनों में। अमन 6 साल का हो गया था। उस दिन गंगा ने एक प्रोफाईल अपने कम्प्यूटर पर देखा था उसमें लिखा था कि उसका एक बेटा है जिसके लिए वह एक माँ ढूंढ रहा है और उसे एक सीधी–साधी स्त्री की जरूरत है उसमें उसका फोन नम्बर भी था। गंगा ने सोचा एक बार बात करने में क्या जाता है। बात तो कर ही लेती हूँ। वैसे भी उसने मेरा प्रोफाईल पसंद किया है और मेसेज भी डाला है । गंगा ने अपने मन को बहुत मनाया और भगवान का नाम लेकर फोन लगा दिया। उस व्यक्ति का नाम रोहन था। उसकी पत्नि की मृत्यु हो चुकी थी। उसने बोला मुझे पत्नि के रूप में एक सच्चा मित्र चाहिए जो मेरे साथ कंधे से कंधा मिला कर चल सके। उसने गंगा से बोला आप क्या चाहती हैं मेरी तरफ से। गंगा ने बोला मुझे नहीं पता आप मेरी बात सुनकर क्या बोलेंगे लेकिन आप जो भी फैसला लें स्पष्ट बोल देना। आज तक मुझे लोगों ने मुर्ख ही समझा है। रोहन उसकी बातें सुन रहा था। गगा ने बोला मैं अपने बेटे के लिए एक पिता ढूंढ रही हूँ। यदि मैं आपसे विवाह करती हूँ तो मेरी कुछ शर्तें हैं सबसे पहली मैं अपने बेटे को छोड़ नहीं सकती हूँ। यदि आप मेरे बेटे के पिता दिल से बन पाएंगे तभी यह रिश्ता

आगे बढेगा। आप मेरे से पत्नि धर्म की इच्छा मत रखिएगा। मुझे पति नहीं चाहिए मुझे तो एक ऐसा मित्र चाहिए जो मुझे समझ सके। जो मेरा सुख – दुख में साथ दे। जो मेरे बेटे की इच्छाएँ पूरी कर सके। मेरे बेटे को पिता के प्यार की जरूरत है। उस दिन तो फोन रख दिया रोहन ने। गंगा को यह इसांन पसंद आया थां गंगा को उसकी आवाज जानी पहचानी लग रही थी। दूसरी तरफ रोहन भी गंगा की तरफ आकर्षित था। उसे गंगा की तस्वीर देख कर यह भरोसा हो गया था कि यह मेरे बेटे की माँ बनने के लायक है। गंगा ने अगले दिन रोहन को बताया कि, उसके माता–पिता दिल्ली ही आए हुए हैं। वह लोग आपको आकर मिलेंगे शायद। उसके बाद उन लोगों ने फोन पर बात नहीं की। जब गंगा के माता–पिता रोहन को दिल्ली में मिले तो उन्हें रोहन पसंद आया था। वह कमाता भी अच्छा था। अच्छा रूतबा था उसका। फिर भी गंगा के माता–पिता के विचार जानना चाहते थे। जब गंगा के माता–पिता वापस आए तो उन्होंने गंगा को बोला हमें लड़का पसंद है तू अपनी पसंद हमें बता देना। गंगा ने भी हाँ बोल दिया। उसने कहा यदि आपको सब कुछ ठीक लग रहा है तो मुझे कोई तकलीफ नहीं है। अब रोहन के भी फोन आने लगे थे गंगा के पास। उन दोनों ने अपने जीवन की सारी बातें एक–दूसरे को बता दी थीं। रोहन भी गंगा की ही तरह सभी को प्रेम करने वाला था लेकिन उसमें उतना घमण्ड भी था। गंगा ने उसकी इन बातों को एक तरफ रख दिया था। वह उसकी कुछ बातों पर ध्यान नहीं दिया करती थी। लेकिन जब भी कभी वह उसके बेटे के बारे में पूछती थी तो रोहन उसे बोलता था कि उसे मैं अपने तरीके से समझा लूंगा। रोहन पहली बार गंगा के घर जुलाई 2009 में आया था। गंगा ने उस दिन रोहन को पहली बार देखा था। गंगा के घर वाले पहले रोहन को समझना चाहते थे। उन्हें डर था कहीं इस बार भी उन्हें धोखा न मिल जाए। गंगा को रोहन के मोटापे से कोई परेशानी नहीं थी। उसे तो रोहन का दिल पसंद आया था। वह उसके बेटे को बहुत प्यार करता था वह अमन के मुख से निकली हर बात पूरी करने की कोशिश करता था। धीरे–धीरे गंगा के दिल में रोहन की जगह बन गई थी। जब रोहन गंगा के घर दूसरी बार आया था उस दिन राम का जन्मदिन होता था। गंगा 18 जुलाई को काफी दुखी हुआ करती थी लेकिन जब उसी दिन रोहन भी वहाँ आ गया तो गंगा ने सोचा मुझे राम का पन्ना बंद कर देना चाहिए। अब मुझे नये पन्ने को पढ़ने की शुरूआत करनी है। गंगा राम के धोखे को भूली नही थी लेकिन वह ऐसा सोंचती थी कि पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होती है तो इसांन कैसे हो सकते हैं। गंगा का परिवार रोहन के ऊपर शक करने लगा था। क्योंकि रोहन ने अभी तक भी अपने बेटे को ना तो मिलवाया था और ना ही बात करवाई थी। गंगा को भी रोहन के ऊपर शक होने लगा था वह भी सिर्फ उसके बेटे को लेकर। इस बात के अलावा वह रोहन के ऊपर पूर्ण विश्वास करती थी।

गंगा का परिवार गंगा से नाराज रहने लगा थां। फिर से उस घर में वह सब होने लगा था जो राम के समय होता थां इस बार गंगा को रोहन के लिए लडाईयाँ करनी पड़ती थीं। इस घर में फिर से वही कहानी दोहराई जा रही थी गंगा के साथ जो राम के समय थी। फिर से बात वचन की आ गई थी। रोहन का उसके (गंगा) बेटे के प्रति प्रेम देख कर गंगा मन ही मन रोहन की तरफ आकर्षित होने लगी थीं। किंतु उसे अपनी खुशियों से डर भी लगता था। घर पर सभी गंगा को ताइने मारना शुरू हो गए थे कि, तुझे राम की मौत को कोई गम नहीं है। अब तो तुझे रोहन ही दिखाई देता है। गंगा ने लोगों को बोल दिया जब भी मेरी जिंदगी में कोई लड़का आत है तो आप लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हो। क्या आप लोगों को मेरी खुशियाँ सहन नहीं होती हैं। राम के वक्त भी आप लोगों ने हर वक्त किट–पिट लगा कर रखी हुई थी और अब भी लगा रखी है। मेरा पहले भी घर उज़ड गया था। क्या इस बार भी आप लोग ऐसा ही चाहते हैं। आप लोग हमेशा उसके बेटे की बात करते हैं क्या आपको मालूम नहीं है। जो बच्चा 14 साल अपनी माँ के सथ रहा हो वह बच्चा एक दम से मुझे माँ का दर्जा कैसे दे सकता है। मुझे उस बच्चे को अपना बनाना पडेगा जिसके लिए मुझे और अमन को बहुत कुछ झेलना पडेगा। आप लोग चिंता मत करो मैं इस तूफान को भी पार कर लूंगी। मुझे मेरे प्यार पर पूर्ण विश्वास है। आज नही ंतो कल वह मुझे माँ जरूर मानेगा। मैं उस दिन का इंतजार करूंगी। पूनम और दूसरे घर के लोग भी गंगा को बोलते थे तूने कभी अमन के बारे में सोचा है उसे बाप चाहिए था लेकिन तेरी शादी अभी तक भी नहीं हुई है। रोहन के साथ तेरे रिश्ते को पूरे दो साल हो गए हैं। रोहन हर बार शादी की नई तारीख बता देता था और शादी से पहले एक और नई तारीख बता देता था। गंगा भी रोहन के इस व्यवहार को समझ नहीं पाती थी। अब गंगा को भी शक होने लगा था रोहन के ऊपर। वह बार–बार बोलती थी कि आप अपने बेटे से हमारी बात क्यों नहीं करवाते हो। क्या वह इस शादी से खुश नहीं है। रोहन बोल देता था शादी से पहले मैं उसे तुमसे जरूर मिलवा दुंगा। अब गंगा फिर से असमंजस में थी वह क्या करे आगे बढ़ तो रही हूँ लेकिन रोहन के ऊपर शक यकीन में बदलता जा रहा है। यदि पीछे हटती हूँ तो अमन दुखी हो जायेगा और मेरे घर वाले मेरा जीना हराम कर देंगे। गंगा ने यह सोचा यदि मेरे नसीब में धोखा ही है तो उसे कोई रोक नहीं सकता है। लेकिन मुझे ऐसा लगता नहीं है कि रोहन मुझे धोखा देगा। शायद इसमें भी कोई ना कोई भगवान की ही कोई मर्जी होगी। गंगा के कॉलेज का दोस्त राहुल गंगा को फोन किया किया करता था और सारी बातें राम के घर वालों को बता देता था। रमन गंगा के घर वालों का दिमाग खराब करता रहता था। गंगा की शादी को लेकर। जब घर वाले उसके बहकावे में नहीं आते थे तो वह बहुत ही मीठा बनकर गंगा को उसके माँ – बाप के खिलाफ

भड़काता था। लेकिन गंगा तो रमन को भली भांती जानती थी और वह सारी बातें अपनी माँ को बता देती थी। गंगा ने रोहन को बोला मैं दिल्ली आ रही हूँ और हम वहाँ पर ही शादी करेंगे। गंगा दिल्ली पहुँच गई और अमन का दाखिला तीसरी कक्षा में भी करवा लिया था। उन दोनों का अगस्त 2011 को विवाह हो गया। गंगा के माता–पिता और भाई बहन शादी में आए थे। न तो रोहन का बेटा अमित आया था न ही रमन और रीटा। रीटा ने तो बोल दिया मुझे शादी का कार्ड ही नहीं दिया था जो मैं आती। रमन ने आने को मना कर दिया था और अमित गंगा को माँ का दर्जा नहीं देना चाहता था। रमन और रीटा ने आपसे में फोन पर बात करते रहते थे और गंगा के खिलाफ षडयंत्र रचते रहते थे। लेकिन वह लोग कुछ कर नहीं पाते थे क्योंकि रोहन और गंगा आपस में मिलकर चलते थे। अब गंगा की एक और जिंदगी की शुरूआत हो गई थी। रोहन, गंगा और अमन को अपने दिल से प्यार करता था। लेकिन हर रात वह अपने बेटे के पास घर चला जाता था। इस बात को लेकर गंगा रोहन से लड़ाई करती रहती थी। लेकिन एक बात सोच कर चुप हो जाती थी कि, वह अपनी जिम्मेदारियाँ तो कम से कम पूरी कर ही रहा है। रोहन ने अभी तक अमित को गंगा या अमन से नहीं मिलवाया था। गंगा का झगड़ा रोहन से सिर्फ एक ही बात का था कि वह एक परिवार की तरह रहना चाहती थी जिसकी कमी उसे हमेशा खलती रहती थी। गंगा अब भी हर एक दिन उस पल का इंतजार कर रही थी जिस दिन रोहन अमित को उससे मिलवाएगा। रोहन और गंगा के बीच सिर्फ दोस्ती का ही रिश्ता था। गंगा की शादी जरूर हो गई थी रोहन के साथ लेकिन उसकी तकलीफें खत्म नहीं हुई थीं। अमन को पिता तो फिर भी नहीं मिल पाया था, अमन के हिसाब से । अमन रोहन के साथ अपना हर पल महसूस करना चाहता था लेकिन शायद रोहन को अमित ज्यादा प्यारा था। रोहन अमित को एक रात भी अकेला नहीं छोड़ सकता था। रोहन तो शादी वाले दिन भी अमन के साथ उस घर में नही रूका था। ना तो वह अमित को गंगा से मिलवाता था ना ही बात करवाता था। अमन तो अभी भी उसी दर्द को झेल रहा था। रोहन ने गंगा की दर्द भरी कहानी सुनने के बाद उसे यह वादा दिया कि, जब तक वह खुद मेरे साथ पत्नि की तरह रहना नहीं चाहेगी वह उसे हाथ भी नहीं लगाएगा। गंगा और रोहन के बीच मित्रों वाला रिश्ता ही था। एक दूसरे के साथ उनका दिल का रिश्ता बहुत गहरा था। उन दोनों के बीच सिर्फ एक ही तनाव था कि अभी तक अमित ने ना तो गंगा से बात की थी और ना ही वह कभी मिला था। रोहन की तकलीफ गंगा महसूस करती थी इसलिए वह रोहन का साथ देती थी। गंगा और अमन ने इस बार भी समझौता कर लिया था। एक दिन रोहन ने देखा कि गंगा बहुत ही सुंदर चित्रकारी करती है। तो रोहन ने गंगा को बोला आप पेंटिंग बनाओ हम इसकी प्रदर्शनी लगाएंगे गंगा ने एक महिने के अंदर 100 से

भी ज्यादा पेंटिंगस बना डाली थीं। रोहन गंगा के हुनर को उभार कर बाहर ले आया दुनिया के सामने। लोगों ने उसका काम बहुत पसंद किया। अब वह बहुत प्रसिद्ध हो चुकी थी गंगा कहाँ से पहुँच गई थी। उसे खुद पर ही भरोसा नहीं था कि यह सब उसने किया है। गंगा को कई अखबारों ने कवर किया था। गुजरात में भी उसकी कला के चर्चे थे। गंगा को अपने इस नए जीवन पर भरोसा ही नही हो रहा था। गंगा खाना भी बहुत अच्छा बनाती थी। गंगा के माता–पिता भी गंगा की तरफ से खुश थे लेकिन उन्हें एक कोने में दुख भी था कि उनकी बेटी अभी भी अपने सांसरिक जीवन में खुशियों के आने का इंतजार कर रही है। गंगा के जीवन में एक ही बात की कमी थी कि आज भी वह अमित का इंतजार कर रही है। शायद वह भी अपने पापा के साथ यहाँ पर आ जाए ताकि रोहन हर रोज अपने घर न जाएँ। रोहन हर रोज सुबह आ जाता था और रात को वापस अपने घर चला जाता था। गगा उससे लड़ाईयां एक बात को लेकर करती थी क्या पूरा जीवन मैं और मेर बेटा रातें अकेले बिताएंगे। राम की मृत्यु को 6 साल हो चुके हैं परंतु आज भी वह काली यादें मुझे परेशान कर रही है। गंगा रोहन से एक ही सवाल पूछती रहती थी विवाह का क्या अर्थ होता है। लेकिन रोहन की नजरें झुक जाती थीं। जब भी गंगा रोहन को बोलती थी आप कब से यहाँ पर रहना शुरू करेंगे तो रोहन कभी 15 दिन का वादा देता था कभी एक हफ्ते का कभी तीन दिन का गंगा रोहन के व्यवहार से बहुत परेशान थी लेकिन सिवाय इंतजार करने के वह कर भी क्या सकती थी। गंगा बैठे बिठाए बीमार पड़ने लगी थी। उनके बीच मे बिना किसी बड़ी बात के लडाईयां होने लगी थी। अमन की सेहत और व्यवहार भी बिगडने लगा था। अमित का भी व्यवहार अपने पिता के खिलाफ बिगड़ गया था । वह मरने की धमकियाँ देने लगा था। दूसरी तरफ गंगा को दिन के उजाले मे भी डर लगने लगा था। उसे घर में परछाईयाँ चलती हुई दिखाई देती थीं। वह अपनी ही तस्वीरों से डरती थी। अब तो यह हालत हो गई थी कि, उनके बनते काम बिगड़ने लगे थे। गंगा और अमन एक कम्पनी के साथ जुडे हुए थे लेकिन उसका जवाब भी नहीं आ पा रहा था। पता नहीं क्यो। गंगा अपने माईके गई तो उससे मिलने उसकी भाभी रीटा आई लेकिन उसके जाते ही गंगा जैसे पागल सी हो गई हो। उसे अपने ही बेटे के चहरे से डर लगने लगा था। उसका शरीर फूलने लगा था ओर उकसे माता–पिता और बहन का उसकी तरफ व्यवहार भी अच्छा नहीं था। वह वहां पर दो महिने रूकी लेकिन उसकी बहन उससे मिलने तक नहीं आई । उसने गंगा से बात तक नही की। रमन ने भी रोहन को गंगा के खिलाफ बहुत भड़काया था लेकिन रोहन नहीं भड़का क्योंकि रोहन और गंगा के बीच एक विश्वास का रिश्ता था। इस बार रमन गंगा के पति को गंगा से दूर नहीं कर पाया। इस बार रमन गंगा के घर में आग नही लगा पाया था। रोहन कानों का

कच्चा नहीं था। लेकिन वह (रमन) गंगा को भड़काने की कोशिश में लगा रहता था । फिर से गंगा के साथ कुछ ऐसा होने लगा था कि, जिन बातों पर इसांन भरोसा नहीं करते हैं। क्योंकि आज भी हमारा समाज काले जादू जैसी बातें को नहीं मानते हैं। और इसे एक अंधविश्वास का नाम दे दिया जाता है।

अचानक से गंगा को कुछ होने लगाता था। अजीब सी आवाजें आती रहती थीं। उसे अमन की आँखों से डर लगता था। जैसे ही घड़ी में पौना या सवा बजता था वैसे ही गंगा के दिल में घबराहट होने लगती थी। उसकी तबियत खराब होने लगती थी। उसे घंटियों की आवाजें सुनाई देती थी। वह रोहन से बात तो कर रही होती थी फोन पर लेकिन उसे अजीब सी घबराहट होती थी। अब गंगा को ऐसा होने लगा था कि उसे मर जाना चाहिए उसके जीने का कोई फायदा ही नही है। राखी से दो दिन पहले गंगा ने दवाई के डब्बे की सारी गोलियाँ खा ली थीं। उस रात वह अकेली सोई थी कमरे में। उसने एक नोट भी लिखा था कि, वह अब मर जाना चाहती है वह पिछले ग्यारहा सालों से यह सब झेल रही है लेकिन उसके किसी को कुछ नहीं बताया। और सो गई लेकिन फिर भी वह मरी नही। यह बात गंगा को समझ नहीं आयी। गंगा दो दिन बाद दिल्ली वापस आ गई अमन के साथ। गंगा ने रोहन को बरौड़ा से अपनी हालत के बारे में यह सब बताया था और बोला था कि, कुछ तो गड़बड़ चल रही है हमारे साथ। कोई तो है जो हमारे पीछे पड़ा हुआ है। गंगा ने रोहन से बोला था आप किसी पहुँचे हुए गुरू से जाकर मिलो और इसका हल निकालों। मुझे राम नजर आता है और गायब हो जाता है। गंगा जब प्लेन में भी बैठी हुई थी तो उसे बेहोशी हो रही थी और उलटियाँ भी हो रही थीं। जैसे तैसे वह घर पहुँची। घर आते के साथ उसने बहुत सारी उलटियाँ कर डालीं। रोहन को लगा थकावट की वजह से गंगा की तबियत खराब हो गई है। लेकिन शायद सच्चाई से यह लोग अंजान थे । रोहन गंगा और अमन को बहुत प्यार करता था। अब गंगा और रोहन की शादी को एक साल हो चुका था। गंगा घर तो आ गई थी लेकिन वह पागल जैसी हो गई थी। वह एक ही जगह पर बैठी रहती थी। वह खाना भी नहीं बनाती थी। रात को सोती थी तो दूसरे दिन दोपहर के 2–3 बजे तक बैड में ही पड़ी रहती थी। रोहन जो पूछता था वह बस उसी का जवाब देती थी। उसे पता ही नहीं चल रहा था कि उसे बीमारी क्या है। रोहन उसकी इस हालत को देख कर दुखी हो रहा था। वह गंगा से बोलता था कि जब तुम बरौडा गई थीं तो हालत ऐसी नहीं थी लेकिन अब तो तुम्हारी हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई है। (रोहन) उसने कहा मैं एक गुरू जी को जानता हूँ अगर वो यहाँ पर होंगे तो मैं बात करके आता हूँ। गंगा ने बोला आपको

जो भी करना है जल्दी करो नहीं तो आप मुझे खो दोगे। रोहन अगले दिन गुरू जी के पास गया। वह गुरू जी बहुत पहुँचे हुए थे। वह सच्चे माईने में भगवान के ही भेजे हुए कोई दूत थे। जैसे ही रोहन गुरू जी को पास गए व मुस्कुराने लगे उसे देख कर और बोले मुझे मालूम है तू यहाँ क्यों आया है। रोहन ने बोला आपको क्या मालूम है गुरू जी। उन्होंने बताया कि तुम्हारी पत्नि और बेटे के ऊपर काले जादूओं का असर है। और यह राजस्थान से करवाया गया है। उनके पहले वाले ससुराल वालों ने पिछले ग्यारहा सालों से उनके ऊपर काले जादू कर रखे हैं और गंगा की भाभी ने भी पिछले दस सालों से उनके ऊपर बार–बार वार किये हैं। उन्होनें बताया कि इस वक्त इनकी भाभी का असर बहुत ज्यादा है आपकी पत्नि के ऊपर। उसने आपकी पत्नि और बच्चे के ऊपर कई बार जानलेवा हमले करवाए थे लेकिन यह दोनों हर बार बच गए। उनके ससुराल वाले अभी भी यही चाहते हैं कि आपकी पत्नि की और बच्चे की मौत हो जाये। रोहन ने पूछा लेकिन यह सब उन्हें कैसे पता। गुरू जी ने बोला गंगा का एक मित्र था। वह उन्हें सब कुछ बता देता है। वह अभी भी गंगा के साथ इसलिए ही बातें करता है और उनकी भाभी अपने माता–पिता और भाई के साथ मिलकर इन पर जादू करवाती हैं। उसने अपने पति को भी अपने वश में कर रखा है। गंगा की भाभी हर तीन से छह महिने में अपने माँ – बाप से इसलिए ही मिलती थी। उसने आपकी पत्नि और बच्चे की बहुत सारी तस्वीरें, कपड़े और गहने भी लेकर उन्हें दियो हैं। आपकी पत्नि ने बहुत सरी दवाईयाँ भी इसलिए ही खाई थी। वह आपके बेटे की हरी कमीज भी वहाँ लेकर गई थी और उसे वापस लाकर अलमारी में रख दिया था। आपका बेटा दिन पर दिन कमजोर होता चला जाएगा। उसने इन दोनों को जान से मरवाने के लिए यह सब किया है। उस औरत से गंगा के माईके वालों को भी खतरा है। वह अपनी नंदो को सुखी नहीं देखना चाहती है। रोहन यह सब सुन कर घबरा गया था। उसने बोला गुरू जी आप इसका जल्दी से कोई उपाय करो जिससे हमारा जीवन ठीक से चलने लग जाए। गुरू जी ने बोला आप चिंता मत करो मैं सब ठीक कर दूंगा। रोहन ने बोला आप जितना बोलेंगे मैं खर्च करने को तैयार हूँ। बस इस बार मैं अपने परिवार को नहीं खो सकता हूँ। गुरू जी ने बोला यदि हमने पैसे का लालच किया तो हम भगवान् के भक्त नहीं कहलाएंगे। मैं आपसे कुछ नहीं ले सकता हूँ। आपको यहाँ पर आकर प्रति दिन एक हवन करना होगा सब कुछ ठीक हो जायेगा। देवी माँ सब ठीक कर देंगी। आपको मालूम है आज तक आपकी पत्नि के ऊपर जितने भी जान लेवा हमले हुए थे फिर भी वह क्यों बच गईं। रोहन ने सवाल किया क्यों ? क्योंकि स्वयं देवी माँ आपकी पत्नि के शरीर में वास करती हैं। यह सुनकर रोहन हक्का – बक्का रह गया। अब रोहन ने रोज अपने परिवार की खुशियों के लिए हवन करना शुरू कर दिया। रोहन सुबह और शाम को हवन

करता था और 7:30 बजे शाम के बाद सुबह गंगा के पास पहुँचने तक मौन व्रत रखता था। रोहन के लिए यह सब बहुत कठिन था फिर भी वह यह सब कठिनाइयाँ उठा रहा था अपने बीवी बच्चों के लिए। धीरे–धीरे गंगा ठीक होने लगी थी। देखते ही देखते कुछ दिनों में गंगा बिलकुल ठीक हो चुकी थी। उनके रूके हुए काम भी पूर्ण होने लगे थे। अमन भी चौथी कक्षा में अच्छे नम्बरों से पास हुआ था। अब धीरे–धीरे अमित भी गंगा की बातें करने लगा था। गंगा के भाई की नौकरी भी अच्छी हो गई थी। वह अपने माँ – बाप के पास बरौड़ा रहने आ गया थां गंगा जिस कम्पनी के साथ जुड़ी थी उनका भी 15 दिनों में जवाब आ गया था। अब धीरे–धीरे सब कुछ ठीक होने लगा था। दो महिने के अंदर – अंदर ग्यारहा साल पुराने बंधन सब खुल गए थे। गंगा ने अपने मित्र राहुल से मित्रता खत्म कर ली थी। अमित जो गंगा का नाम सुनकर चुप हो जाता था। अब वह गंगा को प्यार करने लगा था। गंगा पहले भी अमित के लिए रोज खाना भेजा करती थी वह प्यार से खा लिया करता था लेकिन अब अमित भी माँ से मिलना चाहता था। हर रोज वह अपने पापा को पूछता था कि क्या मैं माँ से अब मिल सकता हूँ। सारे बंधन तो खुल गए थे गंगा के । लेकिन अभी भी कुछ दिनों की दुरियाँ थी उस परिवार को इकटठा होने में। शायद अब गंगा का इंतजार खत्म होने वाला था। वह उसी दिन का इंतजार कर रही थी कि, कब रोहन अमित को लेकर घर पर रहें और वह एक खुशी परिवार के सुख को महसूस कर सके। गंगा को अपने भगवान पर इतना भरोसा जरूर था कि, अब कोई शैतान उसके जीवन में नहीं आएगा। लेकिन फिर भी रीटा गंगा से जलती थी।

गंगा रोहन जैसा पति पा कर धन्य हो गई। गंगा के कुछ ऐसे अच्छे कर्म रहे होंगे जिसका फल उसे रोहन के रूप में मिला है। अमित को उसने जन्म जरूर नही दिया है लेकिन वह उसे अपना बड़ा बेटा मानकर प्रेम करती है। प्रेम करने के लिए किसी रिश्ते की जरूरत नहीं होती है। सिर्फ एहसास की ही जरूरत होती है अमित के साथ गंगा का शायद कुछ पिछले जन्म का तार जुड़ा हुआ है जो इस जन्म में जाकर पूरा हो जायेगा। गंगा ने अमित और रोहन की केवल अच्छाईयों पर ही ध्यान दिया है बुराईयों पर नहीं। इसांन को यह पता नहीं होता है कि वह जिस रास्ते जा रहा है वह रास्ता सीधा है या घुमाव दार है वह तो सिर्फ उस रास्ते पर चलता चला जाता है लेकिन जब वह अपनी मंजिल पर पहुँच कर पीछे मुड़कर देखता है तब उसे एहसास होता है कि उसकी मंजिल तक का सफर कैसा रहा है। जो इसांन जहाँ के लिए बना होता है आखिरकार वह वहाँ पर पहुँच ही जाता है। परंतु हमें कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है जैसे गंगा को भी उसकी मंजिल आखिरकार मिल ही गई लेकिन उसने यहाँ तक पहुँचने के लिए बहुत कुछ खोया है और बहुत से तूफानों का भी

सामना किया है। परंतु वह हर समय एक मजबूत चट्टान की तरह खड़ी रही और अपने बेटे के जीवन को सुरक्षित रखने की पूरी कोशिश की उसने । काश हमारा समाज नारी की शक्ति को समझ जाए और उसका सम्मान करे। नारी को हमारा समाज कमजोर न समझे। यदि वह चाहे तो सारे संसार को अपनी मुठी में समा सकती है। यदि वह चाहे तो बढ़ते तूफान को भी वह वही पर थाम सकती है। परंतु हमारे समाज के कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वह **नारी के समर्पण** को उसकी कमजोरी समझ कर उसका शोषण करते हैं। परंतु जब वह नारी दुर्गा का रूप ले लेती है तो ऐसे दुष्ट को जाना ही होता है क्योंकि जीत हमेशा सच्चाई की ही होती है। जैसे कि गंगा की हुई है क्योंकि उसने स्वयं की शक्ति को अब समझ लिया है। वह अब समझ चुकी है कि वह कमजोर नहीं है। अब गंगा हर तूफान से लड़ने को तैयार है। अब उसे यह ऐहसास हो गया है कि, उसका समर्पण व्यर्थ नहीं गया है। **सच्चे माईने में यही है गंगा के जीवन की एक नई शुरूआत्।**

This book was distributed courtesy of:

For your own Unlimited Reading and FREE eBooks today, visit:
http://www.Free-eBooks.net

Share this eBook with anyone and everyone automatically by selecting any of the options below:

To show your appreciation to the author and help others have wonderful reading experiences and find helpful information too, we'd be very grateful if you'd kindly
post your comments for this book here.

COPYRIGHT INFORMATION

Free-eBooks.net respects the intellectual property of others. When a book's copyright owner submits their work to Free-eBooks.net, they are granting us permission to distribute such material. Unless otherwise stated in this book, this permission is not passed onto others. As such, redistributing this book without the copyright owner's permission can constitute copyright infringement. If you believe that your work has been used in a manner that constitutes copyright infringement, please follow our Notice and Procedure for Making Claims of Copyright Infringement as seen in our Terms of Service here:

http://www.free-ebooks.net/tos.html

STOP DREAMING AND BECOME AN AUTHOR YOURSELF TODAY!

It's Free, Easy and Fun!

At our sister website, Foboko.com, we provide you with a free 'Social Publishing Wizard' which guides you every step of the eBook creation/writing process and let's your friends or the entire community help along the way!

LOGON ONTO FOBOKO.COM

and get your story told!

FOBOKO.COM